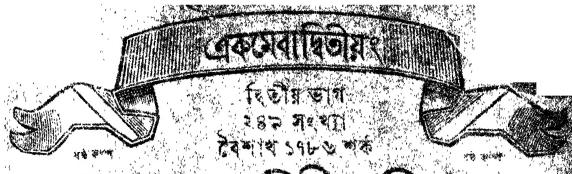
৺ অকারাদি বর্ণক্রমে ষষ্ঠ কলের দিতীয় ভাগের নির্মণ্ট পতা।

* 5.5.4		41
	मश्था। शृक्ष	मः या भूवं
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)	२८ ५६	ज्ञाक्तथर्पात वाग्यान २८५ ७.
অনুঠানের আবশাকত: (প্রাপ্ত)	२१० ७०	डांकाधरम्बं साथान २०१२ ४०
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)		ব্রাহ্মধর্মা ও ব্রাহ্মসনাজের পোষকভা
অনুষ্ঠানের আরশাক্তা (প্রাপ্ত)	રહે ૧૧	ইংরাজিজে ২৫৮ ১৫২
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)	२७८ २४	विशेष कोटन उक्त त्यांत २०१ ৮১
व्याचादणात् छेश्रदम्भः	₹₡₽ ··· \$8÷	निर्धिय श्रुष्टरकृत विशालन् २७० २०२
আছ-চিস্তা	₹@\$ @\	का जी श्रा अव विकास सम्बद्ध में जरम
আয় বায় বিবরণ		५ मर्थाः १०० ५०० ५०५
च्याचामा विवास ।		च्चानीयुत अव्यविमानदात उत्रदम्
व्याचा वाचा विवस्तर्भ	२०७ ৮	२ मर्थः। २०७ , ५२६
	289	कत भीव्यत सकतिमामदात्र छिन्दरम्
আয়ে ব্যয় বিবরণ 🧼 👵		
		是不(m) TO 在 23 种(en) 1000 24 不可以分析
के सिन है।		ध मध्यम् 🗼 😁 😁 २०६ . ५०६
		ভৰানীপুর ব্রহ্মবিদ্যালয়ের উপদেশ
事件以 學之 以思		The second secon
अभा रद्वतः <i>े रा</i> ख्य स्थापात्रकः, स्थाकः		1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
THE PARTY OF THE P	5 .	marridusted in the state of the
खिलागन्। -	•	पान विभान । १००५ । ४
ৰণিশভা এ.খে		
কলকভা বাজ্ঞান লয় ব	1	4. 1 THE 1. 200 98
		শ্ৰোবিজ্ঞান ২৫৪ ৯৬
		公司(京政) 京 · 4 · 安東(大島 · 村八月本
		1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
		(************************************
		*
4		ং প্রিরিজে বসস্তু-
		ं उद्यालीमना २७८ ५৮ a
		১ ১৮ 💘 উনতিংশ সাম্বৎসরিক
াথ্যোডোর পাকরের প্রক	₹0 ৮ \$08	्रिमिन्।क २७० ১৯৯
থিয়োডোর পার্করের পত		
শর্মা বিষয়ের অবভারের প্রতিবাদ	,	4 # · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
		रं'वं चराकशे २०० >०७
tuás		
नवदार्वत रखाळ		918 k
निमीध मगरत्र मागत्रतत्क द्वाटकत)	N
ন্তোত্ত	₹60 >4 1	
নিৰবাগই চতুৰ্দ্দশ সাম্বৎসবিক		* * *
		अर्थाम् २०० १४
হতন সুত্তক আন্তি	₹€8 ३€	मार्कमन मण २८१ ১२৯
		क्षीरमारकत्र ब्रहिष्ठ व्यार्थना २६२ ১৮७
পঞ্জিংশ সায়ংসরিক ব্রাক্ষ্যনাজ		
পৃথিবী ও মনুষা		এই তত্তবেদিনী পত্তিকা কলিকাতা ব্ৰাক্ষমাক ক্ইতে
ব্রামানের প্রচার	₹¢¢ ;;;}₽	व्यक्ति विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विष
ব্ৰাহ্ম বিবাহ	₹ € ₽	अधिक्षां के 350 र । अधिक्षां के 350 र ।
अभिपिटगद्रनाथां वर्ग गर्छा	₹⊈₽ २ 9	THE THE THE PARTY OF THE PARTY



ত্রারোধনীপ্রতিক

नवस्यत्तात्वात ।

्ष्याचि देवलाश व्यवस्था सम्बद्धाः कांग देवलाश व्यवस्थि देवलाश व्यवस्था सम्बद्धाः कांग देवलाश सात्र व्यवस्थाः कांगिक वाक्तिश्चाः व्यवस्थाः द्वानाः द्वानाः स्वतः इत्यवस्थाः स्वतः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः स्वतः इत्यवस्थाः स्वतः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः स्वतः व्यवस्थाः सद्यान्ति व्यवस्थाः स्वतः व्यवस्थाः स्वतः विवस्तानाः सद्यान्ति व्यवस्थाः स्वतः व्यवस्थाः व्यवस्थाः

न्त्राम् । ता नात् स्थानम् । ततः । नेयस्य मन्त्राम् स्टमार्ड्सः स्थानः स्थान्तः । राज्यस्य स्थिति स्टिस्टाः

कर अवः अवाक्यांकेक ग्रंथ निवस् नाल क्षाक्षाक्ष आहितेन करिया हिंदीका समस 'नारमं ब्राप्त ब्राप्ति विश्वाम संस्थितम क বিচাৰে সক্ষম কর েছিম-এপী ডিড (১ছডের भन्। कुल्लामान्। स्मामनी दक, एमंद्रका प्राप्तामणक ता भएस समितिक करिता, त्यस्ति चीसी अध्यारक विशिधन निष् ला सम्रह्म के किया में भवें के किया है। महमानव महिल्ला, प्रभाव वर्षे १४५ वे सान् कान्द्रल , वर्षेत्रः संबद्धानमः भुनवारः ५०० । स হলে তাহতে মেলিটা ক্লি কৰিলে, ভাইটো 化使性定位 化产生 医原性 计过程 為地位的 and they seem their thereties the statement and the माध्य मान्य भाषा क्या । STORY OF THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF रंग्या मार्थावर्ग कवित्रांत कर्मा द्वीय स्व त्रेशी ngre and corre a large, against करण श्रीतगण यात्रश विरोध बद्धी भावत pylica grandly before which

র্ফিণীরার আনার উৎনার প্র বন্ধে করিছি।
বিভাগতে নালৰ কগতে জোনার নিয়নীপ্রতিষ্ঠি
আহলত নালি কগতে জোনার নিয়নীপ্রতিষ্ঠি
আহল কলাভিত করিলা ভূতন ভূতন নালল
বান্ধের প্রতিষ্ঠি জাতাতে রোগণ করিছেছি
এই তর্মা করিতেছি যে, ভূমি নেই সকল
প্রতিষ্ঠিত কার্যের অবিধ্

বেনাৰ তুমি বেমন বৰ্ষার আহামনে
লারীরিক উক্তাপ ও কঠালোব নিবারণ করিবার কন্য এবং তোমার ক্ষমতকে পম ধানে।
পূর্ণ করিবার ক্ষনা শ্যাম-বর্ণ নীর্দ্দনালা
ক্ষীতে ক্ষমব্যক বারি নালা বর্ষণ করিবে
লোই ক্ষম আবাদিপার ভূষিত পাপ-দথ্য
দলার বিলোহিত আলাকে তোমার কৃপা
কলো বিভিন্তি করিও রুষক আপকার বিলোহি করিও রুষক আপকার বিলোহি কেন্তাক রুকি তলে পরিপূর্ণ
কোরা আনন্দিত হইনে, জীন জন্ত স্থান্তির,
কিনা আন্দিত হইনে, জীন জন্ত স্থান্তির,
কিনা ব্যান্দিত হইনে, জীন জন্ত স্থান্তির,
কিনা বুজন্তন বিকাশত হইনে, থামার:
ক্ষিত্রির প্রেম-স্থিক্তা অনুন্ন্তন ক্ষিত্র, ভাতি
ভাতি বিকাশ করিব, ক্ষমর পূর্ণ হইনে,
কারীন চার্ছার হলন।

ভাত কৰি বাংলাৰ বাংলাৰ ভাত পুলিবী কৰিবলৈ কৰে কৰিবলৈ কৰে কৰিবলৈ কৰে কৰিবলৈ কৰে কৰিবলৈ ক

নানি কি জানিক কি তেওঁ মন্দানে
নানিক কি জানিক কি লগানিক কি লিক কি কি জানিক কি লগানিক কি লিক কি লিক

এই বাপে হেনান অহেরাতা পর্যা বিদিত হটকে, নাস তিথি অগীত হইবে, যড় খড় গ্রমনাগমন করিবে, জীবন মৃত্যুর বাব-বাল ক্রমণা বিদ্যুক্ত হইবে, এবং দিবিধ বংগ রথ ছঃখ কালকে বিচিত্তিত করিবে। কিন্তু হেনাথ। তোমার প্রতি আনাগিবোর প্রজা ভক্তি কথন্ট যেল বিচলিত না হব। সম্প্র বংগর এবং সমস্ত ভারন বেল শ্রীর ওমনের সকল রুভি নিযুক্ত করিয়া ভোমার আজ:

নাধুকথা সাধন সান্দে অ লোকের অবজ্ঞাভ জন হট্টা হল, ক গমল পাল্ডেন ক্লা নিহল কলা এবং জগতের অভিলবিভ লক্ষা সংলাধিত লা দেখিলা কাপাভভঃ ক্লা হইছেলংকা কিল ভাজনা কলনই বেল আখনা ইভালালেকা হই। লোকের গুলা, অবজা, অভ্যাভার বল্ল এবং আভিলি নিবিত নান বল কলিছেল কালি কিল লামনা বিনীত নান বল কলিছেল কালি কিল গ্লাভ নান কিল পাল্ডিছে কিলিক্ল মহনান্দ্রিক ব্যাভ ব্যালাল কিলেক কিলিক্ল মহনান্দ্রিক ব্যাভ ব্যালাল ক্লাভ ক্লাভাল বল কালি ভালাভালে ক্লাভ ক্লাভালি Encomparation of the contract of the contract

বিনী জালতো মালবজে, হে আনার্থ নাথ।
ভালার নিকট এই নিবেশন করিভেছি, যে
আলামী বর্ষে এই প্রভাগ্য মাতৃত্বনি বল্প দেশের প্রতি করুণা প্রদর্শন বরিও। ভোগার
থারাবে যেন ইছার রোণ শোক শান্তি ছা,
ইছার পাপ অপবিক্রভা দূর হয়, এবং নীরি
ছইতে নীমান্তর পর্যান্ত যেন ইছাতে স ভারে রাজ্য, ধর্মের রাজ্য, কুশলের রাজ্য প্রতিষ্ঠিত হয়।

ওঁ শাৰিঃ শাৰিঃ শাৰিঃ।

गतना विकास।

क्रश्रीका,।

কগতে মানব জীবন এত প্রকার আ-ক্র্যা ও মনোহর পদার্থে পরিবৃত যে, যে-পর্যান্ত না আমাদিগের হৃদিন্তিত সহজ্ঞান বিদেষ ৰাশে সনালোচিত হয় সে প্রয়ন্ত আনুৱা পৃথিবীয় অভীত অনা কোন পদাৰে मृष्टिभांक वा मनःगरदयांन कविदय शतु इ इहे मा। (स्वभ भारोदिक देनभवदिका आह ति बेल मानिमक देशभवावषा हु के इत्रा শারীরিক শৈলবান্ধার বেমন প্রতিজন জীব-त्तव मह्हात सम्बाद सम्बाद विद्यालय नकत सर्थ काटना ज्यानीय याकिता ज-नर्यक अभिक्षक वामा क्वीकाव राख हरू माम तिक रेस कर गाया है उसके कर गाया व क्का श्रीवरोत बोक दर्शा छ। । FIR MANN THEN THE STORY Airment strategichte man man; mit

THE PLANT FOR UR. PHILES, WAS min wich i Fen coultain Stalland रेगमवावसारक मसुबर नज़ब १७ जनरम्ब भवन्मत महस्राटक है की बटबन व्यक्ति (दाव) कटत । अश्माद हे जीवदना जिल्लाका महन्त इत्क मिता कतियान खनाई मामग्रामिक रुचि बरेबांट्स देश क्लामिटनक अब निकास मधुटवाव काना मरगात, मरगारतन आना मधुना मत्र এरे नक्षि अक्कारन विन्युक स्वर्का लाहक अम्ब गगरत **भाषित-सम्मालक** কেই সক্ষয় জ্ঞান করে। ভাহারি ক্রম্যা বিদ্যাৰ্জন, ভাষারি জনা ধন লাক, ভাষারি জন্য বার্ডি প্রতিপত্তি; ভর্তিত আর মাস্ট্র किष्टु मकत्र है खड़ीतर मूठ वर्ग कि किर्तान के পেনা মাত। ধর্মানুঠান, ধর্মাচন্তা, কি ধর্মের জন্য ভাগে স্বীকার এই সক্ষ কেবল -রহস্তজনক বাতুলভার নাায় বেধি 🙌: সভা-বুদকান, আন্নোন্নতি, পরকাণ, কি মনের গতি বিধি নিৱপণ, কি ভাষার সন্ধাশক্তি ৃ 🤌 সশরেজানুবায়িক ভাষার প্রকৃত লক্ষা বি-हार अ गक्तक वर्ष भूना वामक्रम व्यक्तिय মাত্র বোগহ্য। কিন্ত কাল সহকারে থে ৰূপ भावीदिक रेममवारका छेडीन श्रृंचा स्मादिक भवगायकदम नामाः त्योतम् ७ व्योगोन्धात সমাগত হয়, এবং ভাগেদিলের শরীর জ--गांत्रक भूके वर्ष्क्षित्र ए नहीं यांत्र के एक यांद्रकः क्ट्रांन प्यांटलाहनांत्र, परेना श्रह्मश्रीत, ७ व বস্থা পর্যায়ে সেই ক্ল ভাষ্টা পাথিব প-দার্গের শত্তভাব ৬ জীবনের যথার্থ লক্ষ্য বুরিতে পারে, এবং তদহিনু ত অতীঞ্রির गत्म-रात्मात आफांग आश्र स्व रिवे मगरत वाल कपर उ व्यवस्था शरका वार् चर्मभूक, स्व १००० । १

ভাৰালোচনার প্রথম বোলান টিঙা। যে ব্যক্তিয়ে সহিমানে ব্যক্তান্ত বিবাহ जीवटनत आहटखरे विमन लाहक शा-र्थित वस्तु महेशा विज इहा, उद्योग्नित शांत-ন্ত্ৰেও ভাহারা সেই ৰূপ আক্রতিক পদার্থের তত্ত্বানুসন্ধানে যত্নশীল হয়। এতদ্বিয়ে ক-তক্তুর উল্লভ হুইলে পর তন্ত্রানুসস্বায়ী মন স্থাবভই আপনার দিকে দৃষ্টিপাত করে। मालिक विविध वाक्रिक घरेना-कलाटल छो-তিক ও মাংসারিক পদার্থের অনিতাতা জনশই **হৃদ**য়ে প্রতিভাত হইতে থাকে, এবং मनुषा कीतरमद अक्रु महर छेटलना आमुकु छ হয়। মনুষা বিশেষে যে ৰূপ উলিখিত শারীরিক ও মান্সিক উভয়বিধ শৈশবাবত। লকিত হইল, জাতি বিশেষে ও মাবারণত সমস্ত মানবপরিবার সম্বন্ধেই ভাষা সমান **ৰূপে লক্ষিত হইবে। বিশেষ বিশেষ মন্তু**ষোর मकोटन अहे बन वानकना हा बरन जिल्ला हिस इत् ममेख सांचि मदस्य ७ ठोइ। तिहे ৰূপে তিরোহিত হয়, মানব জাতি মাত্র मग्राक्षरे जाहा (नरे कुछ। अज्यद मर्ख क्षंधरभन्ने म्बूमा वांश्र वञ्चत व ि पृष्टि करत, অভ্যুপর ভক্তিভাল ও ভলিচারে মনঃসংযোগ করে এবং পরিশেষে বাহ্য বস্তু অতীভ যে মন অথবা জান পদার্থ তাহার অনুধানে ও আলোচনায় পরুত্ত হয়।

হত দিন অন্যদেশীয়েরা কেবল বাহা কণাত লইয়া বাস্ত ছিলেন, সাংসারিক ক্ষতি প্রতিপত্তি, সাংসারিক আশা আনন্দ, সাং-পারিক বস্তু নিয়তই যত দিন তাঁছাদিণের কর্মার ছিল, তত দিন জ্ঞান গোচর ইন্দ্রিয়া-তীত কন্ট সাধ্য মনো-বিজ্ঞান আলোচনার প্রতি তাহাদিগের যত্ন বা প্রান্থতি মাত্র ছিল না। বিশুদ্ধ জ্ঞান উল্লেকের সঙ্গে সংক্রি ক্ষ তাহারী মাধানিত মানানিত করিয়ালিকেন, এবং দেই লালোচনা ছই তে পরিআমের কল বরণ বিশিষ্ট উপরার লাভিও করিয়াছিলেন। অধুনা কেন্দ্রই জ্ঞানের উন্নতি, তত্বামুসন্ধানের উৎকর্ম লাভ ছইতেছে। লোকের মন বাজ জগতের দেশীলামান অথচ ক্ষণভঙ্গর অভারী পদার্থ ছইছে বিরত হইয়া "গত্যাম " লাভেই সমুৎস্কুক হইয়াছে। আমানুসন্ধায়ী বীর প্রকৃতি বীত পাপ স্থবীগণ মনুষ্য তত্ত্ব মনুষ্য মহন্ত দর্শকি ব্যাকুল হইয়াছেন। মনো-বিজ্ঞান, অর্থাৎ মনের শক্তি প্রকৃতি প্রতি বিধি বিচার করিবার শাস্তে, এক্ষণে সাধানির বিধি বিচার করিবার শাস্ত্র, এক্ষণে সাধানির বিধি বিচার করিবার শাস্ত্র করিবার শাস্ত্র বিধি বিচার করিবার শিক্ত বিধি বিচার করিবার শাস্ত্র বিধি বিচার করিবার বিধি বিচার করিবার শাস্ত্র বিধি বিধি বিচার করিবার বিধি বিধি বিধার বিধি বিধি বিধার ব

কিপিণ্ড বিবেচনা করিলেই প্রতীত হ-हेटव (स राध कनः मम्हलः मनुवाहे मनुवा कीवत्मत क्षाम छत्ममा। **षाना**क हे छ। বগত আছেন যে জমতের মহিন। নহীয়ান कताहे आमानित्यत में विश्वकृषे सका। কিন্ত প্রথমতঃ স্বীয় স্বীয় প্রকৃতিকে মহীযান না করিলে দে লক্ষ্য কোন ক্রনেই সম্ভাবিত श्रेटक পादि मा। एके वस्त एकियाहै अ-টার বিচার সম্ভবে। যে পরিমারে স্থাই পদার্থ মহৎ সেই পরিমাণে তাহার শ্রেফী মহৎ; আর ষেপার্মাণে স্থন্তি অপক্লন্ট দেই পরিমাণে জ্র-উলে অপরুষ্ট। ছর্ত্ত অদদাচারী পাপী **ब्लाटकत वावहात दम्थिया यनि शहरमञ्चरतत** সত্ব। ও অৰূপ নিৰ্ণয় করিতে হইত ভাহা হইলে তিনি জ্ঞান প্রতি মঙ্গল ভার বিব-তিজত দৈতোর নায় অভীয়মান হইতেন। সাংসারিক লোক ভিন্ন শার্মিক লোক জ-शटक याम निवास मा कार्रक, कोश श्रेत्रम-निভाटक रचात्र नारमात्रिक बनिजा स्वीयं हे हैं छ। वास्त्रिक मनुवाचारे मञ्जाब निकृषे छ-चातत क्य जानमां तिरे क्य चान

বিশ্ব নির্দেশ করে নির্দাহিত করিবার বিদ্যালয় করেব করেবার আবার অনেকে মনুবা করেব করিবারে বিদ্যালয় করেব করিবার আবার অনেকে মনুবা করেব করিবারে আবার অনেকে মনুবা করেব করেবার করিবারে এবং "সভ্যের জার "পৃথিবী মধ্যে ঘোষণা করিবাছে। ঈশরের জ্যোভিতে আবার ঈশরের মুখ জ্যোজির জোজিতে আবার ঈশরের মুখ জ্যোজির রোধ হয়। সাধুতে এবং ঈশরের তেওঁ করেবার হয়। সাধুতে এবং ঈশরের রেভ এই কর্প নিসূত সম্বা। অতএব ঈশরেকে বাঁহারা আপনাদিশের জীবনের উদ্দেশ। মনে করেন, খীর স্বীর আস্বার উৎক্ষ সাধন করিবা সেই সেই আত্মাতে পরেম পিতার স্বরূপের পরিচর দেওরাই তাঁ-হাদের কর্ত্রা।

কিন্তু সেই আত্মার তাবং প্রকৃতি এবং গতিনিপি আলোচনার অভাবে যে বাজির নিকট অপরিচিত রহিল, তমিহিত তাবং মহত্বই যাহার বৃদ্ধির অগমা রহিল, বিশুক্ত বিচার অভাবে যাহার আত্মা আপদার "শ্রেষ্ঠ কোম মধ্যে" ঈশ্বরের প্রতিমূর্ত্তি না দেখিতে পাইল তবে সেই হান অনুমত পশ্বৎ মনুষা কি কপে জীবনের লক্ষ্য সাগন করিবে, কি কপে ঈশ্বকে প্রাপ্ত হইবে? অভএব বিশিকীধর্মোল্লির পক্ষে মনোবিজ্ঞান আলোচনা যে কত দূর আবিশ্যক ভাগা সহজ্জাই সকলের বোধগমা হইবে।

महमात मसूरपात छेललका, मसूषा मरगारतत लका। केवत मसूरपात लका, এবং
मसूषा केवारतत छेललका। केवत फित जात
महत्व लेका जरलकार बाधा महत्तः।
सकत लेका जरलकार बाधा महत्तः।
सकत लेका कर्म स्थिति हरेगा ७ हे
बका छ विश्वतारका जाया होक्य क्तिरहरू।
छेललकारक लेका करम स्वारत केवारक विश्वतारका करमा होक्य क्तिरहरू।
छेललकारक लेका करम स्वारत केवारक चित्रका हरेगा मध्याती हम् अवस् लकारक छेललकारक होगा मध्याती हम् अवस् लकारक

वरण भरिन्त करता अज्ञाद संचाहरू व्यक्ति हरेटल हरेटल के होते के नामका नक्तन साथ व उम्रक्तिनाशक करादक कमानंत्र कीरात पिटक लंबेशा चाबेरज क्रेट्स, क्यर তাহা ৰিগের তজ্ব নিৰ্বেশ করিয়া তমধ্যে তাহার অজ্ঞানর চিহ্ন দেখিতে হইটে मत्मा-विकान है है होत कि मत्नि हुन উপায়। यक निम भःगादत आहि कंडे দিন ভতুপ্ৰোগী অনেক কৰ্ম इडेटव वटिंग, किन्छ कीवंदसत गांव कन्छंड़े আজোমতি সাধন করা। ধাঁদার সাংস্রিক অভাব এত যে, তিনি তাহার জন্য আপনার क्रमट्यः। विक्त पृथ्वे क्रिक्ट व्यवसङ्ग शीम मा, তিনি আত ডুডাগা; আর ঈশর-এমাদে নাল্য সক্ষ অবস্থতে হীন পার্গিব অভাব সকল বিশেব ৰূপে অনুভূত হল না,ছিনি গৌ খ্যা मन्त्रवा किन्न मक्टल्ड्डे पादन करा छ। চিত যে, আত্মহি আত্মার এক্যা, সংসাব নছে, मेश्वह आधात नकता. मः मात न**्**षः 😨 रचंत्र विषय छाड़े त्य, खांकावना क व्यक्तिन व्यवसीनं रूपता घयाय हेरात खमाकात क्रमण अपनीत क्षेट्रहा हुने व्यवहुत **छेटम** भः मृत क्हेश जन्दम कीवटनत यथार्थ कान घट-रकर घटन बसुमिक व्हेरहरह. এবং উল্লিখিত-প্রকার জাতীয় টেশ্শবাহস্থা षाडिकां व वर्षेया भाषातर्वत घटन अकुन मसूयाजाद भक्षति वर्दछ । अम्ब ७७ मसद्ध भरम्पतस्थान भारत्यतः भगापतः स्ट्रेटव ভাহার আশর্যা কি ৷ শত চব এই ছুত্তং विषय পर्या(दल्याका क्रिवात क्रमा यनि आ মরা অপ্রসর হইতে দাহণী হই, বোধ করি माधातत्वत वांधावायुर्धान ८०की स्ट्रेटन मा। ফলত এত্ত্বিবরে স্বার্থের সৃষ্ট্র আ মরা আপনাদিগের অনুপযুক্তা দীবার ক্রিতেছি। আমরা বিশেষ কলে অবগত भाषि (पु नगरम मगरम अवसारमाहनात का-

প্রাচিনের ক্রিক্তান নিত হলে নিপ্রিক্ত চুইবা কিন্তু প্রশাস্ত্যারিক দ্যাপীল বি-ছান পাঠক রগের নিকট আনাদিশের গ্রহী নিলেদ্ধ বে উচ্চারা অনুপ্রহ করিয়া আনাদিশের অন্তিজ্ঞানায়ত দোদ মা-জনা করেন, কারণ যদিও আনাদিশের নান ভাদুল উন্নত না হলক আনাদিশের উদ্দেশ্য বিশুক্তা।

ভদ্ধবোষনী পতিকা চিন্নকালই ঈশ্ব-दब्ध भौतिष्ठाविका, खोक्तप्रकांत्र महकातिनी। " এক মেবাভি ছীয়- ^{''} ঈশ্বর ভাছার জ্বাদ্যার গন 'একমেবাদিতীয়ং' উশার ভাকার राष्ट्रकत भूक्षे । यथन य धार्य व केस्ट्रह একটিত হুইয়াছে ইশ্ব অন্তুম্কানট প্ৰাব एका हित्सका जनभन्नी कारात है। कार्यन जन प्रश्व नका। एउं उन्न लिल भाग गरेश। ত্রোত অভিবাহিত হঠ্তেছে, নানা বিপদ লাপ আল লাজৰ কল্লান্ডে, কিন্তু অভৈত লাবে চিত্তকাল ভাত্ত্বাহাছিলী সেই আলোৱ-ভদ্ত প্ৰমেশ্বের মণিয়া ভীন্তন করিয়া-ছে। স্থান খোল, বিচার বিদ্যান, প্রাক্ প্ৰস্থাৰ প্ৰালুকা, লকলেৰ মধা স্কলিত জিং व्यक्ति भारता एक्कीशामांग व्यक्तम शक्ति-নাজে 🔻 প্ৰত্ৰ সক্ষ মলোবিজ্ঞান বিষয়ে आपना करिना का कवित इ अक्षेत्रव इंदेशाम, ত্তপ্রত ও তাল্ড ম্রিসে ছেব্রণ ক্রিব, ত্রাপ us বচার ধাবে, ক্ষেও যে প্রকার মত। इस्त, भाषा का भारत प्रा**रमध्यत महिना** েছাপ্র: এবং রেশুস্কর্ম **প্রচার। পাঠকরণের** आर के अध भिरतने त्य सुक्र सुक्र केसी-বিত মতা জ্যোভিতে যেন ভাষারা মেই মত্ত স্বৰূপের বুগ জ্যোতি নিবীক্ষণ করেন, खबर शास्त्रक गएक **मररवांत दर्शायया त्यन** লাখালা আন্বাসালের সহিত এই ছবাই বিব-বের সম্ভাগেরায় অর্থ হন।

নেকিনা পুৰাৰ **অন্তিলা** আৰ্থ সারিক ব্রা**ল্**নিনাজের রক্ত্রহা।

एक इसे साम उत्तान संख्या । १००० व

পৃথিবীর পুরায়ত্ত আলোচনা করিলে প্রতীত হটনে যে, বখনই ধর্মা দির্ভাবতঃ। ধাষণ করিয়াভিল তথমই তাহার পরিবর্তন क्रमा त्नांदकत व्यनन देखां क्रिशिक्षिन अ ভজনা প্রড়ত আনেশলন উপস্থিত হট্যা लाक ममास निश्रमा क के के शोहन। यभी निर कुरायक् राज्य क्रिया भरमान कीवन केम्प्र भी जि लादिक कामरा अविष्कि करत मा, অলীক জিলা কলাপ্ৰসাধ বাহা অলুটানেন यांत्र छोडात्मत मन्त्रान महत्वात्याच वृक्ते वनः खाइकि (कर्म (गर्द भक्त शहा अस्प्र_ि মকেই য়াক্তৰ এক মাত্ৰ উপাৰ বলিয়া জ্ঞা ঞ্ব। ভাষাুশিলের স্থে সভোর জেগতি-इत्समः भूति क्लेपा खाठेटमः अने अनखाटक লোকে সর্ফা হাজকাদিতোর একান্ড সংগ্রান্ত इत्र को <mark>स्वास्त्र भारत करत (ब. १मर्स</mark> सकल भारत যাজক, ঈশার ও মালুমেরে মাধ্যান সাক্ষা 🔻 🌣 ছালা এমত বিশ্বাম করে যে, মেই সঞ্চ প্রসাজন উম্পত্তক লাছ বলিবেভিনি কাণ শ্বনের। ধর্ম সাজকেরাও লোকের এভ জ্ঞাপ ভাষকে আপুনাদের ধর্মা দাগনের উপার কহিতে কটি করে না। ভালার অগ্ল ভাশিন বাছ জিন্মা-কলাপের মংখ্যা বুলি कहिए राष्ट्र करन. उन्होंना विज्ञासन कारन त्य, यड है किया क्यारिश्व मध्या विभिन्न क ইবে ভত্ত তাহাদিপেরই মুদ্রাধারের পুরণ কাৰ্য্যের প্রতি মহকাবিতা করিবে । তাহারা নর্মানাধন জন্য লোককে পীড়ন করিডেও गटकार करत गांत- जाकाता निकामित्रत ग-केंग्रेस केवरण जो अस्तार योती करेका रजवन

লিত্ত হালে মনোবোরী কা বির্ভাব ছাতে লোকে মাজনা-লামক আন্নিমন্ন অকৃতিম অনুভাপরপ প্রকৃত থাযুক্তি ভাব জনত লাক করিয়া কতকভুলি বাকা উচ্চারণ, অথবা কল্পিত পরিত্র জলকলেনি, অথবা থক্ম-ষাজ্য দিবিকো দান, পাপ নেত্তের উপার বলিয়া অবপারণ করে ও ভদনত লে প্রকৃত হয়। পাপ মোচনেব ওপ্রতার সহজ্ঞ উপায় অবপারিত হততে পাপ অব্যান হত ভাব প্রতার সহজ্ঞ উপায় অবপারিত হততে পাপ অব্যান হত ভাব প্রতার বিশ্ব হত সা

इंदर्शत्त्व अक्षी शह (मध्रम निहिष्ट् रय रथम्हे वन्त् स्थास् चितिक स्था, क्रायम् छ(हा ানবারণের উপায় আপনা সংপ্রিট ঘটিয়া छठो । अन्य छ।हानि च निकासिया वानर के ।गर्भ छ। इति । श्रीतार्थन कमा स्थारकन कव মৰ্ব ১৫) ছেন্ম ও জন্মন। প্ৰভুত আ भाषां अवस्थित हरेगा । ताक महाह विभागात्र रहा जेलातात व्यवस्थात असे ध्वमाबात्व काटन भागत केलटमधी बट्यी १ भागा दिसिके जनाप नेयत श्रद्धां के के প্ৰতি পুৰুষ কৰিব পুৰুষ সকলল অৰ্নী-मक्षक भागपुक स्टाम । केश्विमिद्धाः शास्त्र व्यक्ति । धानः तजात्यम् । महन्तः । कार्ताः । क्ष्रेत्व ऋ उस्ता भावस्थित पादकीत्व १ क ह प्राप्ति किंक वर्ष किया स्थान क াদিবোর মবেয়া স্বাভাব আয়া এক প্রকান इर्म प्रतिवास । अकल भारति ७ मरुः, ध ্**টনার উপর সংবক্ত পুরুষের একটা সাধার**ণ **बिशन, व चाटह क्वत हे**हा विश्वान केविहें তাঁহার। সম্ভট হয়েন না। প্রত্যেক স্কুল ঘট না প্রাস্ত তাহার ইন্দা বশতঃ হইয়া থাকে, योगात समीम शक्ति महत्त्व किंदूरे इन्द ं नदहः याद्यंत्र गर्तम् कृष्टम् मश्रदक किङ् क्ष नद्द अगड विद्याम कहा डीस्किटलर व अंतिमक् स्थेश यात्र। जेवादक क्रीमा

मेम्राटक बाब्ध रहणांका, मेम्राटक डेन्ट्रान क्रहा के कि निर्मात की बर्गत कर्म लका। अना অনা ধর্মানন্দারীরা আধ্যাত্মিক উপা-मनाद छोटन त्व भक्त भगान्न धनीक जिन्हा-कवांश-कर रोध अगुक्रात्मत्र द्वार्थम करत्, त्व गकल आहा **असूर्श**कारक की**क्सा अका**ख कृष्ट करतन: माथरकता मेथ्रतरक रवसन বিদ্যান্তের ন্যায় একএক বাব দেখিটে পানি, डीहाता दमक्या अक अक्योह दम्द्रभन है। के विश्वी मकानाम (यहा दकार्गाञ्च दकार्गान् (क पर्याचिकरण १८८वर ७ मध्यु**राङ राङ्**त सर्या केरिया भारक भवताम छ स्रोक्ष कर्यन । भार करा द्यांच्या पक्षारंगी स्थान श्रीकी বৈব্যার ভারিজন। জন্মের ভারার জনাদ बाह्ये हैं। १४ अप्रदेशाय अना । होन (एकु न्द्रीकृष्टि करान मार्ग क्रिकाल कामर नाम ক্ষিয়া উল্লেখ্য প্রাণিতপুদ ও জন্ম মঞ্জনেয়ে 基施 今位日: 山山 东西川, 机碱性水水 ামি ওবা,ৰাশগোৰ এতে অনিজাতি খণ ্বংশ ভোহাত্ত ভিন্ত মানী্দ্রেন্ত লক্ষম (医 衛門所信息 医胡椒粉 斯柳西藏作鱼) यम्। १८ अञ्चलकार्यन । साम्यः । १८४ (भटावा स्वास म व्याप्त स्थाद क्री राज्य क्रिक्ट क्रिक्ट . पर्याप्तर मारा प्राप्त कि कि । कि प्राप्त का प्राप्त के 排除的 化光明相下 赋作 崇华的 机水黄生物 姓氏部队 机压缩电压 化氯磺胺 医二氢异霉 医二烷烷 च्या व व्यक्तिक प्राप्त कालेशक कीलेशक कालेशक (१) । विकास ४ व्या संबद्धि । १ विद्राह । विद्राह । १ विद्राह । १ विद्राह । विद्राह | विद्राह कें हि लिखेत कि इस है । इस इस इस इस इस भिष्याद्य नित्कडम भदर् । ई.क) निर्धाय मुक्ती व्यानम्बर मुकुट, काटाः कास्रवाट । वार्योर यमाठा व्यथनः कृष्योगांगरणत व्यक्ति छ। हार्वारमध एक अपन गाँधे। डीवाडा भार्थित वस्म अनी नतः म, केंद्रितः भवम भद्भ धन्ति । ज्ञानकः। অনমান-পূৰ্ণ শক্ষাভ্ৰৱযুক্ত বাকা বিন্যালে भट्टे नदहन,ग्राचकांगम् ७ मङाहे छैक्तिहान्।

रक जाते कर गांव वर्णकातः। जीर्शनद्वाव কুলীনত্ব কোন মউলেলাকের রাজা কর্তৃক্ র্মন্ত লহে, তাহা সেই রাজার রাজা কর্তৃক श्रमक, योष्ट्रिक शिर्वागन हारवारक अ कुर्ला-কে প্রি**টি**ড ইহিংগছে। ষ্থন সেই स्वक भूक्ष के शिक्तित्त याभगात मभी भ १**डी** का**तवात** विभिन्न अविमा नाम तक्षिा-इस, उश्रम डीहिति। कि श्रदान वाछि नरहन? काशि क्रिकेट विवेध इस. उथापि गयन কেছোল বিভাননে থাকিবেন তথ্য উচ্চাবা क सकलम्। यह वर्गाक वरहरू २ किंहि। सिट्नित्रे শ্रू मापन हार। सम्बंद कर्नुक कुछ कर्रल्ड गरेसा-मकल विहिठ ४०आहिन। छीहापि-ুগর্ই জনা রাম্যা সক্র উচ্চিড, উল্লভ ে বি-্ৰ হইয়াছিল, ধৰ্মায়ে মহাপুক্ৰ লকল अस्य ध्यञ्ज कविशोष्ट्रिकतः। क्रीमानिर्धात्वे ाक्ष्म क्षेत्र तक अध्यक्ष क्रिका मकर क्या अल् अकल बहरा कांब्रा (चार्टक । किंदू-। भा, शतक सम्भूष कामा भाषा ध्यवक्र ५५। भागा वानम क्या ५ भिश्रद महा वार्यस भिराद्विस । भार्ति (मा शहर अवस्थापक) (महे रक्षा-धातकेक भिष्यंत्र **व भिक्रा**बिल एसम्बारः निविध्य ५ हेसा ाक्ष्म । व्यक्तिमानराज्यस् स्वकृत्रः क्षात्रः क्षात्रः িলা-নিগেরিভ শোণিত ভভলে পতিত रहर्शकिक। व्यापना शहरता व्यापना विशेषक लक्षत्रं क्षेत्र र १ क्टबन सा। क्षित्रांका छ-প্ৰিয়েক্স এইড়। সংগ্ৰান ক্ষান্ত বিচয়ৰ কারেন। গলম এবস্পাকার ধার্মিক পুরুষেরা ঈশ্ববের वभागता क्षांत्र करतत, ज्वेन कांबानिराध प्रमाद्यांक (द्रांश-इसंव अवृत्ति क्रांकित व्य-भागादिक लक्ष्या भक्त मुख्य २३। हिस्ति। যদ্যপি বেদেবশভা কেনি একটা কুত্র কু-कच्च कटत्र ७ ७ १ इहेर्स्स डॉइन्स्पिर्गत चाम्मिक योजनांत छ। ब नीसा वा**टक** सः, व्यन वसः वरकाहः मध्य मगुनः कि आत्मानिक वस्त विश्विमित्ति सम वसम् ध्रमान छेटस्य

दहेबा किट्रो । कीहाबा क्रथमा विदास शह পতिত बरेश भरे चार्डनांच करतन रव "अ-स्टम वक् डाहात मूथ आमात निक्छ हरेट नुकाशिष वाशिशोद्या । यथम काराज थ-সাদ আমি হারাইলাছি ভথন আমার কি तिहिन ? ' हातारत कीयन गतरन कीयरन ফি কাজ আমার : ' ভাঁগরা উপাসনার সময় মনের এপ্রকার উদ্বেলতা প্রকাশ ক্-রেন কিন্তু সাংসারিক কার্য্য সম্পাদন সমরে ভাঁলার সম্পূর কপে ভিরবী ধারেন। আন क्रद्यात कियत शहे स, माश्मारिक कार्या मन्त्रान्य महत्य ज्ञानात् भत्तत् द्वित्र है। मिरुश्त बर्गालगाच हुई एउटे उँ धना इस्। অনঃ ভাব সকলকে এটা ক্রিয়া কেলে। कॅशिएमत राध (धय, क्लीब, खत, मक्लके किकारमन परभारमादस्त अनीम । मृङ्गः मा क्षानत निकृषि सर्वायय स्टब्स् व्यार स्थान सिह रमत सिन्छे भरमान्त सरकः। छ। । । भागा जम्मान हेलाम १ ८ मान धारक दर्ह কৈছে পোহা সাংসাধিক বস্তুৰ জনা নাং। भरमाध्याव कें।बारमव मनदक बाखदाव क काह करत. कोशारणत कामग्र हशरह कारम প্রতি এবং পক্ষপাত দুরীরুত কলে এবং हारात्मत विश्वत्य विश्वम् ७ व्यापा ७८ वर्ष পরাক্রমের অভীত করে। ভাগার। পৃথি दौरक (लोक्नएछत्र नाम् क्यान करहम्। मञ्जूरवात महन के। इंटिमत मध्यान चाहि वरहे, কিন্ত তাঁহারা মানবীয় আছ ভাবের উপর; स्थ ६१थ जा। छ ७ कक मन्द्र हाराज्ञ মতব্ব। ভাঁহার) অন্ত ছার। শক্তি হয়েন : না, বিশ্ব বিপত্তি ছারা প্রতিষ্ঠ হয়েন নায়ন ভাঁচারা ক্ষতিকে লাভ বাধ করেন, লক্ষা-क (भोतर भरन करतन, कवर मृङ्गरक का জ্ঞান করেন। তাঁহাদিলের চিত শান্তীয় क्लीनका विषय अञ्चलक करते हैं कि क

বিবরে ভাষা খতান্ত কৌনল। মহুবোর খাপ জনা তাল কি প্ৰয়ন্ত ব্যবিত হয় क्षांचर्ना कहा योहेटक शास्त्र मा। शाशी मसूटवात शतिकांग अना ठीहाता गर्वनाहे কাতর চিত্তে ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করেন। কোন বাজি বেনন ভাহার ভাতার ছ্রবস্থা ভনা জন্দন করে তেমনি পতিত মনুধার জন্য তাঁহার। সর্বহাই ক্রন্সন করেন। মনু-ষোর পাপ জনা বিসাপোক্তি তাঁগদিগের বজুভাতে মর্কাদাই উপলক্ষিত হয়। ভাঁহার। कुमबद्वाचे कुटलाकभूनं मभाटकचे कम धारन करतम। (लाक ममोरकत रच मकन (लाम अ অম সাধারণ লোক দারা অনুভূত হয় না, त्म मकल (माय ७ अम डिलित। श्रीय अर्ग ধারণ বীশক্তি দার। অনুভব করেন। ভাঁহা-रमंत्र छोट्या रकदन जनवान विन्तृ । धन-গ্রহই ঘটিরা থাকে। ত্রফ লোকেরা জা-হাদিবোর সম্পূর্ণ শক্ততা করে এবং ফে পর্যান্ত তাঁহারা না নিহত হয়েন সে পর্যাস্থ ठै। हां जिल्ला का बीतिक अथवा माश्मातिक মন্ত্রণা দিতে কান্ত হয় না। কিন্ত হত চই-वात मभटप्रक जैहिता स्रीम निधक्षांकि গকে মনের মাহত আদীকাদ করিয়া আগে-नान्दिनंत अनाद्यत अमादांतन उनाया अ **কাশ করেন। এঞ্চকা**র বীরপুরুবেরা ভারি मयुरानित्वत अञ्चल शमसाशमन कमा निष्क ককক ৰার। কভবিক্ষত শোণিতাকপণ **হইরাও মহা কফে তুর্গমন্থানে লুভন স্থাম** পথ শঙ্গত করিতে যত্ন করেন। এই প্র कांत्र मसूचा बांता है जनसे जाएका लिए इस । এতজ্ঞপ মহাত্মা-বিগের ধর্মোপ্রেলর এত वन व छोरा वर्षना कहा यात्र मा। य গীর অধিবার। ভারতেশর জিলা অবি-नम रुव, डीस्ट्यत मुख्या विश्वट्डव नाव व्यक्ति भारत कटर, विक्रममनदनाई महिक जीवार्ति वृथ वर्टि गर्का विविध्य वर्षा

বরং বাগ্রীভা আসিয়া ভারাদের ওতো-शति वाति उ हमा वन दिवटत वल-বার সময় ভাঁহারী কোন ভর্বারা সক্তিত स्य मा । यम्प्रानिख स्मिनि की सीमिर्गत कथात्र কম্পিত হয় তথাপি যে আম তীহাদিনের मंडेटक चेनिटंडिए छोटा धर्मीनी में क तिया कथन है का छ था किए भारतमें नरी ভাঁহার। দক্ত দাংদারিক কার্থা পরি-कार्त्वा ध्यव्य ভাগি করিয়া এর্ণ্ম প্রচার হয়েন তাঁদারা যদি অনা কার্যো অয়ত क्टब्रम प्रोही क्टेटन (क स्पन कीक्टिन्द १२%) भाकमन कतिहा है। विचारक अलाव कर्रकी नियुक्त करतः। है। शक्षा मार्थ कार्य। मान्यामन জন্য বিশ্রাম আগারের আর্গম ও প্রিয় ব জুদিতোর মনোরম সংসধ পরিভাগে করেন। नके क्षात्र कर्ना के के कि कि कि कि कि कि कि कि প্রিয় ও নিজের প্রতি মিঠুব করে। দেই শর্কতি তোঁলদিশকে নিজা হুইতে বঞ্চিত্র करत ७ गातवाम विषय व्याचि भूना करत। ভাঁহার। বলি স্বভাবতং ভীয়ে ও কোমল শক্ত হবেন ভগালি উংখারা যেন কৈন-तल काला ज्यमीयातन माक्सी ७ करो-महिक वक्षां छेट्या शृथिबीटक मापि स्थानन-त्वत्र अक्तिश्राहर क्षेत्रीका अभागन आध्यस करवम किन्ह कार्या ध्यप्ति एसेन केटन ना। ত্ৰীকার। চতুর্জিকে আনি প্রজালত করেন चात । य वर्षास्त्र नः । तारे भाषा अक्तिस् हरा काँशिक्षित मन अर्थम्ख शटक। मक्दल-बर्टे मदक की हाएमब्र दिवाम विमन्नान के शक्तिक रता वाशक्तः को नाभ त्याव हत् है।-हातां (धन दक्यन मःहात कांग्रेडिंहे शुक्रि-वीटण अन अहन कतिशादसम किन्छ रहा छ। रपमन डीहाता भूताज्य बंडीलिका विमान করেন ভেম্বনি মুভন **অট্রানিকা** ও নির্মাণ করিয়া যান। যে পর্যান্ত না নেই মুডন আ-अनिका निर्मित्र देश मि अवीह है। बाता

তাত্তর হতের বাণ ব্যাদ পুরাতন অউলি-कात त्यान व्यक्त डेडम थाटक ଓ कोहाटक রক্ষা করিতে পারেন ভবে জাঁহারা ভাহা त्रकः कतः क्योजारभाव विवशः स्थान कृत्वन, किस ग्राणि कान अश्महे छेडम ना पांटक करव (म भूदां इन अजी निकास्क मनाक्करण ভাক্তিয়া ফেলিভে ভাঁহারা কিছু মাত্র স-ঞে। করেন না। স্তরাং সকল লোকই ভাষাদিলের শতদ হয় এবং বিপদ্যাগর प्यामिश उँ।शनिश्राक विकेत करत, किस জন্ম প্রাহাদিলকে কথনই পরিত্যাগ কবেন া। ত্রিন কথন ভাঁহালিনের আসাকে অধনত ও মিরমান হইতে দেন না। তাহা-াণ**নের কারাগানে**র প্রচিটের তিনি স্থলীর স্থাবের ছবি চিত্রিত করেন। ভাঁহাদিগের अप्रत कृष्टित थटचंत्र क्याविः मर्खनारे मीलि পায় कथनदे निकाण रत ना। केंगिता ने ध রের অন্তুচর জীহাদের ভয়ের কোন কারণ नाई।

वित्रहम। कृतिक शशीह क्रेंदि था, পুরুষক্ষিত বংশার বিক্সাবস্থার লক্ষণ ন व्यक्तितित क्याकृषि ভाরভবটে कृष्ठे इहेट इट्ड ७वर धर्मा शतिन्छ न कमा লোকের একটা পাবল ইজাও জনিয়াছে अवर क्टे जगावीरण काशान्यासी समावा-इन सर्का भाषी, ७ सर्व मध्यात कार्या प्र-म(धात्र करण यहवान्, धकास क्रेश्वर প्रदा-यन, कन्छे महिक्षु त्वाक मक्वल आंश्रानित्वद्र बद्धा छेपिछ इरेग़ार्इन। दगरे मकल जानि-श्रीकांद्रकांद्री नाञ्चिमित्रात मत्था व्यक्तिशंभ খাকি বিছান ওধনবান্নহেন কিন্ত ভাঁহারা लदा विकास विकास ७ शहम थटन धनी, धन यश्या विभा शक्तिक साक्तिश कीशिनिभटक कारम मां प्रमयान कराया विषाम् मर्था कार्रामर्थय साहि अहातिक नारे क्षिक जेन्द्रकोशिक्षिटक छेउन बंदश क्यांत्रिक रचव मर्थनी मरबा केलितबंद स्वताबि भोता विकासिक स्रेटफटक । कार्रामिटनंदु নায় শান্ত সমাহিত ন্মু স্বভার তিতিকু ब्लाटकरे देखरतत थित गढाने कामा राकि वार्शका डीशबिदशब्द बांबा के-শ্বর অধিক কার্য্য করিয়া লয়েন। যশ্বন रयमन मार् राक्तित अत्याक्षन इस के बन তগনই তেমনি সাধু ব্যক্তি প্রেরণ করেন। यथम এथकांत वाकि मकन वामानियात मरधा উদিত হইয়াছেন তথন ধর্ম পরিবর্তনের প্রবাহ আমাদিবের দেশে প্রবাহিত হইতে আর বড় আপেক। নাই। যেমন বণ্যার পুরের নদীর উপর ফেনা দুট হয় ও বলার শকার উত্তেক করে,তেমনি ধর্ম পরিবর্জনের নগার পূৰ্ক চিফ সৰূপ কোন কোন নহাত্ম ব্যক্তি দারা পৌভলিকতা পরিভাক্ত হইয়াছে ও পরিবর্ত্তন শতি গক্ষণিটোর শক্ষা উপস্থিত करें (७.६६; रयमन दनशंत शक्त न आदन न तिरम भूक्तिगीत रूप्या मकल (महें बनाति कदन मिनिताह करा। वाकित इत, एक मांस यश्स दाक-नार्यात प्रमुखान कार्जनक दहेरक पाकित्व छ পশ্ম পরিবর্ত্তন স্থানিত আন্দোলন মহা প্রবল্ কুল পাৰণ করিবে, ভখন পৌত্তলিকতা ৰূপ প্রিল ভড়াগেবছ ব্রাক্ষর্শানুকানী লো-কেরা সেই পরিবর্ত্তনে যোগ দিবার জনা অন্তির হইবে। যেমন বণ্যার দ্বারা আপা-**७७: नोना धकात होनी हयू, किन्छ भटत** ভূমি উঠেরो হইয়া যেখানে বণার कन তর্ঞ্জিত হয় গেখানে শ্ব্যা পূর্ণ উদ্যান স্থাক্ত করিতে থাকে ও শাস্তি ও সচ্ছন্দতা বিরাশ করে, ভেমনি ধর্ম পরিবর্তনের দার। স্বাপা ততঃ অনেক লোকে: ক্ষ্ট হইবে কিন্তু ভ वियाधः भौत्यता मक्कमञा लाफ क्रिकित अरमरक करे कुष बरमन (क क्वाज्य कर कर क वर्ष मिका (मंड ; अधिकाश्म द्वारिक वर्ष निर्माण पर्मा क्यांन कांच कतित्व अवर क्यांन काम स्टेटक विमुक स्टेटव, कथन पन कति। ব্রাদ্ধর্শের অনুষ্ঠান প্রবর্ত্তিত করিলে তাহা महद्रक अविनिष्ठ हहेर्द आंत्र कांन कर्षे शाहिएक हहेरव ना। याँहोता अन्तर्भ वरणन छै। होता विद्युष्टमा कद्वम मा त्य, त्य महल চিত্ত সহাদয় ব্যক্তি নির্মাণ জ্ঞান লাভ করি-য়াছেন তিনি দেই জ্ঞানানুদারে কার্যা না করিয়া কতক্ষণ ক্ষান্ত থাকিতে পারেন ? जिनि तारे गर्नमृत् भूकृत्यत मृष्टिक कट-कान कथि इहेशा थाकिटण भारतम ? जिनि পুঞ্জলিকা উপায়না ছারা আপনার প্রিরভয় ইশ্বকে কডকণ অন্যান্না কবিতে পা (तन > हेहा मुवार्ग निर्दे त्य (लांक गमाक हाछ मा इहेटन छोट्डि धानन छेलको कता यात्र, विश्व अरमन । अभाव এই छ्रायत असू-বোগের মণো কাহার অমুরে'ধ রাখা ক र्खेवा ? केमारसंस अनुदर्शाय तथा। कहा व्यदमा কউৰা, কিন্তু ঈশারের এমান নির্মাংশ উ হার অনুরোপ রক্ষা করিছে গেলেই দেশের सिमकात जाशनि जाशनि करेता संदर्भ। সীয় দুটান্ত ছারা দেশীয় লোকদিগের স্থ পরে কপটভার প্রতি বিষেশ উৎপাদন করা অপেকা দেশের হিডকর जात कि जाटह ? यमन भटांभका कमा मिथा। कहा फेठिए बटह एजमि (एटमात डे शक्त करा धर्म विषया कश्रीकात अवस्था कता कर्जना इस मा। विश्वक छेटलना हो-थम बाना व्यविश्वक छिभाग व्यवसम कर्ना कर्न-बहै উচিত হয় না। ধর্মা বিষয়ে অকপটি रहेशा विविध अकादत कि म्हानत उपकात कता राष्ट्रिक शीटत ना ? मल कतिशा धरमीन **অনুষ্ঠান আরম্ভ** কবার বিষয়ে পুরার্ভ গাখ্য थानाम करत्र मा। मका शास्त्र अक अकजन করিয়া মুতন ধর্মা ও তাহার অনুষ্ঠান সব-लब्दमञ्ज मुक्कील धामनीन कत्रियाहिल, छोहादमञ मरेशा भटत एल स्टेशांहिल। ये विनय जन्छीन जाइस रहेक मा त्वन अवस्य अकि-अक्कार्याच्या अ**श्रीराज्ये व**रेटव। প্রতীত হইতেছে যে ধর্ম পরিবর্তনের স্থ-थरमता डेलांग्र नारे। धर्म পतिवर्छन माधन করিবার জন্য ঈশ্বর সহজ সূত্রম রাজমার্গ বিধান করেন নাই। সমাজের শান্তি ভক মা করিয়া কোন মহৎ কার্সা সম্পাদিত হই-वाको निधव वाजीक त्वान वान জ্যের দোঘাবহ শাসনপ্রধানী পরিবর্তিও হই-যাছে ৰু আপতিজঃ অনেক গুলি লোকের কফ বাহাত কোন্ দানাজিক কুরীতি **উন**্ लिक इंटेश एक । (यभन शक ग्रांकनी वाकीक तालक, शुन्दर्शानवादमानगर प्रशितीदक म কিও হয়তে প্ৰেম ম', খেমন মহা যাত্ৰা ব্যতীত সনুষ্য পৰিলোঁকিক স্বাধন অবস্থান উন্তীৰ্ণ হইতে পাৱেনা, ভেমনি কৰী ও ৰেম নিপজি ৰাতীত ধৰ্ম শ্ৰিবৰ্তন কাৰ্ণোৱ मायम कर्ट व भारत रहा। निर्माण स्वीम, ध धरम भन्त माधाराप (नार्कर मरण) थानंति उ इड्ट्स भव पत एटिश अस्वेटिन सङ्ख हर्देव चस्मा करे क्षा कडरे लावित्व गांदक, অনিষ্টাইটাই ইপ্র এবলী আন্যামণ পুরুষ ceane करतम, विभि छपूरिकटक बन्द्रीकि लाघ লৈতে কেয়েক ভাৰত মাল বৰ্ণাৱেৰ কাম। এক बर्महरू मुख्यानिय सर्वन । अवतः विस्तिनि এই কলে পদ্ম পশ্মিষ্টন কাৰ্য্য সম্পাদিত क डेसर्राष्ट्र । अधिवन्य किङ्गेसमाधिक भियः । यत्र विक्रिक्ते साम् । व्यवस्थाः इताल धर्मः मा काद कार्या ट्या बटना बन्ना फिल्ल व्हेलाट्स क्षेत्रडन्टसं ३ छोर्। लाहे कार्यहे गण्याणिङ क्षेत्राहरू ७ स्हेरन।

अस्कादमद आवनाकका ।

(對| ()

अन्धीत्वत श्रावश्चावित श्रान्तक श्रान्त श्र-শার তক উপাছিত করিয়া ইহার অমাবদাকতা अक्षान कवित्त सबुबुक क्षेत्राकन । अनुकान काती आक्षतन खरिक ७ अनुसममी विनया नाथा-রণ সমক্ষে পরিচিত হইতেতেন। ব্দিও জীহার। ংগেশপ্রচলিত যাবতীয় কুগ্রথা ও কুসংস্কার मकरलाइ व्यवस्थाती कहेगा वित्रकर्कन, यमिष ভাঁছারা পৌডুলিক ধর্মারূপ বিষম জ্বলাল ইইতে আপেনাদিশকে সম্পূর্ণ রূপে উন্মুক্ত করিয়া এক माज महा शार्यात श्रेत छन्मतुन करिशाहिन, छशी-পিও অনেকে ভাঁকাদিককে বোর কুনংকারাক্তর রুলে পরিচয় দিকে কিঞ্চিন্নাত্রও সঙ্গাচত নহেন। এমন কি উহোৱা যেমন পৌত্রবিক ও জনাান। ধৰ্মাৰলৰীদিগকে ক ক জনগছুল নভ ও বিশ্বাস এবং ভূষিক আচার ব্যবহার সকল পরিভাগি কর্থানস্কর ব্রাক্ষ্দিবের সূতৃনাত্ত অনুকরণ করিতে অকুত্যেভারে থাফান করিছেছেন, ভেমনি সপার असमे ाजाक अपने इंग गाँशतः चालास्त नाचा दर मक्कारकष्ट कांचुकीस्काली खोकाल हेट्रांक प्रमृत्य अवस्थिति क्षेत्रण्ड अकारना छेश्रदम्म किर्ज्यस्त : এই রূপে অনুষ্ঠানে গুরুষ ক্ষয়াচেন বলিয়া সর্জ মধুনীজ্বিশপন আক্ষাননলনেত নাধারণের স্থা-स्थाकार कवित्रीत ८६की बादम खाटम स्थापक रहे-**ंकराज़ । या विस्त या बिस्तांग के कि विश्व करण ऋ**ी-ভরিঃ বলিয়াও সংখাপন করা তইয়াছে। আপচ (क्वस त्य ब) खरवूद ब्लोरक है। क्लोम कड़ेया की नेट्यांन केंग्रेटिङ कविप्राट्डम ध्रम्म नटम, किन्न क्यान कोन अन्तर डेकान मण्यू व विद्यार्थी स्टेडा উচিয়াডেন। যাঁহারা আকা নঙ্গেন ভাঁহারা খীয় খীয় সনাক নগো প্রভুত ক্ষমভাশালী ও বিজ্ঞ ক্রিয়া জামিত্ত হর্তদেও উলিচাদের অনুষ্ঠান বিষয়ক भक्त मरुद्ध क्यांकी आहा रहेटल शास्त्र मा, किन्द ক্রান্দেরাও যে ভাঁহাদের বাকে। মুখ্য হইয়া অনু-केरमञ्जलारम खिला लिएम हेटा आर नक। आरक-भाव विका कि **फा**एड १ त्वांक-उठ **फ**रवी त्वांन খাৰ্থের ক্ষীভূত হইয়া বে ভাঁহারা অনুষ্ঠানের क्षांत्रकृत्व मश्रामान इरेबाट्डन, जामि बक्दन ल विश्रप्त किछू विविद्ध छ।हि न।। देश विश्वनिक्ष (४. ব্রাক্ষদিশের মধ্যে এই অনুষ্ঠান জনিত অনেতে অ- ८५० पछ छिक्षांविक कांत्रप्रोट्ड। असुक्रीम विचयप्रवर्षन् মতের এতাচুক বিভিন্নতা দেখা যাইতেছে, ক্থন ভাষা যে একবার সাবশেষ আন্দোলন করা व्यापनाक जाहारण जाह गत्कह नाहि। वसुनान काही जामानन क्लोचितिक बटका क्रमाझनि निर्श

Tagis is where included as also willy anticular allaces delle vise fa 200 প্রব্যের সহস্তর প্রসাস, স্বারা সকলের স্বস্তর বি-वाम एक्षन क्या जांक कर्डना हरेग्राइके। बन्मता-धिक वालीक इहेन आधामिश्तक शहर तथान-कालन क्लिकांडा जोकानमारका बाहारी महा-শয় ভবানীপুরের ব্রাহ্মগদাক্ষ-দক্ষিরে "ব্রাহ্ম-সমাজ ও সামাজিক সংস্কারের? বিষয়ে যে ৰজু ভা করিয়াছিলেন, ভাছাতে অষ্ট্রান লইয়া প্রকৃত ক্লপে স্মালোচনা করেন। ভিনি ভাষাতে বিল-क्रम तुवाहिमारम्न (ए, भटमीह माहाया शहन ना করিলে সামাজিক সংস্কার কোন প্রকারেই সক্ষা দিত হইবার মহে; এবং নাজিকদিবের ত ক্যাই माहे, याँकात्रा मर्समा किसारक है काल, याँकात। দেবলগার সুক্রবিনাত ভাষাবলিপরিপূর্ণ সং মাজ সংখ্যার বিষয়ক গ্রন্থাদি বিধিয়া এবং অংশ শয় বাক্ণাটুভার সহিত বজ্ঞা করিয়া পরে ক্রিয়া কাবে হতেকে সজ্জিত করিয়া রাব্যেন, দীল তারা ঘেষন আগনাদের সক্ষপে শিদ্ধ করিয়া উ फिटल प्रावितनम् मा, रङ्गान योजाहा दिनावितेलः হাতা পণে অভিশয় উৎমাহিত হইয়া সংঘাঞিক সকল প্রকার আচার ব'বহার কুসংখার এক কালে विन्त्री कतिरस दिलाल इन. योहिला, व क्षांकि छ । রূপ বিশাল রুক্ত সহতঃ সহতঃ বংগর কাল ন্যাপিন। बूल रख इत्रेगाट्ड, खादा क्रक मिसरम खेदभादिक করিছে অগ্রসর জন, পরে সনাজতে কি নিগলে শৃষ্ঠালাবন্ধ কবিবেদ— ছাহাকে পৌৰুলিকভায় ক্স হউতে যেখন উদ্ধার করিলেন ভেমনি ছাংগ্র নিমিত্ত কি আহ্মহতান গুলুড করিবেন, ও শ कल व्यक्षणणार एक बाइस भागा भारका व्यक्ति लन मा करवन, छै|हारमंद्र मामन तमदे खल अम ল্পুৰ্থাকিলে! তিমি ইহাও সকলের অভীতি क विश्वामिशा फिटलम या, जाकानमाज अहे छूडे मत्नव মধ্য পথ অৱতায়ন করিয়াছেন, অর্থাৎ এক মাত্র বাকেরে ওপর নির্ভর না করিয়া হস্তকে কিনি পরিচালনা গরিকেছেন, এবং যেমন পৌতলিক আচার বাবহার সকল আপনার সীমা হইতে ভূর করিয়া দিভে। চন্তেদনি আবার ভৎপরিবর্তে উৰক ও ধৰ্ণাসুমোদিও বিশুদ্ধ আচার বাৰহীয় সকল আপদার পুতাগা ৰাখ্য, প্রকৃতিত করিতে-एक । व्याज्या द्वामागमान निकार क्लान-कच्च इटेटवन् । किन्न जीवात वक्क् का कर्षिमाना रहेरलक छाश विरामंत्र करनामधीती है। नाहै। देशक कांत्रण महरकार स्थायनाका बहरका अध्याप वयम छाहा रक्षण अन्य मध्याक साक्षित्रहे अवन कुरुद्ध कार्यमे क्षिणाहिन, वस्त जादा प्रकर-कार्य क्रमान कांत्रका माधावरणक रवास्त्र क्रम क्रम

মাই, তথ্ন বৈ ভাদারা বিশেষ উপকার সংআছি প্র নাই আক্টা কি ? ভবে ত হা
ইতিয়ান শিরুরে পরে প্রকাশিত ইইয়াছিল।
মাঁহাদের অনুষ্ঠানের কর্ত্তবাতা বিষয়ে সন্দেহ
উপজ্জি হয় উচ্চাদের দকলকেই ভ্রুপার্ট আনি
বিশেষ করিয়া অনুষ্ঠাণ করিভেছি, অনুগ্রহ পুরুক
ভাহারা যেন ভাহা পাঠ করিছে উদাস্য না কবেন। একংগ আমার ইহাও অভিনায় যে প্রামাসমাজ গেই বজ্ল ভা শুক্তকাশ্বরে মুদ্রিভ করিয়া
সাগারণের প্রেট্র করেন।

(ক্ষেশ্বেথকাশ্য)

सहयान गांत।

शास ६ देवसीय जारक्यम् मस्माद्धांस की स्वादः प्रमासिक हार्तिमिकाक उपाति हार्गित राम विकास कर्णात हार्गित राम स्वादः विकास कर्णात हार्गित हार्ग

বিহল এক বৈলন্দ্র কিন্তু কিন কেন পারেলি আমেনটি শীপাই পুনারিটারিকে হাইবে। ছাঁছার স্থান ব্যের জন্য ইংলক্তে ভার্ম স্থিতিক ইইছেছে। আনন্দ ভার্মবাকি, এবং জালাকালেনা সাজী পায়াক লাক-বিষে শাল করিলেভেন। কিন্তু নার কিনে বিজ্ঞান হাইবে ইংল্ডের ব্যাকেন্য কভান্য কিনেশেস পক্ষা, এবং ভাষায় খাটীয়ান খার্মিন কল ভান্ত

শ্রীযুক্ত কেশবচন্দ্র সেন প্রজাব-ল পেশ্বা এবং কদীয় অপর একটা ব্রাহ্ম ছাতা যে বেগ্রাই ও মাল্রাক্ত দেশে প্রাক্তবর্গ প্রচার করিব ল বিহাছি লেন উাহাদিশের অধ্যান্ত স্বিলেধ রন্তান ভিন্তা আকাশ করাবাইভেন্ত। ভাগোঠে বোপ ক্ষরি লাই-কর্ম বিশেষ কৌতুক ও কাম লাভ করিবেন। মন্তব্যার ১ই ক্ষেত্রখারি।

अस्त वादल किला आशात करिया छिल क्रिकार वह वसू कांग्रा गितिसक हरेश शृहित्या मारक भनन करियान। हर्जुकिक र्क्क्सिकिसक आहुक। क्रिका किल्लू किला शिव मा। रूक्तार कामते हरे करें। कांग्र नि कीटन कार्यका करिया शहिन नाम। क्रिक्सिक शहर कांक्सि शहिका हरेश कांग्र। क्रिक्सिक शहर कांक्सि शहिकात हरेश कांग्र। क्रिक्सिक शहर कांक्सिक हरेल कांग्रिका कांग्र केरिया क्रिका समुद्धिय अधिमूद्ध अमेन संविद्ध आवेष कविन । विवाद अध्वाद अधिमुद्ध विकाद अधिमाय अधिमाय

र्षरात प्रके १२,३३५०। र्याक्षापुंभरकत्या १५% स्था स्था स्थापिक १ । १०० উর্থিকা আসে, আনুসার) এনকী ক্ষুত্র করে। ব বিজ্ঞান্ मुक्कीर राष्ट्रिक अनुसर्कित १८८० वटा वरकार अन्तरी र्याक भाषा की एस को बार के । जन मान्याना क्षाभर्षप्रकात मह विश्वोत मह का वर्ष चरणक ४, ४, व्यक्त জীহারে স্মালেট কাছি জন্ত ক্রাক্রিক চলাকর बचार काम्याकिक राहिता । या कामा-उपराजक का इं किस्मा क्या का लालमी प्राप्त স্কৃতিবাছেরন্তর 🕆 🗸 📆 🛠 হল । শুনার ক্রান্ত্রনার 🛊 🕏 🕫 事情佛色 电影跳跳 \$11年1月11日12月日 中華華 1 1945日 121日1日 ाक्षाचा अने किया जा अने असी प्राप्त कारण असी असी असी है। জ্ঞান কাৰ্য্য বিশ্ব - বিশ্বায় ক্ৰান্ত কাজ্য কাৰ্যাসভূত िकाल मिन्नाया आहेरा ५, महावस ११० लाक्कृति दश्रम् अस्य स्टिस्टाट 🕥 .त एक अर 豬肉 网络非洲鲜色 有一生 计表中 1201年11月11月11月11月 प्राप्तम् **देश्याः स्थिति अस्ति ।** আৰু যোগিত দিব দিব কে কে কে কিব এক জান সংগ্ৰহ ৬ , কেন, বিষয়ের মান কলেন ও আন্তর্যন কোনে আন্ত 開發 台 机消费 化分别图象 上层排除 黄芩叶 লোপতে দেই ১ চিচ্ছিয়া প্রতিত্য প্রধি বাং করিছ यसकी कालय देशक वर्ष कर्मक, स्थन कि होन कोरी मुक्ताभीना स्थलाहक श्राह्म स्थलात स्थला (वि.स.चन) कः िहा प्रमुक्ति कम ला । क्याम र धन क्रिकेटल कहिन कार्याः कवरहरा प्रांभ में वायमात कतिया धारक ভাষ্যের জিলান দ্বরা ক্রিয়া প্রেক্স, জন্ম ভিনে ও ভাষাৰ ভিন্তার শায়ন করে, জন চারিলাচ अवश्य धारम्य किनाव **किना वरण, जबर सम्म** व्यव्हार निकास भावने भिरुष्ठ निरुष्ठ निरुष्ठ निरुष्ठ कला छोरात वनिकछात त्यांत साहै। असाना लाखान**ारी**मिल्या महम् **आ**यत्र। विविध मिरहा करपालकथम कतिया थाकि। आमित्र गोकानी हरे-

যাত বে সমূরে কারিয়াছি ইহাতে জাহারা সকরেই
হর্ম- প্রকাশ করিয়া গ্রেকন। আনাদিনের সহস্থ প্রায় সর্বপ্রেদ্ধ ও০টী বালক বালিকা আছে। কেই
বা দৌড়িতেছে, কেই নাচিতেছে, কেই কেই ক্রীড়া
করিয়া বেড়াইতেছে। ভাষাদিগ্রকে দেখিলে
বোধ হয় যেন এখানেও পরিদার মধ্যে বিচরণ
করিছে।

जकरात । है क्या वाहि ।

নদীয়, ঘর্মীল, গভীর সমূল চতুর্দিকে এবং
নারে। ভাছার মধ্যবর্দী। আমরা যে রভের
মগানিক প্রভান্ত আনালা ও ময়ুদ্রের মধ্যনিক প্রালিক স্থাপিত ইয়াছে। সমূল
নলন মরুষোর হাল্য যে কুপা প্রেলভ হয়,
লগাকার মহছারে, উন্নত আলায় পরিপুরিত
লগাকার ভার কিছুতেই হয় না। বন্ধ দেলায়
লোকদিকের হান মন ইইভে অপকৃষ্ট চিনা ও
ইছা সকল দুর করিকে সমুদ্রের নত উপায় আর
কিছুই লাই। সমুদ্রে আমিলে লোকের সে এক
কিছুই লাই। সমুদ্রের আমিলিলের জান্ত হাইবান সম্মান্তন, নাই।
কলাদীর্বারের কুপান সালে হাই এ যাকি। আমরা জান

·利用的 · > 管 (防空机管)

खमर कि.जो. १८०१स महरू हिंदी क्यम (उम्मिल --机野类脱滤镜 化砂锅 医抗性性 激出人 经保险债券的证券 医腹腔炎 राज्डिका, इक्टब्स इत्र ब्रिका १८ कि. ५ १५ कर् केरण होशाल मन जिलांक्कि । दिलीने **स**र्थन (कर्णान -) रकार्यः भोगर्याभागवित जिलाभागवित एक सुर्वालभागिकिरधाव रार्णभाष्ट्र व्याप । वर्ष महीन गर्छ। सं क करा नास প্রায় রাইবেলের অর্থাক্তমতের মাত সংক্রমী। আন माजिद्दशत खोकाते व सामाज्य सारामा त्यादणी खनिक है। পরিত্যাগ করিয়া এক ঈশবের উপাধনা করিছেনে हेका खनिया जिले अहा खास्ता भिष्ट क्रेटलन ! भिन्नीत् भएक अपरेशास्त्रताचे महक्षादक्के व्यवस्तिक । क्षीरकारका एक महरक छरे यक भीचु मिनीश লা াৰ সংশোধন ও সভা আচার করিছে পারে अप जाब रक्टडे आहब ना । जिसि जाणांपिशस्त्र ্লালে প্রত করিজে বিশেষরপ অনুরোধ ক-्र । ज्ञानित्तमः दिवासम् स् अपनिशेषः स्कृष्ट स्कृ का किए त्राह अस्तार्थ नाममा अस्ता कारा अस्ति। अस्टिन क्षी हार्य भवासम विकरित व्यापने की विकरित विकर् स्वरः अभरतके एक्सिन्याक मुक्किन स्वित्वेश ।

उतिरात १० टक्क्बारित । विकास

ক্ষা প্রিবার। অতি প্রতিবারেই আইনিক ব্রু গুরীলাননিক্তর উপাসনা কইলা থাকে। থিক ন্যাপ এই কার্যা সমুখা করিবার জন্য কোনা প্রাথ

उभावक ना बादकन, जाहा स्वेद्धाः डाहा काटकन नारकत सामाह गाना प्रकार भारको जनक काटलम नाट्य नकमाक अनव कृतिका कुनानमा করিলেন। এই সান হইতে মাল্লার ১৬ কোন नाक, नाखारकत याजीमरंगत खवामि तकन क्य यात्रा उत्काशिक स्ट्रीएटक, ध्यर मकत्वाहे अरख नारक अञ्चल वरेरक हुई। जायरम पुत्र वहेरल समुक्त टीइंक् वक्री अर्थेंड ७ क्डल्डनी उक्त देन्था र्यस, পরে "কেটামেরাণ" নামক কডকভাল মাজাজী ডिकिटनोका मगुराजत जेशत निशा काशरकत असिन गूर्थ जाभित्क नांशिन, अर्थ करम करम छी बुद्द दूरद ব্ৰহৎ অটালিকা ভালানিবের প্রকাণ্ড কারা আমা-দিগের চকুর সম্ম থে প্রকাশিত করিল। জাহাজের উপরিভাগ রাজ্ভায় আছের হইল,সমস্ত কর্মাচারীগণ फिल्मार्ड लिंदलर्ग रहेन, अवर भकरलंडे मध्यंनग्रस ভীরাভিন্নতা এক দুল্টে দেখিতে লাগিল। মুহত্ত্ব-रक्ष मध्य एक एक्षेत्र भाक्त रहें । सक्कत्र निश्रास्तिक হুটুল এবং *শৃন্ধ শান্ত ব্যুক্*নিশ ভা**পরিস্কার ক্ষুদ্র** নৌকার দারা আমর। গারিহ্ন ওইলাম। 'ভিশ্বন ত মান্দাকে আসিয়া পেটছিলান, সোধায় যাইব 🦯 এই ক্ল' ভ'বিভেড়ি এমং সময়ে এক হাক্তি এক পানি কুট এট আমাদিপের কল্পে দিল, জাহাতে लिशिक अहे व पंक्षीतुष्क पायु क्रमीय BC स्वर्म द्वार পত্ৰ ভাষা আপস্থামী ভেটী মহাশ্য এই স্কুল ए वर्गी भागि भारे विराध (इस । । भागानिकात समा সাধৰ্মী জৌকাহ পাঠাইয়া দিলাম, এবং সাব-পাৰে ভছপৰি লাড় দিয়া পড়িলাম, লাইদিবার मगञ्जक हे अमार्ग्यान्छ। समा यो। यो। स्तीकार देशात क्तिक भा भाषा यात्र, नांदा कडेटल तक कारण स्रोधन ভরনিত সমুদ্র মধ্যে পভিতে ২ইয়া একৰ জাগু রহাতে হয়, উ। কি ভয়ানক ভরম। কি ভয়ানক कारभावन । भेषी धना मिखास अभए। छाडा-দিপের পরিধান একটু ক্ষুদ্র কৌপীন, ভাষারা বিলকণ হাট পুন্ট ও বলবান, দেখিতে পালড়ের মভ, ভুফানে ও ভয়ে আমাদিগের প্রাণান্ত, কিন্তু তাহার। সঞ্জে দাঁড় বাহিয়া চলিয়াছে আখাদের विटक उन्दर्भाषे करह गा। आगामिशदक **की**बन्ह कतार काशामित्रात खेलामा देशाल आमता की-ষিভই থাকি আর মৃতই হট: প্রাথার মৌকার हर्जुक्तिक हिम ? कलक हुद्र अध्यक्तारक अभव्य कि রিয়া কুলে পে"ছিলাম।। নিরাপনে তাইজর্মাই বিশার জনা তথা তিরোপরি আকার আকাত अम् निर्मिष क्रेगार्छ। त्मेरे मह स्ट्रेंटक क्रांक निर्मिष्ठ (शांशान नागिहाट्डा) काही बाबसंहन कतिया नगरत छेटिएल अग्र । करण क्रांस महाह State 1 is the second of the second

নুকন এছ প্রাপ্তি।

পাত্রবিদ্যার সীযুক্ত নহেশ্বন্ধ বন্দোপা ধার্য প্রনীত কলিকাতা 'নিউপ্রের'' বল্পে মুক্তিত। এই পুস্তকথানি কএকটা সুন্দর নীতি-গর্জ প্রেরন্ধ বারা পরিপূর্ণ। প্রস্তাবগুলি উৎকৃষ্ট উৎ-কৃট ইংরাজি এন্থ হইতে অনুবাদিত হইরাছে। অপ্রবাদ্ধ মুবক্তিগের এতং পুস্তক পাঠে নিশেষ উপকার হইবার সম্ভাবনা।

" वीद्भावावान " श्रीयुक्त शतिकाम पिक श्र नीफ, जाका मानवर्ज़ीन सूनज नेटल पुक्तिक।

ণ পারনা দর্পন " এই আদিক পত্রিকার ছই সংখ্যা প্রাপ্ত ইইয়াছি:

" ক্রিন্ধ্যা-ছোত্র " প্রীদ্বারিকানাথ ওও পরি-কীন্তিত, কলিকাতা ওপ্তথক্তে মুদ্রিত।

াই পুস্তক থানিতে প্রাভঃ নধ্যাক্ষ এবং শা গুংকালের ভিনটী স্থোত্র আছে। ইন্ডা অমিলামার চন্দ বিরচিভ, এবং স্থানে স্থানে উৎক্রট চারে প্রিপুর্ণ। উল্লিখিড় ভিনটী স্থোত্ত গুটার বিদ্ লিশিভ অংশ উদ্ধৃত হইল। বোপ কবি পাইক্রব-

লাভঃকোত।

विद्राप्त कांत्रमा विज्ञानामान । स्वाप्त उन औ जि-सूर्या, नारा, मञ्जू नश्य, ाच दक्ष भाषा कोश वर्षिनदित लोदह र উষার শোক্ষায় ভাতে তোমার যৌশগা সক্ষ অকণ কৰে - এড্ডা কুপুছে : सदर सामरकात धानि मुख गन स्वर्त निकार कोन्न, माठी- नगरब, धाउट, जाल, नार्षे, बधीकृत्म, शानदन, डेनादिन पूर्णीं जन मधीरन, काइ ना बुक्ति आभ, स्थान अंडोडिनम्बन, भाष १८व भागीमल मिलि लक्षार मक्ष्रकुछ -नदम्भदम मा छीतम शामत्याव व्यक्ति है <काषात भः < देशा यात्र जन क्षेत्रकाश्चि । কে পারে বণিডে ভব অন্ত বহিনা গাইজেছে পাথীকুসা সুস্বনে ভোমার ारिमा निकुष्धः छर औछि-पूर्वानस् वश्टिक श्रेक बाद्य बाद्य, त्नावाहेन्ना भ्रकुमात्र कृत्न कुसूरमात्। निर्माह विद्वारम एस १८४६६ मेलिन, খারোছিছে অস্তাচল লভিতে বিরাম :-इटका इंडेटल क्रेथी—श्रीतन दुर्मन— अखादन करम करम श्रेन मनिन्! वनास मगरम, नाथ, त्क शास्त्र पाकित्व ज्ञित्र जियात ? ज्य जानसः कानदन

করিয়, বসজি, কেবা জুলিবে তেনি রে ? তুমি শান্তি-নিকেজন। ক্ষম্যের পন, অমুলা-রজন, চির-প্রীতি-প্রজ্ঞবণ। তুমি চিক-বিনোদন, নানস-রঞ্জন। মাধ্যাক্ষ-স্থোত্ত।

হ্বদ্য-কথল-রবি। থে দিকে নির্থিনন্দর্গর, কানন, জলে, দলে, অন্তরীকে, সালরে, পর্যকে, পথে, ঘাটে, ঘাঠেন-দেলি ভোগারি অচলা-প্রীক্তি; উথার জুবার, সন্ধার শোভায়, নিশাকালের গান্ধীবে; রয়েছ প্রকাশ ভূমি —রস্তেছ প্রকাশ সেই কপে এ মধ্যাক্ত কালের শোভায়, রফিয়া ভারুক-মন ক্রন্য- আকাশ.

यास्ति-अत्याः क्षाः भाव । - ए प्राप्तिक् कति दक्षाणिकाम् प्रिक्टितः । प्राप्तिक त्र (अ)। असीन वित्तिः, प्राप्ति प्रक्षाः व्यादन काश्ति वित्तिः क्षांत्रः । - नि द्विपित्तः दम (अ)विद्या क्रिक्ताः । एव १०००-० ए। कि व्योद्धिः प्रदेश क्षाः । १८० १८० स्वर्धस्तः व्योद्धिः । - कि यम्म अद्देशः १०० क्षांत्रः वित्ताः । योद्धिः । - कि यम्म अद्देशः । - क्षांत्रः विताः ।

ति विवासक महि निर्माण भूदन स्थादिक वर्षी अस्य आवित्रातिक उत्तर कार प्रक्र साम्या स्थादिक उन्नी क्ष्म उन्नारक विद्वाद क्ष्मादिक प्रकार साम्यक त्या व्या व्यापित व्यापित्रक प्रकार साम्यक त्या व्या व्यापित व्यापित्रक प्रकार साम्यक त्या क्ष्मा व्यापित क्ष्मा अस्य स्थापित्रक व्याप्तिक व्याप

्तित वाहन सम्बन्धिक वाहर वह । एक ।

भूदतातक स्थान कि एक निर्माण का स्थान वर्ग विस्

पराणकात नामीण का स्थान वर्ग वर्ग कि है।

पराणकात देवार तीत कि कि है। का स्थान की

निवासिन विश्वित का स्थान के है।

रम्भाष्टिक की का स्थान का स्थान कर स्थान कर सम्बन्धित ।

रम्भाष्टिक की का स्थान कर स्थान कर सम्बन्धित ।

स्थान स्थान कर स्थान कर स्थान स्थान कर सम्बन्धित ।

स्थान स्थ

मार्भिट अहम ।

পুরাৎ শুর বশি নালে করা- নাকা দাশমালি! স্থাছে মাল কেনা পুরাজ্ঞান
করে দিকচর ! আলা, ঘেই জানাবান
হ্রম-আকাশে নেবেল লোহন-মুরাজ্ঞান প্রকাশ, গুনা, ভাষার জীবন !
কি মুন্দর রূপ ভব—অনুপ্রানীয়,—
মুদ্দাস্ভাগিত আগ, কারেক দেবিলে '

তক্ৰপ কৰিছি হতে পাইথাৰে কৰা। প্ৰভাকৰ—মনোহর ক্লথ বন প্ৰেণি কুমুণ, গাগন, গৈলি, নদ, নেখনালা , গ গানোহন কল পাইমানে ক্লোগিছি। না জানি ভূমি হে নাথ, কভই ক্লেৱ।

विभाग- एकामी-करत सुनीक-व्याकामां तिक्षात्र के किया गरि, कृमा भरनांद्र । कर्गल तिक्रक, मृति, कृम्मान वक्करन ! विक्षार कृष्टि कर्गल क्ष्मान्याकामा यम, सुनांक्य, काल (मृथिए) ट्लामारत । द्यार्थना व्यार्थनां, स्थ कृष्टे — विव्यान विकास व्यार्थनां, स्थ कृष्टे — विव्यान विकास वाक व्यार्थनां क्ष्मानांथ ।

বিজ্ঞাপন

भर्म गण प्रकार।

পুরস্কারের জনা তানি প্রস্তাব নির্দিন্ট করা ঘ্রমান্তে। প্রস্তাব মাঞ্চলা অথবা ইন্ রাজি ভাষায় বেখা এইবে। প্রত্যেক প্রস্থা-বের পারিতেঘিক ৫০০ টাকা। ঘ্রটির নধ্যে ফিনিয়ে প্রস্তাহ লিখিবেন হিনি সালে শ-লের ভাল মানের মানো সোহা প্রাক্তমান্ত-পতি প্রিয়ক্ত দেবেক্তমান টাকুর নহালয়ের নি-কট পাটাইখা নিবেল। প্রীযুক্ত পারী-চাদ মিত্র, প্রাযুক্ত কেনবান্ত নেন, প্রিযুক্ত পারী-চাদ মিত্র, প্রিযুক্ত কেনবান্ত নেন, প্রিযুক্ত পারী-চাদ মিত্র, প্রিযুক্ত কেনবান্ত নেন, প্রিযুক্ত পারী-চাদ মিত্র, প্রাযুক্ত কেনবান্ত সেন, প্রিযুক্ত পারী-চাদ মিত্র, প্রাযুক্ত কেনবান্ত সেন, প্রিযুক্ত শিষ্ঠকে দেব মহানারেরা প্রীক্তা করিয়া ঘাহার প্রস্তাব প্রান্ত বিবেন, উক্ত বৎসন্তর সাধ্য স্থানাক নেই প্রস্তাবের পুরস্কার স্কাপ বন্ধ, টাক্তা জাল্ভ, কইনেক এবং লেই প্রস্তাবের স্বন্ধন্ত জাছারই প্রাক্তিবেকা।

প্রথম প্রস্তার। পুরস্কার ৫০০ টাক।।

প্রহা । ঈশ্বন বিবাহে তা দাব শ্বের মত কি ও বেদান্ত দশানের মতের দাহিত ভাতার প্রভেক কি, কওবা বিবারে ব্যাস্থলের দক কি ও বেদান্ত বর্ণনের মান্তর সহিত ভাইনর প্রভেদ কি, এবং প্রকাশ-বিস্তান আশ্বি ধর্মের মত কি ও বেদান্ত শার্মান্তর সহিত তাহার প্রভেদ কি; ২ প্রশ্ন। ব্রাক্ষরশ্রের থে যে এক বেলার গর্শনের মধ্যের বিরুদ্ধ, নেই লেই মক ফোন্তি দশ্যনের মত আপেকা কি জন্য উৎকৃতি ও উপাদের

ও প্রায় বাক্ষাক সারা পরিবার-মধ্যে ও সাধারণ সমাজে কি কপ উপাকারের স-ভাবনা ?

দিতীয় প্রস্তাব। পুরস্কার ৫০০ টাকা।

ু প্রান্থ কিবল-বিষয়ে, কর্ম্বর-বিষয়ে ও প্রকাল-বিষয়ে ত্রাক্ষধন্মের মত কি ?

্ প্রশ্ন। আন্ধাবর্দ্ম দারা পরিবার-মধ্যে ও সাধারণ নমাজে কি রূপ উপকারের সম্ভাবনা ১

৩ শহা। বিজ্লী, মহম্মদান্ত থাকীন্
মতের সহিত বাক্ষর্থ-মতের কোন্ কোন
অংশে বিজ্ঞা ও কোন্কোন্ অংশে বিরেশ
এবং দেই বিরেজ স্থলে ব্রাক্ষরেশ্যর মত কি
জনা তি ক্রটিত উপাদের ১

জ্বী ব্যব্দক । নিম্ লিখিত প্রতান মাজদর্শের মান লক্ষ্ম আইবেন । পদর শালের ছালিত তাৎপর্যা দ্ভিত ক্তাক্দনা, আ লেখ্যুর নাং ক বিখাদ প্রাক্ষমানীর সাং ব্যাক, ১৮ তে আহিনী পারিকার প্রকাম কপে। নিম্না সং কো ্র ভাবতো প্রাক্ষমানীক কালা স্বহা সাধ।

প্রিকার অধিম মূল।।

कित्वकाल। এবং মফলল প্রতিকাদ্পের প্রকি

কিবেদন দে কাঁথারা স্বীয় স্থীয় কাগ্রিম সূলা কং
মরেন ক্ষেমে এক মামের নপো জেরেশ করেন,

ক্ষেমে এক মামের নপো জেরেশ করেন,

ক্ষেমে সূল্য প্রেরেশ স্কানোযোগী স্টলে সমাজরক

এতার ক্ষিত গ্রন্থ ক্ষেত্রের। উক্ত বিষয়ে প্র

বোলির প্রত্ব একি ক্ষেত্রের। উক্ত প্রতিষ্ঠিতে

বিল্লা কয়েশ তালা ক্ষেলে জাহার নামে মানিক

ক্রিণি বিদ্যানে বিল্ল কর। বাইবর।

নিষ্ তী। নববর্ষের স্থোত্ত নববর্ষের স্থোত্ত শনো বিজ্ঞান (উপজ্ঞানিকা) নেদিনী পুরস্ত অজ্ঞাদশ সাহং লাক্ত সমাজের হস্ত তা অনুষ্ঠানের আবিশাক্ত। (প্রাপ্ত) সংবাদ সার নিজ্ঞাপন ভত্তবোধনী প্রিকার মুন্য নিক্তা

ा देशनीय गमियां संबंधिकार के किन्यां स्वयं ।



ब्र गर्वा कि विषय असे का निवास कि का निवास कि मार्थ कि मार्य कि मार्थ कि मार्थ कि मार्थ कि मार्थ कि मार्थ कि मार्थ कि मार्य कि मार्थ कि मार्य कि मार्थ कि मार्थ कि मार्थ कि मार्य कि मार्य कि मार्य कि मार्य कि मार्थ कि मार्य कि म

নিশীপ সময়ে সাগরবক্ষে ব্রান্দের স্তোত্ত।

ছে বিশ্বাধার বিধাত। পুরুষ। কলতাৰ্শ বিশাল দলিলময় সাগরৰ্কে আ-মরা এখন তোমার অভয়পদ শাশ্রয় করিয়া ভাসিতেছি। এখন স্ক্রিকেই তোমার অনন্ত স্বৰূপের পরিচয় পাইতেছি। উর্কেতে নয়ন উত্তোলন করিয়া দৃষ্টি করিতেছি আ-কাশ তোমাকে পরিমাণ করিতে সক্ষম হই-তেছে না, নিমেতে দেখি সন্মান্থিতিত বি-ন্ত্ৰীৰ দাগৰকে ভোমার অপার করণা অ-ডিক্রম করিয়া স্থিতি করিতেছে—ভৌমার महिन कि हुत है जुनना इत ना। कहे साधार चुमा लाकावत भूमा कृतम भएक पुरस् भा-মানের নেজা। আমরা বে অপরিটিও রাজ্যে উপ ভীত হৰসাম ভধাকার কিন্তুই স্থানি না। नाय । ज्ञिमके ध्याटन जानाविमान्य टकान र्गतरम्, प्रमित्रे क्रमस्टरः, प्राम्नित्रन्तस्य शक् करा । असे बहुद्धक ग्रांक्त दा बाहर काकर TO THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE

इहेमा आमादनत "उवनीट क कतिरहरू, अदर मन्त्र मन्त्र हिरलाता अक्र-তাপ দূর করিতেছে। হে জ্যোতি সকপ। त्यम्म निक्रमक आकाम इरेटक अरे ठला मात विभव कित्र मांगतगक गम्कृत के-রিতেছে, ভোমার শুল করণাম্ভ ভেমনি जनखरार्भ अभाष क्राय वर्षिक हत्र। আতে বেশিবাম তরণ ভাত্ম ভোমার যাশ ঘোৰণা করিতে করিতে সমুদ্রগর্ভ ইইতে অপুর্বা মহিলা সহকারে পুর্বাদিকে সমুখিত इहेल, अरमांच कांटल शेन्डिंग प्राकामटक লোহিত রঞ্জনে অনুর্ঞাত করিয়া নীকা সলিল দর্গণে ভোমারি জ্যোতিঃ ছটা বিকীর্ণ कतिया, व्यायात अरे निमीध नम्द्रम् प्राथ-क्र कुछनक्रम मोम्मर्या (निरिधा क्रम्य क्रिक् मिक इहेटल्ट्स्। जाकारमा जना अनील-माल। जामारमञ्जूषि रहेश नथ अन्ति क्विटल्डाइ, मगीवर्ग इवस्ताकी मृद्र्यम् मक्षानिक हरेगा मधुमस गटन हिन्दरेक स्मी-हिक विदिश्ह । जामात महान की वि पाविष्ठ (महिष्ठ नश्न अनग्रम, श्रेगश आb-विक हरेगा अहै निर्माण विख् करांत्रत गरि

অ'প্ৰতি ভবে কেমন মহান তাহা জাবিতে পিয়া নত কিবিয়া আইবেন। নাথ। কোনার पारतरम् स्था एक फ्रांतर। अहे अनच्ना প্রদেশেও আলোক বর্ষণ করিতেছে। ভুমি বিশেষ সনির পুর্বো আমাদের ভাবি প্রয়ো-জন স্পানী দেখিকা সকলি আমাদের অনুকুৰ कितियां द्राचित्राष्ट्र। आयक्ष (पथारम घारे क गांत करूवा निरमस्यत **उदा- वा**गारमत मक होड़ा १८२।। काशंद्र करूनांद्र जिन्द নিত্র করিম' আমিটা এই ভয়ানহ সন্তা গলে অভ্যার হইতে নাহ্ম করিলাম ? দুকর মাগর ধনি তোমার আনেশে নিস্তরক हरेल एएव चाल जाम(८मर एक दर्काया) আমাদের প্রিক্ষন বন্ধ বাজ্ব ভোষার হাঙ্গে आमामितरक अभनेत राजा किन्छि इरे. शास्त्रक, कृष्य । अञ्चल भाग चार्मानगरक ক্রোভে এখন ফাবছেছ, এব যে স্পরিচিত परकार कामरे एउट क सहित माहित्य रमश्रीहरू ७ रक्षाणीत अगारभणकरवादे सांगारम्य समुहुन स्ट्रेट पर गर नास् । एक गटक सावितन की पर त्रमुल नरान निरुक्त समाम इस, अल ি 6 এ নদৰা কৰ্তানে তিত্ত বেশ্ব হয়, আগম ছ-পাল শীলা মায় পর্কারেও পরিকারে পথ একত क्रिया योगाः । आभिनः अगरः आ**गार**म्ह মাজার ভোগ পরিভাগে নার্থা কৃত মুরে प्यानिहासि । य छ जुनि सन्नीवनाति वया-নেও বঙ্গের গৃহিত জাহার ও পানীয় দিয়া নিভিনের জন: জালা দিশকে মাতার ও ভাব ত্যানতে পিতে। ।।—তেয়ার বকে মাত্ কেন্তের আত্তা নাই - *হে মাত জোমার ্মক্ষয় চৰণ স্থাতিপ, দুৱস্থিত আতুৰণকে जा शान यनिद अझे यांगारमत नवा । यांगता निक्ष के अपने जाकि तो आवार केशिएन मझरम् का १४ फिल्लिक उपरश्का शक्षा करण कुल के शिरामत के ना है। उपाणि यायास्य असेना । सङ्ग्रेस विक

कन ना इस ट्यामात निक्छ अहे ज्यानाटनत व्यार्थना।

अं करमवाविजीप्रः

वाक्षण थान्ता

खम निर्मात निर्मीय ममत्त्र यदकारन লোকে অধর্ম নিদ্রায় অসাড় ও অচেতন-यांत रहेता शांदक, यदकारण कुमः काद-ि ত্রিত স্বপ্নবং ঐহিক ও পারলৌকিক হুখ-লালশায় লোকে অবশেক্তির ও বিহরলচিত্ত হট্যা থাকে, তৎকালে দহলা আন-গগনে যদি অথর ভাপানিত মহাস্থাের আবিচার হয় তাহা হইলে ঘোনাক্রকারনিম জ্জত মানবীয় অস্ক্রফু নিভান্ত থাকুলত হইয়া लाए अवर मक**रल मजुरस ऋमर** करां है আবদ্ধ কৰে। এতলি কৰ যত যত ধক আবিমান লাল পুলিবিকে সম্পিক পান-मार्ग अपनिष्ट इहेगा स्थानिटबर्ध ७-छ। १९३ अथरम अनगुरुष्टश्चा अमृत्रिक्त উপায়াবলিতে দেশ পরস্পরাণ প্রচারিত म्ब्राधिन । প্রাস্থানত লবে প্রাবিভা প্রত্য कांन कारकहे माधानन लाक मगोरन जा पत्नीय **स्त्र नाहै। ८क**ीजिटक ७ व्यंत-কারে বেৰূপ বিজেধি সমভাতে ও জ্বাস ভোজে ওতেথিক। খাশ্বিয় নিশাচয় भक्त भक्तीनन कर्षाकर दक्षरमा अवह प्रिया लाएक नर्म ख्रेपीलम ७ रिष्ठतं कतिएड পারে, কিন্ত অসভাগ্রিয় নাভ অধার্ত্তিক लोक मंग्रालान महा कविएक भारत मा. হ্ৰা-বাত সন্ধারপূর্ণ অজ্ঞান গুড়ার অ-বস্থিতি করে, এবং ইচ্ছা করে চির্মানন ঈদুল অবস্থায় জাবনু অতিবাহিত ইউক 🗆 পরস্ত क्रियटबंद बाएकः देन्। अक्रिकः अक्रिकः इह विश्वाती नटका निविधिकामीश अवस्थादन रक्षमत्र स ७ क्ष मजीवन अमार्किशास्त्र स्व The state of the s

বসনা উবা সকল মেদিনীতে আলোক ও

আনন্দ সঞ্চার করে, অম্যানিনীর অব্যানে

সেইরপ সভাগনীরণ সঞ্চালিত হইতে
থাকে, দকল হদর জাগ্রত ও আলোকিত হয়

এবং প্রফুল বরে জ্যোতিষ্কাশ প্রমেশ্রের
মহিমা গুণ গান করে।

বর্তমান সমরের তিন বৎসর পুর্বে यमि आभामिशंदक (कड़ किन्छोगा कहिएकन, কি কি উপারে ভারতবর্ষে ব্রাহ্মণর্ম প্রচারিত इहेटर जोशं हरेटलं इसक आमता अहे বলিয়া নিরস্ত হইভাম যে যিনি প্রাক্ষণশের প্রের্মিডা ও প্রবর্ত্ত এই সকল উপায় তিনিই জানেন, কেবল এক মাল বিশ্বাস थामानिटनंत १८७, मारे विश्वाम जनलयन ক্রিয়া আমরা সৰল চিত্তে আশা ক্রিভে পারি যে 'সভামেন করতে নান্তং"। যতই काल वाहरलटक् धरे विश्वाम व्यामानिटधत इम्राय ७७३ तम्बर क्रिक्ट्स वर्र हेश्ह मदम मदम विश्वस कार्यत छै। प्रक रहे কেচে মন্ধারা আমরা উলিখিত উপায়াবলি ্রান্ত স্পটকপে দেখিতে পাই। কি बस दला यात्र ना, किछ विद्वपना क রিলে বিলক্ষণ বেধি হয় যে বছদিব্যাব্যি ভারতবর্ষে পরিবর্তন এবং উন্নতির চিক্ आह कि हुई सिक्ष छह बाई। 'দাধীনত। **ও क्लांगाधकदर्वत मदक मदक भृथिवीयत** गर्याध्यहे आत्माक्षम विद्याप ७ शतिवर्जन मुके रहेश। कांदक ; किन्छ जाउटरदर्स गकनरे স্থির অচল অব্ভেড়ভাবে চলিয়া আমিতেতে। कि धर्म विवस्त, कि तांक्रवीं विवस्त. कि नामाणिक । जाहात अवस्था विवद्य, मकन विषदाएँ हेन्स अध्य निर्कीय चार निक्छ रहे। अञ्जाः संस्कृति बाह्यवर्ष अस्तरम अमेरक जारिक क इरेन क्यान নেশের মুক্তাৎ অবস্থা দেখিলা, কি জ शास कारा नगरूकत्थ काहिक रहेता.

व्यवधार्य करा गरुक त्वाध क्य महि। अब-षियदा शिक्षका बात्रव दम्भ ७ छ। ब्रख्यस्यंत्र मध्ये अक्षेत्रे कां ज्ञान्त्रश्चा मा-मुना विकिञ् करा। वृक्षीरायम शिक्ष कान क्हेंट अठात क्हेबात शूर्क छेळ जिमा ध-ৰূপ হীনদশাপর ও অজকারার্ভ হইরা-हिन त्व दक्ष क्षान्ये व्य लाम्न क्रद्र गाहे कशांत्र अभवित भृषीत्रस्य क्या अस्य क রিবে, কিয়া জন-এহণ করিরা প্রচারিত হইতে গারিবে। নৎকালে সারব দেশে महमान चीत वर्ग अगात करतन छशन चात्र দেশ অভি ভয়নক অযভাতার আলম্ছিল। दक्तभारी ए अकिटन क्वास्टक विषय है क्लिए। মেৰা, অবৰ্ণা, শোণিতপতে,এবং পৌষ্ণতিক উপাদন।। মহক্ষা অতি স্মানা লোক ছি লেন, তাহার হাত সংখ্যা অতি অপাছিল। তিনি যে এক ঈশবের আধাহনা আগে र्रात्रश्रो क्रज्योगं। स्ट्रेट्यन, कि कंत्रच भरेत्र। विषय 'अगला क्षेत्रीराज्यांक्षिरवा विकल শিস্তার পাইবেন ভাল্য প্রণমে কোন ক্রমেই मर्गावक (नाम इस नाहे। वर्षकाम क्र বেছ কিছু পুৰুষ্ণে ভায়ত এইবল মলপাৰে! गांति शैगांदश धरिशाहत। র্ষের মধ্যে বঙ্গালেশ আবিকৈ গ্রেস জ खन । अधिकक भौश्रीनेत्वर बोहा अध्यक ব্ৰাহ্মণত অবভিত ও প্ৰকাশিত হুইগাছিল किर्मिता प्रकटनता बाद्याव स्तिन स्तिति ণতিশনি সম্পন্ন নহেন। এতব্ৰস্থায় যে मायहर लादिक उपित्रक यहांत विवाहम मत्मक छेविष्ठ ६६८व लाहांत आहि था-न्ह्या कि ?

কিন্ত একচাং একচাংল দক্ল সন্দেহ

দূর হইতেছে। ভারতবর্ষের মৃতদেহে

নব জীবন সঞ্চার হইতেছে এবং ভলিদর্শক আশা উৎসাহ কার্যাকলাপ গকল
ভানকেই উজ্জুল ক্রিভেছে। পুরাতন

ভারতিব্যার নব মোবন পুনরাগত হইল,
ভারার মুখতী পরিবর্তিত হইল দেবিরা
কারার মন না আশা ও বিশ্বাসে পরিপূর্ণ
হর। কিন্তু এসকল কিনের জন্য ইহার
কি কোন উদ্দেশ্য, কোন অর্থ নাই? বিসমুত বিলুপ্ত সম্পদ বছদিন পরে বিনি পুনরানরন করিলেন তাহার এই ইছা যে নবোদিত্ত সম্পদালোকে ভারতবর্ষ তাহার সভা
ভোগতি সন্দর্শন করে এবং তাহার আদিন্ট সন্তব্ধ বন্ধ অবল্যন করিয়া সেই
সম্পদকে চিরস্থায়ী করে।

ভারতবর্ষের পূর্বেলিজ চর্বলভার একটা প্রধান কারণ শর্মজ্ঞানের ভাসন্তাব, এবং ভাষার বর্তমান সঞ্জীব ভাবের একটা প্র पान काइन खारनाम्ना । भृथिवीत देखि-বুত্ত পাঠ করিলে এমন কোন দেশই দুষ্ট इस मां यथा এक **मग**रह भी **विलिक्श्य** निवास करत मारे । सम्बद्धा निक्रका-বহাতে কোন অকার না কোন অকার পৌ-ললিক ছ' এছণ কর এছ স্বাভাবিক, যে ংদাভিত্র জে কান বিশেষ মান্য জাতির बरक्षांवर्षि इंटेर्ड भारत किना मरकहः বিশ্ব আবার ইহাত সভা যে কথনই কোন भंदुण। क्लास्ति मर्था (भोजनिक्थ्य वित-शाही स्व मारे, जिल जिल अकाटत रेश প্রতি দেশেই উৎসন্ প্রাপ্ত হইয়াছে । পৌ-ভুলিক ধর্ম গ্রহণ করা যেকপ স্বাভাবিক পরিতাপে করাল ভজ্ঞপ স্বাভাবিক। অজানতা হেতু সৰ্বতেই পৌডলিকতা এক কালে প্ৰান্তৰ্ভ হয় তাহার অবদানেই দত্য ধর্ম প্রচারিত হয়। অতএব অক্সানও জ্ঞান। মন্ত্ৰমার শক্ষে যেৰপ প্ৰতিবিক গোড়াল-कड़ों ह महाभक्त मञ्जूरमान शहक স্থাভাবিক। আখন এই কারণ কোন কোন धर्म मन्य महित्रित्व मुक्क देशी क विक्रिकित

একহালে পর্যেশ্রের পতিত সন্তার্ত সং

मस्मद्रकत्र छेलगुक विद्युष्टमा कहिना। वसि कारनागर प्रत महत्र हो के निकर्ण पृत रंग जरत जिल्लामा रहेत् नाद्य रंग जमा-विध छात्रकतर्थ स्टेटफ कि कहा कुनरकात्रहत्र जितारिक स्टेटक में कि समा देशत गर्यात्वरे आधारण थानात स्टेट्टिट्ट मेरे सह कति वाका बामत्मार्न शास चरनत्न मक्त छटफरभ गङा थहांत्र कहिबांत क्रमा धांगभरन यञ्ज कतिहा कि अना त्यांदकत विषम विदयम ভাজন হইয়া ছিলেন, পিতা মাতা কইতে বিচাত, গৃহ ধ্ইতে নিকাসিত পর্যান্ত হইয়। ছিলেন) ছুর্দিনে জন্মগ্রহণ করিয়া ভাঁহার जीवम कि जना शिंदिखटम अ यञ्चभाग व्यक्ति বাহিত করিয়াছিলেন, স্বীয় আণগত শোণি-ভাক্ত চেন্টার কিঞ্চিয়াত্র কল ভোগ করিয়াও ইহলোক হইতে বিদায় হইতে পারেন নাই ১ এकाकी निनीथ मनद्य धर्मादल जा अन्तर था-কিয়া যথা-গাঁধো কি জন্য তিনি ভারতনর্বের শুভগাধন করিতে নিযুক্ত ছিলেন, লোকে তাঁহার উদ্দেশ্য বুঝিতে পারে নাই,টাঁহাতে কত তিরকার করিয়াছিল, অবমাননা কার য়াছিল, তাঁহার জীবন পর্যান্ত বিনাশ করি-বার অভিযামি করিয়াছিল ৷ এ দকল এ: নোর অভিযানে আমরা মৃক্তকরে প্রলিভে পারি যে দেশের যে অবস্থার মহাদ্রা রাজ। तामरमाञ्च तांत्र क्रयश्चन कतित्रांक्टिलन ভাঁহার উদ্দেশ্য তদমুক্প ছিল,এবং তাঁহার অবল পরিশ্রমেও তাঁহার শিষাগ্রনের সমূহ गटक रम उटलगा मश्मिक इहेशाटह । দেশকে কুদংকার ও পৌস্তলিকভার হন্ত हेरेर**ण मूल क्वारे डीहा**त विद्नार है का हिंग, रेश्वर धमारम अञ्चित महत्र रम रेष्ट्र मल्ला हरेशांटह. त्यनीश राजदर्गाक जाक-दनरे थात अवनिक विक्रमतास्त्र जगीतक। लगर करन इकिएल मातिबारह । इका SINCE OF SIR OWLD TO TONGERS MY

कार अस्त, किनि नकन-मेरनोग्ध वरेष। अस्तर्व अभिनेत्रहरू धनायात कहिरणाहरू।

हर् स्वमा शक्या (स. क्कर्स मानद প্রাণ সকল ভয় সমাজেই পৌন্ধনিকতার अवि अधका क्यातादह। किन्न मानुस द्यो-ভাগক হার উপর অভক্তি কমিয়াছে তাদুশ সকল স্থানে সভ্য ধর্মের উপর বিশ্বাস कट्टम नाइ। माहिडा, भुगार्थ-विकानांपि বিবিধ অপরা বিদ্যা নিগত ৰূপে অভাস ক্রিলে নিশ্চয়ই লোকের মন হইতে পৌত-লিকসংস্কারদাত ভ্রম অপনীত হইতে পারে बर्छ, किन्तु जन्म विष्ता ७ मानवश्रक्ति उद ममाक् कटल अञ्चर्यावन मः कविद्रल मट्डात প্ৰতি একান্ত আদ্ধা এবং ত্ৰান্ধৰ্যের অতি अकाष अनुतांश क्रेवांद मखांतना नाहे। মহাত্মারাজারামনোহন রায় তর্ক থড় গ হস্তে লইয়া পৌডলিকতাস্বৰূপ নিবি**ড় অ**রণ্য ছেদন করিবার উপায় প্রদর্শন করিয়া গিয়া-ছেন। প্রমপিতার অনুগ্রহে তাঁহার আরব্ব মহৎ কাঠা কতকদুর সমাপিত হইবাছে, এক্ষণে সেই পরিষ্ঠ ভূমিতে, বিশ্বাস ওরু রোণণ করিতে হইবে, যাহার কল কুলে ভারতবর্ঘীদের। পুরুষামুক্তমে ইছ লোকে এবং পরলোকে অমন্তকাল পর্যাত্ত স্থানীয় ষ্মানন্দের আস্থাদন মন্টোগ করিতে পারে।

तक्त-विनाद चाता अकान गर्गान्ड रन दम्दन्त त्र कजनूत উপकात स्टेडाट्ट जारा सामद्रादन्यती बाता राज कतित्व जगनर्थ। तामभूकद्वता त्य, सारन चारन देश्तीक अरः रम विनावत नर्शान्त कित्रांट्यन जजनः जाशित्रदेक मामद्रा पूर्व स्पृद्ध प्रशासाय कति कित्र क्रम्बिता है मामोदन्त स्पृत्व मण्डांप तत्र काता। विश्वस्य हरे अक्यन मस्त्राज्ञ नीत केत्र क्रम्बद्ध मण्डीत मद्या मण्डांप्य नाद्याका है क्रम्बद्ध मण्डीत मद्या मण्डांप्य नाद्याका क्रम्बद्ध स्टेडा मोह्याका अर्थ

भटत्र काशान्त्वात मार्चकार निग्निक धक খানি মানিক প্রকা নিয়মিতবংশে অকা-শিত ক্রিখা বিশুল তত্মালোক অন্ধকারহত মাতৃত্যির সক্ষরতে বিকীপ করিতে লা-शिरक्षन। ७९९८व मगरपद मरमाजनामू गाँद धक्षी **अभ-**विमानस मःशीलठ हरेन। अहे थकादत वक् रहेट वक् गर्धा, शक्कि हरें एक शांक माथा, विनातिक हरेटक छोज मस्या द्वांपविमा-स्माणि श्रदमं कविदा अ कर्ण अ प्रभीय मकन लाकि; मकन शिवका, সকল বিদ্যালয়ের মূল উচ্ছাল করিয়াছে। त्म कारन श्रमन काँत्र मधा तियदस्त है जारला। हमा (मिथर ४ थाई। क्रांचिमा युवक-वृक्त क कृंक मरणात्रिक मान्न भागा, आंकांक्क मा श्रीहिक भाकिक मानिक मनिष्मादिक नकल প্রকার নয়াদপ্র মহেঃ, বিদর্গেষ্ঠ শিক্ষক ও चित्रार्थन मट्या गकटनात गटका है । क टकार्य अकारमाज्या अन्य इत्। 西南南 অকারে ত্রেকাবিদ্যার ছারা এরত দেশো श्रुठि ও डांक्सवरभात अध्य कार्य। महमाधिक इड्टिड्ड। योगता मभूनाम कन्टसन म-शिष्ठ करमनीय खोडा । जनिवासरक छैर-मार थानान क्षिट्रिष्ट् या, 'लेंग्ह्रीस' व्यक्ति কতর অধ্যবসায়্যহকারে প্রাণবংগ ধর্মা-लाहनात्र मियुक्त क्डेम, डीवारमन यक्रम क्केट्य प्रदम्हणत विशेषत त्या करेट्य, व्यव পরকাষে উচ্চানের মুক্তি লাভ ছইবে। (सक्ष व बक्र देश मार्स) खक्करिमात कोटलांकम। হ্ইতেছে এবং ভাগরে দারা অভুত উপকার लक्ष इंट्रेट्ड्, ममञ्ज लाल्ड्डिंग गयरका क्रांश्री प्रदेश, मान्त्र नाहै।

বলিচ হিন্দু ধন্মের গা ভার সন্দর্শন
করিলে প্রতীতিহয় যে, দেশীর আঁচার
নাসহারের সঙ্গে ভাহার অভেন্য নথক।
হিন্দু বর্ষকে বিনাশ করিতে গেলে দেশীর
প্রধাপরভারাকেও বিনাই করিয়া কেলিকে

रंग, वनरे जनकोटन मगोकपुर र रेटक रहा काम हिट्ने मेर्या अविधेत रावधीत मुख का ना बाबा दिन्छ पटनात महिल नाह कटल সংযুক্ত নহে। কি সামাজিক কি পরিবার महका के मक्ता अवस्त असू की न हे हिन्छ धर भेत जमुद्रमानिङ ७ जन्मकार्गः, मारा किक ध्रया-পরশার। পরিতার্জ কইলে হিন্দুদর্শা শুলা োধ হয় এবং অতি সহকেই বিন্ট হইতে হিন্দুধর্ণ গত পৌত্তলিকতার উপর थात्र मनत्त्रतहे व्यविश्राम बाहर, किंख व्यक्तांत कर्ता कार. अधिकार करा वह জন্য কঠিন যে তাহা হইলে আয়ু সামাজিক गक्न क्राहाद गावहात व खनाश्रीन फिट्ड इत्रें जिया मन् किहार इहेट इत्रा অন্য কোন মহত্তর ধর্শের আভায় এচ্ন ना कहिता हिन्छू धर्या एक विनाम পেলে, সামাজিক শুখালা বিপর্যাস হটয়া এणमा खर्म कृगः जादा अमगुरङ হইয়াও অন্যাব্ধি অনেকে অকান্য ক্রেপ श्रीत विश्वनाञ्चानिक काही। क्षिट्ड ममर्थ इताम माहे। किन्द्र मुखा छ श्रीक शार्मात লাছাযো উল্লিখিত দেশাচার সমূহকে পরি-বহিত ও মুমাজিত করিলে পৌত্তবিক কুণংকার তেরোহিত হয় ও সামাঞ্চিক প্রথা ब्लाइकर खलाइबालरमाती हिछदत महा। কিন্তুখনা প্রচায়তাদিলোর কি কৌশল ৷ সামা-ফিক শান্তে ভালদিলের কি অপুর্বাদক্ষতা। भण्डल मगा**जशितरभाषक, अवर ममाकटक** ধ্যমপরিপোধক করিয়া দিয়া 'ভাঁদারা স্বাব-লাগত মতাবলিকে একুণ বিষয় তুর্গাব্দিত। কার্যা বিশ্বাহেন যে, শত বুধনবৈর বিশ্বা শে চেটাতেও তাহার আপ্রার ক্ষতি ক-বিতে পাছে মাই।

পার্গেরে আক্ষম নেই কৌনুন্দেই গোড়ান্বীকৃত জনিখাছে। বেদিন "আন্দিটেনির পায়ান '' কমটি আনাদিকের কৈবিক্টো

वरिके बहेक टाई विनादार नटका चन्न पूर्वी आमानित्यव नमम त्नांत्री करे-TICE I TOUTH WHITE CONCRE AND विश्राम क्रिक, अन्मनिविध व्यक्तत्वन व्यारकः त्य वाष्ट्रभन्न जानिक भविक छ विज्ञान विश्व द्यात अब कार्य नामाना द्यारकत क्रमद्रम এবং জীৰনের অভাব মোচন করিতে পারে नाः खण्डार खानारमा त्य कान काटन सम्ब जातज्वदर्यत धर्म इहेट्य अम्छ विश्वाम दक्षम करमरे मजरद ना। किन्छ धकरण रम सन मृत रहेतादह। अगास गाजीव जैवक्य कानमञ्जा चांचादयात मदमाशक मदल অভাৰ মোচন কবিয়া कृत्य कृत्य कह স্থীয় ধর্ম উপাবনা অন্মতাপ দয়া কমা विश्वाम नाम निर्फाषिक। ष्यञ्चक्रयकशास्त्र क्रनत्य অৰ্ভর্থ **उद्ध**, এदः ष्यञ्गनामिरशत सहस्र स्राक्ती-প্ৰবেশ कतिहा छाशामिश-কেও চরিভার্থ করিভেছে। কেবল ইছা नत्र, व्यविति गृह ७ गोर्गा छिन् कार्यात সজে সামাণত হইয়া ভক্তাদিলের জীগনে गुज्राश निक्क इस्टब्स्ट । ধর্মা, কেবিয়ে কোন জালে প্রকাশিত হই-शाक्तिः हिन्द्रमनात्व खाचारणं भवानः করিয়া দুয়িত সামাজিক জিলাকলাপকে त्रमार्किंड क्रिक्टिक, ग्रमाणाख्य ८७म ক্রিয়া পাছতি আছার ব্যবহারকে পাবিত করিতেছে, বালক বালিকা, যুবক, হক রক্ষা, मकरणत आहरिक माथु हेन्छ। तकना पूर्व कतिश अरक्ता अवेश अविनम्ब कर्या আপনার শরীরকে আবেন্ডিড করিডেছে। वर्षमान करल हिन्दुमभोक बर्धा कि बेर्फ हर । त्वरण विवास, विद्वास, अक्ट प्राप्त জাচান, কণ্টকা, নাখিকটা। এইবুলা কোৰ प्रदेश्य उर्गाप हरेगारह । महाक्रवान अव नीप्र वं वार्य हरे एक। तम ममारेक मार्थ

बाबस्थेत तमाचन लाकित्तित हेन्स् केवर चा चाटवत गढक त्य शांतकात्व विकिस, रमके श्रीत्रमादन दमहे गयाच इतक्षा अन्त्र अवश्री গরিমাণে উলিখিত আচার বাবহার লোক निरंगत च अंदनत डेमेंट्रमंती ट्राइ महिमादन गयान यथी ७ डेन्नडिनीन विक्यू नमा-জের প্রথাবলি উন্নতজ্ঞান উত্থানোযুগ प्यम्प्रतमात्र-मन्त्राच्या नवा मन्त्र माटप्रक्र हेन्हा विक्रक, क्रम विक्रक कान विक्रक, धर्म-বুলি বিরুদ্ধ। অভএন হিন্দুসমাজ অভি पक्रां विकत्यवस्थान इहेशारह। **छेक् निक हरेता** वतः जांशतक मांगाना বালুকা বস্তানে আবন্ধ করিও, আগ্নের-গিরিগজার নিস্ত গাতুদ্ম প্রতার অগ্নিন-জ্ৰণকৈ বৰং মিশ্বাস ছাত্ৰা নিৰ্মাণ কৰিতে চেন্ট। করিও, তথাপি মন্তব্যাকার নিমেনি-বিত বজ্পন বলবতী আশাকে অবরোধ ক-ति अ ना । तमने छूटक कोट जर्ने कातक वर्धन अहे हत्वासा, वन्द्रपट्या अहे हिस्सा

একনিকে ভ্রমসঙ্গুল অপবিত্র সামাজিক দেশাগার, অপর দিকে বিরুত অস্তাভাবিক विदमनीयवादकादतत हीन अनुकतन ७ म माव्यक्रिकः अक्तिक कुमश्यात अक्कान्छ। পৌত্তলিকতা, অপর দিকে সংশ্য নাক্তি কতা, অথবা ক্রিরাকলাপশূনা ভ্রিভাদ্ধা-रीन ग्रनभाकतिर्वाक्तिक अधहरू किनम्भास কাৰ্যা-কারণ-সন্থুত প্ৰকাতন চ্ৰেকাধ্য বি-জ্ঞান বৰ্মা। ত্ৰাক্ষণৰ ইছার মধাৰ্তী रहेत्रा मकरलंद सर्था नांकि मामक्षमा मन्त्रा-ৰন করিভেছে। অপ্রতিক জ্ঞানে সকল व्यक्ति सम्बन्धिक लिकाश किता नेच-तित भारत स्कूल सञ्चल भारताच हरेएछएए, aर मन्त्रा नरमा तानका विश्वान कति-त्वरहा अभाव की कर की म, पतिक, धनी, विकास, कुल , आहा काची मकटनत क्रान्टवत मजीन-प्रत्यक काल जिल्ला है अरह सुन्य विच

भारकान बगानीएक गामा किक मुखन निरक ক্ত্ৰিভেছে; বিদেশীয় বাবহার পদ্মতির সভা-गात गः धर कतिर ७ हर , मामा किक भारतर विश्वक उर्शामन कटन ममाजटक वर्रः शर्माटक धक्षिण कित्रहा सभाग ७ घटनमा बत्श আৰিক্ষ করিভেছে, এবং নাল্ডিকভা ও সংশা-अणिम विष्णाम भटकत शर्थ व्यवद्वराध कहिटक-**एहा एक वन वांनी अना एक जारा। वर्ड निवानी** ভাতৃপণ ৷ ভাতাত হ'ত, অজ্ঞানত। পতিহাল कत, युवुक् रहेता लेतरमध्यदंत धानादम का ল্পানিক ধর্মা প্রিভাগে কর, এবং নিভা সভা ধর্মকে অবিলয়ে আঞ্চল করিয়া চিব্রদিন প্রম সম্পদ্ উপজোল হর: " ATIT প্রমণিতবাং বর্ণার প্রমণিতবাং व्यमिष्ठवार। महार इत मंकार मेटकारा ভূতানাং মধুঃ। কাল্পনিক গর্মের গ্র পরিত্যাগ করিয়া বভাকে আঞায় কর, এ-দকে আতার কর, এবং তাঁহার আদিউ লা দাধর্গকে আতায় কর।

भदगाविष्द्रान।

খনা সেই জগদীখনকে যিনি এই বিচিত্র মন্ত্র্যা জীবনকৈ সংরতিত করিয়াছেন। বহু বার তীহার স্থানি কোনাল প্রাণালালন করিছে নিযুক্ত হই ভতবারই মন্ত্রা জীবনের অভ্যান্ট্র্যা রচনানৈপুণা দেখিরা বিশ্বিক হই। যদাপি সর্বাবয়ব পূণ লকান্দ্র করি দেখিতে পাই অভি দানে সাম্ব শানা প্রভাৱ যথা স্থানে অনুগন কৌশলসহকরে মন্ত্রি যথা স্থানে অনুগন কৌশলসহকরে সমিবেশিত হইয়া উৎকৃত্তি অক সৌটির স্থান ক্রিডেছে। রস্পোশিতহেয়াত যন্ত্রিস্থান ক্রিডিডেছে। রস্পোশিতহেয়াত মন্ত্রিস্থান ক্রিডিডেছে। রস্পোশিতহেয়াত

भविभूके किरिडाह। विश्वाम भविताक इक्टनकामनामि विचाइकत किया वार्थना भाभिमि मन्नित रहेत याहिट छ है। वर्गसेख **इक्रमञ्जू ७० जञ्ज अञ्जि अर जार भारी तिक्य-**श्रद्ध विक्रिय । वृद्धित संगमा त्रांष हरेट्ड है। किय आवार रमानि मर्दन आन्वराजन छ क्षे भटनामिन्द्रत थि नवन निटकन कवि छार कल है भी विस्माहिए এवर लख-श्रुताक पूर्व इहेगा श्रीष् । दर भातीविषाः জালোচনা করিয়া সহজ নাজিকের কঠিন क्रम भवगार्थ जिला तरम आज व्हेमी याहे-তেছে, শরীর বহিজ্ ও যে বাহাবিজ্ঞান আ-- ৰোচনাম মনুশা প্ৰতিপত্তি ও মনুষ্য নভাত। विविश्वक्षा मानद्र ६५० काट्सव यावधानटक का किकान करिया या हैट करह, यन ई काहात बियोग कृति । मटनत अथना क्लांटनत निव्नं-खुर्बंद क्षति निर्मत्वाय स्ट्या এहे ममल व्यविश्विक किंद्रिटलहरू, अदर दय स्थित भरने হে ৰূপ অনতা, যে স্থানে ভাছাদিগের क्रांमक क्यान्ड()

বস্তুত জোনোলতির সভাব সদৃশ বটে মে কাছা এক বিষয়ে সংঘটিত হইলে তং-मावणीय मकल नियदाति छेथ कर्म माधन कदत बोबर भूरिकि अलिकि अस्तकारिनक विष्टत्र बहस्ता साहात लोग मक्क निरम्न करत। भा-तीत्रवित्राध रम किकिथमा गाँउत्र छेन्नि ছটাং, বাস্পত্ত জানে যে যন্ত্রবি**জানে**র क्रक्ष लांच इट्टा हेंह। मन्त्र में बंटन म-स्रोविक, किन्न क्षांकिति मान्न नाविकठा শালের উমতি হইবে, রসায়নশাত্রে ক্রি कार्यात के अवता के के देवा के जिल्लीक रिन कार वार्राव विश्वतं नोच हरेटव (काय-क्षामा क्षेत्रमंद्रिक के बिक्विय सर्देशके थे जीक हरेटच दश विकासिक करेगी बकारी अहर का मनन प्राप्त । विषे मनन पाति। अभेग विकाब एक - २३ देन गुक्त छान-

हाई छम्ना इस । दिस मिलिल अनाच गटकानेन बच्च जरुमा अख्रायक मिष्य शहरत (युक्न गमल कनतानि वाटकानिए देव करः गरा-জাত তরক মানা ক্রমণ প্রশাস্থারত চইয়া कुनएक याणिकन करते, त्मरे बन हिटला লিভ বিশা সর্গীর তরস্বাজি নিয়ত বিভাত इक्ट बाटक अवर श्रीतरमार्व छाउद म-लिलदामिटक जोव्हन करतः शहस मकन विमाति मेदनेत मदक मर्मान मेशको । कारा र्केटक विक्रिय-मंत्रक स्टेटन पट खट कर करा কান বিদ্যাই তিষ্ঠিতে পারে না। মনই বিদ্যা লাজ্যের রাজধানী,ভাগ ঋবিকার করিলে আর अक्रमहे अधिकृत हुए, छ हात एस अवश्र हर्टल गकल उड़्ड़े अवगण इत्यां मातः। কারণ যে কোন প্রকার জ্ঞান অনুবাবিত হউক মনোরভির পরিচালনাই ভাষার অ-পরিতাজা উপায়, তদাভিরেকে কোন দিলা: রই উল্লভি সন্তাবিক নহে। বিজ্যান্তনীতি বিশা বিষারদ পণ্ডিতগণ, কি স্থানিপুন চিত্রক: দল,কি স্থুমাজি তবুজি ধর্মশাব্রজ্ঞগণ, কি ক ঠোর পরিশ্রমী পদার্থ বিংবর্গ, কি সুবস্তাত भट्टे भश्चिक नमं, नकदलहरू गर्थर्शहरू करल माना इंडिन गोशीया धर्म कतिए रूप, ७२० মনভাত্ত্ব অবগত হাটতে হয়। সকল বিদাং সম্বেক্ত মনোবিজ্ঞান এৰপ আবিশ্যক ও মহতঃ মমোবিজ্ঞানের এবস্থিধ নহত্তক সাম্বন্ধিক महद् कटह। किन्नु अहे मन्त्रिक सहद् रा-ভিরেকে ইহার একটি উচ্চতর স্বতন্ত্র সহয় 可你这些儿子,然后一个人,不是是我的人。

পৃথিবীর মধ্যে মনুষাই স্বাহিত্যক।
শোচ পদার্থ, এবং মনুষ্টেয়ার মধ্যে মনই
নকাপেকা ভোষ্ঠ। আটান গ্রীস সে
ার একজন সভাজিকান ভাষার আচার্
গানে ভিতাসা ভারতেন তথ্য মুর্গা মার্গার
আচার্যা উত্তর ভারতেন তথ্য মুর্গা মার্গার

OMES CHE THE WE SUME ATTENT BE VERY BUR OF SUBJECT OF WIT BEAUTINE WIN WAS STREET L. CT. স্থানাদ নতে তুমি একাংগ সংগ্রহমান ভাষা ভোষাতে পরিকে কর্ম কোটি কোটি ঘোষন উट्डि स्रोतः सर्व रहा क स**्टार** शका क्तिमा मनाठी ए अनत्वत भट्न उक्टबाड क्रेज़ कि क्रिएक्ट्र । अहे बाकारमत महत्पादभरे त्यरे छ्रांम छ्रावनांश व्यमःचा বেকে নিচরের কৃষ্টির ভোষারক্ষা শরীরের चित्र महत्र पूर्वि चयु छत् कतिहरू ह, धादश ज्ञाहामिटवार स्थानि चक भर्यादिनाकमा कतिग्रा কালের অসামতা হাৰ্গত করিছে। কিন্তু छान मृष्टिक अञ्चलक मार्रिशास मर्गन कत. অগণা লোক মণ্ডিত অদীম আকাশ অ-পেকা মহত্ত ৰূপে অনুষ্ঠেত্তাৰ ভোমার নামার প্রতিভাত হ্ইবে—স্বন্যজ্ঞান অ-নন্তপ্রীতি অনত পরিত্রতার আভাদ উপলক্ষি कांत्रश कृष्यं रहेटन। यहान क्षकाश्व নৌর লগতের উপমায় ভোষার শরীর ধ্লি-क्यावय यदमामाना । अक मिटक मश्याणिक অপরিষেয় লোকরাশি নহস্র মহস্র বংসর व्यक्तिम बदक जागमान हर्देड्ड बात निटक की प्रेयर मामयदम्ह सादम लादक मीर्न श्रहेशा मृथियो छरत वह दक्ररण विष्त्रत कति-**उट्ड केर गर्ड क्टमड़ ममाभिड ना रुहेटड** एरेटक शिवकात महित विजिल हेन्द्रवाहा माज्यत विश्व मंगरंडत महिङ आमानिएनः महीरतंत्र मिठा छ चानशाती महत्व- धनर ७५-गरिक मामन की देशकी है समान साजी व [4.9448 | [40.40]||##C############

বার প্রকার ইইটেডি নৈত্বর অন্তার চালোক সভাবের প্রকার কাছে, নেই ফ্রানেরের
প্রকারণ প্রকার কাছরেছি যে অভীতিও
প্রকারণ প্রকার কাছরেছি যে অভীতিও
প্রকার কাছরি শীরি পরিবর্ধর পাল নাই
কার হুর্যা নির্মান হুর্যা নাইরে, বিশ্ব বেরু
ভয় হুইয়া যাইরে, আর্ক্রণ বিকরণ বিশ্ব
ক্রিডি হুইয়া ঘাইরে, অবাধি আল্লার্য
কারর চুর্ন হুইয়া হাইরে, অবাধি আল্লার্য
বিনাশ হুইরে না। ইপ্রের্ম প্রতির্মিত।
আল্লা, অবিনশ্বর নতা প্রত্রের প্রতির্মিত।
এবস্থাকার আল্লার স্বত্র সহর্য

বহিচ্ছাগতে ঈশ্বর প্রকৃষ্ণভাবে অবস্থিতি করিতেছেন, অন্তরেই তাঁহার উজ্জুল এ:-প্রাকৃতিক ঘটনাপরত্পরা মনের मद्भ विक्रिन मस्स रहेटन पर्य होम लाका হীন কঠোর কার্যাকারণ-শৃষ্ঠা মাত একান করে, কারণ শক্তি সৌন্দর্য্য ও কৌশল বাহা कि हु जकतरे भटनतः जाव। **अहे खका या-**হারা ভ্রমাল ও আগ্রহত্বিমূদ হইয়া মনো-বিজ্ঞানকৈ পথায় করে, ভাহারা অকুন্তিকে मोक्या मिक ७ अधि। विहीन, धनक नार्या-কারণ স্রোভ বিবৈচনা করে, এবং গোর नाल्किका भटक निमध रहा। किन्नु दर बीत অকৃতি মহাকারা আতামুদ্রান করিল তদ-कुछ छ छान की हि ७ श्रीबीनहा मब्बाह विविध मत्नात्रस्टिक छेक्कृतकाटम छेशन व करतन अवर उदमाहाट्या जन उन्दित मकल विषद्यक অৰ্থ হৃদয়ক্ষম করেন, ঠাহারাই ঈশ্বর-গ্রাধণ सर्वानिन, कें।हाडाहे मध्यात अट्हिनकात य বার্থ ভন্ত অবগত হয়েন। 'আলানু দলানে आंखादनाहमात्र विद्रांट इहेबा वांक् आदेशादन উন্মন্ত হইলে, কিয়া শুল ভৌতিকপদার্থ-বিজ্ঞানে নিমগ্র ক্টবেন, মনের প্রকৃত মহত্ব ধর্ম করিয়া বহিচ্ছ গতকে তদুপরি উদ্বোদ नव केतिएन, व्यास मोखिकडा छ व्याका चा-हरम। शक्तिक आंत्राजिमानी विकासन्त्रन

लगा विकास विभाग का विश्वी का का विश्वी का विश्वी का विभाग का विश्वी का विश्व का विश्

यांन्यांत्यत्वेत्र भावकित् । यहस्य म-শ্ব শ্ভিপন্ন ধন্ধা, একাংগ স্থেলিকে ধন্ধাৰ क किराहम काम कामा माना। अपोद्धत मक्ष अधिक्षित् है कराय कहा पदिभक्तिकित प्रश्नेष्ठ विषयि सम्दर्भवद्यक प्रदेश 斯(十) 自为日 南直流列 的进行情况中 মেএণ্ডের ক্ষার অকল ত্যোলার পাক্ষ भागतिक में बेट के भी हों। भी के हैं के का ना ना वेर्रेत, कि पान्धानगर अस्त्र ने उद्योष्ट्र मधात, ने कि जीन भीन एक कार्य, मकरतन है आ क्षिक साल आर्थायक स्टब्स् लास्त्री जात्सहरू क्रमग्रह्म १ वर्षात्राहरू । विच यहवर छवि Wer duty or bighters, the and · भं किल्ला भीत गर्भ, क्यांक्रिक सथ, छ।शा सभ् व्यक्कांद्र েই : তাহ জোন প্রীক্তি স্বাধীনতা সম্পন্ন ा राम प्रमाण भगावा व**श्विमितिएक को श**दक (मिन्द्राप्त व्याप्तर) शास्त्र मा। मिट्रमदस्त मट्सर ংখ্য কাইটেড কন্ত শত শল ভোৱের উদয় হয় क् डाइ ह मध्या कतिए सार्व, अवर एक ह रा छ। हा किशर के प्रांचिमाल नगरा का ब्रिट क भारतः विद्वारकतः माध्यक्षेत्रं सन्त कृदि भारत करत अभव इष्ट, तिष्ट्रारास्त्र नाम वि-পুথ হ্ৰ আৰু ভাইছিলেই কিই মান কু-राणि पर्य २२ वं । ज्ञांकवन व्यविष्ट प्य--দংশ। চলত জনভাৱী ই**ল্লিয়া**কীৰ জ্লাব-

তম্বে এক নীভুক করা কম হাত হ ব্রিচনের দলে ভাষাদিনের দেখা নিবল করা, এবং এই দনত নাধানও আছুভি ভার্যারণ করিয়া দ্বাতীত জান লীভি ইন্ধার সহিত ভাষা নিবের সমভাব আন্তর্নি করা অভ্যত পরি-শুম্মাধা। এই চ্রুড কার্যাে ভ্রিমাতে ভামাদিগকে প্রস্তু হুইতে ইইবে।

उक्त दिवाह।

थायता जाकास जाकारानम महिस हो। ক্ৰাশ ক্ষরিভাছ যে, বিগত ২০ সে ভৈয়ন্ত (मिनिनी पुराय अभिक्त हर्गड माहरियन प्रायुक्त माहरे লাজেও প্রাথম ভাষ্টার প্রাক্তিক জীমুন্দা কুংগান . यशिषया अभिन्त किली १५ कि लेक्स प्रमारक खारीके बार्य महात्र करेत्र, विश्वविद्या क रनरकरे अवश्रक शास्त्रित र शास्त्रव शिश्वक सा अलाक्ष्मिन बस् स्वामन। गामनीपुर या निर्मानी रेरतर्राक अभागारण्य कर्म भागान करा श्वामक भरान अन ना त्यान " नाकनः রায়ার বজর বজজে। "পুরুলের রচসিতার वर्षभाम मन्द्र कार्ना श्रोती आभागितामात्र । अर स्क्रम वाष्ट्रगाताच्य वस मनामस खाक्रहमात महिद्यासि माधन यहिर्दालन, अहेका छिए দুধনীয় সামাজিক নিয়মাক পরিবর্তিত কবিয়া দেশের মুখোক্ষা ল করিলেন, আগনার কুলাকে পৰিত্ৰ করিকেন,এবং একটা নেক্ষে পরিষাতের প্রতিষ্ঠা করিলেন । জাহালে মাধ্যাদ প্রদান না করিয়া আমন নির্প ক্ইতে পাছি মা ৷ পাত্রটী শ্বনি স্থানীশ ধর্মপরাধণ ও কডেবিলা। िन वरे व्यमस्य भिष्ठान्त कर्रात्वरका ইংরাজি শ্রেণীর শেষ পরিক্ষায় উত্তীর্ণিট্র गारहर वरः गरशाहिल केलानि आहे हो बार्टन। रवश्यक जन्मरन विकित्सा नार-मान भारत म तिया की स अदिवादिक मानिक अस्ति। विक डेपॉन भावन कविटबर विमानि

स्व भाक हा, जनाहाता जार बाब रहका. डीहां क्षक्क थात्र ह कुमल क्क । रेगन-त्राविक निक् निवारन नेट्यानिकन सोख इन्हें। विकादकत भूटकाई जिलि विका तिकास केविक वरेर छेशागैनांकि निका करिताहिटलन, क्रकार व बल न द लिख कर अनल करेगा एक न मी अहे मकल विषय अधिक उद डेंदक व ना छ कंत्रित्वन मरकह नाहे। दिवाह छेपलस्क भटवत श्रस्तुतिभ द्या। आहरू। श्रदाक जान বরের অনুষ্ত্র হুইচে প্রেন নাই, কিন্ত व्यक्तिमेनुद्रम् । व्यक्तक महत् ७ विश्वकृ द्वार्यहर রাজনার্মণ বার্ধ ভবনে সমাগত হইখা लायामटड छीड्डिक छेल्माई ल महिला आसान ক ব্যাহিলেন, এমন কৈ কেই কেই ক্ৰীহা चित्रात अधिवाताचि अर्घास मेर्गा मिटक छटन / क्षतन कविट र सक्षात व शहार नाई । १**वया**क कार अमरवार पुराक भागात महीतावन : च्यास्त्रीशृत्तं धककोरतः समुष्रुम् मान्साधिः श्रामिल । त्रारि चेल्ल ल प्याट्नालगात्राचा कीय भूका प्राक्षान मार्क्षाङ्क, वामग्राङ्गदत ারপুন, স্লাজনেপ্টার (কি)পাছেরে, প্রতিষ্কিত গ্রাম, কড়াজেন একাকেন আধ্যান-স্থান কল-तत्व व्याक्त करेना, व्याधकारमाव निन्त वन क्षाधितः सार्धिकि रहेन जनः सन् कोइ भट्य भन्दात्रभाग इंडेएक व्यक्तिल । मन न श्रात्म हे फिलाम महाराष्ट्राय, काहांत्र मुहन च-নতেয়াৰ ও বিষাদের চিহ্ন লাক্ষিক কয় নাই।

अनिम युक्त श्रादमश्चर ते लेगा हा व अरम्पन जोक्त्यत्यतं कर को क कहे नाव आव कि कू व्यान के तिक्ता गा। जाक्त्यतंत्रं यस् कान यात्रा आंत्रा, भिवतात क्षणमाटकत शाव-क्रम कर आनम निक्ति हहे एक एक, क्रम प्रकृतिकातं क्षणमात्र विविद्धिक क्रम मण्डा भवाषण कहेरत अक्रके क्षणात्र आंत्र अभिक क्षणकात्र के क्षणात्र क्षणात्र क्षणात्र क्षणात्र वात्रा मकत्र क्षणात्र क्षणात्र क्षणात्र क्षणात्र क्षणा

गएकातः अतिकाक हरा अवट कमक्षकात नि-क्कि वर्तीय मछाद्यांकि ल्याटकर हिरण्ड अमा भाषतीं छटन अमानी छ एक : एव वर्ष भारा धीछित ताजा शुलिरीत गीमा क्हेंटक मीयायत श्रयांस जात्य हर, त्य अत्या लिखा পুक, खोड़ा 'ভिशिती, खी भूक्य मध्या शतम পৰিত্ৰ স্কেছ স্থান আৰম্ভ বৰ, পাৰিবাহিক मकल क्षक बिकल महम् विक इन ममास्मत पृति उ व्यानी हय निमके इस, अवर ७६ পরিবর্তে বিশ্বস্থ কর্ত্বনানুসোদিত আচার रादकत आणिष्टि हरीय मगल प्रिवेटिक का इस्मी धार कर अधिक वशीवन अभगविष क्स्, इन्स् कला ए शुक्त विदेशान स्थानमान स्था रमान पर्याते गाउँ। (गाँदे पर्याते व्ययदेशय धानाः । षेषुण प्रका गविवी भट्या काल कोटलर्रे करा अंक्ष करते साही। होश काला क्रमक्षणक पणक 人群(中) 网络 语思 美国行政的行政 电影特别 电门器 要毫古代 万

লাক্ষ্যের মধেরের মাভা চ

াজে বাংশৰ কাষ্য ৰূপন লোগ কিন্তুৰ এই ব কাষ্ট্ৰিটো নিযুক্ত কৰিবলৈ কাজে এটা বিভাগ সন্ধানত পৰি আক্ষামাধিক, ক্লিডো স্কল্পি এই এক দ্বিধাৰ সংগ্ৰেষ্ঠ সভা এই

শীষ্ণ বর্ত্ত কৰা মন্তৰ দেন গালাল বল পশান্তি এতন গলা হাছেৰ স্থামন সহল শরেনেত সজ্পানি গ্ৰাশনে তিও শন্তি নালালন ক্ষান্ত শীস্থান বাৰ বিভূগনাম সন্ধানাল ক্ষান্ত শৌষ ব্যাধি বংগায়ে ক্ষিলেত দেৱা

भारत वापान राज्य राज्य है करा वाज्य है करा है

পরেক্ষ্য বর্ষের কর্মানারী গণকে ধন্যবাদ আবস্ত কইলে পাতৃরে ঘাটার প্রিযুক্ত নার কেবেন্সন্মান ঠা-কুর মাহাশবের প্রভাবে ও প্রিযুক্ত রাজারাম মুখো-প্রায়ের পোনকভায় বস্তুনান রর্থের কর্মানারী নি-কুক্ত করা ক্রিন্ত, ব্যা

भणाभिति।

विष्ण प्रतिकाशि है। दूर्व ।

विष्ण प्रतिकाशि वद्ध ।

विष्ण प्रतिकाशि वद्ध ।

विष्ण प्रतिकाशि वद्ध ।

विष्ण प्रतिकाशि वद्ध ।

विष्ण प्रतिकाशि व्यक्ष ।

विष्ण क्रिकाशिक व्यक्ष ।

विष्ण क्रिकाशिक भ्रम्भितः ।

विष्ण क्रिकाशिक भ्रम्भितः ।

विष्ण क्रिकाशिक भ्रम्भितः ।

विष्ण क्रिकाशिक ।

न्मिनि स्थापक सिव्क राजस्य (वाप्यो नारां स्थापन द्वास्त्रमण ज्याराहक रेसन्स् वार्के के इंटल जन्मां ज्याबेरल, किंगि किंग कि शक विराध स्थाप स्थारे स्वित्यान

भगरामक का हार साम न ता मिलका छ। छ। भगरामक का का मान का नाम न ता मिलका छ। छ। भगरामक का मान मान का मा

া ক্ৰিকাভা **একোস্থাজ**। এখনৰ সংখ্যিতাই কাল ক্ৰিয়ে, ব্যক্তি শংপ্ৰিক ভা**লা আন্দা**ন্ত।

ে স্থাক্ষী কলিকাতা প্টল্ডালাভিত।

ত লৈ তথানে উপাস্থেগ্যি ক্রি করিয়া থাকি,

ত গ্রালার পরে এক একটা বক্ত ড। করিয়া

ে ০০ এখান সর্বাস্ত প্রায় ডিশ্রী সক্ত ড।

ালাছি

ে বেল্যালয়া ব্রাক্ষেমমাঞ্চা এই সমাজে কভিত্যাল। **প**িথারিটোক্যান্তিত । ১৯৬২ জানি উপালেয়েয়ির কর্মে। কবিলা এটিক, करा उपापनाक शह अक करती रक्षा प्रश्निक । करात्न काव ३४ के सक्ष्म का कहिलाकि ।

ह। बायकुकश्च बानागमान ।

আছি মন্ত্ৰীৰ কিন্তাৰ পৰা এই সমাজ ইইয়া থাকে ২ বোগ হয় এই সমাজে ভিন দিবন বিদ্যা-ভিলাম, আতি দিবস এক একটা ব্যাহ্না কৰিছা-ভিলাম।

थ । गांकाशाही जामगगाम ।

উজ প্রামে ক্রন্তি রবিষার সন্ধারি পর এই,
সমাজ ইইয়া থাকে। এখামকার সভা গংলা
৮ ১০ জন। বাধা হয় এই সমাজে জিন বিষয়
গিয়াছিলাম, এবং ক্রান্ত দিবস এক একটা মত্ত ভা
করিয়াছি। ক্ষপিচ সাঁতোগাচীত কাতপ্র বা তার
পরকাল, উপাসনা, ধর্মা, এই কর্ডকই দিন্দ্র স্বন্ধ হাকেই ছিল, বল্ন পুর্ক্তক হসই স্বন্ধ বাক্তর ভূতীত

८। दक, म्मानव ,त्राप्त भन्ना क ।

ाकास नवान लोगुन्हा व्यापु निवासन्। स्टबर प्राक्तिक 计编数 孤独的 金田 新红 花红维红 《河南歌》 自己解析 क त्याराज कार्याचे कार्याचे केरण क नम्भ और तोच्या हतिराठी एवं राज्येक प्रकृति भाक्तांत्र । चार साम् मा कवित्रः आहितः अवस्ति বোল দশটো কভ্ডা করিয়াছে। लाय प्रवास 羽带,有气燥的一绺"衣"之口,在"朝醉"。 李章 12.542 कार नर्गक हेनारकर नहांग ७ मगा विकास महकालक हर्षे बादल । फारहरू । का काटबर । कि हार क अंग्रिक व्यक्ति केंक्रियक कुछ केंग्रिक किया कार्य -लाम अवद दस मिन्स के विनयं अकरी नात्र र राश wholes whaters attended all -দ্যার আশ্বাস কাৰ ভূবিকে আবিফা প্রবা দাবি कुठं करेटल । १

१। क्रीबामशूब खाकामनामः

रविषयित सम्मान गाइ एवं मध्या कर्या गाउन । वामानकात मखा मर्गा स्थाय १०१४ क्रम । वामान कृषे प्रियम विभाग स्थाप स्थाप प्रधान क्रिया क्रमानमाद कानमीक्छ। निरुद्ध क्रमी एक्क्रिय क्रियाक्सिय । प्रकृषि क्रियम क्रिया द्वार्य सम्बद्ध अञ्च क्रियाक्सिय । प्रकृषि क्रियम क्रिया द्वारा द्वारा क्रम

५ ' मासिश्व बाकगयास।

শান্তিপুর ত্রাধানমাজে এক দিবস প্রমা করিয়া সেখানে বিশ্বাস, পীতে অনুষ্ঠান দিই জিন্দী বিষয়ে বস্তুত করিয়াভিত ল

ক্ষি কণ ভাষে ভাষে প্রাক্ত প্রাক্ত ক্ষা ক কিয়া বীয় উদ্দেশ্য সাগম ক্ষিত্রত বাবিকাম ক করে ১৭৮৫ শন্মের ১০ই পোষে আচার্যা মহাল ক্ষের অন্তশান্ত্রায়ে ক্ষরীপ ক্ষেত্রার ক্ষর্যপাতি

ভন্তবাধিকী পত্তিক

কাপৰাছ ছা প্ৰাংশ গ্ৰম কৰিবাছ, উত প্ৰাণ কৰিবাছাৰ প্ৰেল্ডৰ প্ৰায় ওচ জোল অন্তর। ৰাজ্পীৰ দাৰ্গত খোলে চাক্সছে অনুভৱন পূৰ্বক প্ৰমুক্ত গ্ৰম কৰজ সেই ভানের প্ৰেটাতৰ ৮ দোল অন্তৰ গোপালনগৰ আমেৰ পাতৃশালায় গ দিবল অন্তৰ্গত কৰিবাম।

ানতিটি দৰে গমন করিতে আরম্ভ করিব। প্রায় হটার সময় বাগ্ডাডেডায় উপন্থিত চইলাব।
বিদ্ধান প্রথম আনি সভাপ্ত কাভার ইইয়াভিলাব।
বিদ্ধান প্রথম আনি সভাপ্ত কাভার ইইয়াভিলাব।
বিদ্ধান প্রথম আনি সভাপ্ত কাভার ইইয়াভিলাব।
বাগ্র করেবার জন্য বাগরিব। দ্যালা আমার সমুল্লায় প্রোন্ধি দূর ইইয়া সলা আমি দেবিলাম,
মালক পরিবাশের প্রোয় সকল লোকেই ব্রাহ্মধন্যের
কন্য নাকুল কইবান্তে, নিজ গোলিতাংশ লোকেই
ব্রাক্ষপ্রের কল্যা বিব্যা কিছু বল কে বাং
ক্রেটা স্থানের কল্যা বিব্যা কিছু বল কে বাং
ক্রেটা স্থানের কল্যা বিব্যা কিছু বল কে বাং
ক্রেটা স্থানের কল্যা বিব্যা কিছু বল কে বাং
ক্রিটা স্থানের কল্যা বিব্যা কিছু বল কে বাং

中心 (中央) (中国) (中国) (中国) (中国) (中国) हिर्देश प्रभावता पुन्ने विक्र विक्रण ख्राप्तिकाण है। प्रमान वर अवितास अभाषातात गुरुष जाह াত হট্যা আসাবৰ্ষা আসনাৰ জন্য নাৰ্কুল क्षेत्रा सिक्षित्राचन "आराम किल्लाहरूनि 製物 भिन्न काली अध्या अध्यासामा अध्या कालान-रम प्राप्त मणा हो। जा त्रांन्तपन्त ब्रोटन क्यांन्टर हा ला वह कदिलाहर । व्यक्ति भाषात्य । विकास दिलाक अकार काला २७के व्यावसात जा चालमां अवस अी.स ब्लंस . हिसीबी खोक्सप्ता धुद्रन काइका व्या, १००० -ক্লিক্ষার দাসক কল্পাত রাগিলেক জাতা নতে, त्राकाभर्या अस्टावन मटक मटक 'लोखिलक किया क 湖村 血和生物的 计有限信号 南南北野野 1 - 南美生红 मकातक लोश जिलेंसी, जारनकाक जेमब्राह्मय प्रना उंक्के व्यक्ति एशा किन हेक्किम व्यक्तिम मसार् इट्टबंड व्यक्तिक इट्टा डिविन हें हैं। इं क्षां प्रकासह रतया शक् काल कारणन जी, वसील श्रीति जीन, कृषकाराटक देवीरम्ब स्थाप पूर्व **इहेब्रा श्वल । यं होत्रा जूबि जूबि श्रुक्तक अध**ायन क्षियो विश्वाम विभिन्न शक्तिमीण श्रेशाय्छन, बाँधात्मत बार्यंत समा करे नाहेट इस ना, उँ। क्षता अक्कांत्र वे विमा वृश्विदीन निष् दलांकिन जिन्न धनी यत त्रांकाक हतियो निका कन्नने त्य, अभिनाप रकतन धनी के अखिहाइन सना नटर, हैं रा शृथि बीक मधुषाय अनुसामार्थनं विश्वमेक्षी । अनस्त. देमकारम अवसी जानामान जाना अहिया काल-नावाय अञ्चालम् नविनाम् । १०००

विभाग जोलामगार्थ्यक नामर्थमिक नगाएक

त्रम्य क्रियाहिनाम । प्रमान क्रिस्ट्रित खाक्षणाट वार्ष श्रीयुक्त व्यादीनान मिन्द्रस्त बाक्रिक अक्षित्य क्रियाक इरेग्नाहिन, त्यथाट्स स्वयं नाक विषय्य व्यक्ति क स्कृता क्रिया हिनाम । वाद्यिकादन जैनाहादा अ

३३ हे रे०ळ पारनो प्रकाल वेशन कविष्टा डिनाम।

निक जीनमात्र इन्ति बाणममाक प्याटक ।

প্রতি শান্বাত গল্পার পর পার্না প্রতাশি বিদ্যালি বিদ্যালি

अभिक कार्य स्थित्य अस्ति स्थित स्थानिक रिक्रिय अस्ति स्थानिक स्थानिक

न्यास्त्राम् १ व्या १ त्या १ क्ष्मा स्व १ विकास स्वात्रास्त्रा का निकारतीय ११ व्याप्त स्व १ व्याप्त १ व्याप्त स्व ११ व्याप्त व्याप्त स्व १ विकास १ विकास १ व्याप्त स्व १ व्याप्त व्याप्त स्व १ व्याप्त १ व्या

भारत्य स्वास्थित । व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त स्वाप्त व्याप्त व्

धत् शंदमह व्यदिमाकतः।

ি গাঁভ যাবের পর। , লেখাক ু

म कार्या वामा व्यक्ति का जारायक मग्रहक ক্রিণান্তিক কর্মান। আধ্যার ভাষালানের বিধয় আমি বিস্তম্প থাৰণত আছি ৷ কিছু পিছ ৰপ্ত "祖如乾坤黄""昭君"2015年,田田、海军公司18年,代载于18年 পায়ে । এবই আন্ধ্যানাকায়ে তেওঁলো দুন্দিনা কৰিন। व्याभाव मुक्किया राज्यातः अभावतः अर्थमक वर्गार्थकः। दर अञ्चलेखा राष्ट्राता र अधिका भाषा ४ का विकासिकाल 古作"我(新祖院),不是似乎"我签件"》。 法国政府 经开门 (3) "胡桃" "我哪样啊话,我这点做作者,随她的孩子。 如一脚,一切下下一身情,你一种有什么好,也可是一个时间 भागांक क्यांचान काम्ब्राच पर्वाच वर्तन कांत्राक स्थापि 工作主义地建筑 不断病 唐人人 西斯二维伯氏疗外腺样子 "曹太帝,张昭建成人名法。""张宁、日子、"四爷"。 化酸氢侧霉 胡萝卜 "你们,婚"中 医动头 多山。 饰对解 他 医野科 राज है। एस अरुक्त नेताह हम देन मरण हम लाग न कर्ष र क्षा मा एक जिल्लाहरू भारत है। देन कोरा है जारे 1888 B 30 300 医脉络性 经净价值的 医乳糖 人名特拉 化费尔德二酰二酚 医化聚物甲酚尿 有繁化

一如形 机 逐一致免损的 选择有效 मुन्ति । द्वारा मा १५ महिन्द्रमेन सङ्ग्रीकार देशराहरू "我好一点,我不会一点的女子去了,这一样我们的最大的 一、日本市 对和中国的 77 m 10 1 2 1 ा १८ मी दलाब स्थितिम S 18 1 31 at a charita रहार हो । अस्य कारण साम्य अस्ति **भाग**ी · 表は かかり ・ シャ ・ かり・ を利用用(利機等 製 **)・ 的复数形式化准设计 的现代系统的 电自然 电回转 人名西蒙 事情化。《祖祖》 "郑海" 化二二烷烷二烷 化化化 医多种性病 化自己的 人名斯 医红红红 人名阿米特 经内心工 医二氏的 化烷基 重新縣 化原化剂 "班内公司"证"记载证明 西门行口 破损增数。 哪两个 错算的 · 4 1279、阿尔州省的 化氯 经存货工具 有制度 布殊解 维亚 ্রিত হয়তে বার্থিত : সংক্রমের গাংলাবিক ाय महाशास पर्या स्थानमा च प्राप्त भनेख का लिय भा । त्यां न विक्रिती निमंत्र त्वांत्र त्यांक श्रीक. ्याकीत क्षेत्रक पुरिक्षितिहाँ शक्तिम भ्योष्ट प्राचारण ा । ज्ञान कव, टक्कान न्यार्थित सम्बद्धाः বাং বিজ্ঞানাল্যা আমুডি পু**র্বা-পত্ত ভিত্ত** কেপ WART N WITE A BE A BIGHT CHE CHANGE THE भोभवात अपूर्व प्रदेश का करते के हेंगा भोरक । क ্ত, হ'ব আনাত্র নাম, আভিষ্ক জীপিক ইতিখাৰ ্প্তে প্রভারের হেকে অধুনাতনকালের অ

जियुर्य आ शमप्र हरें। जारा हरेंदेन दाबिएक लाह व्य अव्योज्योदमञ्जादमञ्जाक कथान कालि स्वरण, कथान या मुछ्रवरनी यावरकाम कावाहिए इवेशा स्वानि-খাছে। এক্ষণে জিজাস। ক্রি. কেন্ট্র চত্তিকে এই तकम परेना आमारमह इनका**नत्य शक्ति स**म् कम हे मन्यानन अलग सहराह असुक्रान लाईग्रा বাল্য সমত্র কইবাছে। প্রীয় সম্পান ভাষা নি (কে কে) ভবিক ও নাজিক বলিয়া মুখা করিছে भागम जारे मरूरा भी म समित भरित निःकार धनका श्रेटक शहिबारी अवैषा कालाइक्पद्वाप प्रकार पर कि क्रमार्ग कारिकाल अधिक अधिक कर्माटक्स, ইং। ৰণিয়া ভাষাদেয় সংগ্ৰন্থকি আভি লভনাৰে १७ विश्व १६८७ थाएक, किन्न खारणहा करें य-कता १३०१ प्रदेश अञ्चलसञ्च अवल्यानाक निमर्ग धरा होंगे, हिंकान ४ सिक्षाभीन यस स्वी, स्वस् पाल्लमार स लेक्ट्राइन आखरह एउंट्रबंधक विभाग आहरू है ज ा व्यक्त करेंग्रे हिंदी । जातीय तीकांक करिता राज প্ৰায় জন্মৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষিত্ৰিক স্কুল্ডিড ক্ৰ মংক্রে একর একর ভারত ৮ -一、外下门下的 各种的原子 জিকাৰ কটকলভ আছাতেল চল বেলাগ আনি 佐(監査) (2014) 10語(阿は) 10 見り だりましれ(ほと 一条环状 机砂 网络梅 寶州 计设值 "错"例答案(例 व्यक्षकील अकर र राज्य में बेल्ला अधिन अधिन । ক্ষিত্ৰী পাৰ্য মন্ত্ৰীয় সূত্ৰ ৮ তালে মাই নিচ'ল 电音量性 有限的一个会开个 每少的接触性 伊里,所见。 সভাবত হৈ **শর্মের** এক্ষুত্র লগীকা চুকিলে ৮ জ্ঞা अक्ष करदम रिकीस एक लाजमान्त्रील प्रमान, या व कृष्य छ ব্ৰিল **ভা, ইন্নেটৰ নিটি**ছ সংগ্ৰমত বৰ্ষায় **ক**িমটিল ক'ং কিন্তে আ**নিশ্ব ও**নি নামেন ১০ই ল্**ক**ে প্ৰত णारी कविष्या । का खामझा अल्ड १५४ । सक्ती आल जिल्ला ने उपाय को के कि कि दिश्ला वाकाल किया পালিকার পুর্বাহিত হয়, ভাষ্য কাম্বা ভারাবে কি नहित्य अन्दर्भाकन क्षि । एणन एक देशिहे एकि বোচৰ সচি বা বে, কে কৌৰ সম্ভূতিৰ সমাহত্ত नीर क्या वाष त कार्यन रागलाह गरिक साका व्यालन दिशुप कमाल क्रमान कियान अल्ड इस কোননা ভাষার আছিতের বয় জননত সে বুবিতে পারে নাই কিছা শুখার উচেব হওয়াজেই নে तम सन्माहाः। अक्ष संस्था समृत व्यक्ति शांविक हरा. ८०१४ को। १.४२३ जारा, अश्रीकृति कविद्यम् न। १ ন্ত্ৰে ভাষত ভক্ষে প্ৰয় ভাষ্ট্ৰ অৰ্থ্য शर्ध कृत, अन्तर तरिकरें, शिक्षिक विविधिक्ते। ब्री-ভিয়াৎ বাদত প্রাণাম ভাকার জানা আমামভাগে প-विष्यते व्यापान् कान्न, यक्ति स्य त्यापाम् **गाउ**न् रिमक्ति किल्ला केल्या काल्याकिक किल्ला भिक्ता कार, भावाभि रहाम पुके, काराह जिलाद वर्ष वर्ष-

संग छका वर्डपाम 'वाकिया बीय' जनवित्तय में जि ও ভেজঃ প্রভাবে এই সমস্ত সৃষ্টি করিয়া ভাষা-দিবোর পারিবক্ষণ কার্য্য নির্মাই করিভেছেন এই বিশ্বাস প্রথম হইডেই রাকার মনৌমর্থা আবি ভাত হয় ৷ ভাষার আন্তরিক ধর্ম ভাব সকল **७**थन ७ धन्तरिं इश्रमार्थे, त्म त्कमत्न असीत्क व्यक्ते वारण कार इहेरदर प्रकृतीर सारास्कर তিয়াৎ পরিমাণে মন্ত্রল ভাব দেখিতে পার, বাহা-त्ल है अक है अमाशासन महिल ७ एउ कि **निहीकन क**रत, खाशास खमनि त्मरे :मवा मत्मन निवा गरि-कड़े कवाहे पृत्ते है। (४ वह) ८७ व-धाक्रल करम শানী প্রভাকর ও আগ্রাক, প্রচণ্ড প্রভাব বিশিষ্ট वास्त्र 'अन्दल्ख व्यक्तिया क्रीयन चास्त्र मान खदल वालि आर्थ ने प्रयुक्तिक जनः सात्माय एकार्यम मामगः লাবিণী ংগ্ৰাস্থলীকৈ ও মনোহয় কিরণ দর্মণ कार्त स्विक हम्मगातक मञ्जूष आधिम करित हर লাও প্ৰায়েও ক্ষেত্ৰ ক্ৰিডেই

(क्षेत्रमाः आकामा)

Commercial Commercial

गरवाभनात ।

नाम कि नगरत रवण भाग गाम धुकारे श्र क्षेत्रमां के मरणां लिए ने ने ने छा । मन्ना के शिक्त में माने के शिक्त है जिला के लिए ने माने के लिए ने कि माने के लिए ने कि माने के लिए ने कि माने हैं जिला के लिए के निक्ष के लिए के लिए के लिए के लिए के लिए के लिए के कि के लिए के

ৰয়ে নগরত কভিপন্ন পাশী এবং মাচারা কীয়

सामा में (५०) अरेटबंध समार खुटाबर्ड, नामानाहर संस्थान समार किराहर में आकारण संस्थान ए । हार में आकारण संस्थान ए । हार मुक्ताबर के किराहर समार महार महिला का स्वाहर स्थान । किराहर के किराहर समार महिला किरा

ক্ষাস্থানের কেলা যারগ্র হছন। অবস্থা নিয় বিশ্বাস হারে চার নিয়াবিশ্যিত সমুঠান চাহি হ স্বস্থায়ায়

শ্রীষ্ঠান্ত ব্যক্ষারের স্থান্ত স্থান্ত স্থানের স্থানের স্থানের স্থানের স্থানির হিচ্ছিল হিচ্ছিল হিচ্ছিল হিচ্ছিল

জ্ঞীপতে পেট্ৰনেশ্ৰ ও সংস্কৃতিক প্ৰস্কৃতি বিষয়ে । ১৮৮(৪ (প্ৰিচ্ছত)

कीर्यः प्राप्त र नातः अध्युग्यस् (म क न ख मा, म छ। नम् क् । च र रचा अपन रचन ()

श्चित्राच्या व्यामाध्यक्त व्यामाध्यक्त । अन्तर्भ ।

बीयुक्तरकमन्द्रम् २१८०० पूर्णः, १९७४ छ। स स्थिकद्रशः । १ व व छ। ३१४

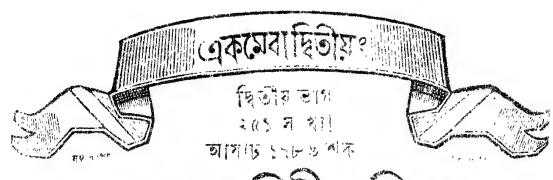
क्षीपुरुर व्यञ्जनाय त. १ पुण्यत्र चामवद्याः (१ वितीयीवाराः)

श्चिषुक अभवतूणाच १०११ हेन श्रद्धक समाक्ष्य । ('साफुशुक्त हे '

भीतुम्स अक्षरपुषाव मक्समारक्य कमार्गतः अरस्यस्य असीनकानः (कस्यूरणासः)

क्षेत्रक बिरम्खनाथ शेष्ट्रतं श्रहन कारकाः स नामकान (दिश्वामातका)

the state of the s	
विश्वक शावमाध्यमात्र गांकालागात्र क्रमा व वा-	Galban and
. अकर्ता अ भीगकत्वन । (व्याप्तानी सका)	ALATMON AND
জীয়ুক্ত কালীনাত দত্তৰ লিভাৱ আছে ব	अंगिमाध्ये अश
(with the state of the state o	
প্রীতি ই প্রকৃষ্ণ সংযোগ পিতামহার প্রান্ত।	निष्यामाच त्यान
र्शक्तकुर)	The state of the s
अकृष्ण अक्षानामास अक्षानीय शिषात जाना	6.6 may 4.6 may 20 mg
with the same of t	Candinates at
	ে ব্লজনোহন ধর ত্লভীকান এটাচার্যা
विदेश संस्थिति राजन तेल्य सामाधीय।	निमर्भ नाल्डि ।
(१९५) (१९५)	The state of the s
नामुक्त नीजनाथ श्वामात्रत निजागत्रत भागा	" विस्त्रात्रात्रात निक
ल्यांच्या (ने हन्यांका व्यक्ति)	305110
शिक्षक प्रश्नक राज नियुद्धा प्रदेश विवाद ।	मंगिक मान।
the state of the s	श्रीपुष्ट कानीमान लागित
ন্মিপুত হরণের ওলে, বাংশানুর ক্ষানার বিষয়ে।	1 12 market management
The state of the s	6 a service of the Comment
श्रिष्ठ तालाश्रामध्य न्या मन्यास विश्वास ।	4.5 common of the second
(Angle and)	The state of the s
	ल वस्रकत्य । व भाग्याच 🔻 🔭 🥍
भ्रिष्ट १८ एम १ । १९१८ १८ १८ (म.स.म.स.१५०)	The statement of the state of t
milko compression of action to the design was	with different factors
The state of the s	্ৰাষ্ট্ৰ প্ৰায়
美国中心的自然的 对一种一种一种一种	े भीसकार स्टब्स्सिश्या ।
वर्गकेंग कार ने प्रकृष की दिल्लीत व्यवसाधि किया।	े स्थानकाम । ज
(stantal)	to the second of
	भ कोलकार विक
	े देवनेन्युभ म
なけのではない はないであり いかとうしゃく	
the fermion and the second of the second of the second	page from that the species of the second
海岸横角 独立各个公司 1911年 首都門衛	व्यक्तिकश्चाति ।
अन्तरम् प्राप्त वास निवन्धाः	मावेक राजकात मस्ताति
	्रिक्षण्डम् भद्धान्यां त्रः
and the second of the second	ै दश् रमसम्बद्ध मृ दश्वाप्तार्थः ।
and the state of the second of	ं अवकत्मनाभ द्वाप्त
agueran y un	
280 91J7	अक्टाईलीम स्था
the same they are	। अभिक्त व्यान अनुमानि भाग्ना (भागा)
was the early server and the server of the s	ट्यान्त्र हास्त्र हे सामार्थन
作學生物 對	S A S A S A S A S A S A S A S A S A S A
李确信的,例如我们一个人,一个人,一个人,一个人	i de la companya de l
All Alva Ray	अभितम् लेकारा
***	निष्ठुप् प्रभावतामाम रक्ता ।
রেক্ষাল হত্যে ক্রাজিকাত সাহিৎস্তিক দান।	APPRICATE TIME IN THE CONTROL OF THE PERSON OF THE PE
Satisfication of the company of attachments and a	The state of the s
明天如 化红斑性的 化甲基丁油醇基丁二 医甲	किए की !
A WAR STATE OF THE	म है
का प्राचीता राज्य स्टार्शियोज्यात . 🥻 🦠	मिलीश फेर्ट्स नाधेत्रज्ञ न्त्राहणात्र स्ट्रांक. 🚉
क अंतर्भाक्ष्य व्याप	· 新聞歌画館 (現在) ない (2) (1) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4
The same of the sa	
भ वास्त्रका राज रहता । १९०० मुन्द्र मानु है	निष्यातिकास
	वाक्ष विदान
ा प्रकृतिक स्थापित ।	Statistical Augustalian Statistical
	प्रमुकेतात प्राचनात्रका (कार्य) ७०%
A STATE OF THE STA	गर्दोममात्रः । , । , । । । । । । । । ।
भारता विकास स्वास्त्र के किया है। जिल्ला के किया के किया किया किया किया किया किया किया किया	ए। हा सुरक्ष विश्ववन १०० (१००) । १००० (१००)
The state of the s	
	७ इ रविभिन्ने श्रीतकात सना निक्शन।
MA HEAR	অপ্রিম দুল্য (কলিকাজার জন্য)
क्किन भारतक विद्यानक्षेत्र संभ	AND POTAL DECISION AND AND AND AND AND AND AND AND AND AN
क्किन भाइतक चित्रदारकक न्यान अर्थिक क्रिका क्रिका	्रभावा महामह समा)
क्किन भारतक विद्यासक्त संभा	
क्किन भाइतक पित्रदारकक स्थाप स्थापिक क्रिका क्रिका	्रभावा महामह समा)



ज्यविश्वीयोका

शालभरमार काशावः

i kilje of the Commerce

्रा । १४ - १४८ व्यक्तिकः १५ ४ महिल्लास्य स्थानसम्बद्धाः व

四月间 电压 化油基板

14.34.

भागातः कामानसर्छ नामान इर मद्राम् विश्वासन्तर्भ भागान्तः भागाभीतामन्द्रस्य किमिन्नः धुरू मसुद्रमिट् म थार्थन्त्वः ॥

বালকের — নির্কেশের বহিন্দিনশারক প্রতি মনকে থাবিত হইতে দেয়। তালান মোলাছল হলা ইন্দ্রিয়ের বিষয়—ক্ষ্ম কামন করে। বিষয়িক সুবাল বিষয়ের প্রতি গমন করে। 'তে মুত্রোম্ ও বিত্তমা পাশং' ভালার বিশ্বীণ মুত্রুর পাশে বন্ধ হয়। তালারদের অস্ত লাভ ক্য় না — তালারা মংমারের অস্ত লাভ ক্য় না — তালারা মংমারের অস্ত লাভ ক্য় না ক্ষ্ম বিষয় সুখ লাভ ক্য়ি গাই কৃষ্টি পাকে। কিন্তু বীরের। মেই প্রব

আছে, নিন্তু আছে— সুযোর আলোকও আছে। বেই কল এথানে ব্রাঞ্জন আছেন, বিষয়ীও আল তেন এথানে ব্রাঞ্জন আছেন, বিষয়ীও আল তেন এথানে ব্রাঞ্জন আছেন, বিষয়ীও আল তেন লোকান প্রায়েশ ব্রাঞ্জন প্রায়েশ করি ভালেন করিছেলেন বিষয়া সালাক লোকান করি ভালেন বিষয়া সালাক লোকান হালেন থান বিষয়া সালাক লোকান হালেন থান বিষয়া লোকান লোকান করিছেলেন বিষয়া লোকান লোকান করিছেল ব্রাঞ্জন করিছেল বালাকান লোকান করিছেল বালাকান করিছেল। করিছেল বালাকান করিছেল বালাকান করিছেল। করিছেল বালাকান করিছেল।

থিয়েয় ঘ্রাছাসকলের লাজনা উপার ভারের নের উপুষিত্য ত ২০০০ সম্প্রেক সন্প্রার মান্ত্র মাজ জনসংখ্যা ক্রিয় বাল 一套(如何)下置 **ক্ষি**ত প্ৰায় প্ৰায় তাল্য তাহায় নিৰ্ভ क्षेत्र अध्याप्त (राजा एवाक ध्वास्त्र कार्यन के संदेशक (देवराम स्थान ११ हरते । জে (কান্ত্ৰি) আলোল আনু পোনা আৰু প্ৰায় পোনা (四九、九十二年四十二日)第1次 例(四)四十十五日) 李阳(1) 南西山 野山西京(霍尔默 医风解甲{ [本 क्षापिस, करत्र १ कि.मी.र परणल, भ क्षांस रमधाः कार्यात्र, भारतीय धार्ति — " स्व अभिगारिक सार्काशाहर १,०५६ छन् अधिकानि १ নিয়াভ ভিয়াত স্ব স্কল্প অস্তুচয় থাকি ভেষ্মারি ৷ - তাজেনার এই আম্বিরিক আর্থেনা नरम भूगं हर, ७५२ है। इति इत्नय इहीर इ কুরজাজালেরেপার বিচ্ছালত হুইয়া **ঈশ্ব**রের চরতে ধ্রবিভ হয়। বেমন উ।র বিষয়-তৃ-^{সভার} নির্ভাত ২৪---যেমন তিনি সংস্থায়ত লালে ৩৯৫০ বেমন ভাঁহার স্থাশন্ত **প্রদা**র আল্লে: দ গণিপ্রকে বিরাজিত দেখেন; ভিনি आक्ष्यं: ११६। त्रक् कद्रन " आक्ष्यां! অ [শ্রম্য : - বাশ্রম্য ভোমার দরা, জগদীশা ! অংশ্যনা ভোমায় করুল্য--আমি কে গে আমাৰে ভূমি দেখা দিতেছে "। তিনি ক্ৰছ-

অভা কোথায় রাখিবেন, কি প্রকারে ব্যক্ত করিবেন, তাহা তিনি জানেন না। তাঁহার থেমার্ক ক্ষয় ঈশ্বরের মতাতে পূর্ণ হইল— তিনি কি করিবেন, কি বলিবেন, কিছুই স্থির পান না।

পশা তথ্য তাহার অনুক্র। যে ধর্ম আনারনের এই পৃথিনীর অন্ধ — যে ধর্ম স্থান্ধ বন্ধু— যিনি আমারদের হস্ত আরণ
থরিয়া পারম পিতার নিকটে লাইনা থান,
দেই বর্ঘ উহিনে স্তজন ও মন্ত্রী। তিনি
উলোব মন্ধ্রে হস্ত দিনা ন্রেন্দ্র কিনিপ্রেন্দ্র ইনি তাইমার নিকটো প্রের্ণ কিনিন্দ্রন ইনি তাইমার নিকটো প্রেরণ কিনিন্দ্রন ইনি তাইমার নিকটো প্রেরণ কিনিন্দ্রন ইনি তাইমার নিকটো গাইনা শাইনা কাম্বন ইনির্দ্ধ মনমান বালে শাইনা নাম্বন উহিনে এই মনমান বালে শাইনা নাম্বন বিষয় সম্পাদ স্থান করি, বাই স্থাকিন করে ভ্রম আনার্নিন্দ্রন করে। স্থানি হয় করে।
মন্ধ্রম আনার্নিন্দ্রন করে। স্থানি হয় করে।
মন্ধ্রম করেপ আন্তর্ধাপ আনার্নিন্ত হন।
স্থান্য করেপ আন্তর্ধাপ আনা্নিন্ত হন।
স্থান্য করেপ আন্তর্ধাপ আনা্নিন্ত হন।

दक्षे ह्युरक्ष प्रकृतकः दिर्गारकत्तः ত্তিকুল। বন্ধ যথন ভাষাকে গ্রাটা হল खानाव हुन छ भावस्थात थाना एक नि यस ইফর বিষয় তথ্য কৰিবার আন্দেশ ব্যাল ওখন ভাগার মনে ফে আছেশ কি কটোচ-ক্লিক স্ণিভাত কামনার (वाल इम्रा বিষয় পরিভাগ করিতে যে কেমন কুঠি ভ হয়! সে পদ্মকৈ কটোর শিক্ষকের সম্মা দেখে, ভাষার মপুমল ভাব গ্রহণ করিতে পারে ন ৷ সমৎসব কাল পরিশ্রম করিয়া यथन म छ। श्रुत निविद्यासत वियमस कल. নীচ প্রবৃত্তির পাধ-দুশিক বিষয়, লাভ করি-বার প্রা হস্ত অসার্গ ক্রিভেছে—ধর্ম বলিতেছেন, মিধাং সাক্ষ্য, প্রবঞ্না, শঠতা পরিত্যাগ কর, এখনি পরিত্যাগ কর—অ-ন্যায় ৰূপে পর-ক্রব্য গ্রহণ করিও না—নি-

र्कावदक प्रवानदक श्रीष्ट्रन करिए न।—शान-ए। य, वाकिनात ए। य जा श कत- এই भक्त আদেশ তাহার প্রবণে যেন বজুপতি হয়। याहात्। मर्य-धनाद्य विषय-सूर्यदक्षे मिर्वा করিতেছে, ভাহারা ধর্মের জন্য ভাগি ক-রিতে মূত-তুল্য হয় ৷ ''ধর্মাং চর ' ধর্মা-भुष्टांन करा, এই 'अर्थ-शृबं श्रुक् उत जाएमम ण्डितिरम्ब भिकटणे अध्नक नमत अर्थ-ण्ना गाविद्यास्य । जोहातः भर्मात्क थरम् । जना, ইখনের জন্য আভিজন করে না, ভাছার অগ্রায়, সুধ চায়— সাথে লাভ ক্ৰির विष्यादर, बड़मां करता । अहे छना वसा छ।-স্থানের নিকট কল্পের ওক্ত, ভাস্থানের স্থ শানে ক্রতভারের বিজনারী ৷ ভাইরো भारत्न मधरा घटनात शृष्टम अन्तराहरे र्का मक्स 'घरमानमा करिया' महा छश्लि 型一瓣 中国人

বিদ্ধান বিদ্ধান প্রকাশ করিব লক্ষ্যু,
বিশা দিব ব গায়কুল কইয়া উথেরিই আর্থা নার বিশ্বস্থাকে উগোর নিকটে অনিয়া দেন। শ্রেকিক জনের করেবি কিলেক— আর এক জনের ক্লেণ্ডকু। করেব জুই জনের লক্ষ্য মন্দ্রুণ বিপরীক। একজন স্বাধাপনত। চরিভাগ করিবার জন্য সংসাধের ভ্রমণ করেন, আরি এক জন দিশ্বর-নাডের উদ্দেশে সাসার-ধ্যা প্রেন করেন।

যাহরেদের ঈশুরেতে বিরাগ ও বিশয়েতে অনুরাগ, ভাহারা স্বীর হৃদ্রে ঈশ্বরের আনন্দ-রূপ অন্ত-রূপ দেখিতে পায়
না। বিষয়-লোলুগ ও মোহাল্ল হইয়া পাপায়িকে রক্ত বোগে এহণ করিতে যায়, দক্ত
হইয়া করিয়া আইদে। মস্তকে ধর্মা-দও
সহু করে, ঈশ্বরকে দেখে যে তিনি উদাত
বল্লের নাায় ভয়ানক। ভাহারা অন্যায়াজ্ঞ ভ
সম্পত্তি ও পাপ-প্রস্তুকে বিসক্তন দিয়া
ভাহার শরণাপন হইতে চাহে না, ভাহারা

ভাঁহা চ্ইতে দুরেই যার এবং দুরে থাকি বার অভিনাম করে—স্তরাং নির্ভন্ত হাতে থারে না, সংনার-মোহে মুগ্ধ থাকিয়া শোকই করিতে থাকে। ভাইরেদিগকে এই সকল যত্রণা ভাড়না কেন ভোগ করিতে হয়। উপরের অভিনার এই যে ভাইরের বিষয়-স্থেরতেই ভূপ না থাকুক। ভাহারা আপেনার হীন লক্ষ্য পরিভাগে কর্মক। ভাইরে। তুর্জন-মেরা ভীশ্ব অর্থা ফ্রান্তে আপেনার হীন লক্ষ্য পরিভাগে কর্মক। ভাইরে। তুর্জন-মেরা ভীশ্ব অর্থা ফ্রান্তে আপেন পিভাগ আলহে ভিরিমা আলহে, বেখানে মের্ছ শেনের বল নাই, সংসার মন্ত্রি ব্যান নাই, সাপ ভারের অনিব্যার নাই।

विवस अप्रायद्भन सामा, साहा निर्देश कामहर्मन माल्ड माह । (राजनीर एडा ट्रा-बन वियम स्टब्स्ट लाइसुन 🖯 (नन्ती पण्डू মুকুরে গতেও পুথিবীর পলিতে সংগ্রে সমীয়া হাইতে চাজ। ভিনিম্ভিল অগ্নে ৄ ০% विवस स्थय अति कारण सर्टरस--। कारण (जदमव क्रमा मका श्रीतरासर क्रमा चटारातक जीकात करतान, जर्ब समस्य च भाग सम्म तः उत्पादन ষ্ণ তথ্য ভাগের ক্ষতিকো প্রকার র ভাগের প্রভা छत् विषयं वा 🛎 इतिव ! 💢 🦦 स् 👌 हः-कार नर्य केरी कार्यन प्रकार पुर शिक्यो शीवक दशहरास्य दिशमध भाषानम् स स्य पुरम्म । विषानीसरमृत् अभ प्र महरू ऐक्स्पई वृत्ताः जा कराई खाक्रदाम कार्यः --" প্রতিঃ কাম্যান্ত্যন্তি ন্লাং দে ম্লেষ্ট্র निष्ठमा भौतर भेर । (सहस्रकारण वर्धिका यटहर है अन्हाह संरम्भ मह इस विकीन মৃত্যুর পালে বজ ধ্যা

কিন্ত নামান নিশ্বনের বিং জ্বানা, কি অন্তিলাধ। তানি এটাজা করিতেছেন স্থানিত লগতে লগতের সমল মূর্তি দেখিলে পাই-বেন, ভারতে বিশুক্ত প্রতি আরো অবিক্রিণতে পারিবেন। ভারার জন্য এব স্থল

নয়—দেব-লোক হইতে দেব-লোক তাঁহার क्रना श्रञ्ज विकारण ; উৎद्वरे ज्ञान-श्रीजि-সমস্থিত দেবতা-সকল ভাঁছাকে প্রভীকা করিয়া আছেন ৷ অনন্ত স্বৰূপ ভাঁছবৈ লক্ষ্য — সন্ত কাল ভাঁছার জাবন। তিনি স্বর্গ হুইটেড স্থা-লোকে জনিকই **ঈশ্বরের শ্রি-**्रिक इंटेटक थाकित्वन : अकि निसरे कैं। होत भाकारमञ्ज्य ४ केट्टा । धामहा अरे अर्थाटनरी পশ্বৰে জীতি দান কলিয়া য**ত টুকু আনন্দ** দশ্যেজাণ করি, যাদ ত,হার এক মাত্রা আর व्यापित इत्, कट्रवास (ध्यान, तम व्यापनम विक भाग वानन करा, जो वाह्यकाटक नाला क्याह रा र स्था- लाहर, हैं। मेर भवित धानक स्हा উপচন্ধে করিছে লাইব, ভাছা এ পুথিবী হহতে কি পেকারে অর্ভত হ্রেণ্ডাম্ন कर्र अभिने करेट । नाका भटन कारमण्ड क्षी : एवं डेबंड करेगा गथन केश्वरतर महस्र कोरद्र। ताफ-कर्भ मामिति । इहेब, उपन धार्मात भारति का गास्त्र गरेत है। अहे प्राप्ती শারেছ লে এই উছট্ন ইয়া ্রামানকা আ সায়েব্ৰৰ মধ্যে এই উন্ত আশা প্ৰেরণ করি। খালেকা ভিক্তি শিগাদেশ দিভেছেক্তৰ আ্মরা উদ্ধারে প্রিণ দন্তান ন্তি। আমহা প্রম । পিতার ভাক। পুত্ত নহি।। আমরা অমূচের পুজ্ঞ-শমূভ-লাভের অধিকারী: দেবতাদের भटक आभारतम् सभागानानान। आकारम অগ্না অগ্নেণ্য ক্ষেপ্ত আয় লোক-মণ্ডলে ন্দান পৰ্যা প্ৰীতিকে ভয়ত দেবতা-দকল যা-প্রমাহনা সহত্রে পরে পান করিতেছেন, ভিক্তির নজেই আম্রিদের নিত্ত কালের খোগ । এই সময়েই বধন আমারদের স্তৃতি-গানে আক্রানা পুল কইতেছে, এখনি কভ ক্তি এছ গ্রিং মান তথাক ছই**তে ঈশ্রের ম**-হন-প্রতি মারিত বছতেছে। যে যেখান एडेरडर छाराड भुक्ता करत, नकन भूजाहे ভাঁহার প্রজাল ওক্ড হইয়। মি**লিভ হয়।**

হে পরমান্ত্রন কর। এই বন্ধ দেশের
দীন হীন সন্তানগণ পাপেতে মলিন রহিয়াছে। যেখানে দেগি, লোকেরা ভোমাকে ছাড়িয়া কেবল বিষয়-স্থায়ে উন্মন্ত
রিইয়াছে। হে পরমান্ত্রন, তুমি আমারদের
বিনীত ভাবে প্রথমা বরি, তুমি আমারদের
কাম্যকে পরিত্র কর। ব্রাহ্মার উন্নত
লক্ষ্য মর্থত্র প্রকাশ করিয়া এই বন্ধ দেশের
দূষিত ভাব পরিষ্কার কর। হে নাথ। তোমা
ভিন্ন আর আমারদের গতি নাই।

उं এकस्मवाधिनीयः।

धीय-िछ।!

गमन्त्र क्राय-स्कट्त जनः म्रान्य-कीनदरः भक्त मगर्य ५ मक्त व्यवस्थि केश्रातर ম্ভিম্ প্রকাশিত ব্রহিয়াছে । প্রকালন ञ्चमम् मन्ध्रील र रमन्ध्रमादिव कुन्त्रीय र विस्त কিন্ত্ৰীটি স্থানত শব্দা বহন কৰে তথ্য ও ভাগত ভাগান महिमा, आंत अनेम (श शतल खीम लाइमा)। विकलाञ्च अ भी खां भरा वर्षेशा भृशितीत সম্প্র জাব হাহাকার করিছেছে এখনও তাঁহার মহিনা। যথকালে কাট-সাধ্য ধল-ত্রত প্রাণন করিয়া প্রশাস্ত চরিত ধার্মিকের क्षशाकारण यानमः जा। प्रा थकां गढ হয় তথনত ভাঁহার মজল ভাব, এবং আলি-প্রামি ও অনুমোচনার করাবাকে আকুলিত হইয়া পাপী যখন হা হতোগিয় শব্দে ইত স্ততঃ ভ্রমণ করে তথনও তাঁহার মঙ্গল ভাব উজ্ঞানপে প্ৰতাক হয়।

এই ভয়ন্বর প্রায় কালে কেন্ত কেন্ত্রিমন অস্কাপে সমস্ত রাত্রি জাগরণ করত স্থেদ-সিক্ত শ্যা পরিত্যাণ করিয়া জুর্বল কুর্মান ক্ষম শরীরে প্রাতঃকালে গাজোপান করি-

त्वन, अदः जानामा जाकून इहेश जर्क- | कृश्य-इंडानरेन यन ट्यामीत अमान-वाति मुक्तिङ व्यवमञ्च नहत्न वाहमात ध्वानाही **इहेटक लाशिटलन।** कान करमहे नियात-•ভের মধুরতা উপলব্ধি করিতে পারিলেন मा। (कह कह वा नांझन यामिनीत नकन क्रिंग निवादन मानतम व्याज्यकारम वह कन শ্যাবলুপিত হইয়া অধিকতর নির্বীর্যা ও নিচ্পুভ শরীরে নিতার অনিছা-ক্রে দি-বদের নির্মিত কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেছেন। ध्यश्रत (कह कह ममस्य त्रज्ञनी छेष्मत-(क।-लाह्दल उग्रेख हिटलन, এবং ভয়স্কর कचना আমোদে শরীর-মনের তাবৎ বল নিঃশেষিত করিয়া, অধোবদনে, মৃতকম্প শরীরে, লজ্জা ও গ্লানিপুর্ন হৃদরে, এক্ষণে আপন।দিগেব তুশ্চরিজের বিষয় স্বারণ করিতেছেন। প্র-ক্তির প্রফুল মুখ ক্ষম অবধি মুখন ও বিষয় ষোধ হইতেছে। স্বায় অধিকার-কাল আর্ড ন: হইতে হইডে কুপিত বিভাবস্থ সহজ্ঞ বিষময় খত্রবিদ্যাল ধারা**অসমযে বস্তুক্ত**রার শান্তি-বৈশভ্যকে বিনক্ট করিতেছে। উযার শিশির-হার ছুদ্রাব্যনকে পরিত্যাগ করিল, পकिशन गीत्र स्हेल, **७**वर महमाञ्चार প্রাচঃকুল্লমরাজি অকালে মিরমাণ হইযা পড়িল। ক্রমাগতই দিবদের ভয়শ্বর ভাব इक्षि इहेट टहा भीश कड़ा तिल जातमञ् শরীরে, হে দর্বনক্লময় প্রম্পিত। ব্লাত-দিন প্রাতঃকালে প্রভাক ব্রাক্ষ প্রেমাক্রপূর্ণ নয়নে তোমার স্বেহ্ অরণ করিভেছেন, প্রতি करमत्र क्षप्र असू श्रम ভिक्त-तरम आफ इहे-তেছে, এবং সকল তাপ সকল ক্লেশ বিস্ফৃত হইয়া প্রতিজনেই অন্তর-জগৎ-মধ্যে বসস্থ-শোভা সন্দর্শন করিতেছেন। তুমি ভক্ত-वरमन-मीन भवन, जूमि धनी निर्धन मक्टलवर् বিমল বাসনা পরিপুর্ণ করিতেছ, ও সকলের শারীরিক ও মানসিক ক্লেশ নিবারণ করিভেছ। त्र नाथ । (कामोदक धनावान कति ; कीवदनत

আমাদিগের জাত্মায় পতিত হয়, এবং যখন পাপদশ্ধ অনুভাগিত ও নিতান্ত মুমুক্ হ ইব, তখন যেন তোমার প্রদল্প মুখ দর্শন করিয়া নিরাপদ্ এবং ক্লভার্থ গ্রহতে পারি।

এই औष कांटन स्थांक नमग्रिक ভয়ানক! প্রচণ্ড রবিনিঃস্ত অগি ফ্রালিক দহনে সমত জগৎ-কেত্ৰ দাহমান হইয়া **डेठिल, काठात माधा दहिस्टाटश** करत । हर्जुक्ति निष्ठक, शशुक्रकी नीतव, পথ ঘাট জলম্ভ ক্লাব্যনান উত্তপ্ত, এবং गरत्रावतमानन वियम छेक करेशा लेकिएकर छ । गकल इ नीतन, रकतल भर्धा भर्गा मृहि छए। রকোপবিফ নির্জন দেশে লায়দের শেকে स्टिक भक्त व्यांकाश ('उन कशिश कर कुरहर्य এবেশ করিতেছে; স্বর। কোন শের্কা चूता करनी खेकाकिनी क्रमावृद्ध नत्रावत्र প্তিত হইয়। আপেমম প্তেল্ক বিখেশ্প ব্যাপার স্মাবণ করিতেন্ডেন, এলা চলিবাল, শোক বেগ সমর্থ করিলে অফালা স্কাম: ব্রেরার **उटेकः य**टन ७५ कर्छ विनास कविरुग्धनः ভাঁহার রোদনধান মলে। গংগা কা কৃচলে প্ৰবিষ্ট হুইডেছে এবং জনগ্ৰে চাচ্চত क ब्रह्म । अहे अधीय मण्डा ३० शक माध्यम् । आरश स्थाप्त भ्रतपाप्त करे। এ কৰে ঘালারা ডোমাতের ক্লান্তে ব্রুক कें। हार्ता मसुसमस्त प्रधान কার য়াছেন আনক্ষে পরিপূর্ণ রহিরাছেন। কি নগাবের वाखन ७ कर्मात्मानाश्वमत्वा, क वजी-আমন্ত নিজৰ গাতীর শাভিষ্যান, কি মান গরবক্ষংক্তিত পোলেনলে, কিন্তা ড় অর-ণোর নিক্তন গভাষ ওপ্রথপ।, যেগানে डीहोती अवस्थिति कर्ति हर्षा (मशास्त्र) সাধুকমাজনিত নিকা শাখত তুখ বড়েছা করিয়া তোমার নাম কীর্ত্তন করিতেছেন। करें कोटलत मटक अवर शृञ्जात मटक निर्मष

मामृगा लक्षिक इ.स. १३। यम नित्रकर मृजूरक न्यत्व कतिय्रो निटफर । मृजूति निख्क नीतव অসহার ভাব বেন ইহাতে মুদ্রিত হইয়া त्रश्विताह । हेकात नाशि मृजाद गमस गकन है নি স্কল্প ও গভীর। এক্ষণকার ন্যায় ছৎকালে শ्रीत व्यवगद्ध अविकल इहेरव अवः ममस्य ममरत्र ऋषुख मरनामत्या वित्र পরিজনের রোপনধনি জাভিবোচর হইবে। আত্মা দেই অনম গোব পর লোকের দিকে दीत्व बीत्व अभन क्षिद्य, अवर मण्या छ একাগ্রচিত্তে স্বীয় কর্মকলাফল চিন্তা ক-রিতে করিতে মেই কেন্দনশব্দে চাকত क्हेरव। मरम^{र्}रध=कृष्ठित स्वय-कृष्ण्य मौत् কাবনভরতক পারভাগে করিবে এবং মান-শুষ্ক ও সৌরভ হিটান হইনা পৃথিবীর ধূলিতে প্তিত इहेर्द, निर्मास तिर्मा त्याय इहरत. স্বদেশ স্বদেশ বেঃ৭ হইবে া পাপ-ছভাশন मस्टन **एक-**अन्य केन दिन दिन केटिक करिक विशयन ' हा ' तिहास मामिसंहिलांग, কোনায় গদন এলিডেডি, কাছার নিমিত্ত, কিসের জন্য এত দিন পারশ্রম করিবাম? का। अबे ज्ञामादय अक विन्धू माखिवाति मान क्रिशा ७ १ निहास्त्र विद्यालय विद्याली र কি কেছ নিব্ৰেণ করিবে না ২ বফু-বান্ধব-ক্রা-পুত ১কংবার রহিলে? হে প্**তিড-পা**-বন জ্থীতন জীবন প্রমেশ্বর ৷ ভোষাকে বিশ্ত হটনা ফালাদিলের জন্য এত দিন মন প্রাণ দমপণ করিয়াছিলাম ভাহারা এই বোর বিপদের সময় আমাকে পরিস্তাাপ ধরিল। তুমি পাপী তাপী কাছাকেওপ-রিতর্গ কর না, এই ভর্ষায় আমি খন-নালণি চইয়া ছার্থনা করিতেছি যে ভোমার नाशासूत्रक नास्त्रिक्षिट्ठ आंगांत अभवित আত্মাকে পরিশাধিত করিয়া চরণধূলিতে श्रीन पाछ। ' स्रांत याँ शाता की बदनत भी अ বনস্ত জীম সকল কালেই সমভাবে মুধা-

নাধ্য ধর্মের আদেশ পালম করিয়াছেন তাঁহারা এই সময়ে বলিবেন "যে দিনের জন্য এত কাল পরিশ্রম করিয়া প্রস্তুত হই-য়াছি, অদ্য সেই দিন উপন্থিত। হে অ-০ মাথের নাথ পরমেশ্বর! চিরজীবন একা-দিক্রমে যে সমস্ত স্থাসম্পদ্ অজ্ঞাধারে বিতরণ করিয়াছ ভাহার জন্য ক্তুত্ত হৃদ্যে ভোমাকে ধন্যবাদ করি। স্ত্রী-পুত্র-পরিবার, ধন-জন-ঐশ্বর্যা ঘাছা কিছু আমাকে প্রদান করিয়াছিলে সকলই ভোমার হস্তে প্রত্যা-পণ করিয়া বিদায় হইতেছি, ভুগি সকলই রক্ষা কর; আমি একাকী একনাত্র ধর্ম মন্ত্র প্রহণ করিয়া অনম্ভের প্রথ যাত্রা ক-রিতেছি, ভুনি আমার সহায় হও।

মৃত্যুর পরে পর লোক যেরপ মধাক্ क्। टनद भत मन्ना शिमन (महेकभ ? रूपा ज्-স্কামত কইলো প্রাকৃতি অপুসার শোভ। ধারণ করে। নভোমওল সমূজ্ব হেনাররে অব গুরিত হয়, এবং ভাগিরগীপারে পশ্চিম দিক্ মহাপ্ৰ মীল পীত গোছি গাদি বিবিধ বর্ণানুরপ্রিত স্থানত য্রানিকার স্থানাভিত হয়; পরিমান্ত বিভাবস্থ তাহার অণ্রালে নিষ্টি হয় এবং অকৃতি রক্তুনিতে নুতন মূতন অভিনেতার স্মাবিষ্ঠাব হইতে থাকে। শোভনতমা স্থকুমারী মেদিনী হরিদদ্রে পীতজ্ঞটা ধারণ করে, মুকুলিত সন্ধানুকৃষ্ণ একে একে अक्षुष्टि इत्र, घन-हिल्लालिक विश्वक मकिन मभी मन हजू कित्क श्रवाहिक হয়, এবং নিজ নিজ বাসরুকে বিচিতকার क्क बृह्द अकल विहत्रम একতে लिल्ड कनत्व वांत्र करत्। এই ममरत्र भत-লোকের ভাব সারণ না করিয়া কে নিরস্ত ধাকিতে পারে? ইহলোক ও পরলোকের মধ্যে মৃত্যুই ব্যবধান। স্থ্যী বেমন পশ্চিম আ-কাৰে অন্তমিত হইয়া অন্য স্থানে উদিত হয়, मिहेक्षे कीवरमत्र शीश जीश शत्रिकाम गोक

করিয়া ধার্ম্মিক জনের আছা মৃত্যুববনিকার अन्तारम अञ्जास इत। सूर्यासम्मरः পশ্চিম আকাশ যেৰূপ দেদীপামান বোধ •হয়, ধার্মিক আত্মার নিকট মৃত্যুও ডক্রপ বোধ হয়, কারণ মৃত্যুই উজ্জুল ব্রহ্মধানের व्यदंबमधात । श्रुगीत व्यानम-मभीतरण धा-ৰ্শিক আত্মার পবিত্র আশা-কুন্তম বিক্সিত হয়, ক্ষুড়ভার লঘু ছইয়া যায়. প্রীতি নবীন বেশ গ্রহণ করে, অন্ধা ভক্তি অনিবার্যা বেগে উচ্চলিত হর, এবং তাহার কণ্ঠ-ममस्य जमत-(नांदन নিঃস্ত ব্দানাম অতিধনিত হউতে থাকে। এই ৰূপে বীত-শোক, বীতপাপ, হৃদয় ভার বিমূক্ত হইয়া পুণিবী হইতে প্রতি দিন কত আত্মা পর-लांक निरम्जरन शमन कतिरज्ञाह, এवः চিরকালই গমন করিবে ।

কিন্তু প্রতিদিবসই ত প্রকৃতি শোভা ধারণ कटत मां। कथन कथन पिवावमादन औषा-তাপ সমভাবে অবস্থিতি করে। বায়ু অৰ-सक इय्रानिशांग अशाम श्रांत्रांतन ककिनांवा दरेशा छेटि, जाकाम म ७न जभ तिक् हे मिनन वर्ग भारत जाम्हन रहा, सूर्यातिनोक भर्यान्ड ममाक्-कार्ण पृष्टिशावत इस मा। त्रक-शेजवत ন্থির হয়, এবং পক্ষিণ্য নীরবে আকাশ-মার্গমধ্য দিরা ও ও কুলারে পলায়ন করে। অক্সাৎ গভার কুঞ্বর্ণ পর্বভারতন स्मयमाना मनवक रहेगा चासुतीरक रवरन विष्ठत्रभ करत, अवः निरमस्यत्र मरया भृषिवीरक স্বাকারারত করিয়া কেলে। প্রথর তেজ-থিনী বিছালতা দপজিহবার নাারক্ষণে ক্ষণে **वर्शित इप्त, এवः गक्न लाक उदा उठे**न्ड হর। পরিশেষে অতীব ভরত্কর নির্ঘোধিত नमजिवाहादत थवल वांछा। পृथि বীকে ছিম ভিন করিয়া কেলে, ভক ত-त्री जनमध रत, कड कड मराम् इक तम्रत ধরাবাৎ হয়, কত অটালিকা চুর্ হ্ইয়া

যায়, কত লোক হাহাকার করে। পাপায়ায় জীবনও এই পকার। যতই জীবন জবদান হয়, ততই মৃত্যু তাহায় নিকট জয়য়য় বেশ ধারণ করে। তাহায় শেষাবয়ঃ
শোভা শুন্য, শাস্তি শুন্য, অন্ধকারায়ত। মৃত্যু
নিকটবর্তী হইলে তাহায় পাপ-চিন্তা হৃদয়য়ধো ভয়য়য় বেলে বিচয়ণ করে। পায়ে সে
য়খন পর লোকে উপস্থিত হয়ও পায়মেয়ায়েয় য়য় মৃত্রি দর্শন করে তথান ভয়য়
কাল্পিত হয় এবং নিছাৎ, বজু, প্রবল বাত্যা
তাহায় আল্মাকে বিষম ছালিশাগ্রস্ক করে।
সে শোকদাগরে নিময়প্রান হয় ও নিয়য়য়য়
হইয়া হাহাকার করে। প্রভি দিন এমশুনার হইতে অন্থত হয়্তেট্য়ে

A TOTAL TOTA

তথাপি অদাবিধি একটা আলাও বি
নিক হয় নাই! ঘাঁহার অলুলিয় চিজে
সমস্কুমেছনালা, বলু, বিছাৎ কড়, হুটি গগনমণ্যে সঞ্চরণ করে তাঁহাবই অলভ্যা আজায়
তাহারা নিজ নিজ ভানে প্রভান করে।
পুনবার অযুগুহারকমালা পরিবৃদ্ধ স্থগাংশু
নির্দাল নভামগুলে অভ্যাদিত হয়, এবং
মুছহিলোলিত সর্গা-সলিলে প্রাল্থিয়িছ
হুইয়া জানন্দে নৃত্য করে। ইম্বর গ্যাহে
পাপান্থার ফাবন-খাকাশপ্ত এক দিন পরিশুজা হুইবে এবং তাহার ছ্লিয়স্থগিতে
প্রিভিপাবনের ক্রণাক্ষ্যি প্রতিবিধিদ্ধ
ভুইবে।

হে পুণাপাপদর্শী প্রমেশ্বর। এই বিষয়
সংসারদাগরের পর পাবে নির্কাহম উপ:
নীত হইবার জন্য আখানিত সনে ভোমারই অতি নয়ন নিক্ষেপ করিতেছি, আমাদিগের দোষসম্পন্ন আন্তাকে রক্ষা কর।
পৃথিবীর ঘটনাবনী দেখিয়া আশ্চর্যা হই,
এবং দত সময় ভাহাদিগের ঘথার্থ ভাব
গ্রহণ করিতে না পারিয়া হৃদ্দের বড় আ-

কুলিত হই। মন্ত জীবনকে যথার্থ পথে
নিয়োগ করিতে না পারিয়া শোকে ভাপে
কত সময় বিষয় হই, কোন স্থানেই বিশ্রাম
প্রাপ্ত হই না। তোমার নিকট প্রাথনা
যেন সকল অবস্থাতে তোমার মঙ্গলভাব
ক্ষয়ঙ্গন করিতে পারি। যথন গ্রীম ভাড়
নায় বাকিল হইব, যথন বিকারতাপে
কোগশবাকে নিপ্যান্ত করিব, যথন মারীভয়-এভাবে সমস পরিবার ও সমস্ত দেশের উৎদাদ আশালা করিব, যথন ছুভিক্ষ
লীজান জীব কাব ও অক্টিকাঅবশেষ হইব,
তথ্যন বেন ভোমার জবিচালত মাভ্যাত্র
উপলব্ধি কাবতে মন্ত্রিক

রাজতর্মিনী।

· 自己 种型对应 对指面更大 2 / 一对神经 对法主

fortega-करवात भार अध्याक तक राज्या चिक्षात्र कर्रावस ? हिंच सरहस्ट्या ब्रायक द्व असर प्राथम क.जग्ना ५६लच 3707(3,50) भारत कि किस्तान, दारावाली, नहें उत्राह्म की मक हर्ष्ट्र नाराज्य कर महिमारकात्र महिला । वरकर भूद । आश्रामिका । श्राक्तिकारम और करते आप अवस्थित एक निवस्त व 侧面性线畸形 (军事)赋(西斯京 (有为)) 为 都華報仁 ছেলেন - নাদাবে প্রজানর হিন্দুধর্মানু-ষ্ঠী এলাব গ্ৰাভ প্ৰতিপালন করে এবং হিন্দুপায়ে ও কক্ষক। ও অন্তর্ভান করে তদ্ প্ৰিম্পে এই ভুগ্ডি।বংশে এইবান্ছিলেন। লক্ষ্য অপ্রাপ্ত লেশ ভূইতে । ক্রয়াবান্ ও मम्पापी कालना गरक ममामत भूकि य-২৪% তেওক কলিক্সভিলে**ন** । অপর ा प्रता । राज्य अक्षायक्रके **रहेशांहिन छा-**১৮৮৮ - টো - ভিডেম করিয়া **দণ্ডিত** করিকের এবং ভিতি সঞ্জ वाडींड পশুক্তিনা এতে বাবে প্রবিধ করিয়। দিয়া

ছিলেন। গোপাদিত্যের পর গোকর্ণ, ছৎ-পারে নরেন্দ্রাদিত্য, তদনন্তর যুধিষ্ঠির নামক নরপতি সিংহাসনস্থ হইয়াছিলেন। বুণিষ্ঠির প্রথমত মুখ্রণালীক্রমে রাজত্ব করিয়া-, ছিলেন কিন্তু কালক্ৰমে সৌভাগ্যমদে মন্ত হট্য়া নিতাত গঢ়ি তাচারে প্রবৃত্ত ও অসং-পাথাবললী হইলেন। তিনি এক বারে সমস্ত রাজকার্যা পরিক্যাগ করিয়া ই ক্রিয়-দেবায় আপনাকে বিসক্তনি করিলেন। দি-বারাত অসংপুরে থাকিয়। স্থরাপান ও স্ত্রী মংসর্কে কালহবণ করিতে লাগিলেন। রা-জকাম: স্ক্তরাং বিশৃশ্বল চইরা গেল, স্থানে স্থানে বিজ্ঞাহ উপত্তিত হইতে লাগিল এবং নিক্টপ্ত ব্রাক্তগণ অবকাশ পাইখা ক্রমশার! কোর আক্তার আক্রমণ পুরুত অধিকার कतिएक नाजिला वह या न बारकान छत्रको । लोक्स अतिस्थित २००० **म**िस्स्य ाडोम्म क्रिया रेमना मध्यक भूक्यक लेखा ভবন আক্রমণ কার্ডা ভাষ্টেড ভোগ-क्षशास्त्र सत्रभक्ति खानास्त्र औड देशस রাজ্য ৪ টক্তে প্রশারন করিলেন। খমাত।-পুৰ কালাপাৰিকট নামক ভিন্ন দেশীয় এক নরগ্রিকে আহ্বান করিয়া ব্যক্তপদে অ-ি, ধক করিল। এই ভুপতি বহু দিবদ নিকোর ও প্রশাস্তভাবে হাজ্য শাসন করিয়া লোধন ভরিক হন। তৎপরে জলৌক না নক ক্রির পুত্র লাজা হন। জলোকের তন্য ভুঞ্জানের রাজনকালে কাশ্মারে অভিমাত্ত ভুষার পতন হেন্তু ভয়ান**ক চ্কিক উপস্থি**ত হইয়াছিল। ইহাতে অসংখা লোক **অয়া**-ভাবে মৃত্যুত্রামে প্রিত হইয়াছিল। এজা সকল একে বাবে শীৰ্ণকায় মৃতপ্ৰায় হইয়া স্বীয় আত্রবের মৃত দেহই আছার করিতে वाधा इरेग्नाइन। त्रांका श्वकाणित्रत अरे ছংসম শতনা নিবারণার্থ **দ্বীয় ধনাগার মুক্ত** ক্রিয়া দিয়াভিবেন। তিনি অনান্য দেশ হইতে খান্যাদি আনমূন করিয়া বিভরণ ক-রিতে লাগিলেন। ইহাতে কিছু কালমধ্যে রাজভাগুরি খুনা হইয়। গেল। পরে অমাত্য গবেরও मर्कद এবং রাণীদিগের অলকারাদি बुरेकाल धमत रहेन; उथालित इर्डिकात উপশম হইল না। ভূপতি নিভান্ত কাতর ও হতাশ হইয়া স্বীয় প্রাণ ত্যাগ করিবার প্র-তিজ্ঞ। করিলেন, কিন্তু দৈববশত এই সময়ে এক অতি বৃহৎ কপোতপাল উড়িয়া আ-দিয়া পড়িতে লাগিল। তাঁহাতে লোকের কথাঞ্চ আগ্রারণের উপায় হইল, এবং পরে শদ্যাদি উৎপন্ন হইলে ছুর্ভিকের শান্তি हरेल। पुक्षीनताक ७ डाँहात महधार्मानी छ इटल हे भन्न भार्त्रिक फिल्बन, किन्छ कैं। होत অপত্য ছিল না, এই ছেতু তঁংহার মৃত্যুর পর বিজ্ঞার নমেক অপর এক বংশার ভূপতি রাজ্যাভিবিত হইলেন। বিশ্বরেব পুত জ-রেন্দ্রে সময়ে সন্ধিনতি নামক এক অভিশয় निकारत समामाना-बौगाकि-मण्यम वाकि य-माठा भागिविषक इहेशाहित्वन। हैनि রাজকার্যা স্কুচারুজপে নিব্বাহ করিয়া বিশেষ প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছিলেন, কিন্তু রাজা ছুট লোকের কুমন্ত্রণায় মন্ত্রিবরের প্রতি বিরাগযুক্ত হইয়া তাহাকে পদচাত করি-লেন। সন্ধিমতি এইৰপে চুত্ৰস্থায় পভিত হইয়া অতিকটে দিনপাত করিতে লাগি-टलन करर दमवार्कना उ धर्माहिन्द्रोस व्यापनाटक সমর্পণ করিলেন। ইছাতে তিনি লোকের নিকট অধিকতর পূজ্য হইরা উঠিলেন, এবং कत्म धरेकण खनका छ हरेल एव (पर्वासू-গৃহীত मित्राबि ज्ञाझभाम व्याख इट्ट्रिंग। রাজা জয়েক্ত এই কথা শুনিবামাত্ত আশ-কাযুক্ত হইলেন, এবং পাছে সন্ধিমতি জা-হাকে রাজাচ্যুত করে এই চিম্তা করিয়া তা-হাকে ধৃত করিয়া কারারুদ্ধ করিকোন। স-ক্ষিমতি বহু কাল এই প্ৰকারে কারাবন্ধ খা-

কিয়া অভিশয় ফ্লেশ ডোগ করিলেন। পরে करमस भृजूति शृति कातीवक ষ্ঠিতকে শূলে স্থাপনীন্তর বধ করিলেন। ইভিহান কণ্ড। লিখিয়াছেন, যে, সল্লিমতি रेनवनिक्वत्र वगण्डः शूनक्लीविष्ठ इहेशा श्रक्षां गण कर्ज्क करास्क्र डाउन निःश्नात अधिक হইয়াছিলেন। এবং তিনি আর্গার**্জ নামে** থাতিহইরাছিলেন। আর্যাধ্রাজ সমং অভি-শায় শিবভক্ত ছিলেন, এবং দেশমধ্যে শিব-লিক্ষের অর্চনা গঠি প্রশস্তকপে প্রচলিত ক-রিয়াছিলেন। তিনি যতিও সল্লাদীদিগকে বিস্তর সমাদর করিতেন এবং সর্বাদাই তা-হাদের দহিত আলাপা ও মহবাধ করিতেন। অর্থারান্ধ প্রায় ৪৭ বংগর রান্ধটের পর স্বীয় ঐশ্বয়া ত্যাগ করিয়া তার্প গমনের মান্স कतिरलन, এবং अक नित्म गायाना (यरण অনার্ছ পদে পদারতে পুরা হ্ছতে ব্লিগ্নন করিলেন। পৌরগণ রাজার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিলে পরে আ্যাল্ড নগর হইতে क्लोमाधिक गमनोट्य <u>एक</u> एक्स्ट्रा डेल-বেশন করিয়া প্রজাণতে লেহ্বাকের বু-কাইয়া পূত্ে অভিগ্নন করিছে কাইলেন, এবং তিনি স্বলং নন্দীকেল নামক ভীর্থে যাতা করিবেন। রাজনিংলামন এইকপে শ্না হইলে পর প্রজাগণ লক্ষ হইয়। মে-ঘবাহন নামক রাজবংশীল এক ব্যক্তিকে রাজপদা ভিষিক্ত করিল। (मध्योहन রাজ্যাভিবেকের পূবের ছুরবস্থাঞ্জ ১ইগা গান্ধার-দেশাবিপ্তির আশ্রয় লইয়া ছি-লেন। পরে ভিনি প্রাগ্ভেয়ভিষ দেশীর মৃপকন্যার পাণিগ্রছণ করিয়া গৌ ভাগাশালী হইয়াছিলেন। মেঘ্বাহন যুক্তিয় ছি-লেম। তিনি পার্শ্বভী রাজগণের সহিভ সংগ্রামে নিয়ত ব্যস্ত থাকিতেন, এবং ক্রিড আছে যে তিনি দৈনা সামস্ত লইয়া লঙ্কা-খীপ পর্যান্ত গমন করিয়াছিলেন ও তথায়

রাক্ষনরান্ধ বিভীষণকে পরাক্ষয় করিয়া প্র-ভাগানন করিয়াছিলেন। মেঘবাছনের মৃ-ভুরে পর ভৎপুত্র প্রবরমেন রাজত্ব করিয়া স্থায় ভূট পুত্রকে কাশ্মীরের দাসাজা ও থৌৰৱাজা প্রদান করিয়া লোকান্তরিত ছন। এই ছাই রাজপুতের নাম হিরণা এবং ইহাঁরা অত্যাপা কাল মাত্র ভোৱনার। একত নিলিক হুট্ধা রাজত্ব করিতে পারি-য়াছিলেন: সুবরাজ ভোরমাণ স্বীয় নামে मुजा अहलिक कटाइड कें श्रीत रकार्येत म-হিত বিবাদ উপত্তিত হইল। হিরণা পরা-ক্রম সহক(ে) ক্রিউকে গ্রাহ্যত ও কারা-বন্ধ ক্রিলেন। জেরেম্নের পান্নী এই **সময়ে** গাৰ্ভৰ ডী ভিলেন : ডিনি শ্বামীর এইৰাপ বিপদ দেখিয়া আণ্ডিয়ে নগর হইতে প-नार्य क वरा धन कुयकारतक १८६ धकत-कादन तकिएलम क्षर अहे शारम व्यानस्य चित्र क्रांति पूद व्यमन कतिरामा । विद-গ্রাক্ত অনেক অনুসন্ধানের পর ইহাদেনও मकार पार्य जापक जानदा नर्या লোলন, এবং ব্রহাতে ভোরমানের পুত্র সং স্থান হইবার কথা কোন ক্রমে প্রকাশ না ছয় এই অভিপ্রায়ে তিনি তোরমাণের সহ-ধর্মিণী ও ভাঁহরে শিশু সন্তানকে সংগো-প্রেরাখিলেন: কিছুকাল পরে তোর-মাণ কারাগারে প্রাণভাগে করিলেন, এব হিরণারাছ বীয় ভাতার এতি নিষ্ঠুরাচরণ-क्रानिङ অন্তর্কেদনা ছেতুই হউক অথবা অ-পর কোন কারণ নশতই হউক এই ঘটনার পরেই ভ্রাতৃষ্পুত্রকে সঙ্গে লইয়া দেশ ও তীর্থ পর্যাটনে গমন করিলেন। কিছু কাল পরে বিদেশেই তাঁহার মৃত্যু হইল। শারাজের পুত্র ছিল না এবং তাঁহার ভাতু-স্বার তংকালে অপরিচিত ছিল এই হেডু কিছু কাল কাশ্মীর রাজ্য ভূপতিপ্রনা হই-शक्ति। श्रुत्व धरे कथा मिन विम्म

প্রচারিত হইলে উজ্জারিনী নগরাধিপতি
প্রীমান্ হর্ষ বিজ্মাদিতা যিনি এই সময়ে
মহা-প্রতাপানিত ছিলেন। তিনি তাহা প্রবণ
করিয়া তাঁহার সভাসদ মাতৃগুপ্ত নামক এক
রাজণ কুলোন্ডব ব্যক্তিকে রাজপদ প্রদানার্প্র
কাশ্মীরীয় সন্ত্রান্ত ব্যক্তিদিগের নিকটে
প্রেরণ করিলেন। তাহারা হর্ষরাজ্যের কথা
অবহেলা করিতে না পারিয়া অগত্যা মাতৃগুপ্তকে রাজত্ব প্রদান করিল

गटना विख्डान।

কোন বিষয় অনুধাবন করিবার প্রকা সকলেরই স্থির চিত্তে বিবেচনা করা উচ্চত य मानवीय इक्त मटनावृद्धित माश्रद्धा डाह! क्छ जुत श्रयां ख्यां महा विष्टांत कात्र अमर्गः, এবং কত দূরই বা উক্ত বিষয় আম্দিজের বিবেচনার অধীন হইতে পারে ! বেমন জল-পথে ভরণী সঞ্চালন করিবাব পুরেষ ভাষার দূঢ়তা ও গঠন-কৌশল পরীক্ষা করা এবং সমা্থস্থিত জলরাশির গভীরতাও বিগবি পদের পরিমাণ করা কর্ত্তব্য, দেইৰূপ কোন বিদ্যাবিষয় আলোচনা করিতে গেলে মনের প্রকৃতি ও ক্ষমতা বিশেষরূপে অব-গত হওয়া এবং আলোচ্য বিষয়ের স্বভাব ও কাঠিন্যাদি অনুভব করা নিতান্ত ক-কারণ এতদ্বারা আমরা বুঝিতে পারি যে উপস্থিত কার্য্যে আমাদিগের অ-প্রশর হওয়া উচিত কি না। এই সামানা উ-भटनम विका ७ इहेशा अदनकांत्मक महाभ-বিত এমত বিষম জ্ঞামজালে জাভিত হইয়া-ছেন যে তাঁহাদিগের নাম চিরকাল জ্ঞান-জ গতের তুরপনের কলক-স্বৰূপ হইয়া অব-স্থিতি করিতেছে।

मसूरवात छ्यांन व्याप्यिक्त, त्य छ्यांन সম্পূর্ণ-রূপে স্বভাব-প্রদন্ত প্রবৃত্তি-সকলের প্রতি অপেক। করিতেছে। পরমেশ্বর ম-মুব্যের মনকে নিরপেক্ষ ও পরিপুর্ণ করিয়া श्रिष्ठि कदत्र न माहे। व्यमापिट गत्र गांती तिक ও মানসিক কল্যাণের নিমিত্ত তিনি আ-मा। मरशत महीरत ७ मरना मरधा कठकछ नि প্রবৃত্তিকে সলিবেশিত করিয়াছেন। এই দি-বিধ প্রবৃত্তির পরিচালনে থিবিধ জান লাভ क्रिया आमता डीहात भन्न नमशी रेव्हा नायन করিতেছি। চকু কর্ণ নাদিকাদি ইন্দ্রিয়-निज्दात नियमिक करिया व्यामता वाद्य क-शटखत-विषय मकल व्यवशं केश कीवन ধারণের উপযুক্ত উপার অবলগন করি-**्ठिहि** ; এবং छन्ना श्रीकि डेक्ड्रीम मानिमक প্রান্তর পরিচালনে মনোগত ভাবং ঘটনা অবপত হইরা আলাব সমূহ উন্তিলতি क्तिट्छि । हेशत गए। मानत ए धात-ন্তির অসন্তাব, ভাহার জ্ঞান সেই পরিমাণে मकीर्प क्रवर एवं श्रीतमार्ग याहात करें भ-মন্ত অনুত্তি উন্নত দেই পরিমাণে ভাহরে জ্ঞান প্রশাস্ত। আমরাবাহা কিছুজানি टिছि यांश किंछू (निश्चिष्ट ७९ मभूनांत्र है) আলেকিক, তৎনমুদানই সম্পূৰ্ণৰূপে আ মাদিগের শরীর ও মন সাপেক , তাহা-**मिरशत महक्षा हहेट जिल्लिस हहेटल आंग**त। সমৃত্ত জ্ঞান বিবজ্জিত হইয়া পড়ি। অপিচ উলিখিত সকল বৃত্তিই কুদ্র, অসলপূর্ণ ও जगनीन, श्रुकतार जामानिरशत जावर छ।-नरे अमुल्भुर्ने अम्मीन। विश्वकृत्य मध-ন্ধীয় অনেকানেক বিষয় আহে যাহা আমর। উপযুক্ত বৃত্তির অসম্ভাবে কিছুমাত্র উপলবি করিতে পারিতেছি না; তক্কেফা আপাততঃ আমাদিতের পক্ষে মুর্ধা। আমাদিতের সাভাবসিদ্ধ শক্তি দারা জড় পদার্থের ক-তক গুলি খণ উপলব্ধি ক্রিডেছি এবং

সেই সক্র গুণ ঘটিত কা স্থানে দর্শন করিতেছি; বি এৰপ গুণ থাকিতে পারে শারীরিক ও মানসিক বে সংলগ্ন হয় না, স্তরাং ত কিছুই জানিতে পারি না। ৰূপ আত্মার বিষয়েও দেই আনা হইতে এৰপ প্ৰবৃ পারে যাহার বিষয় আম: চিতাকরি না। বাঁহারা রিস্থিত উন্নত ধামে कैं इंगिर्गत छेन्न छ শক্তিসম্পন্ন হুইয়া অধিকাংশ অনুভব করিচ रामिरगत महान । बारभा ता अ चीत चीत वृष्टि-गभर চালন করিতেছেন। প্রমেশ্বরই নির্দেশ্ফ ভ হার চক্ষুর সম্মাধ্যে জানিম সকল সভা প্রকাশিত রহিং প্রাণিমাতেরই নিকট অ অস্তরের অন্তর্তম ভার-ম न्त्रके-थडीयमान बहिगाट মন্ত্রম্যদিধোর পরস্পর এবং हितकाल अध्यक्तिक शा জ্বাদ্ধ ব্যক্তি অকমাং ই প্ৰনয়ন হুইলে হেমন আৰু অসদৃশ শোভানে খিয়া অ হয়, চির-বধির ব্যক্তি জ रहेत्त धिक्त गाम्राधन क অপুর্বন আনন্দ অন্তভ্র ব ছঃখ-শোক-অন্ধকারময় স সত হইয়া আমরা মহত্রব করিব, ভূতন ভূতন মত্য निदम्य मत्था विश्व-ध्रद्ध হুদক্ষম করিরা বিস্ফান্ত

এই প্রকারে পর্যেশ্বর মন্ত্রোর মঞ্জ-लात जाना विश्वजन १९- मत्रकीय वर्ष्ट्र विश्वत ভাঁহার নিকট প্রকাশিত না করিয়া স্বকীয় ছুরবগাহ্য জ্ঞান গতে নিহিত রাখিয়াছেন। বে প্রশান্ত এফুতি স্থারা আপনাদিবের ছ্বলতার মধ্যে স্বত্ত্ত্ত্ত্তির গুড় অভিথায় র্ঝিতে পারিয়াছেম জীহারা সেই মেই বিষয়ের অ্যঙ্গত আলোচনা হইতে বিনীত-ভাবে দুরে অবস্থিতি করিয়াছেন, এবং সাধাা-বুগত স্থীয় জ্ঞান উন্নত করিয়া পুথিবীর পরম मस्रल मांधन कतिয়ाष्ट्रन। আह याकारा তুর্বিনীত হৃদয়ে আপনাদিগের নৃদ্ধিকে স-कंशिक-गण्यात मदन कतिशा निविक्त प्रदादना -छ। विषद्यत व्यादनांचनांच अञ्च स्टेसाट्ड, তাহারা লাভি-সর্জ আবহ্মান কাল সকল লোকের তিরস্কার-ভান্ধন কইরা আদিতেছে: करे समारे विकानमां अ महस्स अकाल भ-र्याच रम्भन रहमश्थाक महान् नरा वाकः भिष्ठ ६ डेरा मन्नरधात **भूथरम डे**ब्लूल क-तिभारक, भारे कर्ण व्यवना व्यक्तिया ज्या कान স্থানাকাশকে অন্তর্কারে খাচ্চন্ন করিয়াছে। পুথিনীতে সন্মাবিদ্ভ সভা প্রাচ মংখা বিষয় কি ভ্রমমংখা অধিক ভাষা শিক্ষান্ত কর নিভান্ত সহল নহে।

কথিত চইল আমাদিণের জ্ঞানের নিমিন্ত দ্বিপ্রকার উপায় প্রদন্ত হইয়াছে,
শারীয়িক প্রকৃত্তি এবং মান্দিক প্রকৃতি,
অথবা ইলিয় চৃতি এবং অন্তর্ফাতি। এই
ইপার্যয়সভূত জ্ঞান তইপ্রকার বিভক্ত
হইতে পারে, পারিদর্শানক জ্ঞান এবং
নৈমিত্তিক জ্ঞান। বহিবিশের দর্শন করিয়া,
পুরারতে পাঠ করিয়া, গুরুমুখে উপদেশ
শ্রবণ করিখা যে জ্ঞান জলে ভাষাকে পারিদর্শনিক জ্ঞান বহা ঘাইতে পারে। এক্রকার জ্ঞান উপার্জ্বন করিতে মনোর্জ্বির
ভাদশ প্রিচালনা হয় মা, ইছা অপেক্ষা-

কৃত স্থাধা। পৃথিবীত ঘটনাবলী এবং
পদার্থ-নিচনের অন্তিত্ব মাত্র অবগত হওরাই ইহার উদ্দেশা। চিরজীবন পরিজ্ঞান
করিয়া পৃথিবীর পূর্বতন পণ্ডিচগণ জ্ঞানবিষয়ে যত দূর উন্নতি সাধন করিছে না
পারিয়াছিলেন, অতি সামান্য চেন্টার অভি
অপে কালের মধ্যে আমরা এ ক্ষণে তাহা
হইতে অনেক গুণে অধিক উন্নতি লাভ
করিছে সমর্থ হই। মাহাত্মা বাাদ, বাল্যোকি, শক্ষরাচার্যা, সক্রেটিনাদি আমৃত্যু যত্ন
করিয়া যত শিক্ষা না করিয়াছিলেন, বিংশতি ব্যীর বিশ্ববিদ্যালয়ন্ত একজন মুবা শুদ্ধ
পুত্রক পাঠে ভাহা হইতে অনেক গুণে
অধিক শিক্ষালাভ করিয়া থাকে। এবিধিধ
ভ্রান্তে পারিদর্শনিক ভ্রান কহা যায়।

কিন্তু এত্যাভিরেকে অপর একপ্র-कात छहान अ राक व्या श्रमीर्थ निष्दात छ। ধরা ঘটনাবলীর কেবল শস্তিত্ব মাত্র অবগত হুইরাই লোকে নিরস্ক হয় না, কিন্তু ভাহার কারণ অনুসঙ্গান করে। এই রূপ কাবণ अञ्चलकांन कर्ततात हेका विद्यवन। कर्तिन मकरनद भरपारे लिकिक इस, करव (यः, रा পরিমানে জ্ঞানস্পদ, দে সেই পরিমানে পূঢ় করেশের তত্ত্ব করিয়া থাকে ৷ দৈবাৎ কোন শব্দ অবণ করিলে অজ্ঞান শিশু তা-হার কারণ জানিবার নিমিত্ত চতুর্ভিকে দৃষ্টি-পাত করে, দৈবাৎ কোন আশ্চর্যা ঘটনা দৃষ্টি করিলে প্রাপ্তবয়ক্ষ মনুষ্য তাছার কা-त्र किछ्लोगां करत्र / धवः छेन्न छन्न शिख्ड প্রাকৃতিক সকল বিষরে বিশ্বিত হইরা পদার্থমাতেরই কারণ অনুসন্ধান করেন। বস্তুতঃ কার্য্য দেখিলে তাহার কারণের প্রতি বিশাস এবং তজিভাসা মনুষ্টের পক্তে নিভান্ত সভাব-সিদ্ধ। কিন্তু বিশেষ বিশেষ কার্য্য দেখিলে তাহার বিশেষ বিশেষ কার-ণের প্রতি প্রভায় খাছে বলিয়া বে আমরা

দকল কার্যাের কারণ অবপত আছি বা হইতে পারি এমত নহে। শুল্ক কারণ অন্ত্সন্ধান করাই আমারদিপের স্বভাবসিদ্ধা।
এই অনুসন্ধান দ্বারা স্বকীর পরিশ্রমে আমরা যে জ্ঞান লাভ করি তাহারই নাম
বৈশীনন্তিক জ্ঞান। অতএব নৈমিন্তিক জ্ঞান
কঠিন ও কই সাধা, ইহাতে মনোরন্তির
বিশেণ পরিশ্রম হইয়া থাকে। স্বীয় যত্রে,
স্বীয় চেইটায়, চির জীবনে যিনি বিদ্যামণ্ডলীস্থ একটা বিষয়েরও গৃঢ় তত্ত্ব অনুসন্ধান
করিতে সমর্থ হয়েন. তিনি সহস্রে পুস্তক
অধ্যাসনাপেকা অধিক কার্যা সম্পান করেন,
ভাহার দ্বারাই প্রকৃত জ্ঞানের উন্নতি হয়।

रेमग्रीक घंडेमा श्रुक्शता व्यवस्माकन ও ডাহাদিগের ওক্ত নির্নয়কে বিজ্ঞান শাস্ত্র কংহ। বাহা জগতে নিয়ত নানা প্রকার प्यान्हर्गा न लिखि मुखे इंडेटडटड । এই ममन्द्र দুষ্ট বিষয়কে উপযুক্ত মতে বিভক্ত করিয়া যে যে কারণ সংযোগে ভাহারা নিজ্পন হই-য়াছে তাহার নির্ণয় করাকে প্রাকৃতিক বি-জ্ঞান কহে। জগৎ মধ্যে যে সকল পদাৰ্থ अजाक क्रेंट्डर्फ उद्मग्नमांत्र्रे विरमग বিশেষ কার্যা। কতক গুলি কারণের একত্র মিলন ও নিগড় সমুদ্ধ হইতেই তাহারা উৎ-পন रहेशा थाटक ; खुख्याः এই ममस्र का-যোর কারণ জিজাগা ও নির্ণয় করিতে পা-রিলেই পদার্থ বিজ্ঞানে ব্যুৎপত্তি জ্বিল। व्यक्तिन পথে मृष्टि कतित्व प्रस्केष्ठ्, हेन्द्र-वसू, वा स्थाधिह। पृच्छे इस्र। कि कि कांत्रव मिनात्त पुमरकजू हेस्प्रस्यू वा स्ट्र्यादाहन দৃষ্টি গোচর ইইল ভাহার বিশেষ নিদর্শনকে প্রাকৃতিক বিজ্ঞান কহে। মনো বিজ্ঞানও সেই ৰূপ! মনুষ্যের বিশেষ বিশেষ কার্য্য ও মনের গতি দেখিয়া কোন কোন প্রবৃত্তি এবং কি কি কারণ সংযোগে তত্ত্বাবৎ উৎপদ হইভেছে, তাহার তত্ত্ব নির্ণয়কে মনোবিজ্ঞান কহে। অতএব সমাক্ ৰূপে ভৌতিক ও মানসিক কাৰ্য। নিচয়ের কারন নির্দ্ধেশ করার নাম বিজ্ঞান শাস্ত্র, বিজ্ঞান শাস্ত্রে যে জ্ঞান জম্মে তাহা নৈমিভিক জ্ঞান।*

পৃথিবীর মর্কা স্থানেই কার্মানারণ শু-খালা বর্ত্তমান রহিয়াছে। যতই বিশা বা পার পর্যালোচনা করি ততই প্রশস্ত কর্ম্বা কারণ শৃত্যলায় উত্থান করিতে থাকি। সমুদ্র गक्क तन, वक निर्धायत्न, कृतिकत्न्त्र, व्या-গ্রের গিরি উচ্চাবিণে, মকলের মধ্যেই স্থির-চিত্ত বিজ্ঞানবিং বাক্তি কাষ্য কারণের পরি-एश श्राश्व इटरान । किन्दु निश्वमदना पणि व निरमम विरमस क्रीट्यांड निरमस निरमन কারণ দ্র্তহ্টতেতে তথাপি এই সকল क्रिश्रे अस अक्षे कार्या यात्रा याश्रीतक আপ্রতিত কারণ বলিয়া নির্দেশ করা বা তেছে বিবেচনা করিলে পার তাঁলাও কোল মহন্তর করিবের কার্যা মতে প্রেটীয়মান হয়: ভাৰাই প্ৰকৃত কাৰণ লামেৰ ৰাচ্য যাতা নকা-জ্রেষ্ঠ, ধহে। কাহার গারা স্থান নহে। এই कांत गर्वाद्धकं गकासमें वाकि कांत्रन. পরমেশ্বর ভিন্ন অপর কেচ কইতে পারে না वरे भरता । विवास है। स्वरं भरू वर्षक हिन छेशयुक्त । धनाभि क्रिया श्रहा कावन धन वन्नी न করাই বিজ্ঞান শালের উদ্দেশ্য হয় ভাষে ভাষা নির্ভত কশতবর দিকে বাত্রা ৷ পথ পরিস্কার করিয়। ক্রেছে। বিন্যুকীল সক। ক্ষিত্ৰান্ত ভাগাৰান ব্যক্তি এই কলে কংগ্ৰু হুইতে করিণোপরি আরোহণ করিণা নমস্

[&]quot;Some of the defination of places by a process on things divine and harmon and earlies seems of earlies and harmon and earlies seems or enforce by their causes? Habbes, as the Science of sufficient reason," I double of Transcience at the relations of the knowledge to the earls of harmon ceason. Sant "Philosophical knowledges is the knowledge of affects as dependent mean their causes? It William Hamilton

ভূলোক ও ছালোককে অভিক্রন করন্ত প-রিশেনে সেই মূল কারণ, সেই কারণের কা- इक्ष भत्रस्थत्त्व मण्डा छिन्नीङ অল্জা ক্যিকেরণ जगः था स्टास । আসরণে আবেটিত হইয়া তিনি প্রজ্ঞ ভাবে প্রিণীয় সকল বিষয়ই নির্বাহ করিতেছেন। भात सक्त है कारों क्तर हिन्हें क्रांट्र । नित्र कराय भाषांग यस्य, शिवरे कार्गन-(क उस, अर्ड सिटक्छन। मुटक्स्पिति जेग्र गुक्त महिन कर्नित स्पर्मन सहस्य बह्न हिम्राहल 'याक्षानदक एक एउक भिन्न कर्यान्हे নিকে উন্নত ভ্ৰিচাতে, দেই ৰূপ অপ্রিমীন কাম, বারণ রাশি উপসুন্ধরি বেবছিছি ক্রিয়া প্রতি বিল্লি জ্বির চান স্পর্ম করিয়া ত্রিষ্ট্র। সমাক্ষ ফটিক। হা পর্যা-লোচনা কতিয়া বিশেষকলে উল্লেখন ল, ন করা ক্ষুদ্র আশ্বরে শিক্ট নগুতে এই প্রচাদ গ্ৰাপাৰ জানি জান্ত অসম্ভাৰ গোপ্ত হৈছে পাঁচের गरम्बर जो १ किन् गेटारी वान्य जंबरमह জ্যান্ত্র প্রাই মনে প্রেল কের উদেশ।।

M6514 1

া প্ৰিক মংকেই শ্ৰুণি আনুন্দিত ইউল্লেখ কে পুতের বার্লাচে ১০ জাদের দে জাকে পরিবার্ডয়ের বিষয় প'স্নাতে উনিংখত হুইয়াভিল উট্রায়া লেশ্যাদ আপ্রাদিশের আনে একটা ব্রাক্ষমার श्रीनारा कशिषात्वस जरा ज आधार्य गर छ इने किति ৰাং কান্য সম্পন্ন কাংখাতেৰ ৷ প্ৰজ্ঞাস্পদ জ্ঞানুক্ত विकास का का भी भी भी भी है। है हि विभिन्न किन पर्ने : 1 क जान्य शतिवादां महत्वे विचया विदर्भ ग াড়ারা এই লাউছেলিকের সরজভা ও ধর্মপরা-ংলভা অভি আশ্চন্য। তথাকার জীলোকদিগের ए। एप (कार्या कहा। शक्स अकात धृष्टकारी जावर দকল প্রকার আমোদ প্রমোদ পরিত্যাপ করিয়া যে পালে ইথারের উপাসনা হয় ভবার ভাঁহার। হা ক্রতিরে প বিভ হয়েন, এবং স্থান্ছি এমড প্রতিক ভিত্তি আদ্ধার পরিচয় আদান করেন যে श्रुवन्धः वर्धदः भ्रुव्यक्ति **छमवत्नाकृत्म अछास्र** भीकर्नेटर स्थ। वैश्वस्था निकंगे आर्थना स

এই ধর্ম জিজামু সরল লোকদিগের ছদয়ে জ্ঞান ও পবিজ্ঞা প্রেরণ করেন। সকলেরই প্রক্তি আমাদিগের বিশেষ অনুরোধ যে ভাঁহারা হরার বাগাঁচড়া গ্রায়ে একটি বিদ্যালয় সংস্থাপন ক-রিভে তেন্টিভ হয়েন।

সিন্দ্রাপতী নিবাসী মৃত প্রায়ুক্ত কাশীনাথ
মিলিক মহাশায় মৃত্যু কালীন দেশ হিডার্থে পঞ্চ
লক্ষ্য দান করিয়া গিয়াছেন। এই অর্থ হহাদ্দ
মৃতী সংক্ত বিদানায় সংভাপিত হইবে, কথায়
দারেরা অবৈতনিক শিকাও পাঠাক্ষায় জংল
পোষণ অবধি প্রাপ্ত হইবে। অপর কতক গুলি
অন্ধ থঞ্জানি দীন হীন বাজিও সময়ে সময়ে সাহায়্য
লাভ করিবে। অর্থীয় প্রীযুক্ত কাশীনাথ মলিক
মহাশারের এই মহৎকালাের জন্য সকলেরই কুল্ল,
হণ্ডা উচ্চত।

মান্ত্রিক কেন্দ্রের প্রার্থ ব্যব্ধানি সম্প্রান্ বিনী পত্তিকা জাতিনামে অকাশিত হউ তে আনুত্ भेडेशाद्ध । अली साक्ता त्य हेरा फाउमम-श्रीक किंक जासामभाक कर्नना भित्रम् अभावका 🔭 🚁 भिरम्ब क्रियावशास छ मृत्य मण्योत्ति । । १ वर्षः (अ.स.स.) अप्तान का का का अन्य का स्टार्ट के 好夢 斯克斯特 化甲磺二丙甲酰胺 দ্বাস্থাতে ভাইটি কৈচই বুসিলে লা ১০০ এই ভাৰতব্যেৰ ভিছ জিল স্থানত্ত্ব হছতে ভাৰত পিনী প্ৰক্ৰিকা প্ৰকাশিত হইছে আয়ুৱ সংগ্ৰে কাৰকাছ বৈধেলি একং মাজনকে চেম্বেল ্'ল সমাক্ত সম্পান্তিৰ মহাশ্যায়ের যে পাতে বিগণ 🛒 🦠 🦠 ন্বৰ'ন বেৰ্গান স্প্ৰয় (গাল_সজাক) ব[া]লি চলচ ন্দ্ৰিল লাখন আহে গাঁভাগের। সকলেই প্রিভাগে এই रक्तकि, कन्न, विभिन्न **काष**्त्रियन्त्र **बन्** ५ - ४४० हि.सम कामा किनि भाग हर्ने किन्द्रम, किन्न किन्नु न कामा। च्याक्रीडक रहेव ली, कांड्रम जामता भर्माहराज मैक्टबृब् (क्षिप्रानुष्ठे।दस्य व्याप्त আলসর হও! সাধুমাছার ইচ্ছা উপর ভাষার अङ्गाता !

বর্দ্ধনান ব্রাক্ষননাজের নিশেষ উন্নতি হইছেছে।
তরত ব্রাক্ষ নহানিয়ের। একটি প্রক্ষবিদ্যালয় সংথাপিত করিয়াছেন এবং প্রায় মধ্যে মধ্যে নিকটত্ত্ গ্রামে ব্রাক্ষপর্ম প্রচার মানুসে গমন করিয়া থাকেন। বোধহয় ভাঁচাদিগের দুফীতেও বড়ো বর্দ্ধনান নগরের অনেক উন্নতি ইইবে।

সম্পুতি বিসাতে এতদেশীয় স্থীবোকদিগের বন্ধন উদ্দেশে একটী সভা হইয়াছিল। তথায় আমাদিগের বদেশস্থ্ই ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন। স্থিয় হইয়াছে যে ইংলগু হইতে কতকণ্ডলি মুনি-পুণা শিক্ষিকা বন্ধদেশে আগমন করিবেন, এবং তার পরিবার ঘারা আহুত হইকে অতি শামানা বেভনে শিকা প্রদান করিবেন। ভারতবর্ধের উ-মতির জনা বিদেশীয়েরা যাত্র্র চিভিড, নিবা-সীরা ততদূর নহে।

বঞ্জীয় স্ত্রীদিণের যেরূপ পরিক্ষদ ভাহাতে থেকাশাস্থলে গমন করা দূরে পাকুক, ভাহারা সীয় ধীয় পিতা ভাতা ও অন্যান্য সম্প্ৰীয় লোক-/ দিগের নিকটে উপস্থিত হটতে সঙ্কৃতিত হয়। জী লাকদিগের স্বাধীনতঃ বিষয়ে, বিশেষ কোন অনুষ্ঠান না করিয়া, যাঁহারা কেবল একণে বিষ্ম গওগোল আরম্ভ করিয়াছেন, তাঁহাদিগের গুতি নিবেদন যে প্রগমে ভাঁছারা সংদেশীয় মহিলাদিকের পরিজ্জন পরিবর্ত্তন বিদংয় বিশেষ মনোষোগা হযেন। কলিকাভা ব্রাক্ষসক্তের ार्डा ता, अकिनियम डेप्क विषया आदनक विश्वतन। প্রিয়া প্রেশেষ ধীয় ধীয় প্রিবার মধ্যে অজন।-শ্রুণের পরিক্স পরিক্তিনে ভিরক্তপ ইইয়াডেন, কি পেকার বল্প জাবিশাক ভাগ নিশ্চয় ইইলো বেংশ হয় সকলেই ভালা নিজ নিজ আলেয়ে প্রতিভ করিবেন। প্রিছেদ বিস্থাে প্রনাদি র্পার আম্বু স্বেপান্ হওর। উচিত্র স্থানির। ্মৰ্শান্ত মাদি কে: বিশেষ জাগুলের বজ্জের অনুধ্রণ করি ভাছা হটালে কোন কলাই ভাছা अन गमाहम अविविच क्षेत्रांत महारमा मार्च, লাভের মধের জায়তা কেলল দারারণ স্মাপে नेल्डाभाग्यम इडी रा

একনে বাদাবোদিনী পরিকাধে প্রকার মু
চাক প্রপোনিবাহিত হাইছে ভাহাতে জাহা বে
লাঘ বিশেষ উলভি লাভ করিবে এবং এতদেশপ্র
বাদাদিশের বিশেষ উপকার সাপন করিবে তাল
হাতে আমাদিশের গলেহ মাজ নাই। ভারবোদিনী পরিকার গাহক মহালাদিশের প্রভি
নিবেদন বে যেনন উহিরা ভারবাদিনী
প্রিকাপণ্ট করিয়া নিজ নিজ আল্লার উলভি
শাদন করিবেন, ভেমনি বীয় প্রীয় পরিবার্থ
অঞ্চনাদিশের উপক্রের নিশ্ব বা্যাবোধিনী
প্রিকা গ্রহণ করেন।

আগামী ২১ আগাড় হালিসহর প্রাক্ষনাকের সামৎসরিক সভা চইবে। কোন কোন প্রাক্ষের অসদাচরণ প্রযুক্ত এবং উৎসাহী প্রাক্ষাদিগের বি-দেশ গমন জন্য যদিও মধ্যে হালিসহর প্রাক্ষামাজ কিঞ্চিং ছ্রবভাগ্রন্ত ইই্য়াছিল, কিন্তু একণে পার-দেশরের প্রসাদে ভাহা এরপ উন্নতি লাভ করিভিডিছে বে নিশ্চরই উদ্ধারা আমন্থ লোকদিগের সমূহ মলল ইইবে।

বেহালা ব্রাহ্মসমাজের অধীনে ব্রাহ্মধর্ম প্র-চারিণী নামী একটী সভা সংস্থাপিত হইয়াছে। যাহাতে সাধারণ ব্রাহ্মদিণের মধ্যে বিশেষ রূপে ত্রাক্ষপর্যা প্রচারিত হয় ভাহাই এই সভার উদ্দেশ্য, ব্রাক্ষপর্যা প্রচারিণী সভায় কার্যাগ্রাক্ষ সহাপায়ের নিকট নিবেদন বে সভার কার্যা প্রগালী অনুপ্রহ করিয়া বিশেষ রূপে সাপারণ ব্যক্ষণণকে অবগ্রক করেন।

বিগত ১৫ জৈন কৈ কিন্দুগর প্রক্ষিণ্যকের দ্বিতীয় সাধংসারিক সভা ওইছা গিলাচে । শুল হওয়া গেল ভত্তপলক্ষে ভাবনক লে, দ স্থাগভ হইয়াছিলেন। কলিকাভাস্থ এক ধানি দ্বৈর্গিল সংবাদ পত্রে সভার ভার্ম্য বিশেষ ক্ষাপ প্রশংশিক গ্রহাছে।

আমরা শুন্ত ইইমাছি কাশী নগরে এনতী ব্রাহ্মমনাক গুড়িস্তিত ইইয়াছে। এ নগরত ৫০ক জন ভাল বংশীয় ও কুজনিদা বাজিই এবিময়ে নিশোগ উল্লেগী। পোড়ানিকভার নিগড় ছুর্গসম কাশীপামে বদি দিল্ল ক্ষান্তিন প্রতিষ্ঠিত পূ সমানুক্ত উলি ভবে কাগার বিশাস লা হয় যে সন্ গয়ে ব্রাহ্মপ্রা ন্যন্ত ভারতবর্গক অধিকা। করিবে।

ব্যাধার, অভ্যত্ত জাহিলাবের সাহত জবন করি **তে**ছি যে জ্ঞালকোর বিমান আবেটক জানে কলে বেলিদিটের অসংপ্র প্রাপ্ত প্রেরটি টোডাড়া भवर्षमञ्ज्ञ । जारान । जारानिकी जानिक । । । असा । স্বিদ্ প্রেণ করে ১৮৫ ও রচন্দি দুশন্ করা यात्र । केहा ता करजूत विवक्ति छ प्रमाणह तिका জাহ। বলিলে, জেশা লৱ। মাল না। ১ সালেন লং लदममंद्र औरजादकत्रा निवास क्षाकृता हुद्वस यह নি দি। ও কুসংক্ষার পরিভাগি করিয়া সভা প্রশ্বর भाष्यंत्र प्रदेश कांनरत खर्श १०५० राज्यातम् ४०० ॥ ४०० क्षांस बाक्ति करित्व ए जोरस क्रांत्रे एका ग्लंड अन इ.स. लेक्सीट क्षेत्रवात महात्रामा मात्रि । अपा अकार्ष নিশ্চয় সমাধ্য সপ্তরের মল ৭৬০০ চন শাংৱ राप्तराः स्टेरनाम निरम्ब स्ति। अवस्थिक २०% कहि । अस्य विवसारी इंडेस्टा ह लाहाला চিরদিন পুশিরীকে জনগরাজ ধ্রিয়া আফিলেডে। क्षभन्दीत स्थमा इस एयम । भारत संजीता क्रमभाउ हु अ माध्य ७ व्यक्ति नक्षात् करतः । भने प्रतः । उत्तः প্রকাজ ও মংক্ষার ভাষার সমাত । কি ৮ করিছে **থাকে ৷ ব্য়োরদি সহ**কারে মুখ এছ ছেলা ক্রি সম্পত্র হউদ না কেন, যে জন্ম কলে বিল নাপিন वाला मण्यात अ लाजिमातिक आर्यात सामहार পরিতানে করিছে পারে - দেই জনাই অনেকে कुछितिमा क छा। अ नग्रा श्रेमाच भम्र दुविहा व्यक्षशिक भागे। कविटक श्रीविटक्टफल मा। व्यं क्रि भी छ राहाटक अवटान्टमं अलगानिद्यंत घटना १८ माँ ४ ভাব এবেশ করে ভজন। আনাদিবের বিশেষ क्कि। कर्न जिंहित । अञ्चलकार्य आमाहित्यत अस्ति বে থেমন পুরুষদিগের জন্য প্রকাশ্য স্থানে একটা ব্রাক্ষানমাজ আড়ে, দেই রূপ কোন একটা ভজ প-রিবারে কিছা স্থানাস্তরে স্ত্রীলোকদিগের হিভার্থে একটা ব্রাক্ষামাজ প্রাভিত্তিত হয়।

মূতন গাস্ প্রাপ্তি।

আগরা রুজজ্ঞতার সহিত নিম্ন লিখিত পুস্তক
শুলি আজি ধীকার করিতেছি।

'বিবিশ পুস্তক প্রকাশিক। সাহিত্য-সংগ্রাহ''

তৃতীয় সংখ্যা।

'মুদ্রশানদিধ্যে অভ্যুদ্রয়ের সংক্ষেপ বিবরণ।
'নোশার্ল সংঘ্যাননের উপায়।''

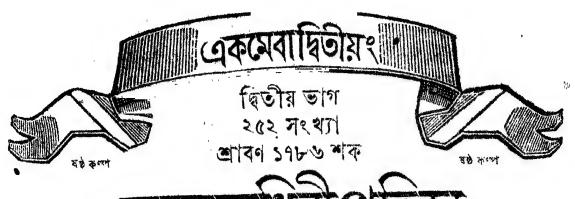
रिकाणन।

আগামী ২১ আবাদ রবিবার প্রতিত কালে হালিসহর ব্রাক্ষদমাজের সাধ্বদরিক সভঃ হইবে ক্রাক্ষ মহাশ্যু দিগের প্রতি নিবেদন বে তাঁহারা উক্ত দিবমে থালিসহর প্রামে উপন্ত চণীয়া বেক্ষোগামনা করেন।

কলিক্তি। ত্রাক্ষমম্কের ২৭৮৬ শবের কৈয়েই মানের জায় ব্যায় বিবরণ।

भं क्रिक	ার খিলে		4	1564	•
			Statement		-
			2.5	80 W	t
ৰ্ট্য			C	C> /	10
ן יפייות	स्तरहा करानु		(13861	
		এভাদ্য			
13	ल विगामि			200	3
1,340	种位数	• • •		600	
	gan so primere	C 100 mm			
4.4	াদিগের প্রতিজ	ত সায়ং	দরিব	मान	•
WHY "	्रक्षाणाल सम	••		२ 🗷	
••	रेबकुरीनाथ समस	1.4	. •	ર્ છ	
	द्याप नाम बद्ध		• •	\$	
**	গনেশালে স্থিক	* *		>	
4.6	泰州烈山州 57			5	
	राषांचाम द्राव	• •	• (>	

'' नीनगति घटछोशोधाधः >
" टक्भवनाम मझीक >
" निवनहाम बढ़ाल >
49
भागिक मोन।
শ্রীযুক্ত রাজা সভাশরণ ঘোষাল ৫০
" বজ্জেশার সিৎহ
" কাশীপ্রসাদ ঘোষ ১২ ১
" क्यर भिन्न सम्
48
শুভকর্শের দান।
শ্রীযুক্ত রাজারাম মুখে।পাগায় ৮
" হরগোবিন্দ চৌধুরি
BHIMAR JOS. NO MARKE HIS WATER
্ এককালীন দান।
" Tall my car are cape at a Tall ages have been a few
আধুক কালাকুশার ধান ।
শ্রিষ্ট প্রসাধ কর্মার সেন্দ্র করার ১০ জন্ম শ্রিষ্ট প্রসাধ করে জন্ম করে করার ১০ জন্ম
ा अरुव्ह भी गीक्षण !e
ি গোপালচন্দ্র গলিক
* mar = 0 = = = = 0 = = = = = = = = = = = =
নিঘ্ণী প্ত।
পৃষ্ঠ।
ব্ৰাহ্মধৰ্ণের ব্যাথ্যান
্রীপ্র-চিন্তা
भटनाविकान
अंदर्शन अ
च्यास वास विवद्भ
manife the second
ভত্তবোধিনী পলিকার মূলা নিরূপণ।
অগ্রিদমূলা (কলিকভার জন্য) ৩
'' (মফগলের জন্য) ৩৭০
মাসিক মূল্য । । । । । । । । । । । । । ।
國本 4
্রেট ওত্ববোদিনী পাত্রকা, ক লিকাতা নগতে মোড়া-
भौतिकार्थिक दोक्रमार्थित कार्यालया समार्थिका स्थाप
ঞারাশিও হয়। ১৮ আঘাদ বৃহক্ষা তিবার সম্ ণ ^{১৯০} ১
কলিপ্ডান্দ ৪৯০৫ ৷



তভাবোধিনীপ্রতিকা

डामधर्यंत वार्थान।

বিতীয় প্রকরণ--একাদশ আদেশ।

া৮৩ শকের ১০ মাথে কলিকান্তা ব্রাক্ষ্মনাজে
প্রধান আচার্যা কর্তৃক
বিক্লত হয়।

মএতিষদুরমৃতাত্তে ভবন্তি।

ই ইশ্ব আত্মার প্রাণ; তিনিই তাহার আলোক, তিনিই তাহার অমৃত। তাঁহার আভাবে আত্মা কুর্তিহীন হইয়া বিষাদনাগরে ময় হয়। তাহাকে দেখিয়াই আত্মা জীবন পায়, তাঁহাকে এক মাত্র গতি জানিয়াই দে নির্জয় হয়। তিনি যথন আআতে প্রকাশিত হন, তথন তাহা মধুমর হয়। দেই মধুমর আত্মা ঈশ্বরকে ময়ু-য়রণ রম-য়রপ দেখিয়া পরিত্তা হয়। তিনি তাহার দেই মঙ্গল-কিরণে জগৎ সংগারকে উজ্জান দেখেন। তাহার দিকটে পৃথিবী, নদী, সমুজ্ঞ, চক্র হয়া, সকলি মধুমর হয়।
সেই জমুতের সঙ্গে যোগ করিয়া তিনি অমৃত লাভের-প্রতি ছির নিক্ষর থাকেন।

रच नाकि जीन जाजाटक अतमाबादक मर्भन करत नांडे, या छोड़। इड्राड हित जिन বঞ্চিত রহিল—নে ভাঁছাকে জ্রীতি দার। পূকানা করিয়া, ইচ্ছা পূব্বক ভাঁরে কায্য সম্পন্ন না করিরা, বিষয় সেবাতেই জীপনকে काम कविन ; भिक् छोत्र (साई छोतन। जोत ছুর্গতির আর অন্ত নাই- সে ক্লেশ হইডে ক্লেশ, চুডিক হইতে চুডিকে, পদ নি-क्किन करता अ अवस्ति भीन हीन भन्दर অপ্নার কুল জীবনে কি প্ররোজন। मिलन क्रवत लहेश है कि खानात (भत की नग অবসান হইবে / চতুৰ্দ্ধিকে পাণ ভাপ प्रश्च (मारकत मत्या शक्तिया गांम मार्ग পবিত্র-ম্বৰূপের উপক নিভর করিতে না পারিলাম, তবে আর শান্তি কোগায় পাইব? व्यागांतरस्त बना स्गा, हन्त्र, नक्षक व्यानीक ৰৰ্ষণ করিতেছে—বায়ু অবিতামে বহনান ছইয়া আমারদের জীবন রক্ষা করিতেছে— वृष्टि आमांत्ररमत अना व्यामनोदक করিরা আমারদেব শরীর পোষণ করি-তেছে—গজন্তা কামনার विषद्य व्यामता পরিবৃত রহিয়াছি। এই দকল ভোগই यि जामात्रामंत्र जावर? हेशत मत्या कि আমরা সক্ষ-স্থেদতোকে ক্লুভক্ত উপহার দিতে পারিব না ? যেমন এই পুথিবী
নিঃশব্দে সূর্যাকে প্রদক্ষিণ করিয়া আলোক
লাভ করিতেছে, আমরাও কি সেই ৰূপ
অচেতন হইয়া তাঁহার প্রদন্ত কামনার বিধ্যু-সকল উপভোগ করিব ৷ না আমারদের কঠ হইতে ক্লুভক্তা-ধ্নি উথিত হইয়া
সমস্ত জগৎকে ধনিত করিবে ?

ঈশ্বর হটতে বে বিচ্যুত রহিয়াছে, সে মৃত্যুর অহাত শক্তিকে—সেই মৃত-সঞ্জী-বনী শক্তিকে আর হৃদয়ে অন্নত্তব করিতে পায় মা ৷ সে অমৃতের অভাবে এই জগৎ সংগারকে শ্বাশান তুল্য বোপ করে। মৃত্যুর মূর্তি দেখিরা ভাষার অমৃত্তের ভাব উদয় इय ना। त्य गरीत्त्र याच्च वर्ष माध्यहे দেহেখ্---অন্তরের আত্মাকে পেথে না। ভা-হার নিকটে পর লোক প্রকাশ পার না! टम । माह्यल हहेता मत्न कटते, भृषिनी अधा-শ্রু জীবন – মৃত্যু কইল ভো শেব কল। নে পুনিবীতে কথন কথন পাংপের জয় পর্কোর পরাষ্ট্র দেখিয়া ধর্মাবহ পর্মেশ্বরের অকর ন্যার নলে করিতে পাবেনা। যে-খানে শশালার দকল জ্ংখের অবসান ছ-केतन, वाथादन धनाति अक्योठांद्वत मामन कर्टतः । ध्यम एक्ष्म (म (पश्चिद्ध पात्र ना। সুত্রং মনুখার ঘটনা তাহার নিকট থাহে-जिक्त मात्र पंति ।

নাত্র নিকটে কাছারে বিচার নাই—
ধনা দরিজ, পাপী পুণ্ডবান্ দে দকলকেই
ব্রেন্ড করে। এখন বিনি স্থবর্ণ পর্যাকে
বেন করিছেছেন—বিনি বীণা বেণু মৃদদ্
ধনি অবং করিলে মনে করিছেছেন, তাঁহার
প্রের আর বিরাম হইবেনা: মৃত্যু এক
নামর ভাঁহার স্থের শরীর হইতে দম্ভ
মাতরণ হরণ করিবে। তিনি শাশানে শব
স্ইনা পড়িলা থাকিবেন। তিনি মধন দ

প্রে আপনার স্থান্তর মুখ দেখেন, তথন আর মনে করিতে পারেন নাবে এই মুখ **এक ममन्न क्यांक्टीन अ**खंदीन हरेंगा था-रेटव। यमि कर्यटन स्ट्राटक भावन कतिसा यां भारत किलान करते , मृत्रारे कि या-मात र्भव? ना मृजात शदत जात किह আছে? আপনার মোহ-মেযাক্ষর আর্থী হইতে ইহার কোন উত্তর পান না। দিন पिन पारभका करतन, मृजात भंत पिरम कि আছে তথাপি তাহার সংবাদ কেহ তাঁহাকে আনিয়াদের না। যদি কোন লোকের নি-কট জানিতে যান, তবে কেহবলেন, "চ-छत्लोक शिक्षा भूरवात ममूनांत कन उर्जा করিয়া পুনর্কার পৃথিব্রীতে আসিতে হ-ইবে।" কেছ বলেন, " পুণ্যাত্মাকে তিনি অনন্ত স্থগ প্রদান করিবেন--পাপীকে অ নশু নরক-যাত্নার দক্ষ করিবেন। " ইহাতে তাঁহার ভর যায় না ৷ ডিনি কোন্কথ: গ্রহণ করিবেন? কাছার বাকের বিশাস করিবেন ? আমারদের আত্মাতে যদি ঈ শ্বরের আলোক প্রকাশ না পায়, যদি উচ্ হার মঙ্গে যোগ না করি, ভবে এই সংশয় অজ্বকার কিছুতে বিমোচন করিতে পীরি मा। किन्दु राधन जिच्छत्त मत्य यांश नि-वक्ष कति—यथन छै। होत्र भक्षल ভोव क्रम्दर প্রতিভাত হয়, তখন সংশয় অন্ধকার হৃদ-য়কে আচ্ছন্ন কয়ে না। তথ্য আপনাপনি বুঝিতে পারি, ঈশ্বরের সঙ্গে আমার যে যোগ ভাষা চির কাল থাকিবে। তথন নিঃ-সংশল্পে বলিতে পারি 'যএতবিভ্রম্ভাতে खविष ' गाँचाता कहे शतरमध्तरक स्वर्गनन, ভাঁহার। অমর হরেম। বনিও মৃত্যুর পরে কি হইবে, ভাহার সকল জানিজে না পারি; কিন্ত জানিতে পারি, আমরা ইস্করেরই আ-खदा शांकिय। अशांत्म याच स्त्रान, याच धर्मा, यत्र श्रीकि छेभाक्त कतिवः प्रमूरगादत

উন্নত লোকে গিয়া উন্নত হইব। यদি আ-মরা কৃটিল পালে বিক্লত হইয়া এবং ঈশ-त्त्र मंत्रभाशम मा हरेगा हेर लाक र-इटड व्यवस्ट इहे, छत् यामात्रदमत निःमश्युत्र घटधांगणि हहेटवः, किन्तु रमधाटन তাঁহার ন্যায়-দণ্ড ভোগ করিয়া পরিশুদ্ধ হইয়া পুনর্বার তাঁহার সৎপথে ফিরিয়া আ-मित। अन्छ यक्ष्टलत त्रांटका अन्छ न्त्रक নাই; যিনি আমারদের পর্ম পিতা, যিনি ইহারই জন্য শাস্তি দেন যে আমরা ভাঁহার পথে ফিরিয়া আদি; তিনি কি পাপীকে धनतु मद्राक मक्ष क्रियन ? हेरा यमि मठा হয়, তবে আর মকলি নিখ্যা। দেই মঙ্গ-ল-স্বৰূপের উপর যথন আমারদের বি-শ্বাদ যায়, তথন মনে করিতে পারি না যে তিনি পাপের জয় করিবেন—অনম্পলের জন্ন করিবেন—নরকামিকে অনন্ত কাল জ-লিতে দিবেন। যদিও চতুদিকে রোগ শোক পাপ তাপ দেখিয়া ভাহার অর্থ সু-বিতেনাপারি, কিন্তু ইহা নিশ্চর জানি যে ঈশ্বর ভাঁহার সংসারকে বিন্ত হইতে দিবেন না। তিনি সহজ্র উপায় ছারা মঞ্জ-লেরই জায় করিবেন। তাঁহার সংসারের একটি প্রাণীকেও তিনি পরিত্যাগ করিবেন না। তিনি সকলকে উন্নতি হইতে উন-তিতে লইয়া যাইবেন। পাণীকে ফু:খ क्रिम मध मिन्ना—भूगावनिदक व्यानदन्त छ-পর আনন্দে প্লাবিত করিয়া, আপনার দি-क्ट्रे चार्क्य क्षित्वन।

এই প্রকার, উত্থরের সঙ্গে বিনি আসার বোগ করেন, তিনি কালের হস্ত দে
থিয়া ভীত হন না। ইশ্বরের আলোক
বাঁহার হৃদয়ে আশারের নীপ হইয়া প্রজ্বলিত হয়, ভিনি লেই আলোকে সকল
দর্শন করেন। তিনি তাঁহার প্রম্পতি ইন
রম গতিকে দেখিয়া ভয়-শ্বনা হন। প্র-

কিরা যেনন অরণ্যে গিরা আপন আপন मत्नत উल्लाटन मध्यत्व करत्र, विभि त्यहे कथ শরীর পিঞ্জর হইতে স্কুক্ত হইয়া ঈশ্বরের निक्षे यारेबात ए जिलाय करतन। मेन्यतत উচ্চ্যুল মুখ দেখিয়া তাঁহার জ্ঞান উচ্চ্যুল হয়। বে আলোক তাঁহার হৃদয়ে প্রজ্জুলিত হয়, তাহাতে তিনি মৃত্যুর পর পার জ্যোতি-র্মার ব্রহ্ম-ধাম দেখিতে পান। ঈশ্বরকে পা ইয়া তিনি সকল অন্ধকারের আলোক পান। শত শত এন্থ পাঠ করিলে— শত শত বা-ক্তির উপদেশ অবণ করিলে যে বিশাস ন। হয়, এক বার দিখারের আলোক দেখিলেপা-हेरन आभावरम्य छक्ष्णु उद्योजन इत्। अक বার তাঁহার অয়ত-রমের আস্বাদন পাইলে तांचि तांचि शहन शहम रहा। जेचातत मार्क योगं कतित्वहे व्यामता मुक्तित शुक्रां जाम পাই। বিনি এক বার পরমায়াকে দেলিতে পান, দিন দিন ভাঁহাকে অধিক দেখিতে পাইবেন, এই আশাতে ভিনি উৎফুল থা-কেন। বিপদ্ ভাঁছার নিকট সম্পদ্তুল। হয়—মৃতু। অমৃতের দে(পান • হয় : দিনি পর লোকের প্রতি সংশয়-শূনা হইতে है। (इन, छाइंदिक अर्थे मांज चिंतरह भाति स्थ প্রবিত্ত ফ্রাদ্বরে জিখারের নিক্টে গ্রামন কর कैशित मञ्जन मूर्कि पश्चेन दत्, प्ययमाई गश्मत्र भूना इरेटव । " जिनाटक क्षणाखाः च्चिक्तमः एक मर्कामः भागः। ११ - डीक्स्टाकः (४-बिटन ''क्परसर्व शिक्ष च्या इत, मरुल नश्यस ছিল হয়। । आमता र्याम शाटशटक कवाहिक हरे, छथानि आमता नितान हरे ना। ना-মরা অনুতাপিত হুদয়ে তাঁহার শরণাপন হ-ইলেই তিনি আমার্দিগকে এইণ করেন। তাঁহার ইচ্ছা এই যে আমর। পাপ ভাপ হইতে নিজ্তি লাভ করি। আমরা যদি আপনার ইচ্ছাতেই পাপ তাপ হইতে নি-ফ্তি পাইবার নিমেত্তে তাঁহার শরণাপন

হই, ভবে দে ইচ্ছা পূর্ণ হইবে না ভো আরু
কোন্ ইচ্ছা পূর্ণ হইবে; ভাঁহার শ্রণাপর
হইলে তিনি আমারদিগকে অভয় প্রদান
করিয়াবলেন "বংস ভীত হইও না—আমি
ভোমাকে গ্রহণ করিব।" তাঁহার অভয়বারে গেলে তিনি আমারদিগকে দূর করিয়া দেন না। এই পৃথিবীতেই ইউক,
অন্যত্রই ইউক, যখন যে অবস্থাতে আমরা
হাঁহার শরণাপন হইতে যাইব, তথনি আন্
মারদের সন্তাপাক্র মার্জনা করিয়া আপন
মার্লিজন পাশে বদ্ধ করিবেন। "পাপী
ভা শাধু অসাধু দিবেন স্বারে ম্ললছোয়া—কেবা জানে কত স্থ্য রম্ব দিবেন
মান্ডা লয়ে ভাঁর অমৃত নিকেতনে।"

হে পরমান্ত্র । ভূদি আমারদের সক-লকে তোমার অভিত করিয়া তোমাকে প্রীতি ও তেমির কার্ম্য করিবার জন্য প্রে-রণ করিয়াছ: আমর: এখান হইতে শিকা লাভ করিয়া ক্রমে ক্রমে উল্লভ লোকে গিয়া ভোমার অভিনুধে অগ্রসর হইব। সে অ-মূল। শালভ ক্ষ্প তুনি আনারদের জনা ম-ঞিত ক্রিল্ডি, আমরা যেন আপনার দোবে जार। स्ट्रेटच विकिछ मा स्ट्रे। आभातत्म्ब আত্মানে উন্নত ও পৰিত্ৰ করিয়া যেন তো-মারই পদত্রে দ্বানিয়া কক্ষা করিছে পারি। কুমি আমার্রিদিগকে যে সকল অমূল্য অধি-কার দিয়াছ, ভাহা যেন ভোমারই হতে এ-ভূমি সহায় না হ-ভাগণ করিতে পারি! ইলে আমরা আপনার যত্ত্রে কিছুই করিতে পারি না; অভএব তোমার অক্ষয় সাহায্য শ্বার্থনা করিতেছি, তুমি আমারদিগকে তো-মার অমৃত পথে লইয়া যাও।

ওঁএকমেবাদ্বিতীয়ং

আত্মচিন্তা।

"যত দিন পুথিবাতে জীবিত থাকিব তত দিনই অংশে অংগে ধর্ম সঞ্চয় করিতে हरेटव। गांश्यादिक व्यवसा यक्तरे मन्द्र इन्हेक ना (कम कांन करमहे था। महत्र कर्डवा সাধনে উদাসীন থাকিতে পারিব না। ঈশ্ব-त्रे कीवत्नत्र উष्म्मा, मेश्रू कीवत्नत् সুখ-নিকেতন, ষতইকাল অভিবাহিত হইবে তত তাঁহারই দিকে অগ্রসর হইব এই আ-মার আশা। তবে কি জন্য তাঁহা হইতে ব-ঞ্চিত রহিয়াছি, তাঁহা হইতে বঞ্চিত থাকিয়া কি প্রকারে জীবন-ভার সহা করিব ৷ এই शृथियोत मकवा यञ्च हित्र काल मसाम तहि-বিংশতি মহতা বংগর পূর্বে शास्त्र । উদায়াস হইত এখনও দেই ৰূপ হইতেছে, নে ৰূপ শোভা মহ্কারে বিংশতি সহস্ৰ वश्मत भूरके हस्त नक्क निःशंक निशीध সময়ে গগণ মণ্ডলে বিচরণ করিত অখনও **मिहे क्या कति (७८**६, मिकाप श्रद्धत में हिड बामाणिरशत पूर्व भूक्षवशन जनक জননী ও প্রিয় জনের স্নেহ লাভ করিভেন আমরাও দেই ৰূপ করিতেছি। नेचत जिल्ल এই পৃথিবীর সকলই শুনা শোভা হীন, সকলই অক্সকার ও বিষল্প দে-থায়। হা কি প্রকারে উছোর সহিত পুন-জ্ঞান-চক্ষুতে খীতি-চক্ষুতে দৃষ্টি করি-য়াছে, তাঁহার অদর্শনে ভাহার পক্ষে এই ৰূপ বিলাপ-উক্তি করা নিতান্ত অস্বাভাবিক नदङ्

কিন্ত প্রতি নিরতই কত প্রকারে আমর। তাঁহা হইতে বিজ্ঞা হইডেছি। কত বার জ্ঞা-বশতঃ ধর্মা উপাক্তানে বিরত ও বিফল-যত্ন হইডেছি! অনুসন্ধান করিলে

এবজ্ঞকার তুরক্তার কারণ আত্ম-অভাব ভিন্ন আর কিছুই অভীত হর না সকল বস্তুর মূতনতা এবং পুরাতনতা আছে। व्ययस्य स्थानं भाग-भय-भागी मसूरवात मत्न धरमात मोन्हर्या এवर भारभत कर्मग्राजा প্রকাশ পায় তথন সে অতি আগ্রহ পূর্বক धर्मातक व्यवनयन करत, এवः मिरे पर्माक প্রতিপালন করিতে শরীর মনের সমস্ত শক্তিকে নিয়োগ করে। এই জন্য দৃষ্ট হর যে ব্রাহ্মধর্ম গ্রহণ করিয়া প্রথমতঃ ব্রা-टकाता जांकीत जांदिन भागदन यथभेदतीनोस्त्रि येङ्ग করিয়া **থাকেন, এবং পিডা মাত**। ও গুরুজনের অনুরোধ পর্যান্ত পরিত্যাণ ক-রিরা কেবল **ঈশ্বরেরই পথে অগ্রসর হও**য়া জীবনের সার কর্মাবিবেচনা করেন। কিন্ত আজ-চিভার বিরহে, এবং আয়ার গৃঢ় অ-ভাব সকলের অজ্ঞানতা জন্য, কিছু দিন পরে करे উৎगाह करे **जां अह भी उन र**हेशा यांग्र, ধর্মের শোভা পুরাতন ও বিলুপ্ত হইয়া আ हेटम, এनং नव भीन्न्या महकादत माश्मा-রিকতা স্বীয় স্থা-সম্পদ্ আমাদিগের হৃদয়-নয়নের সমক্ষে প্রকাশ করে। মন বিমো-চিত হইয়া যায়, ঈশারকে বিশৃত হয়, ধর্মের শ্ভি অস্ব হয়, পর লোকের প্রতি गन्मिक्ष इत, धवर व्यनक् हिन्न हिट्ड मर्य-माकी शत्रामधारतत ममाक सर्थक्कातीरत প্রবৃত্ত হয়। অনুশোচনা ও আত্মানি আ-हेटन, सूडन सूडन खुशासुधातन खेलाटन णाहाता भाता**विक एस, এवर क्रमच हे श**पस ष्याभाषी इहेट**७ थाटक। सर्थ-विद्धा टक्न**न-कत्र ७ तमस्मा इरेता भटफ, कटम कटम গাভীষ্য পরিত্যক্ত হর, পর-নিন্দার আ-स्थान करम, मानाधकात कोजूक-तहना गमानाम ७ जनात्नावनात नत्न व्यविष হয়, নভোর প্রতি আহা ভিরোহিত হইতে थांटक, अवर वक्षित्रज्ञ मानम विस्तानन

উদ্দেশে অনৃত বিভৎস ভাষা পৰ্যান্ত সময়ে नमदम जानत्नीय स्टेश উट्ट। याकात চরিত্র স্বভাবতঃ যে সকল দেখি-সম্পন ভাহার কার্যো সেই দোষগুলি একে একে मृचि-(গাচর इहेट्ड थाटक, এবং লব্জা, ভয়, অমুরোধ, ভক্তি, শ্রহ্না, আরত-বদনে जरक जरक धार्मन करत। य गर्निक, धनाजिमादन, विमाजिमादन, कूनाजिमादन ক্ষীত, সে কিছু দিন ধর্মের ভাতৃনে কক্টে ক্লেশে খীয় কুমভাবজাত অহকার দমন করিয়া এখন নির্ভয়ে বিক্ষারিত বক্ষে লো-কের পৃতেঠ পদাঘাত করিয়া চলিয়া 🍑য়; य धन लाजी, तम भटमात व्यक्ति देनताका व्यवनध्न कवित्रा (क्वम नथः स्तृत व्यनुगक्ताः न रेडेंड ड खमन करत, धनः स्य हेन्द्रिस-धिय, নে ইন্ডিয়ের সেবার উন্মন্ত হইয়া মান ম-र्या। ना पर्या व्यर्थ भाका भकत है विमञ्जल भ एत्र। किन्छ इंश्रांट बार्या मकरनाई वि এक कारन ঈশ্বরের নাম ও ধর্মের উল্লেখ পর্যান্ত পরি-তাগি করিয়াছে, কি নবলভায় ও সাধু ব্যবহারে এক কালে জলাগুলি দিয়া কপ-**টাচরণে ও অসদাবহারে নমস্ত শরীর মনকে নিযুক্ত করিয়াতে এনত নহে। উন্ন**িও আন্দ श्वादक्रतरात रम क्षेत्र भाषान चार्छ, श्राप ও আন্ন-বিকর্ষণেরও ডজেপ্রদোপান লাছে। रियम प्रतिरहा इहेट अक काटन जाटचान-ভির শিখর-দেশে উত্থান করিতে পারা যায় ना, वह आयारम करम करम आरहाइन করিতে হয়, সেই ৰূপ এক বার উন্নতি লাভ করিয়া এক কালে অধর্মা ছুর্গহির অধস্তম হুদে অবভরণ করা যাব না, ক্রমে ক্রমে নিমগামী হইতে ২য়। বিজ্ঞাচলত্ত অভুচ্চে অ্ধিতাকা-ভূমির প্রস্তর-মণ্ডিত অগ্রভাগে দণ্ডায়মান হইয়া বহু দুরে নিশ্বস্থিত প্রান্তরে অধঃপতিত হইয়া চূৰ্বইতে কাহার হৃণয় না ভয়ে বিকম্পিত হয়? অদাবিধি যাঁহার৷

তুৰ্গতির পাৰাকান্তা আপ্ত না হইরাছেন,
আন্যাৰ্থি বাঁহাদিগের চিত্তে ধর্ম লাভ করিকান উজ্ঞান লেশ মান অনুস্থিতি কবিতেতে:
তাঁহারা অবশ্য স্কুল্য বন্ধ-বাক্য কৰাচ
অবক্লেন করিবেন না। এবং বেখান হইতে
বর্মোপদেশ লক্ষ ইউক না কেন ভাষা গ্রহণ
করিয়া মনুষা জীবনের মহজ্ব লাভ করিবেন
ভাষাকে সন্দেহ নাই।

এই পৃথিবী পরীক্ষার স্থান। এখা-নকার বিস্ন বিপান্ত ঈশ্বর প্রেরিভ। সেই বিস্ন বিপত্তি সত্ত্বে খাঁহার৷ যে পরিমাণে কর্তব্য কর্মজাধন করিতে পারিবেন, সেই পরি-মানে তাঁহারা পর লোকে অতুলা শাশ্বত পুরস্কার আপ্ত ছইবেন। পরমেশ্বর স্বীয় অপরিনাম করুণাগুণে মনুব্যকে ধর্ম দা-ধনের অধিকারী করিয়াছেন। কিন্তু পাছে ভাহার গৌরব ও মহত্ব লঘীয়ান হয়, এই कना मिरे धर्माक कर्षे भाषा छूल 😇 ও বছ-প্রলোভনে বেধনীয় করিয়াছেন। সনুষোর স্বভাব এৱপে স্ট হইয়াছে ফে ধর্ম বা অধর্মাকে অবলয়ন করা তাঁহার পক্ষে সম্পূৰ্ণ ৰূপে স্বেচ্ছাধীন ৷ মনুষ্য বেমন স-ন্তণ দেখিলে তাহার অন্ত**র্গত** আখ্যাত্মিক भोन्मर्र्या भूक इटयन, अवश्यक मूत्र माथा ভাছার অনুকরণ করিতে ক্ষণ কালের জনাও উৎস্ক হয়েন, সেই ৰূপ পাপকাৰ্যা ও অপরিশুক্ত সূথ-ভোগ সন্দর্শনে তাঁহার পঞ্চ প্রকৃতি উত্তেজিত হয়, তিনি বিষম মোহে মুগ্ধ হইয়া স্বীয় দেবভাব**কে উৎসন্ন করিডে** সহজেই প্রবৃত্ত হয়েন। বাস্তবিক পাপাচ-রণ করিবার ক্ষমতা আছে বলিরাই ধর্মান নরণ ভাঁহার সম্বয়ের বিশে**ব আদরণীয় ও পু**-বক্ষানের উপযুক্ত। ইশ্বর ধর্মের প্রবর্তক। মন্ত্রমাকে কেবল সাধুর্**ডিতে ভূকিত করি**-যাই ক্ষাস্ত না থাকিয়া তিনি স্বয়ং ভা**হাকে** সভা ধর্মের পথ প্রদর্শন করিতেছে**ন। সেই**

भष वर्गन कतिहा वदर छप्रवादन स्निष्ठ বিশুক্ত আনক্ষতিপতভাগ করিয়াও যদি কেই মূরতা বশতঃ ভারাকে পরিতাশি করে তবে তাহার অপরাধ সন্দূর্ণ ববেশ ভাহাকে ভিন্ন আর কাহাকে অশিতে শারে? যে সভা ধর্ম অবলয়ন করিয়া ভাষাকে সামান্য আয়াস-माथा मदन करत अनः वहिर्वियदम् निमध इहे या जाजारक रेनगर्शिक गण्डिट के बरतत मिट्यांग्रेयन कतिएक चारिमन रमत्र रमहे कनम কাপুরুবের ভ্রমের দীমা নাই। শুভ ক্ষণে পরমেশ্র মমুধ্য-হাদরে আবিভুতি হইয়া ধর্মপাধনের উপায় ও আনন্দ নির্দেশ করত অন্তর্হিত হয়েন, এবং স্নেহভরে অলক্ষিত कटल टमरे लटब छारांत अमहातन मिटी-ক্ষণ করেন, ষত বার সে তাঁহার নিকট সাহায্য প্রার্থনা করে ভত বার তাহা প্রদান करद्रम। किन्छ हेष्ट्रा थिडिछा এवং धर्मा সাধনোপযোগী আত্ম-পরিশুদ্ধি সমাক্ রপে মনুষ্যের স্বাধীনতা-সম্ভূত। আত্মচিস্তঃ ক-রিরা আপনার দোষ সমূহ অবগত হইতে इडेटव, ट्विवन मञ्जूब मटक ७ উপामना-१८३ গমন করিলে ক্ইবেনা। যে আছচিতঃ-বিরহিত হইয়া সাধু-সঙ্গে গমন করে, সে ভত্তস্থ বাহ্যিক ক্রীড়া কৌতুকে সংগক্ত থাকে এবং দাধু সঙ্গকে অদাধু সঙ্গেতে পরিণত कृद्र। এই व्यकाद्य कार्य पात्रा मञ्जून निर्मन চরিত্র পর্যান্ত দূবিত হয়। যদি পরমেশ্বরের मिटक शमन काबिवात हेक्श शांदक नियुष्ट्रे আত্মচিতা ও আত্মানুসন্ধানে এইত হও, আপনার অভাব-সকল আপনার ছোব-সকল मर्मन कदिया व्यक्त पर हिटल छैं। होत्र निक्र आर्थनां कत, माधुमिरशत छेश्ररमण अर्ग कत, जरर मम् केटलत असुकत्व कड़ । जीवटनत নকল কালই অতি ভরকর। বলি অত্যন্ত সাব-थानका श्रृक्षक मर्यमा व्याकारक ना ब्रका दन्त, এবং मस्तारे यनि छारांत्र वर्षननीन श्रव्हांड-

बिहत्तरक **चत्रुगचान ७ जद**शरथ निर्मात না কর, ভাষা হইলে নিক্যাই আছা গৃঢ় करण गारमादिक जनका जि सीख हरेटव, वरर अवड मगरत निक अकृष्टिः अनर्गन कतिरद यथन চরিত্রসংশোধন চেন্টাবহিভূ ত হইরা গিরাছে। কারণ মনুষ্য থখন যে অবস্থায় অবস্থিতি করে তথন আপনার প্রবৃত্তিকে সম্পূর্ণ ৰূপে তাহারি উপযোগী করিয়া লয়, এবং পরিণত প্রকৃতি পরিশুক্ক কর। ভা-काल भरक निकास एःमाधा क्रेशा उति। অতএব উপযুক্ত সময়ে আছচিন্তা দার। हतिज मः भाषन कतिद्व, अवः मनदक ध-র্মেতে উন্নত করিবে, আত্মচিন্তা না থাকিলে व्यविष्कृ शृंद्धत नाति ऋग्दत वह ध्यकति ণাপ-ভক্ষর প্রবেশ করে, এবং অমূল্য ধর্ম-রত্নকে অচিরে অক্তাতদারে অপহরণ करव ।

मण्यू नंकरण यांचा विद्या अपरत वर्डमान না থাকিলে, কোন মতেই উপযুক্ত উপা-মনা সন্তাবিত হয় না। আমাদিগের উপস্থিত ভূরবস্থার একটা প্রধান কারণ অনুপযুক্ত भेषादार्थामनः। यनि व्यक्तिन क्नारव्रत व्य-ভাব জানিরা সমান আহ্বা ভক্তি ও বিনয় मङ्काद्य भवरमश्रद्धव निक्षे वार्थना क-রিতে পারি, তাহা হইলে আত্মার উন্নতির मीमा थाटक ना। किन्न छेलामनाशृहरू भगन করিয়াকি অভাবের জন্য প্রার্থনা করিব তাহা না জানিলে কি প্রকারে প্রার্থনা স-खद्द ? ने बद्दात कान थीं कि मक्नाकाद मा অনুভব করিলে কি একারে তাঁহার এতি অৰাও কৃতজ্ঞতা উপিত হইটেজ পারে? **अङ्गत गनि नेसंद-अङ्गादि वाक्नि** इहेना থাক, যদি ভাঁছাকে লাভ করিবার একান্ত वामना हरेता थाटक, उटब मतन इपटम ना-পনার সান্ধাকে অসুসন্ধান কর, রাশি রাশি नीरिशत करा जन्द र इरेग्रा वियोगिक्य पूर्व লোচনে ভয় ক্ষরে তাঁহার নিকট প্রার্থনা কর, তিনি ভোমার ক্ষরতক ক্তরভাও জ জাতে পরিপূর্ণ করিবেন, তোমার অপরাধ মাজ্জনা করিবেন, তোমার দূষিত চরিতকে সংশোধন করিবেন।

গুরু জনের প্রতি প্রকাণ কুডজতা না থাক। আন্ধ-বিশ্বতির কার্য্য। যে আপনার मांच ना (मदथ रमरे भरत्र दर्भव पश्चमकान করে। আমরা নিজে ধাহা মনে করি তাহা অভান্ত নহে। কপতের আর সকলে व्यामानिद्यात मःकण्याञ्चयात्री कार्य। कृदत না বলিয়া ভাহার। আবিশুভ চরিত্র নীলে। আমাদিনের স্বীয় অপরাধের সংখ্যা এত যে তৎ সমুদায় পরিশোধন করিতে গেলে আর কাগরও দোবায়ুসন্ধান বা দোব কীর্তন করিবার অবকাশ থাকে মা,এবং দেই 🗫ল দোবের প্রতি যথোচিত ঘূণা থাকিলে অপর কাহারও দোষকে দোষ বলিয়াই বোধ হয় না। যদি সকল ত্রাক্ষ আত্মচিন্তা-প্রাযণ हरेश चीत चीत राम नगाक् कल मः माधन করত ত্রাক্ষধর্মের ১মতি চেকী। করিতেন ভাষ্য হইলে এত দিলে ভাঁষ্যদিগের আলা: কত দূর সদ্গতি প্রো: হইত এবং ব্রাহ্মধর্মের মুখ কতদুর উজ্জ্ব । ইত ৷ বিনীত ভাবে করযোত্যে সকল ত্রাগ জাহাগণের প্রতি আ। মাদিগের নিবেদন যে ভাহার। প্রতিনিয়ন্ত যেন **আত্মচিস্তা দ্বারা আপনাদিব্যের হৃদ**য়ের বস্ত অভাব দূর করেন, এবং যে দমস্ত চরিত্র-গত দৌষ ও অসম্পূর্ণতা জন্য ত্রাফ্রংর্মের ध्यं क्रिक महेख् अन्य-मत्था छे भवकि कतिएक প: রিতেছেন না, ঈশ্বর-অসাদে তাহা হইতে অচিরে মুক্ত হইতে সাধ্যান্ত্রসারে চেন্টা করে। নক্ত-স্বাস প্রমেশ্বর আমাদি-(शंत रथ) हहें एक (घष, हिंश्मा, प्यहक्ष त्र, शत-निमा ७ क्र विज्ञातिक विज्ञातिक क्यान अवर আমরা বেন পুণোর পবিত্রতা ও অমৃতত্ত্ অবিলয়ে লাভ করিয়া সমস্ত পৃথিবীময় ত্রাক্ষ ধর্মকে ব্যাপ্ত করিতে সচেট্ট হই।

যনোবিজ্ঞান।

মনোবিজ্ঞানের প্রকৃতি, আবশ্যকতা, महत्र, कार्य। ७ डिल्म-ग-विवदः आमानिरशत দাধারণ মভামত পাঠকবর্গ দমীপে যথা-श्री अक्षानिक इड्डेल : बामानिटवंद टाकी তত দুর ফলবভী হইয়াছে বলিতে পারি না। মন অতীক্রির, দৃষ্টির বহিতৃতি প-দার্থ, তৎ সম্বন্ধীর কোন ভাব, কোন গুণ, ব' কোন ঘটনা, শারীরিক শব্দির ক্রিয়া ধারা কিছু মাত্র অনুভূত হর না! কঠোর, একাত্র, এবং অবিশ্রাম্য চিম্তা ও আমুদ্রুটি ষারীভাগার তন্ত্র নির্ণয় করিতে হয়। দেই ৰূপ চিস্তা ও দেই ৰূপ আত্ম দৃটি সহকারে আত্মার প্রবৃত্তি শক্তি ভাব নিয়ম ও উদ্দেশ্য নির্ণয় করাই মনোবিজ্ঞানের প্রকৃতি। মন বিশ্ব জগতের মধ্যবিন্তু এবং মনোবি-জ্ঞান জ্ঞান-রাজের রাজধানী-প্রবাপ। সমস্ত স্ফি-পরিধি প্রদাক্ষণ করিয়া ঈশ্বর প্রতি-ষ্ঠিত নিয়ম কৌশল ও সৌন্দর্যা ক্রমুজন করণার্থে মনের মধোই প্রবেশ করিতে হয়, কারণ মনুষ্য রুম্বের এততাবৎই মনের श्रवृष्टि-भारशक ।

অপিচ চিন্তাশক্তির কার্যা এবাপ অ
ক্ত গে যত অধিক পরিমাণে এক বি
যয়ে তাহা পরিচালিত হইবে, তত অধিক
পরিমাণে সর্ববিষয়ক জ্ঞান উপাজ্জন

করিতে মনকে প্রস্তুত প্রস্তুত ও সমর্থ ক
রিবে। মনোবিজ্ঞান আলোচনায় যেমন

চিন্তা-প্রিকর পরিচালন হয় এমত আর কিছুতেই নহে, সেই জন্য আল্ল-জ্ঞানই সকল

জ্ঞানের উপায়। বিশেষভঃ যে শাস্ত্রই অন্তুগাবিত ইউক মনের প্রস্তুত্তি ও কার্যা ভিন্ন

কোন কমেই ভাষাকে ক্রুৎপতি জলে না,
তবে যে বিদ্যা মনের তত্ত্ব নিদর্শন করে
তাহা যে সর্বাপেক্ষানহৎ ভাষাতে আর সক্ষেহ কি ? মনোবিক্ষানের ছারা যে অন্যান্য
শাস্ত্রাভ্যাসের সৌকর্য্য হয় ইহা ভাষার
আপেক্ষিক মহত্ব; আর মনোবিক্ষানের ছারা
যে মনের স্বতন্ত্র উন্নতি জল্মে ইহা ভাষার
স্বতন্ত্র মহত্ব।

অবিকন্ত ঈশ্বরজ্ঞান যে কপ উজ্জ্বলতা সহকারে মনোদগতে লক্ক হয় মে প্রকার অন্য কোথাও হয় না। পৃথিবী মধ্যে জ্ঞান প্রীতি পবিত্রতার সকা শ্রেড প্রতিক্রপ মনুষ্যের আলা। যাহারা আপনা দিগের আলার সহতাব না কানিয়া পাপাচ-রণ করে তাহারা পরসেশরের স্থকগেব অ-গৌরব করে, এবং যাহারা আলতত্ত্ব অবগত হইয়া নিয়ত জীবনের উদ্দেশ্য সাধন করে তাহার ধর্মের পথ উজ্জ্বল করে এবং দশর স্থকপের উজ্জ্বল পরিচয় প্রদান করে। অত-এব যে বিদ্যা দ্বারা দেই আল্ল-ভত্ত্ব ও আ-লালুসন্ধান প্রাপ্ত হওয়া যায় ভাহার জাব-শাক্তার, তাহার মহন্মের কি দীনা আছে ?

দৃষ্ট বিষয়ের কারণ অনুসন্ধান করাই বিজ্ঞানের কার্যা। পৃথিবী জড় ও জীবন-বিহীন
পদার্থ। মনুষোর মনই ভাহার অন্তর্গত
কার্য্য কারণ শৃত্থালা অনুভব করে, এবং স্বীয়
স্থভাব অনুসারে কারণের পর কারণ অনুসন্ধান করিতে থাকে। এই প্রকারে উপর্যু
পরি কারণ শৃত্থালায় উপ্থান করিতে করিতে
পরিশেষে সর্বোপার সেই কারণের কারণ,
সেই আদি কারণ স্বরূপ পর্নেশরের উজ্জ্বল
মুখ দেখিতে পায়। বিশ্ব মণ্ডলন্থ ভাবৎ কারণরাশিকে সমাক্রপে একতীভুত করিয়া তাঁহাকে গ্রহণ করা আপাততঃ মনুষোর পজ্জে
অসাধা, কিন্তু ইহাই মনোবিজ্ঞানের উদ্দেশ্য
বলিয়া নিশ্য রূপে নির্দিষ্ট হইতে পারে।

উপরোক্ত বিষয় সকল সহকো আমরা যাহা কিছু বলিয়াছি ভাষা নিভান্ত অনুস্থিতি সামানা সন্দেহ নাই। সকলে সহকেই ভাহা আয়ন্তীকৃত করিতে সমর্থ হইবেন। কিন্তু আমাদিনের উদ্দেশ্য ভহসমন্ত ঘ্যা-সাধা আলোচনা করিয়া পাঠকবর্গ ও সকল ব্রাহ্ম আত্মপ্রলের হৃদয়ে মনোবিষয়ক চিন্তা উদুশ এক্ষান্দীল করি, যে ভাহারা আমাদিনের সাহাযা অপেক্ষা মহত্তর উ-পায়ে মনুষোর প্রকৃতি প্রবং তলিহিত ক্ষ্ম-শ্বের উদারতা উপলব্ধি করিতে পারেন।

এ ক্ষণে আমাদিগের গৃঢ় ৰূপে মনো-বিজ্ঞান শান্ত্রের আলোচনার প্রহৃত হইতে ছউত্তব। এতাদৃশ আলোচনার পূর্বের বোধ হর আমাদিণের মন শব্দের প্রকৃত অর্থ অব-গত ছত্য়া, এবং মন-সম্মীয় সর্বাদা ব্যবহার্য্য ক তি পয় শক্ষের ভাৎ পর্য্য নিরপণ করা একান্ত আবিশাক। কারণ সাধারণতঃ বিজ্ঞান শাক্ত সম্বন্ধে, বিশেষতঃ মনোবিজ্ঞান সম্বন্ধে, বি-শেষ বিশেষ ভাব-নিদর্শক এতাদৃশ কভক গুলি শব্দ নিৰূপণ ও তাহাদিনের অদৈধ অর্থ সংগ্রহ করিলে ভবিদ্যালোচনার অ-जिमा दिनोक्या कटका। मक लहेश विक-वि छ ७। ट्रिकु अमाविधि य कह अध्यत उ छ। নর্থকর মহামতের উদ্ভাবন ক্ইয়াছে ভারার সংখ্যা করিয়া শেষ করা যায় না। অধিকন্ত वश्र **जायात्र मत्नोविख्यान मत्रश्लीतं कान** तठ-नामि यमा भेर्यास धकामिक इस नाहे, ग्र-ज्जार **डेक विषद्ध एवं एटन एवं नक**ानि বাবহৃত হইবে, ভাছা দাধারণের বোধগ্যা कर्नादर्थ अशादन विश्व इंड्रेट्डिट्ड

मन काशांदक तरन, अर्हे विषय नहेशा य कछ नानांकुवान हरेशांद्ध (बाथ इस अ-त्नादकरे अवनक आहिन। दक्ष मनदक नहीत, दक्ष नतीत्रक मन, दक्ष वी बनदक नहीत छ मन छेजसरे विद्याना करतन। दक्ष या क्षांदिक बाबु, स्कर् वा त्याभिक, त्कर वा म-डिट्यून बर्म मांज विद्वहमा करत्रन। এই क्षकादा मन देव कि अमार्थ है। नहेश हितकान हे विकामविद्यानति मत्या वस्तु ह-निश्नोट्छ । वित्वहना कंत्रिटन व्यक्तीयमान হইবে যে কতকগুলি গুণ ও ভাব দেখিবাই আমরা কোন একটা পদার্থের অন্তিত্ব নি-**प्सिन क**तिशा थाकि। एक शांकित्तहे छा-হার একটি আধার থাকিবে, সেই আধারকে भूमार्थ कहा यात्र । अहे भूमार्थटक व्यवस्थन করিয়া সকল ভাব সকল গুণ স্থিতি করি-তেছে. এবং ইছা হইতে বিচ্ছিল হইয়া গুণনাত্রই অবস্থিতি করিতে পারে না। আহুতি, বিস্তু, গতি, আকর্ষণাদি কডক-গুলি গুণত্রেণী একটা পদার্থকে আত্রয় করিয়া রহিয়াছে তাহার নাম জড়পদার্থ : জ্ঞান, প্রীভি, ইচ্ছাদি কতকগুলি গুণ-খ্রেণী অপর একটা পদার্থকে আত্রয় করিয়া রহি-য়াছে, তাহার নাম চেতন পদার্থ অথবা মন। এই দিবিধ পদার্থ হইতে বিচ্ছিন হইয়া কি উপরোলিখিত গুণ-মণ্ডলীর মধ্যে একটাও অবস্থিতি করিতে পারে? কেহ কি অ-দ্যাবধি বস্তু-বিহীন আকৃতি, বা বস্তু বিহীন বর্ণ নয়ন গোচর করিয়াছেন, না মনোবিংীন জ্ঞান, ও হৃদয়-বিহীন শ্রীতি উপলব্ধি করি-परार्थ कहेट पृथक् कतिया য়াছেন ? श्च १- विश्वा मनुषा-य जांदवत शदक प्रमञ्जव । অতএব কতকগুলি গুণরাশি দেখিলে তাহা मिशदक क्रांन अक्री खन्मांनी भगदर्गत অন্তর্গত বলিয়া নিন্দর প্রতীতি হয় ; তাহা मा इउता चरगोफिक ७ चत्राचः दिक। এই গুণরাশি যদি সাধারণত সদুশ হয়, ভাছা হইলে তদবলমিত পদার্থও এক স্বভাবাপন रहेटन, क्विन कार्रान्टिनत क्रान्डत उ অবস্থান্তর নিবন্ধন উক্ত পদার্থের আরুতি ও অবস্থার ভেদ হইবে, এবং তাহা ভিন্ন

जिन्न नाटम छेङ हहेरत। यथा नामु अ थरुत, এবং स्थ्वनं ७ जन इंशनिगदक म शिल निर्वास विভिन्न अमोर्थ त्यां रहा। किस यमि ७ देशनिरगत विरमय विरमय अरगत প্রভেদ আছে, তত্তাপি জড় পদার্থের সা ধারণ সমস্ত গুণ উভয়েডেই সমান ৰূপে বিদ্যমান রহিরাছে ইহা অবভা কীকার্য্য; কারণ আক্ষতি বিস্তৃতি বর্ণ ও আকর্মণাদি জড়ীয় গুণ উভয়েতেই সমভাবে স্থিত দুকী হয়। অভএব ভাহারা ভিন্ন জব্য মাত্র, ভিন্ন ভিন্ন পদার্থ নহে। কিন্তু যদি উল্লি-থিত গুণরাশির মধ্যে একটী শ্রেণী অপর त्यनोगि हहेटड मन्भूनं करण विक्रक ७ **डिस**-श्रुजान इहेग्रा উঠে তाहा इहेटन छम्दनश्रिक পদার্থদয়ও বিভিন্ন-স্থভাব ও বিরুদ্ধ হইবে তাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই। এক্তে जहरकारे दार्थ रहेरल शांत य अ**ए** शंना-র্থের এবং চেতন প্রদার্থের গুণ্মমন্ত যেমন প্রস্পর বিরুদ্ধ ও অসদৃশ-স্বভাব এমত জ-शहा यात काम वखरे महर। वांखिक একটা লক্ষণ ও উভয় পদার্থের সাধা-दश मण्लेखि नदश । जाइ **तञ्चत (य ममख** গুণ চেতন বস্তুতে তাহার সম্পূর্ণ বিরহ, এবং চেতন বস্তু অর্থবা মনের যে সমস্ত লক্ষণ জড় পদার্থে অথবা বাহ্য জগতে তা-হার সম্পূর্ণ বিরহ। কেবল বিরহ নহে আ-বার বিরোধ। জড়তা এবং টৈতনা কেমন বিরুদ্ধ যেমন অক্ষকার ও আলোক, যেমন ক্ৰীবন ও মৃত্যু। অতএব বাহাৰস্ত অথবা জড় পদার্গ, এবং চেডন বস্তু অথবা জ্ঞান পদার্থ নস্পূৰ্ণৰূপে অসদৃশ ও বিভিন্নস্বভাব। শরীর यहारस ७ कड़ भनार्थ, कड़ीय मम छ छनह क्षारक दिनामांन मुके इत्र। अवर मन ाडन श्रमार्थ, ८०डन श्रमार्ट्यत समस्य **छ**न्हे ভাষাতে শুক্ষিত হয়। এই জন্য "শরীর ও হন এই চুই পরস্পর ভিন্ন বস্ত। সামানা যু-

क्रिटक अवनयन कतिरहारे विश्वक्रव विश्वाम रहेरव रच महीतंत्र आहर, मनल आहर, किछ मतीत सब बटर, समल मतीत नटर, छ-**बद्ध छे बद्ध हर्दछ विद्य। धरे भ**तीत छ मरनइ विভिন्न निमर्भनाटर्थ भूतां कालीन এक जन महा পণ্ডিতের বাকা অলুবাদিত হইল। আচার্য্য এবং শিষ্য পরক্ষার কথো-পকখন হইতেছে। আচার্যা। **তুমি কাহার সঞ্জেকথা** কহি-(छ्ह ? व्योगांत्र गटक नटह ? শিষ্য। হাঁ ভগবন্ আপনার লক্ষে আলাপ করিতেছি। আচার্য্য। আমিও তোমার সঙ্গে আলাপ করিতেছি? भिया। यथार्थ। আচাৰ্য্য। তবে আচাৰ্য্য কথা কহিতেছেন 🖟 भिषा। यथार्थ जगवन्। আচার্য্য। এবং শিষ্য শ্রবণ করিতেছেন 🏾 शिषा । यथार्थ । আচার্য্য। আমি শব্দ দারা তোমার সংহ আলাপ করিতেছি? শিষ্য। ভগবন, ইহাতে আর সন্দেহ কি? व्यक्तिया। व्यक्तिश कता अवः मक नगत-হার করা এ উভয় একই কার্যা ? मिया। এकरे कार्गा। আচার্য্য। ব্যবহার-কর্ত্তা এবং ব্যাবহৃত পদার্থ এউভয় কি ভিন্ন নছে ? निया। जगरन! कि रिलट्लन छेखन कर्प হৃদয়ঙ্গম করিতে পারিলাম না। व्यानार्या। वागकत श्रीप्र वागमञ्ज इहेटक কি বিভিন্ন নহে? কাষ্ঠ ছেদক স্থীয় কুঠার इटेर**७ कि वि**जिन्न नरह ? শিষা। নিঃসন্দেহ ভগবন্। বিভিন্ন। আভাষ্য। আমি ভোমাকে ইছাই জিজানা

ক্রিভেছিলাম, বাবহার-কর্ত্তা এবং ব্যবহৃত

বস্তু কি পরস্পর ভিন্ন নহে।

निया। देशांद्र यात गत्मर कि। थार्गार्थ। किन्तु भे कार्थ (इनक कि दक्रवन তাহার অন্ত ছারা কাঠ ছেপন করে, না তাহার मटक चीत्र स्टब्स माहासाछ ध-र्गकरतः ? विश्वास्त्र विश्वासम्बद्धाः निया। इटला माहाया अहन करता व्यानार्या। कदव रम श्रीत इंख्रेटक वादशंत •করে ? लिया। यथार्थ छन्नवान्। আচার্যা। নে হল্ডের ন্যার স্থীর চকুকেও বাবহার করিয়া থাকে ? শ্বা। ভগবন্! করিয়া থাকে আচার্যা। তবে কাঠচ্ছেদক এবং বাদাকর তাহাদিগের হস্ত ও চকু হইতে বিভিন্ন ? শিখা। ভগৰন্ ইহাই তো বোধ হয়। আচ্ব্যা। কিন্তু কেবল হস্ত ও চকু কেন? गकल मञुपाई इन्ड भन ठक्कू कर्नानि गमन्ड অঙ্গের সমর্চিযে শরীর তাহাকেও তো ব্যব-হার করিয়া থাকে। শিया। ভগবন্ ইহাতে আর সন্দেহ কি। আচার্যা। আমাদিগের ইহাই তে। সিদ্ধান্ত श्रेतारह य वावश्रंत कर्डी अवः वावक्ड বস্তু এউভয়ে বিভিন্ন ? 🤫 भिवा। ইशहे **आमानित्रत निका**छ। আচার্ঘ্য। মনুবা তবে তাহার শরীর হ-ইতে ভিন্ন ? শিষা। ভগবন্ ইহাই তে। আমার প্রতীতি र्टेट्टिइ। व्यागर्या। जदन मनुषा कि ? निया। जगरन् आमि छा ज महि। আচাৰ্যা। তুমি তো ইছা আছি আছ যে मञ्जूषा महीत नटर, ता कारात महीतटक वा-বহার করিয়া থাকে। निया। हेश काठ जाहि। व्याहार्या। मन जिल्ल नहीत्रदेक कि व्याह (कर वावरात कतिएक वार्टमा

भिया। आत (करहे नटर। व्यक्तिशा मनहे ज्दर अकुछ मनुगा। ছोक। (३ जनवन्। मनहे अक्छ मन्ता। আচার্যা এবং শিবোর উপরোলিখত मस्रोयन इहेटड जाबदा दक्वन इहाई निका করিলাম না যে শরীর এবং মন এ উভয়ে বিভিন্ন পদার্থ, কিন্তু ইহাও স্পার্টরূপে জ-वज्र इड्टाम (य "मैनरे अङ्ग्ड मनूष्र"। **এই मछाँगे (कमन महान्! हैंहा इहें 5** আমাদিনের হৃদয়ে কত মহস্তাবের উৎপত্তি इट्रेट्ट्र, এবং আমাদিনের ধর্মচেক। ও আছোয়তির আশা কতই সহায় লাভ করি-তেছে। এই বৃঙ্গ দেশের হীনাবস্থ সন্তান **फिर्टिशत गर्या गोहाता गोर्शितिक स्थ इ**स्टर्थ उनानीन थाकियां क्वन चीत्र खीत जर স্বদেশীয় লোকদিগের মান্দিক উলাভ সাধন করিবার চেন্টা করিতেছেন, যাহাকে এদেশে ধর্মের গৌরব রুদ্ধি হয়, শান্তি কুশল প্রদারিত হয়, তাহারই জন্য ঘাঁহারদের হৃদয় ব্যাকুল, তাঁহারাই প্রকৃত মনুষ্যতার পরিচয় দিতেছেন। ইহলোকে উ।হা-पिरान दा गमस कुन क**छ** इहेर छ छ , নিষ্ঠ্র খত্যাচারী লোকদিলের নিকট হইতে যে আঘাত যে নির্যাতন সহা করিতেছেন, তাহা এক দিন ভাঁহাদিগের জড়ীয় শরীরের गरिक ममाश्व हरेशा याहेता। जाहाता निर्याणिकारक, अवर निर्याणिता जैहानि-গকে বিশ্বত হইবেন, কিন্তু আয়ত্যু প্রাণ-গত-চেক্টা-মন্তুত বে আন্মোনতি ভাহা অনম্ভ কাল সুখ শাষ্টি ও প্রত্নত সম্পত্তি विधीन कतिदव मत्नह नाहै। महिन नातीतिक ऋथ छः८थत व्यवनान इस, किछ भड़ीर कर्फे शांश मान्मिक माना किहे তিরকাল পরলোকে মনুবোর সম্বল হট্যা 🕆 विञि कतः नेश्वत दक्षन मा माण्डि इहेट

যেন কেহই বিচ্যুত না হয়েন।

मत्या मन्यारे न स्वत्वाकं जवः मन्द्रयात मत्या मनदे मन्द्रत्यकं।

গত ১৫ই জোষ্ঠ কোনগর বিভীয় দায়ৎ-দরিক ব্রাহ্মদনাজে নিম লিখিত বক্তৃতাটী পঠিত হয়।

जान। करे समारकत नशःकम कक रूपत शूर्व হইল! করুণাময় পরমেশবের অনুকম্পাতে বে এতংকাল পর্যান্ত সমাক্ষেত্র কার্য্য নির্মিল্লে সম্পাদিত হইয়াছে ই২াতে কুডজ খ্নয়ে সেই মঙ্কময় পুরু-बटक वात वात समञ्जात कति। यिक धरे मरक्कर्ण-कृत गर्या करे शास्त्र अधिकमर्याक स्त्राक ব্ৰাক্ষধৰ্মে অনুৱাগ প্ৰকাশ করেন নাই, ভথাচ যে কয়েকটী যুৰ। ব্ৰংক্ষ-কোণী ভুক্ত ২ইগছেন ভাঁহারদিগের অকপট-ভা্ব ও ধর্মের প্রতি আন্ত-রিক আবো পাকাতে বিশেব তৃত্তিকর হইয়াচে। আর ইহাও আনাদিগের মরণকরা উচিত, ভূ-মিতে বীকা ৰপন করিবানাত ফল লাভ করা যাইতে পারে না, প্রত্যুত কালকে প্রভীকা ক-ब्रिट्ड हरेट्रक। काल महकाद्व महे रीज जन्न-রিভ ও পরবিভ ইইরা রুক্তরপে পরিণ্ড হয়, পশ্চাং ভাষা ফল পুষ্পে সুশোভিত হইয়া থাকে। অন্তর্র গত বর্বে আমাদিগের উদ্যোগ যে কিঞ্চিং গারিমাণে সফল হইগ্রাছে ভজনা সেই স্লেহ্ময় পরম পিভাকে ধন্যবাদ করি।

ব্রাহ্মপর্ম সহলের সাভাবিক পর্ম, ইহা কিছু ইতন ধর্ম নহে-অতি প্রাচীন কাল অবধি-সৃষ্টির আরম্ভ অবধি এই ধর্ম মনুষোর হৃদ্গত ইইরা আদিতেছে, এবং ক্রনে যে ইহা সমুদায় পৃথিবীতে গারিবাপে হইবে ভালা স্পন্ট উপলব্ধি ইইভেচে।

এই সনাতন ধর্মের উন্নতি সাধনই আদ্দাহতের প্রধান উদ্দেশ্য। এবং সেই ধর্মের ফুল পরমেশরে প্রীতি ও ভাঁগর প্রিয় কার্য্য সাধন। এই ধর্মা-বীক্সকে লখ্য করিয়া আমারদের সকলের একতা ও হল্প সহকারে কার্য্য করাই কর্ত্তরা। সমাক্ষের লোকের কুল কুল বিশয়ে মতের বিভিন্নতা থাকিছে পারে, কিন্ধ ভাহা বর্ত্তরা না করিয়া নানাক্ষর উদ্দেশ্য সাধনের চেন্টা করাই বিধেয়; নানে এই অবনী মণ্ডলে কোন ছইটা বস্তু পরক্ষার অভিনানের যায় না, ছইটা রক্ষরা ছইটা জীব কথান পর্যাংশে জুলা ভৃতিলোচর বন্ধ না। ক্ষেই কর্পার প্রকারে স্থান পাওয়া বায় না। ফলভার পরন্দেশ স্থেকারে স্থান পাওয়া বায় না। ফলভার পরন্দেশ সরের সৃক্তি কিয়াই এই প্রকার বিভিত্ত, ইহাতে

ननाव्यक्ष नकता बाद्धित गंज नकता विषया य नम्भूनक्रेट्रां केना स्ट्रेट्ट छात्रा करांच आजामा कता बाहेग्ड शास्त्र ना।

থিত মানসিক তথের বিভিন্তা প্রাযুক্ত असुनादत्र नजानुमञ्जान भूतिक छनयू-योगी कार्या कतिबात कना शहरमध्रेत व्यटकाक मनू-यादक वाधीनका ध्यमान क्रियाद्वन, वह वाधीन कार नेके कहा आयानिरात कथन छेठिक नरह। কেন না তাহা হইলে সভা আবিষ্ঠ ও অব-লম্বিত হইতে পারে না, এবং বে পরিমাণে স্বাধী-* নতা থর্ম করা হইবেক সেই পরিমাণে সভাকে আগ্রায় দেওয়া হইবেক না। পরমেশ্র সভাস্ত্রপ, সভাই প্রমেশবের জ্যোভি, সেই সভা অৱলগন করিলে মঙ্গলের আলমে উপনীত হওয়া ধায়। সভ্য মঙ্গলের ৰীজ, ভাহার একটী বীল রোপণ করিলে বহুপ্রকার মঙ্গল ফল প্রাপ্ত হওয়। যায়। অতএর হে ব্রাক্ষভাতাগণ। আইস সকলে মিলিয়া সভাকে লক্ষ্য করিয়া পর্যের উন্নতি কম্পে বতুশীল হই। আমানের মলো যদি কোন কোন বিধয়ে মতেব আংশিক বিভিন্নতা থাকে ভজন্য প্রকানের विद्याप अविषयाम न। कृतिया आभारमत मकरलत निरूप्ता (व धर्मार्ज्ज छित्राः वेका छारतस्त করি। এক। খাতিরেকে কোন মহৎ কাণা সম্প দিত হইতে পারে না, এবং ছুর্মল মন্বোরাও ঐক্য গুণে অভিগুরুত্তর কা্গ্যা সম্পন্ন করিছে সমর্য হয়। অন্তথ্য পর্ণোর উন্নতি কম্পে দকর ব্রা-নোরই দুঢ় ঐক্য অবলয়ন করা অভান্ত আনশাক। বাহাতে বিশুদ্ধ গৰ্মা ও জানের জ্যোতি সর্বজ বিকীর্ণ হয়, দেঁশের কুৎসিত আচার ব্যবহার সকল ভিরে'হিভ হুইয়া সদাচাব ও সভা বাৰহার সংস্থা-পিত হয় এবং লোকের ছঃখ বিমোচন ও সুখ वर्षन इस काम्रमदन् विदिका छाइति एउँ। कत्र था-मापिरशङ्क कर्डका।

হে পর্মায়ন। তোমার সহায়ত। তির আমরা কোন বিষয়ে কুতকার্য হইতে পারি না: কেবল ভোমারই কুপার উপার নির্ভর করিয়া আমর। এই শুরুজর কার্য্যে প্রের্ভ হইয়াছি। তুমি আমাদিগকে এরপ ধর্মাবল প্রের্ণ কর, যদারা আমরা সংসারে নানাপ্রকার প্রলোভন ও বিশ্ব অতিকম করিয়া ভৌমার মললম্বী ইচ্ছার অনুগামী
হই। আমরা বেন দিন দিন ভৌমার প্রভি অধিকতর প্রীতি হাপন করি, ভোমার নিয়মিত ধর্মা
পালনে বডুশীল হই, এবং সকল মনুষ্যের হিত
চিন্তাতে জীবন অবসান করি। এই আমার

ॐ এक्टमवाविखीय९

অনুষ্ঠানের আবিশ্যকতা।

বৈ সংখ্যক পত্রিকার ৩১ পূড়ার পর।

(ঞাবা)

याशा इडेक ममूद्यात धर्मा जुका वित्रकाल है প্রবল, চিরকালই সে ধর্মের জন্য লালায়িত। ু সে ষে কোন অবস্থায় কেন নিপতিত হউক না, অতি বিস্তীৰ্ণ নামাজোর নমাট হইয়া সংখ্যাতীত লোকের উপর প্রবল পরাক্রনের সহিত আধিপতা क्रक ह, जावता अर्व कूर्तित निवामी इहेगा जनाजात ক্রিক শরারে অভিদীন ছংখী প্রজার নাার সময় ক্ষেপণ করুক, প্রাভৃত পন উপার্জনাশায় ছন্তর অ-ৰ্ব সকল পাৰ হইয়া ব্যৱসায় বাণিজ্যেই প্ৰব্ৰুত s টক, অথবা পরিবা**র-মুল্ড শ্বেহ, মনতা, প্রীতি**-ক্ৰপ কোমল বস্ত্ৰন উৎপন্ন অনিৰ্বাচনীয় মুখ লাল-সায় বাসস্থান গৃহকেই সার করুক, সে যদি তিয়ৎ পরিমাণেও প্রকৃতিক পাকে তাহা হইলে দকল অবস্থাতেই দে ঈশ্বরের দিকে ভূষ্টি না করিয়া থা-কিছে পাবে না। ফলভঃ ইহা নিঃসংশয়-সভ্য যে সকল স্থানের এবং সকল কালের লোকেই ধাণার জনা বাাকুলভা প্রদর্শন করিয়াছে; ভবে প্রাপাধিক এই মাত্র।

জমার মনুষোর অস্তরে পর্মকাব সকল রোপণ জরিয়াছেন বলিয়হি দে কথন পর্মহীন অবস্থায় কাল যাপন করে নাই। ভাহার প্রায় সকল किश'रक्टे धर्माचान नाक व्या कि चकी ग्र कि পরিবার-সম্পর্কীয়, কি সামাজিক কি রাজনীতি-विषयक ভारांत्र मकल कार्या है भर्मा मुश्लिक । গ্রিছদীদিনের ধর্মান্ডান ভাষাদের নিজ নিজ আচার ব্যবহারে প্রকাশ পাইয়াছিল, এনং হিন্দু, মুসল-নান, খুকীয় সম্পূদায়ের রীতি নীভি প্রভৃতির অভান্তরে প্রবেশ করিয়া দেখিলেও আমরা সেই ধর্মা মনুষ্যের আত্মাকে ^{*}সতা উপল্কি করি। এমপ প্রশস্ত ভাবে অধিকার করিয়া রহিয়াছে, যে त्र पूर्वरक्रें थाकुक, चात्र इश्रवरक्र थाकुक, কোন অবস্থাতে কোন কালে নে ধর্মাকে সর্বতো-ভাবে অভিক্রম করিতে পারে না। পাছে সে কোন मिक् मिया भेलाहेवा ने बद्दत आखात हहेटल पूर्त গিয়া পড়ে এই জনা ধর্ম ভাহার সকল ভাবের সকল কার্যোর ছারদেশে প্রবেশ করিয়া প্রহরীর ন্যায় অভি সভক ভাবে চতুর্দিক রকা করেন। অনেক মহাত্মা ৰ্যক্তি ধর্মকে মনুবেরে জীবন রূপ ठटकत मधा विन्यू वेकिया छक वित्रशास्त्रम । खादात मकल कार्या श्रीतिथि क्रटश मिहे मधा विन्यूटक श्रीत-বেটিত করিয়া রহিয়াছে।

भरमीत नत्क मनूरवात नत्क वर्गन अक्रभ अवि-

কেদ বোগ হইল, তথন যাহার। মনুষোর প্রকৃতি বিশেষ করিয়া দর্শন করে নাই, জাহারা, ভিন্ন জাগ क्ट्टे डाहाटक आदम्भ कतिरस भीति ना, '' इमि श्राशनात्र गरन गरनहे धरमात खारलाहन। कतिरतः, সাৎসারিক বিষয়ে ধর্মাভাব প্রকাশ করিলে ন।। गामांकिक कार्या। परमात अनूवर्की शहरत शहर छ পার, কিন্তু আহলাদের কিন্তা শোক ছঃবের সময় কথনই ভাহাকে অন্তরে স্থান দান করিবে না।" বে ব্যক্তি কিয়া বে ধর্মা মনুষ্যপ্রকৃতির সনাক উন্নতির অর্থ অন্বগত্ত থাকিয়া ভাষাকে স্থানীন ভাবে পরিচালনা করিতে না দেয়, সে ব্যাভি এবং দে ধর্মা অভি অগুশস্ত অনুদার এবং ফীণ-प्रभी विलिट्ड इडेरवक । एएनम वालकरक छाड़ांत ইছামত অঙ্গ প্রভাজ চালনা কাবতে ও সজত ক্রীড়ানুরত হটতে না দিলা ভাষার প্রকৃতি विक्रम्ब कटोव आदम्भ अकल श्रीलम कविद्य राधिक कविद्रल. त्म नि*ध्युष्टे खेशाम ७ किन्न विदीत इड्या काटल मकल ध्यकांत जिलाम, माठन, बीर्या भूकी इहेगा भएड़, ध्वावर काटान हात' कान महर कार्या भारतक केनेवाव महानना খাকে না ; সেই রূপ খনুধাকে ভাহাব প্রকৃতি অনুষায়ী কর্মা করিছে না দিলে ভাহার উল্লভি ও महद्भ साटकत পথে विसंध वर्गामान केलेल्सि कता. हम्। द्वकरक উल्भक्तश्र कल । श्रमन कहिएन । मार्थन्। स मान्त्र थाकिटल (तमन अवभाडी जोडीटक धमन जोटन (द्वांश्रंण कदिटाङ इहेटव, १५ ८म नथा । शहरा छान की -ভৌষ্ণতা হইতে ৰঞ্চিত না থাকে, এবং স্বাসাৰ ঘে-দিকে ইচ্ছাকরে সেই দিকেই শাখা প্রশাসারি स्तात कतिएक ममर्थ दश, चलुरमात्र स्तिरक् क । मही **ৰূপ স্বভন্ন ভাবে মৰ্মানিকে পানিক চইটেড কেও**না कर्द्धशाः शक्षेत्र समाम जन नेनी प्रभूत दशकाताः শরাভিমুখে ধাতা করিলে অভ্যক্ত শিলান্য রস্থ সমান সূত্ত শুপ্তত শ্ৰুতাও গ্ৰেতিংবাপ কৰিছে ममर्थ हम मो, राष्ट्रे क्रथ मधूना क्नस छ छ व स्मार नत প্রতি সহল সহল প্রতিবন্ধ দভাচরণ করিনেও ভাহা কাল সহকায়ে সকল বাগা অভিক্রণ কবিয়, य भटल हिन्दा गहिटवहें गा है द्वा মনুৰ্যুকে স্বভাবেৰ ৰিপৱীত কাৰ্য। কবিতে নিয়োগ করাছে কেবল সামাদের ভণেচনা ও অভানতাই প্রকাশ পায়। আমরা কেবল তজাবা সভ্যোর উন্নতি আেছকে ধথাকালে নিন্দিটি স্থানে উপ-नीछ इटेल्ड मा निर्वात क्रम, প্রভাবায় ভাগী

পদ্ম মনুষ্যের মনুষ্য আলোকে পরিবাজ কবিয়ারহিয়াছে। মনুষ্যের প্রতি কিয়াই কর্মা-নুগভ হইতে পা।ে। সকল কান্যই ঈশ্র-প্রাপ্তির উদ্দেশে সম্প্রা হইতে পারে। সাম্যান

देववत्रिक क्रिक्ता अवधि मान्य जीवरमत अकेल्ब किता डेश्यममा भगांछ म्बबादके धर्मक माम्यन जाना योग । वसन् बब्दा जाशनांत्र कालिकार्या-কেই গর্মের শাসনে খানিত করেন ভতানই তাঁ-দাকে প্রকৃতিক বরিয়া উল্লিকরা বাইছে পারে। र्थाम जन्नेन भटक धर्म मधकीय किया गाद्धक्र है জারম্ভ বুঝায়, ভতৰ বে রূপ জালোচিক হইক তাহদেও প্রাক্তীতি হইচে পারে যে যাঁহারা প্রকৃত শাণু ভাঁৰারা হরত নিয়তই অনুঠানে প্রকৃত হই-· जरधन । किस अनुशंकातक **बर्च** नाभक कार्य नकरम दूरम मा। अनुश्रीम भरकत सांभक अर्थ নইলে, দত্তাের আধাাভাক ও কভিক কিয়া বিশ্যের ভাষাকে আধ্যাত্মির ও বাহিক এই দুই শ্রেণীকে বিজ্ঞ করা বাইভে পালে। **স্থান** ন্ত্রে ক্ষমা, উদার্থা, দরা, উপচিকীর্থা, ভক্তি, প্রীতি াপ্রভৃতির অনুষ্ঠানকে আখ্যাত্মিত অনুষ্ঠান করে, এবং সাংসারিক ও ইনক্ষিক কার্যা এবং পরস্পার भिक्तिक इठेशा क्रेब्स्ट्रास्करण अबुद्धिक क्रियांवि-भ्यात साम राधिक अनुश्रीत। जी अगरिय क অনুষ্ঠান সকলেরই অনুনোদিভ, কেইই ভাহার বিরোপী হউতে পারে না. বাহিক বিশেষের প্রভিন্ন আপতি চুক্ট হয়। এই সকল আপত্তি কত ধূর মুক্তি সম্ভ ক্রমে আলোচনা चन्ना नामद्य ।

বাজিক অনুঠান হুই প্রকার লক্ষিত হয়। গত তারা আমাদের আত্তরিক ভাব **প্রকাশক**, বখন আমাদের হৃদয়ে কোন সর্ব ও সাধুভাতের উদয় হয় তথ্ম আমরা কাহাৰায়। ভাষা বাহিরে জাকাশ করি; নয় ভাষারা জামানের সংসারের ও অংগার উপতি লাধনের উপায়রবেপ অবলম্বিত प्रदेश थादक। अथरमाक वाक्रिक **अनुश्रीत्वत** প্রতি মবরোগ প্রকাশ করা নিতার অসমত, এ হেডুক ভাচা হইলে মানব আকৃতির আচি বি-কর্তাণ প্রকাশ করা হয়। আমালের আন্তরিক গণভাৰ মকল বাহিছে প্ৰকাশ করিছে না পাইলে জামানের আমানি নিজে**র ও অকর্মণ্য হইরা** 'नगर में ! अवर ताहे जकन **वाहित्य अकाम! करा** ंक जान'रमह लाकानिक कार्या नरश शृर्वह छ-নিথিত হটধতে বের্মিচুবোর গভারকে **বীয়পথে** भारति उमेरक मा मिन्सारक आंगारमञ्ज क्वन ह-अपने हे नक में अपने । यें शिक्ष में स्वाहक नी र ७ মতিন সাৰ পৰিভাগে ৰয়িয়া **উহত ও পৰিৱভাৰ** : কুল্লে বিভূদিত দেখিতে অভিলাধ করেন, তাঁহারা य विकोश क्षाना। वाशिक **चनुक्षेत्र सक्तारक चनु-**িত তেপে হের জান করিবেন **এবিখাসকে** থামি বাধন মনে স্থান দান করিছে পারি না। কংগ অনুচান অনেক সময়ে বাহা। ভেল্লনার **হইলা**

উঠে, ভাঁহা আমাবিশের আত্তরিক কর্বিও প্রকাশ করে না এবং আত্মার উন্নতি সাধন ও করে না। এরপ অনুষ্ঠান অবশাই প্রেডি জনের ঘূণার বিষয় হওয়া কর্ত্তবা।

अबूर्धान रममें ७ कांब ट्लांस जिन्न जिन्न पृष्टे ▶वसः। वसन तकल प्रभीतः व्यादकत छाद नाना ক্রেণ ৰাশতঃ ভিন্ন ভিন্ন হইয়া গিয়াছে, বখন এক দেশের অভাবের সহিত অবা নেশের অভাব সং करवात धेक छ। नारे, यथन कारलत नरिष्ठ छ।मा-দের ভাব ও অভাব ষকল পরিবর্তিত হইভেচে, उर्थन ८५ थ काल निरम्दर अनुष्ठीन मकन जिन्न जित्र ऋश क्षकाम शाहेर्द मामक्कि ! एथन मन्-त्यात महत्व मध्यामकाता थाछि ७ भोत्रव नाटम्ह স্পৃহা অভি ৰাধারণ ও বলবতী চিল, তথন ডঃ হার অভি অনুঠানেই সংগ্রাম স্থার ভার প্রকা-শিক্ত হইত। গ্রীক ও রোমীয়দিগের বিবরণ পাঠে এ মত্যের সহজ্ঞ সহজ্ঞ উদাহরণ আগু হওয়া যায়। যথন জ্ঞানের রাজ্য অধিকতর বিস্তারিত হইয়াছিক তথ্নকার অনুঠানের ভাব আর সে-क्रभ किंच मा। डेश्वख, क्योंग, छाड़ि यू-मछ। इंडेद्राशीय थुकीय अमुद्रिशत व्यक्तरेड दम्स যমস্তের প্রতি নিরীক্ষম করিলে সে সভ্য বিলাধন রপে প্রতিপদ্ধ হয়। দেখানে আর দেশের যুদ্ধ मध्यक्षीय ভविषार सक्तनासक्ता कासिवात सिमिन् त्म (छल्कि तमभीय कवियामानी छ नाहे, धवः दङ বন দেবের মফিরও আর ভগায় বিরাজ করে নাঃ मिथादन मिथाएं शाहे लाकि आशासीम भगान বিষ্মুভ ইইয়া দিন রাত্রি প্রাকৃতিক বিফান, ম-নোবিজ্ঞান, নাায় ও ধর্মাশাক্ত প্রভৃতি ছক্ত যুক্ত **खत विमा-मकल** আলোচন। য় অভিনিবিটাননা হইয়াছে। সৃষ্টির অন্তর্শ্বিত মুকৌশল ও নিয়ন मकल बाविकृष्ट कविशा लाटक त्यहे अन्दस्त प्रसृष्ट भरिमा प्रजुक्तिकं मशीमान् कतिराज्ञ , अवर थाशास्त्र मत्नाइन्डि मकत চরিভার হয়, এইরপ • व्यमध्या छे**लाग व्यक्तमन कतिहरू ना**डिनास हरिः

(অনশঃ আকাশ্য)

THE COURSE

मश्वाम

গত বারের পত্তিকাতে জ্বীকোকদিগের নিমিত্ত-একটা ব্রক্ষোপামনা সমাজ সংস্থাপনের কথা আমর। উল্লেখ করিয়া চিলাম। আমরা একংশ অরগত হই-লাম যে কডকণ্ডলি মহক্ষরিত্র ব্রাক্ষের প্রথমে কোন এক ভার পরিবারে নিয়নিত রূপে মহিলাদিপের।
উপাসনা কার্য্য সম্পন্ন হইবে। মতদিন না এই
ক্রীসঘারুটী প্রতিষ্ঠিত হইতেছে, ততদিন ইহার সবিশেষ বুড়ান্ত আমরা পাঠক বর্গ সমীপে প্রকাশ
করিতে নিরন্ত থাকিব। কারণ কোন আরন্ত শুভ কার্য্য সুসম্পন্ন না হইলে ভলিষয় লইয়া অকারণ গোলধোগ করিলে মঙ্গল না হইয়া বরং অনিট হইতে পারে।

 আমরা অভীব আফ্রাদের সহিত অবগত হইলাম বে জীঘুক্ত বাহু কশিশির মিক মহা-শয়ের প্রয়েল্ল বহরামপুর নগরে একটা ব্রাহ্ম-সমাজ প্রভিষ্ঠিত ২ইয়াছে।

ৰাগাভড়া গ্ৰামে পাঁচটী ব্ৰাহ্ম বিবাহ সুচাক রূপে নির্কাহিত হইয়া গিয়াছে। দেখানকার লো-কদিগের ভাতৃতার ও সর্লভার কথা প্রবণ করিলে অভান্ত আনুন্দ জমে। তত্ত্র লোকদিগের মধো অনেকেই পণা বিজেতা; কুড় কুড় পণা বীথী मং-ভাপন পূৰ্বক যথা কপঞ্চিত আবে জীবন যাত্ৰা निक्षां क्रिया शास्त्र । अञ्चलात् कार्यावनशीम-भारत भारता यागांता जानावर्षा छ। इन ভাষারা কেডাদিকের সভিড বিজেয় দ্রবোর মূলা নিরূপণ প্রথা এককালে পরিস্ত্যাগ করিয়াছে। কেং কিছু কয় করিতে আসিলে সরল ভাবে এক-क ['ब र्रावापा हिट्टे " अ स्ट्राइ अन्न मुला; हैक्हा इस এ২+ কর, না হয় করিওনা ; আমরা ব্রাক্ষ আমরা मंत्र कति सां।'? (माकानीमिटधा एक आध यथा পরিমিত রূপে রক্ষিত হয় না, কিন্দু বাগাঁচড়ান্ত ব্রাহ্মরা একক লে এব্যিপ অপরিমিত চক পরিবর্ত্ত করিয়া ফেলিয়াছে, এবং সম্পূর্ণ রূপে যুগার্ক পরিনাণে এবাদি বিতয় করে। যাহারা সকদম। করিলেছিল ভাহারা অসভোর ভয়ে মকদ্দনা পরি-ভ্যাগ করিয়াছে, এবং যাহারা কোন কারণ বশভঃ প্রতিবাদী বা গ্রামস্ত লোকদিগের সহিত বিষয় ঘটিত কোন বিবাদ করিতেছিল, ভাহারা আকা পর্ম্মের উপদেশ ক্রমে বিবাদ বিষয়াদ হইতে এক-काटन नितंत्र हरेशांद्य। विमा विशीम व्लाकमिटशंद পক্षে কেবল विश्व धटमाँत वटन এउ पूत कतिया উঠা সহজ নহে। সামান্য লোকদিগের মধ্যে যাঁহার। कान नमस धर्मा ध्वाहां कतिएक शिवादक्षन छै। हा-রাই স্পাত প্রতাক করিয়াছেন ভাষাদিখনে অব-লম্বিত প্রথা পরিত্যাগ করাইতে রত করা কেমন क्तिन। याँशाहा शक्तिक वहदन नक्तिन वितिष्ठा थादकत य माधार्म त्वाकिमिटगंद महल अक्शिष्ठ क्षमं आकापत्मीत आधाश्चिक छाउ नकल शहन ৰা পালন করিতে পারে না, তাঁহারা এইকণে वागांविका शामक इःथी, विना-विदीन-बाक्तिकात व्यवसा व्यवस्थानम् करूनं, जाहा इहेटल वृत्तिहत

পারিবেন হে ভীছাসিপের বিবেচন। জন মূলক কিলা।

अञ्चलमञ्च भृकीत धर्म अकात्रक मिमनती महानंतिषट्शत मध्या वर्त्तमान, नमटच विध्यकांत एव नितीकिक हा। এই इंडेजी फेटनबर दाफ नमा-জের অনিট লাধন করা সমান অভিস্থিত। কিন্তু अञ्मुदम्ब भरभा अक्रीमक दिनम ७ छाञ्चाद्य, সংভার অনুরোধের জনা শীয় সংকল্প সাধন ক-রিতে ঢেকাৰান হইয়াছেন, অপ্রানী নিভান্ত অস-**पृत्र देवत् छाव ज्ञवनयम श्रुक्तक वाङ्ग्टल ७ वाका** যন্ত্রণায় সমাজকে ছিল ভিন্ন করিছে হোর প্রেভিজ হইয়াছেন। কের সহক্তা পাঠ করিয়া ও ভদ্র न्यायाञ्चलक समाहादानि व्यक्तात कतिया मना नित-मिल कारण उपक्रमाध्यां अलिनाम् कविरक्टाइन, दक्ष वो मुना ও अञ्चापूर्व वाका क्षायान कविया, धवर স্কৃতিগত দোষ মানি আরোগ করিয়া তাপনান দিগের পদানত সমাদ পত্রে প্রাকটিভ করিছে।৯ন, শেবোক্ত সহাশ্যদিগের ব্যবসারে যদিও আমরং সময়ে সময়ে বিরক্ত হই বটে কিন্তু বিশুদ্ধ যুক্তি শরদিগের স্বীয়:ভিস্থি সাধন ভেটা অধিকভঃ কাৰ্য্যকৰ হইৰে সুশিক্ষিত ধৰ্মা প্ৰায়ণ লোকৰ হ তাঁহাদিগের ভদ্র ও সাধু চেন্টাম উত্তেজিত হইয়া वत् थ्छीत पर्धात ख्वानुमक्तान कांत्रस्व प्रभूर पूक হইলেও হইতে পারেন কিন্তু অপর শ্রেণীভূক वियम खेरमारी अर्विभी उत्तरका मानिद्यंत्र काला-ৰিত ও অসন্তাব সংযুক্ত আচরণে ধকলে নিভাস্ত কৌতৃহলাবিউ হয়েন বটে, প্রস্কু জলুরি। কেচই খুটীরধর্মের প্রতি একাদিত বা অন্রক্ত হইদে मा, कांत्रभ मलाग्रज, बिन्य जानुसका वित्वधन। क्रिएड बाङ्गि माहकरे शक्य। मिश्रनदी खोडानिएवड व्यक्ति जागानित्तव बल्या व्ह छै। शहात याद्यात मडा विद्युष्टन। कविष्टत्क्रन छोड्। देख्। द्या अपाद कसन, किन्नु निकाकीय जेवगारह लेक हरेया छान् ও প্রতিবাসী দিগের প্রতি জনায় অভ্যাচার ন। करतमें, छाष्ट। इदेश्य जीहाया मूर्ग म्यूटमात निकछ न। नेश्रद्धत निकडे, काङावल निक व्यक्तिये। नास कतिरू भातिरवन मा। जामसा रकान मदलत विद्याप नारमारसभ कतिरच छाति ना, त्वाल कति उँ।श्राहा খীয়া শীয় পোষ গুণ বিচাল করিছে সক্ষম হউ-दन्त ।

বঙ্গদেশে যত যত প্রাহ্মসনাজ আছে তৎসমূদ্যের কার্যা প্রথালী যতদিন লা একটা বিশেষ
শৃষ্থলা বন্ধ হয় ততদিন প্রাহ্মধন্মের প্রকৃতভাব
নাভারণ সমক্ষে উচ্ছা অসদাচরণ ক্রণপ্রেকা প্রাহ্ম না
ব্যান প্রাহ্ম হইয়া অসদাচরণ ক্রণপ্রেকা প্রাহ্ম না
ব্যান ভাল, সেইকপ প্রাহ্মসনাক্ষ্ম সংস্থাপিত হ

ইয়া ব্রাক্ষ ধর্মানন্দ্রনাদিত কার্য্যে প্রবৃত্ত হওয়া অপেকা সমাজ না শুভিন্তিত হওয়া ভাল। বেমন ক্ষয় সম্বন্ধে পৃথিবীতে একটি ধর্মশাসন আছে সেইরপ মনুষ্য সম্বন্ধে একটি ধর্মশাসনের প্রণালী প্রনির্ভিত হওয়া উচিত। যথন আমরা গর্মকে প্রভ্যোক্ত হওয়া উচিত। যথন আমরা গর্মকে প্রভ্যোক্ত হওয়া উচিত। যথন আমরা গর্মকে প্রভ্যাকির করিয়াহি, বর্ত্তমান সমারে ধর্মন রাক্ষরের অবাক্ষ মধ্যে প্রেকিট করিয়াহি, বর্ত্তমান সমারের ধর্মন রাক্ষরের জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার জনসমাজের ধর্মার জনসমাজের কার্মান ক্রেন্স করান ক্রেন্স আমাদিলের উল্লেখ্য কর্মন করে পারির না নাহাতে ভাহা সাক্ষরের সমাক্ষ প্রভাগের বাহাতে লাহা সাক্ষরের সমাক্ষ প্রভাগের বাহাতে বঙ্গারে। নাহাতে বঙ্গারে। বাহাতে বঙ্গানের বাহাতে বঙ্গানের সমাক্ষ প্রকল ব্রাক্ষসমাক্ষ বিশুক্ত প্রে

আগানী ভাত্রমানের মানিক সমানে একোনমাজের জন, ছই জন উপাচানা অভিনিত্ত হইবেন।
সমাজের নিয়মিক কান্যানের ইভার। প্রধান আচার্যা মহালায়ের সমক্ষে দগারমান হইয়া উপায়ুক্ত
উপাদেশ লাভ করিবেন। এই কার্যানী অভি
মঙ্গলকার্যা, আমরা প্রক্রেক ত্রান্ধ ভাতাকেই
এডদর্শনে নিমন্ত্রণ করিভেছি; নোগ করি টাহার।
উপান্ধিত হইবেন সকলেই আন্দিন ও উন্নত
ক্ষাত্রে গ্রহে প্রভাগনন করিবেন।

সম্পতি ফেন্ড্ অফ্ ইডিয়। নামক সংবাদপতে "ব্ৰাহ্মসমাৰু" বিষয়ে একটা প্ৰস্থাব লিখিত হয়। 'লখন কৌ**শল ও ভা**ৰাদি দৰ্শনে বাপ হয় নে লেখক মহাশয় একজন প্রশাস্তাতি ও উদার :-হিত্র বৃষ্টীয়ান ইইবেন। মদাপি আমাদিগের উ দেশা স**লত হইত** ভাহ। হইলে 'নামরা উলিথিত প্রস্থাবের কোন কোন অংশ উদ্ধ ত না অনুবাদিত করত প্রকাশ করিয়। পাঠকবর্গকে প্রীত করিতাম। মাহা চউক প্রস্তার লেখক বিগত আছিল মানীয় জন্ববাধিনী প্রিকার একটা বিজ্ঞাপন অবলয়ন করিছা গবণ্নেটের ধর্মবিবয়ক নির্পেকভার গ্রান্ত দোষাহ্যোপ করিয়াচেন! বিজ্ঞাপনে লি-Two with a "Defence of Brahmoism and the Brahmo Somaj." भूसक व्यक्तिभाशूद अवर्ष-त्मके तिम्रानाम व्याख २७११ गरा। त्कस्यक हैं: सिंग क्षिक **এই विकाशन अवसम्म स्विता** वन् । लग्नारक्ष्म त्र शवर्षस्यक्षेत्र भग्ने विषयक निवर्णकर्जी -नरङ्ख लैथि। पत्र विमालिश खाक्सभयं मबक्रीत शु-खनम्य निकी७ इहेरणस्थ। अखनुर्गामहे इंडेक ব। কাহাত উত্তেজনায় হউক, মেদিনীপুর জিলার ইন্সাপেক্টাৰ নহাশা বিদ্যালয়ের গ্রেখান শিক্ষক महालग्नरक लिथितार्छन य गैवर्ग्टमके मध्यां विमानिक अन्यश्रुक्तक विकाश कहा विभि व्यमक्त

কার্যা হইয়াছে। আমরা সর্ক্রসাধারণকে অবগল করিভোছ দে গে বিজ্ঞাপন অমুসারে উলিখিভ দোষারোপ কৃত হুইয়াছে ভাহা জ্ঞ্মাত্মক, ভাহা আমাদিগের এক জন পুর্বা কর্মচারির অনবধানভা জনা সংঘটিভ ইইয়াছে।

বিজ্ঞাপন।

আগানী ৬ই ভাত রবিবার প্রাতঃকালে ব্রহ্মনিষ্ঠ প্রীযুক্ত বিজয়র্রঞ্গগোসামী ও প্রীযুক্ত অমলপ্রিমাদ চট্টোপাধার, মহাশয়গণ ব্রাহ্ম মমাজের উপাচার্য্য পদে অভিযাত হট বেন। ব্রাহ্ম মহাশয়দিগের প্রতি নিবেদন উক্ত দিব্দ সমাজে উপস্থিত হইয়া আয়ার উন্নতি দাধন করেন ইতি।

শ্রী**প্রভাপচন্দ্র স**জ্মদার। সহকারী সম্পাদক।

門中

নিঘ'ণ্ট পত্ৰ।

द्यां काष्ट्रकार द्याच्यान	82
ভাগ চিন্তা	£1.
मत्माविकान	4 4
কোনগর ব্রাহ্মসমাজের বজ্জা	00
खनुक्रीरमन जानगाकरा	P :
मरकाम	৬৩
ভত্তবাধিনী পত্ৰিকার মূল্য নিৰুগ	401
	111
অগ্রিম মূলা (কলিকাভার জনা)	৩
(भकः वास्त् क्ना)	94 n
गौतिक भूवा	100
re or a	

্তিক্র এই তত্ত্বেধিনী পরিকা কলিকাতা নগরে যোড়া-সাকোহিত রাজসমাক্রের কার্যালয় হইতে প্রতি বাদে প্রকাশিত হয়। ১৭ই জাবণ রবিবার সম্বর্গ ১৯২১ ক্রিগড়াক ৪৯৬৫।



তত্রবাধিনীপ্রতিকা

র জবাএকনিদমপ্রকাদীমান্ত কিঞ্নাদীত্ত দিদ" দর্সনিদ্ধত। তদেব নিতাং জ্ঞানমনস্তং লিবং স্থান্ত মির্বয়বটেনক-নেবালিতীয়া সক্ষাব্যাপি সর্কানিয়ন্ত, দর্কাশ্রয়সর্কাবিৎসক্ষণ জিন্দ বৃদ্ধার্ণ তিমনিতি। এক স্যুত্ত সৈতিবাধানন্য পির্-তিক নৈহিত কা প্রভাৱনতি। তালিন্ প্রীতিভাগা জিমকার্ম্য স্থাসন্দেব।

কলিকাত। ব্রান্ধ-সমাজের বক্তৃত। 1

২ ফাস্কন ১৭৮৩ শক। বুধবার :

· ব্রহ্ম তলক্ষ্যেচাতে। ''

मेश्व मनुषादक मकल कीव प्राथक। শ্রেষ্ঠ করিয়া বিচিত্র কামনা ও বিচিত্র ভাবে পূর্ণ করিয়াছেন, এবং বাহিরেও ভত্নপ্রোগী বিষয়-সকল স্থান করিয়াছেন ৷ তাহার স্প্হা, তাহার জ্ঞান ধর্ম প্রীতি, চরিতার্থ कतिवात कना त्य त्य विषद्यत व्यद्तीकन, ঈশ্ব তাহা দকলই জগতে বিস্তু করিয়া রাখিয়াছেন। অন্তরে বাহিরে ঈশকের ক্-রুণার চিহ্ন প্রকৃতিত রহিয়াছে। আমারদের অন্তরে যত যত কামনা, বাহিরেও তত কা-मनात विषय ; तिर कामा विषय-मकन छ-পভোগ করিয়া সর্বাস্থ্যদাতার এতি ক্লত-জ্ঞতা উচ্চুসিত হইয়া উঠে। মধুময় ধ-র্মাকে অবলম্বন করিয়া ভাঁহার এই উদার দদাত্রতে ভাঁহার প্রদন্ত বিষয়-মকল উপ-(जांग कतितन आमता शांदश निश्च इहे नां।

''धर्मानि हाः श्रम्भानां कार्मारयां गरहः मना। নাধর্মে কুরুতে বৃদ্ধিং ন'চ পাপে প্রবৰ্তে। ''যে প্রশাস্তাত্মা ধর্মকে নিতা আশ্রয় কবিয়া কার্যোপায়ে মদা তৎপর থাকেন, তিনি অধর্মের আলোচনাকরেন না এবং পালে তেও প্রবৃত্ত হন না।" যিনি কাছারে। প্রতি অন্যায়াচরণ না কবিয়া, কাছারো অ-পকার না করিয়া, অনৃত বাক্য না কহিয়া, मकरनेत्र थि मापू वावमात्र कतिहा, शि ভাষাতাকে উক্তি করিয়া, ঈশ্বরের প্রতি कुडक इरेशो, कार्याशीस उरशह थार्कन ্র'ও 🗐 সম্পত্তি লাভ করেন; তিনি ধর্মকে तका करितन, वर्षा ३ डीहाटक तका करतन-की होत भंगीत भूके इस, मन गवल इस, कान दीयातान् इत्र, औष्टि निर्माण इत्र, আত্মা উন্নত হয়। কুদ্র বিষয় অজ্জ নের উপরে লক্ষা করিয়া ধর্মকে াহারা রক্ষা করিতে চান, তাঁহারদের ধর্ম-দাধনের অভি शैन लका । अटमांत भूवकांत कथरन। विषय गर्टः धर्मात शूतकात मेश्रत। এই হীন লক্ষ্য পরিত্যাগ করিয়া ঈশ্রকে লক্ষ্য কর; ঈশারকে লাভ করিবার জন্য ধর্মকে সাধন কর। বিষয় তেমের শেষ

গতিনহে৷ ভোমার শেষ গতি, ভোমার পরম গতি, সেই অনস্ত-মঙ্গল-স্বরণ ঈশ্বর। তাঁহাকে লাভ করিলে আর আর লাভকে লাভ জান হয় না, জাঁহার সহিত যক্ত থা-কিলে শুরু বিগদেও মন বিচলিত হয় না। "ব্রন্দিটোগৃহস্থ স্যাৎ তত্ত্বজানপরায়ণঃ যদাৎ কর্মা প্রকৃষ্টিত তদ্ধাণি সমপ্রেৎ।" ''গৃহত্ত বাজি এক্ষনিষ্ঠ ও তত্ত্বজ্ঞান-পরায়ণ হইবেন ; যে কোন কর্মা করুন ভাছা পরত্র-লেতে সমর্পণ করিবেন। " গৃহস্থ যে কোন কর্ম করিবেক, তাহা ত্রন্ধেতে সম-প্ৰ করিবেক, সকল ধর্মাকার্য্য ঈশ্বরের উ-ন্দেশে করিবেক। তত্ত্বজ্ঞান-পরায়ণ সত্য-থ্যি ত্রন্দিও ত্রাকা স্বার্থপর ২ইয়া বিষয়-স্থের উদ্দেশে ধর্ম-কার্মা করেন না। কিন্ত ঈশ্বরকে লাভ কারবাব নিমিত্তে ভাঁহার मक्रव-लाद्यत अनुक्त्र कतिश निक्रांम औ-তির সহিত আহরছ নিংস্বার্থ ধর্ম সাধন ক-द्रम। य किंडू क्यां क्द्रम, य किंडू क-र्माकल लाख करत्व, छाहा मकलहे अन्ध-রেতে সমর্পণ করেন। ভাঁহার হৃদয় মন খন প্রাণ সকল্ই তাঁহার জন্য, আপনার জনাতিনি কিছুই রাখেন না। আপনার জন্য কেবল ঈশ্বর, আর ঈশ্বরের কার্য্য-মা-ধন জন্য এই সংগার-ক্ষেত্র। যে আন্ধারান্ বির্ত-চকু হট্য়া ঈশ্রের প্রতি আপনার লক্ষ্য স্থির করেন, তিনি ধর্ম্মের সাহায্যে স-ব্রনঙ্গলের মঙ্গল-মুর্তি দর্শন করেন, ভাঁহার প্রতি ঈশ্বরেতে উর্ন্ধগতি হয়, তাঁহার দকল আমেদ, সকল স্পুহা, সকল ভোগ উহি!-তেই যায়। তথানো ধর্ম তাঁহার আশ্রয়, কিন্তু তথ্য বিষয়-স্তুখের লোভে ধর্ম সাধন করেন না, তথন ভিনি ভাঁহার প্রিয় কার্য্য দাধন করিবার জন্য ধর্মা-পথ আ**শ্রয় করেন।**

হে অমৃত-মিকেতনের যাত্রী-সকল ! ভোমারদের লক্ষা ভির রাখিয়, অমৃতধামে व्यागत रुख। विश्वतिक लांच कतिवात स्वाग्न निःश्वार्थ धर्म व्यवस्त करं। भाराका रुरेस विवस-स्वादक धर्मात भूतकात मन्न कर्ना विवस-स्वादक धर्मात भूतकात मन्न कर्ना धर्मात भूतकात निर्मात भूतकात निर्मात भूतकात निर्मात कर्ना कर्ना निर्मात कर्नित निर्मात कर्नित निर्मात कर्नित निर्मात कर्नित निर्मात कर्नित महान कर्नित निर्मात क्रिका कर्नित भूतकात कर्नित कर्नित

হে পরমান্ত্র তুমি সহার না হইলে তোমার পথে অগ্রসর হইতে পারি না। তুমি আমারদের সহার হও, তুমি আমারদের ধর্মকে পোষণ কর, সংসারের মোহ-কোলাহল হইতে মুক্ত করিয়। তোমার তোড়ে লইয়া আমারদিগকে শীতল কর।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং

উপাসনা।

नेश्वरतत महिक मनुस्यात या महक আছে—'' সেই আশ্রয় আশ্রিত সম্বর '— নেই প্ৰভু ভৃত্য সম্বন্ধ—সেই পিত। পুত্ৰ স-**यक---- (महे मधक क्यांन (कहे शक्**ठ धर्मा वनः यात्र। शत्रायात्र मेनुम व्याग्या कटश करे ज्ञानांदनांकरक मनुर्यात क्रमत्र-मर्या নিহিত করিয়া দিয়াছেন যে বয়োর্ছিন সহ-কারে তাহা উক্ষ্যুলিত ও প্রকাশিত হই-বেই হইবে। ঈশ্বর-জ্ঞান কেমন স্বাভা-বিক, যেমন বাছ জগতের অন্তিত্ব জ্ঞান। वाझ करार आहर कि मा अ विषदम रयमन कांन कांनीस मञ्जूषाक्ट मिस्सान मृच्छे हरा मां, रमहे क्रिप केश्वत आंट्रिन कि ना अ-विषरमञ्ज्ञ कांजित कांम करण महभा है व्यविश्राम पृष्ठे रह ना, फ्राय मानमिक छे ९ कर्षण অভাবে নে বিশ্বাস ভিন্ন ভিন্ন জ্বব্যাপন হইতে পারে এই মাজ। আছএব ধর্ম মনুদ্রোর

বাভাবিক ভাব ও সাধারণ সম্পতি। যে স্বভাব-নিহিত ধর্ম,ইহার পরিচয় কো-থায়? উপাসনাই ইছার পরিচয়। পৃথিবীর এक गीमा इरेट गीमांखत भर्याख या यह দেশ, যত নূতন নূতন মনুষ্য জাতি স্বাবিষ্ত হইয়াছে, তাহার মধ্যে অদ্যাব্ধি কোন স্থান ও কোন জাতিই এৰপ দৃষ্ট হয় নাই যথায় याहां किरशत मर्था धर्मा छा दिन मन्त्र निवर এবং ঈশ্বর উপাদনা প্রচলিত নছে। ছন্তর ভয়াবহ, সাগর-বক্ষে যে উপদ্বীপ, যাহা অণ্ব-পোতের অগমা, বথায় গমন করিতে দ-হিফু সাহসিক পরিব্রাজকের হৃদয়ও ভয়ে কম্পিত হয়, সেখানে নিবিড় অরণ্য নি-বাসী বনা পশু সদৃশ মনুহেষ্যরাও দিনাত্তে একবার ঈশ্বরের নামোচ্চারণ করিয়া থাকে, এবং অপরিক্ষুট ভাষায় তাঁহার নিকট আপনাদিগের সরল ক্তজ্ঞতাও সরল প্রা-র্থনা নিবেদন করিয়া থাকে। উপাদনাই ধর্মের মহত্ত্ব, উপাদন।ই ধর্মের জীবন। যাঁহার সহিত সয়স্কা জ্ঞানে ধর্ম্মের উৎপত্তি হয়, তাঁহার সহিত সন্মিল্নকেই উপাদনা कट्ट। এই मिन्निलटन मिरे मध्य उक्कुल জীবন্ত ও মধুময় হয়; ইহার বিরহে তাহা মলিন, হীন-বল, মৃতবৎ ও রস-শূনা হইয়া পড়ে। সমিলন না इहेटन मश्क निष्फल। যদি কেহ আৰুম পরকর্ত্তকৈ দুর দেশে নীত হইয়া চির কাল পিতা মাতার মুখ না দেখিতে পায়, এবং ক্রমাগত অন্যের দ্বারা লালিত পালিত হয়, ভাছা হইলে পিতা মা-তার সহিত সক্ষম অবগত হইয়াও সে তাঁ-शमिशतक क्षीिक कृतिहरू ममर्थ इस मा धवर তাঁহাদিগকে অবশাদেয় শ্রন্ধানুরাগ নিশ্চ-য়ই পরের প্রতি সমর্পণ করে। নেই ৰূপ পরম পিতা পরম মাতার সাহত ক্ষমপুর সমস্ত কেবল ভাবগত হইয়া যদি আমরা কোন কালে তাঁহার সহিত স্মিলিত হইতে সা

পারিভাম, তাঁহার সহখাস-স্থথ না জানিডাম, উপাসনা না করিতাম, তবে নিশ্চয়ই তাঁ-शांदक विष्युष्ठ इहेश्रा ऋथ-मदख्य-माग्रक **मश्माद्वत व्यक्ति, व्यनिका** वस्तु वांस्रव धन -মানের প্রতি নিতান্ত অসুরক্ত হইয়া পড়ি-कांम, अवर विषम व्यथत्य निमध इहेजांम। অভএব ঈশারের সহিত সম্বন্ধ নিবন্ধ করা यि धर्मा इस, स्वात এই मद्यक्ष इटेटल विव्हिन इहेश मश्मादत अञ्चतक इउश यनि व्यथनी হয়, তবে উপাসনা ব্যতীত কথনই ধর্ম স-खन नटर। क्रिन-क्रम्स क्रमणे कूर्डार्कटकद्रा ঈশ্বর-বিবর্জিত হইয়া উপাসনার অযৌক্তি-কভা ও ধর্মের অনাবশ্যকতা প্রতিপন্ন कहिट्ड ठाट्ड क्क्रक, किन्छ आमामिटशंत বিশ্বাস অন্য প্রকার। ঈশ্বর আমাদিগের যাহার ছারা তাঁহার সহিত পিতা মাতা। আমাদিগের এই পবিত্র সম্বন্ধ জানিতে ও পালন করিতে পারি তাহার নাম ধর্ম, অতএব ধর্মে আমাদিগের স্বাভাবিক সত্ব ও তাহ। আমাদের চিরস্তন সম্পত্তি। উপাসনা षांता (महे मद्यक्त; (महे धर्म छेड्यू व इत, क्रेश्व-রের সহিত আমরা সন্মিলিত হইতে পারি, তাঁহার দৌন্দর্য্য তাঁহার মহন্তার উপলব্ধি ক-রিতে পারি, আমাদিগের ইহু লোকের ও পর লোকের পথ পরিষ্কারহয় অতএব উপাসনা **ध्यम्बर्क कीवन ७ मसूर्यात मह्कु ; ठाहा वा** নাদিগের অতি প্রিয়তম ও মঙ্গলতম কার্য্য।

উপাদনা দিপ্রকার, ভাব বাচক ও মতাব বাচক। পরম পিতার বিচিত্র বিশ্ব-কৌশল দর্শন করিয়া এবং মন্তুযোর প্রতি তাহার অলৌকিক অদদৃশ করুণা হ্-দয়ঙ্গম করিয়া ননে যে প্রীতি ভক্তি রুত-ক্রতাদি ভাবের উদয় হয়, দেই দমুদায় ভাব ভাহার নিকট ব্যক্ত করার নাম ভাব বাচক উপাদনা এবং আ্লার মলিনতা, বিষাদ ও পাপাদি অভাব অনুভব করিয়া হুর্গতি প- রিহরণের নিমিত্ত তাঁহার প্রদাদ প্রার্থনা করার নাম অভাববাচক উপাদনা।

প্রথমোক্ত প্রকার উপাসনা দ্বারা পর-মেশ্বরের মহিমা-স্তুচক ভাব সমস্ত ব্যক্ত হয়; বিজীয় প্রকার উপাসনা মারা আত্মার গভীর অভাব সকল মুক্ত হয়। প্রথমোক্ত প্রকার উপাদনায় আনন্দ উল্লাদ প্রভৃতি বিবিধ হাল্য প্রখ্য টিভ কুস্তম-রাজি ভাঁহার চরণে প্রদত্ত হয়: দিতীয় প্রকার উপাদনায় কভিরত। অনুভাপ বিযাদ এবং অঞ্জল উপহারে জাঁহার পিতৃ-মাহায্য লক্ষ হয় এবং হৃদয়ের অভাব অপবিত্রতা প্রকালিত হয়। পারস্ক বিচার-দৌকর্যাংগে উপাদনাকে ছুই ভাগে বিভক্ত করা গেল বলিয়া কি বাক-বিকই তাহা বিভিন্ন ই ঈশ্বরের প্রতি ভক্তি অন্ধা প্রতি করিব অথত ভাঁহার নিকট আ ত্মার অভাব জাপক কোন প্রকার প্রার্থন: ধারিব না ইয়া কি সান্তব; না কেবল ভাঁছার নিকট নিয়ত প্রার্থনা করিব কিন্তু ভাঁচার মহিমাদি বৰ্না 🗤 তাঁহাল একি শ্ৰন্ধা ভক্তি व्यकाम कृति मा देहाई मसुर १ ७इ व्यक्त किलामा भारताई हेडांत जनशंक छ। अधीय মান হইতেছে। ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করিব অথচ ভাঁহাকে এছে। ভক্তি প্রীতি करित ना, हेश वर्ता (यमन व्यमस्त ७ व्यासी-क्रिक, मेश्रादव थांचि खोचि क्रच्छत। श्राकांग করিব, অথচ উচ্চার নিক্ট মনের পাপ ও বিষাদ প্রকাশ করিব না, আপনার সহস্র অভাব মোচনার্থে ভাঁহার সাহায় ভাঁহার ा हु अमान आर्थन। कतित ना हेहा दलां छ েমনি অবেটালিক। কিন্তু স্তান্ত ছংথের विषय अहे भ व्यमाविधि किह किह विनक्षन কৃত্বিদা এবং সন্ধিৰেচক হুইয়াও সামান্য বুজি পরিহার পুরুক **ঈদৃশ অসহস্ধ অর্থ**-हीत क्षणां भ वाका वित्रा थाटकन। क्रमकी उटन अंतरमध्यत्व छान ७ महिमात हिरू

দেশ, অসংখ্য জীবের প্রতি তাঁহার অনন্ত
কর্মণার পরিচয় আহণ কর, আআর রতি ও
রচনা কৌশল হাদয়ক্সম কর এবং তাঁহার
অসীম ত্রবগাহ্য সন্ত্রাতে নিবিষ্ট হইরা
তাঁহার মুন্না কীর্ত্তন কর, তাঁহার আরাধনা
কর, ক্রিনা করিও না, প্রার্থনা করিলে তাঁহার
অবমাননা করা হয়, তাঁহার নিয়ম ভক্ষ করা
হয়, তাঁহার সক্ষেত্তার প্রতি দোঘারোপ
করা হয়। এপ্রকার নীর্ম যুক্তি কত দূর
ন্যায়সক্ষত তাহা আমাদিগকে বিবেচনা
করিতে হইবে।

প্রার্থনার বিপরীতে সক্ষদা যাণ কিছ ক্ষিত হইয়া থাকে ভাষা তিন্দী প্ৰধান আপত্তিতে পরিণত হইতে পাবে। : ম. ঈ-শ্ব আমাদিগের সকল অভাব জানিতেছেন। যদি আমাদিলের মঙ্গলের জনা কিছু আব শ্যক হয় তবে তিনি অবশ্যই তাহা বিধান করিবেন, নতুবা তাঁহার অনন্ত জ্ঞানের ও অনন্ত করুণার দোষ স্পর্শে। ভাত এব প্র र्थना वातकाक नत्ह। २१, केश्वतात ए-টির সকল নিয়মই চিরস্থাী ও অপরিকর্মন भोत। कोविनिर्शत कौवन ও स्टर्थत कना योह। किছু প্রয়োজন তৎ দকলই এই সমু पर निरुद्धात वसवर्षी अञ्चल्त । দারা যে সেই নিয়ম পরিবর্ত্তি হইবে ইহা প্রত্যাশা করা মূর্গত। মাত্র। প্রার্থনা করি-লেও যাহা হটবে, না করিলেও ,ভাহাই হ্ইবে। তবে প্রার্থনা নিতান্ত নিক্ষন স-নেহে নাই। ৩য়, প্রার্থনা করিয়া আমর: যে উন্নতি লাভ করিয়াছি মনে করি, তাহা আমাদিগের কম্পনা মাত। আপনাদিগের माधू हिकी ও माधू कांग्रना कनिक रच मगल পবিত ভাব হৃদয় মধ্যে উপিত হয়, ভাহা-দিগকে একটা মনঃক্পিত প্রীতি-স্থতে করিয়া উপাদনা কালীন পা-আবন্ধ

থ্নাছনে বাভ করি। এবং বছ সহকারে
নেই মুমতা ভাবকে কার্যাহেল লারিণত করিলামতে করি বুলি ক্ষরের নিকট প্রার্থনা
করিয়া ছি বলির। আনাধারা এই সকল সাধু
কার্যা সক্লার হইল। অভএব আর্থনা করা
নিতান্ত ভাস, তৎপরিবর্তে জনতের হিতকর
কার্যার অনুষ্ঠানে নিযুক্ত হওরা ভাল।

এই ত্রিবিধ কারণ ছারা কেই কেই স্থ-খবের নিকট আর্থনা কার্য্যের অনাবশ্যকতা. নিক্ষণতা ও অয়োক্তিকত। প্রতিপন্ন করিতে **८इस्टो क**तिया थाटकम। शृटखं हे खेळ हहे-द्राष्ट्र य डेशामना मन्त्र् बंदश मनुस्यात পক্ষে স্বাভাবিক, কিন্তু উপাদনার সহিত সরকা বিচ্ছিন্ন করিয়া দৈখিলেও পার্থনাকে मण्युनं कटम श्राजीविक विनिश्चा द्याध हहा। क्तान वस वावनाक इटेटलरे वामना ला-কের নিকট প্রার্থনা করিয়া খাকি, এবং প্রার্থিত বস্তুর মর্যাদা ভেদে অপ্স বা অ-পিক সময় প্রার্থনা কার্যো ক্ষেপণ করি। যদি উক্ত বস্তু নিতান্ত আবশ্যক ও স্পৃত্নীয় হয় তবে বার্মার হতাখাস এবং নিক্ষল হইয়া তথাপিও তাহার নিমিত্ত প্রার্থনা করিতে ক্ষতি হই না। বাস্তবিক এৰপ ব্যবহার मन्त्रानं कटन आमानित्तत्र च जावनिक। कि बटमाँत बना कि माश्मातिक अजादनत कना शद्याक ममूबादक दिन्स ममदा में कान ममरस् व्यार्थना कतिएक इंट्रिय। विनि अकाद्भव देश रहेट नेताबा न रूट्यन, जिनि दक्षान न। दक्षान ककादत श्रीत्र व अविदय विक्रण कवित्री किनिहार्हन। त्व वंदिक अग्राजात्व जीन कटनवन्न ७ गृत्व नु रहेश किका नवा अने मूकि क्युकार जा रञ नात नाक्क स्रेशाट्स, नामक क्या नात वर्गम्बर्ड ७ चाउर भ्रमात्मा राज्य कि आ पण पर्व १० इसा हरा

मञ्बद्धाः जिल्हाः जिल्हाः अवत् स्थान् अटक অকার্যাকর ছইরাছে সে বার্যাব অঞ্পুণ বোচনে চিকিৎসকের নিকট শাত্তি আর্থনা कतिट अक्षा छ हर ? केमून व्यवकार धनः विदिश अमानृना व्याव द्वांश यनि व्यार्थना मञ्च-र्यात भटक शास्त्रिक इहेन, उत्त कि क रल डाइ र्थ्य महस्त अश्राकादिक ? भाभ বশবর্জী হতভাগ্য ব্যক্তি কি ঈশ্বর প্রসাদে ধর্ম স্পৃহ হইয়া চির দিন অনুতাপিত হৃদয়ের ष्यमध शामि अन्दाहे विलीन कतित्व ? छ।-হার বিষম শোক ভ্রুৱে যে শাস্তি বারি প্রা-র্থন। তাহা কি কেবল মূর্গতা ও অরণা-রোদন माळ ? स तनहीन अवः क्षार्क तम मनुत्याक बिक्षे व्यार्थमा कतिहा व्याहातीय वस्तु ना न করত তুপ্ত হ ইতেছে; যে শুদ্ধ কণ্ঠ ভূকার্ত্ত म दिन्छा ७ श्रार्थना महकाद्व द्वादिकत इन-য়কে দয়াত্র করত জাল ধারা তৃষণ নিবারণ করিতেছে; রোগী প্রার্থনা দারা স্বাস্থ্য লাভ করিতেছে, হা। কেবল অনাথ পাপীই कि প्रतस्थात्वत बांदका उक् विशेम, महास-निश्रीन थांकित्व: डांश्रांत आर्थना वाटका कि মন্ত্রা কর্নপান্ত করিবে না; অসীম ঘাঁচার करून। मिहे स्त्रहम्म शहरमधत अवि कि তাহাকে এক মৃতি ভিক্ষা দান করিবেন না ? ভাঁহার মনের অভাব ননের জেশ কি সে चर्चात विकटक महनट उड़े निहिठ कति हव अमन कथन इट्टेंड भीति ना। वतः आना-**रात्रीं छ्क्न कटनवत्र म**तिरज्ञव मक्त्रांग श्रव বারদার আবণ করা যায়, বরং ক্র্যাতি থ মলিন-মূর্ত্তি ভূষণ হুর ব্যক্তির হাহাকার ধনি व्यन्त कता यात्र, वतः श्रुष्टिम्माविभिक्ते বিক্তকান মুম্ধ্ রোগীর অব্রুপুণ তাপোক্তি কৰ্ণ গোচর করা যার, কিন্তু ইম্বাবিরহিত, भोनियुक, त्माक-मीर्ग भाशीत विमाणिक ব্ৰন ও অত্তাপাতা দেখিলৈ জ্বয় রে। तन कतिहा छ। ठ। मनन सबल शहर

পিতা কি তাহার স্থভাব নিংহত প্রার্থনায়-ব্যির হইবেন, ও প্রতি দিন তাহাকে তাহার ঘার হইতে দুরীকৃত করিবেন ? হৈ সরল হৃদর মনুষ্য তুমিই ইহার বিচার কর।

কিন্ত প্রার্থনা স্বাভাবিক হইল ভাহাতে
কি ? যুক্তি পরতত্র তার্কিকেরা বলেন যে
ভোমার ভাব-পূর্ণ ভাষার মর্মা গ্রহণ করিতে
গারিলাম না। প্রার্থনা যদি আবশ্যক না
হয়, তাহা যদি সমাক্ রূপে নিক্ষল যুক্তি
নিক্ষর, কণপ্রা মাত্র হয় তবে ভাহা স্থাভাবিক হইল ভাহাতে কি ? পূর্বে প্রার্থনার
আবশাকতা প্রমাণ কর।

ভাল, ঈপর আমাণিগের সমস্ত অভাব জানিতেছেন এবং সেই অভাবের উপযোগী সকল বস্তু বিধান করিতেছেন; কেবল বিধান করিতেছেন এমত নহে কিন্তু যাহাতে প্রদন্ত বস্তুর ছারা আমাদিগের সমাক্ মঞ্লের উৎ-পাৰ হয় ভাষারও অভাষ্টপায় অবলয়ন করিতেছেন। হয়ত ভাষবশতঃ আমর। সময়ে সময়ে এমন কত অভাব বোধ করি. কত বিষয়ের জন্য প্রার্থন। করিয়া থাকি, যাহা আমাদিগের প্রফে ভয়ানক অমঞ্চল-তিনি এবস্থাকার অভাব ও এবস্থা-কার প্রার্থনা অপ্রাহ্য করেন, এবং ভাছাই বিধান করেন ঘালা পরিণামে আমাদিশের मर्विधिक मञ्चलम् तक इन्दे । जरव रक्वन মন্ত্রের অভাব অবগত হইয়া তালা মোচন कवाई क्रेश्वरतत छित्यना नत्क, किन्ह जीवात গনাক্ মঞ্চলের জনা উপযুক্ত অভাব মোচন করাই ভাঁহার উদ্দেশ্য। একৰে আমাদিশের पिथिएक इहेर हैं किएमत अंगी किन च-ভাবের জনা উহোর নিকট পাখাদিরের প্রা-পনা করা উচিত। 'কামুর' খন মানের জন্য छ। हात निकृष धार्थना कति मी समिल मारमातिक विश्व विशेष रहे ए उद्योत रहे-दांत जनाव डीशंत निक्छ श्राचना कति

धममञ्जादिका गरदा छारात मकत कार्यन थि भावता गण्य ने बद्ध विषय कि स्रोत **७२ मधुनान त्मन क्न किनि व्यवना जिट्यम् ब्यट्नन्** रत कथनरे निट्यम को किक काला किएनज र्य गमल धटमात अञात श्रीकृतिकहे श्रीहाद निक्षे आर्थना कतिया थाकि। शुरुद्ध कविष् हरेबा**टक एं केन्द्र এकार**्ड मेनूटबात অভাব সকল মুক্ত করেন যদ্মার। ভারার मर्स्कारक मञ्जल मः चिक इहेजा शास्त्र। অতএব বিচার করিতে হইবে যে যে ধর্ম-ভাবের জনা আমরা তাঁহার নিকট প্রার্থনা করি, তাহা প্রাথনা ব্যতীত পরিতৃপ্ত হইলে मनुरवात अधिक मजन्य इस, कि धार्यना मः যুক্ত হইয়া মুক্ত হইলে ভাহার অধিক নস্থল সংসাধিত হয়। ইহা একটা সাধারণ সভ্য रय यमि कोन वञ्च धार्थना पाछील लक्ष इध् ওবে তাহা ক্লডজত। বাহীত গৃহীত হয়। যে রাজতনয় জন্মাবধি সাংসারিক কোন প্র-কার অভাব অনুভব করে নাই, চিরকাল নম্পত্তি ও সচ্চলতার ক্রোড়ে ক্রীড়া করিয়া व्यागिट हा एवं यान व्यादमाक क्षंटन छे-পযুক্ত পঞ্চছৰ বা উপযুক্ত আহার প্রাপ্ত হয় তাহা ফুটলে সে স্বীয় অন্নদান্ত পিতা থাতি কিছুমাত্র রুডছভোর কি মাতার খ্রীতির আধিকা অনুভব করে না, বরং रेष्ट्रांगड ज्या ना পाईटल डीस्क्रिंगत अिं दिलका असे एरेगा **उटें** िकिन्छ যদি কোন জুংখী সন্তান চির্দিন আন্তরের অভাবে বছ কট পাইরা পরিদেবে শীয় পিতার পরিশ্রম-লক্ষ বন হইতে কিঞ্ছি স-क्नडा ना इ करत छर्च त्मरे निष्कृति के हि াহার ক্রডজভা ও প্রীতি কেমন উল্লেখ ररेट थार्क ता किस्सीयहम्म नामिना गडना जनकारण विश्व है भी अर्थ आधुन Pola race manus care ben wa

पिट्रात मानावगारत पाचार स्थाप प्रधान त्यावन कविटचन, केंद्राव निक्**ष** टकांन अ-जारदर जना थे।र्थना कविरक ना **रहेड**; के कमश्रावन ७ शतिशाक कियात मात्र यपि धर्माकाव भूर्व १३३१ त्रकादमिस इरेड डार्रा ·हरेता कि धर्मानार जत जामून सर्गामा छ আদর থাকিত, না তলাভ জনিত উপযুক্ত ভক্তি শ্রদ্ধা কৃতজ্ঞতা আমাদিগের দূবিত श्रमदत्र ममुर्थिं इहेड ? छोड़ा इहेटन कि व्यामता जन-महिष्यु कृथी मखात्मत नाम অমুলা ধর্মরত্ব লাভের জনা পরন পিতার নিকট চিরক্তজ্ঞ ও চিরামুগত ভৃত্য হইয়া থাকিতাম, না সমাদৃত উদ্ধত-স্বভাব রাজ-তনরের ন্যায় তাঁহার অপার করুণাকে করু-ণাজ্ঞান না করিয়া অক্তপুণা, ক্তম ও পা-পাচারী হইতান ? ইহাতে কি আমাদিণের স্বাধিক মঙ্গল ও উম্বতির উৎপত্তি হইত ? এकार्ग बागता वह द्वारम, वह পतिवारम, বহু প্রার্থনার হারা যাহা কিছু লাভ করি-ভেছি ভাহাতে কুতার্থ হইতেছি। তই ধর্মের অভাব নিগ্ডুতর্কপে অনু-ভব করি, সেই অভাব পূর্ণ করিধার জন্য যতই কঠোরতর পরিভান করিয়া থাকি, আ-शमात किकीटक विकल ও नितर्थक मिथिश यर्ड विश्वामपूर्व अनस्य अश्वरतत निक्षे व्यार्थना करि, अर महे व्यार्थनात माकार कित्रकृष राज्ये आमानिद्वात साधुतारकण्य निकर्ण, जजह जामानित्रत हम्द्र धर्मात भारत ७ मध्रतका प्रामुख्य रहा, धर्मा-दल लक हर, ने बरतद अधि क्रच्छारी व विचान सहय, बीकि करण। (प विवस्तत क्या यक क्रिके করিব, নেই বিষয় ব্যাত করিবা ছত প্রীত तरेत, एक लांहा क्षायत हरेता. ध्वर गा-राष्ट्र भारतिया त्य अक्षिणद्व लाहे विसस् जिस eking, piete gie ciğ elânıcı pe-

নরা অতি পরিতান সহকারে ধর্মকে লাভ করি তবে ধর্ম আনাদিগের নিকট অতিশর আয় হইবে, এবং যদি প্রার্থনা জনিত ল-শ্বরের নার্বায়ে তাহা লক্ত হয় তবে তাঁহার প্রতি ও প্রকা উপিত হইবে। এ-ক্ষণে হে সরল হাণয় মনুষ্য বিবেচনা কর প্রার্থনা আক্ষাক কি না। যদি ধর্মেতে প্রিতভাতে, ঈশ্বরের প্রতি প্রীতি প্রকা ও কৃতজ্ঞতাতে আবশ্যক থাকে, তবে প্রার্থনা-তেও আবশ্যক আছে, যদি সেই সমস্ত অ-নার্বায়ক হয়, তবে প্রার্থনাও অনার্বায়ক।

কিন্তু যুক্তি প্রিয় তার্কিক মহাশয় ইহাতেও নিরস্ত নাইইয়া জিজ্ঞানা করেন যে যদি
প্রাথনা পরমেশ্বর প্রতিষ্ঠিত নিয়মাবলীর বিরোধী হইল তবে তাহা কি প্রকারে কলবান্
হইতে পারে? যখন সমুদ্র মধ্যে তোমার তরণী জলমগ্র হইরাছে তখন কি প্রার্থনা ছারঃ
তুমি জীবন লাভ করিতে পার, নাযদি রাজ্রি
তোমাকে আক্রমণ করে তবে প্রার্থনা ছারা
তাহার কবল হইতে নিজ্তি পাও? কদাত
নহে। যাহা অপরিব্রনশীল ঈশ্বরের নিয়মের অনক্ষত তাহা তোমার প্রার্থনা ছারা কি
প্রকারে সিক্ধ হইতে পারে গ

কিন্ত তার্কিক মহাশয় আমাদিলের প্রাথনার উদ্দেশ্য বিচার করিতেছেন না। তা।
মার উন্নতির জন্য প্রার্থনা যে প্রমেশ্বরের
নিরম বিরুদ্ধ তাহা কি রূপে নিশ্চিত হইল?
যে প্রার্থনা শারীরিক ও বাহ্নিক অভাব
নোচনার্থে কড় নিশ্বের প্রচলিত প্রথাকে
বিপর্যান্ত করিতে চালে; যে প্রার্থনা জনদীশ্বরের জগৎ সম্বন্ধীয়,গৃড় তুভেয় কৌশলের প্রতি দৃষ্টিপাৎ না করিছে ক্লম্মানী
বাহ্নিক অভাবে অন্থির চিন্ত হইরা তাহার
অপরিবর্তনশীল পরিশুদ্ধ ক্রিভে চাহে, তাহা
স্বার্থপরতার নীর্মান করিভে চাহে, তাহা
স্বার্থির ও নিক্ষল সন্দেহ নাই। জল-

मध रहेबात मगम बाक् अर्थ भन्न भवास वा क मानव कूटल छ्रभनी छ इहेबात छना अस्तरक प्रसुद्धांव कटतम मा, धंवर अंशीनक दिश्य-জন্ত কবলে নিপতিত হইয়াও তিনি ঈশ্বর गमरन देशंत मृष्ट्रा कारमा करतन ना, किन्ह गक्त शकांत माध्यातिक व्यवसाय, कीवरन व्यवश मृबुद्ध नित्रत्भका नोकिता अकंभने हिटल তিনি নিয়ত তাঁহারি মঙ্গল সংকল্প সিদ্ধির कना वार्थना करतन। जिल्दात्त याहा देखा তাহাই ভাঁহার প্রার্থনা; সে ইচ্ছার যদি মৃত্যু হয় তাহাও তাহার শিরোধার্যা, মে ইচ্ছায় যদি জীবন সংরক্ষিত হয় তাহাও তাঁহার শিরোধার্যা। কিন্তু আত্মার উন্ন-ভির জনা প্রার্থনা অনা প্রকার। আত্মার উন্নতি এবং ধর্ম লাভ যে ঈশ্বরের অভিল-ষিত ভাহার আর কোন সন্দেহ নাই। তাঁ। হার প্রেরিভ ও প্রতিরপ মনুণা কদরন্থিত त्व भन्म तुष्कि 'छांहाई हेहांत माका निटल्टा । পরস্ব এই উনতি এই ধর্ম লাভ কিৰুপে হুখতে পারে? ধর্মের জন্য একটী গুড় আন্তরিক ভাব বোগ হওয়াই ধর্মের মূল। যাহার ধর্মের ভাভাব বোধ হয় নাই সে কথনই ধার্মিক হইতে পারেনা, যে ব্যক্তি আপ্লার পাপ মালনতাতেই সম্ভাইচিত্তে ज्यक्ति करत. जेश्रद्ध कमा ग्रांदात ऋमग्र वशकुनिष्ठ इस नाहे, मं धर्म नहेशा कि लितिरव, देखेत: लहेश कि कतिरव? धर्मी কি বন্ধ সমার কি বন্ধ যে ভাষার পরিচয় ায় নাই ঈশার ভাষাকে দশন দেন না, কারণ তাঁহার প্রতি ভাহার কিছু মাত্র আকর मार यमि मा अमाप्रादम जिल्लाक बाख रक्ष তৰে প্ৰায়াদে তাহাকে পরিত্যাক্ত করিব। गार आर्थना कति जीं था थ रहे, देशहे व कगट उपाक रमत नित्र किया मित स्मि वर्ण भन चार्र बटन कानि करन साम भटना তন্য কেন চেকা কারব, কেন পরের

कतियः पति स्थापति क्षेत्र कलक्क्क सामाहरू यहां स्टार वृद्धि क्या भागात वदः समित পরিবারের জীবন সক্ষীপথ ইইয়া উঠিতে रेश निक्त अवश्व शक्ति छ। इत्राह चामि चर्चत रुके। त्नि, कोश इहेर्सह আমি সমুদ্য শরীর মন ক্ষয় করিয়া ভাইার জন্য পরিশ্রম করি, লজ্জা ভয় ভয়াগ করিয়া भट्य भट्य चांट्र बांट्र जिका कतिए क-छि इहे न। जिन्न खंदराय धन नाउ कतिरल हे जागात कार्या जाहरम, जागात উপকার হয়, केमृশ अवश्वाय मसूबादक धन मान कतिदल हे ज्यामानिदशंत भूगा हत। शति অম ও প্রার্থনা উপাক্ষানের নিয়ম, অভাব উপাক্ত নের ভূমি। ইহাই এই পৃথিবীয় অগওনীর ব্যবস্থা। যদি ধর্মোপাজ্জন ক-রিভে অভিলাষ থাকে, তাহার জন্য যদি निভान्द मीन शैन श्रेश थाक, उद्भ किया ও পরিশ্রম করিতে হইবে, এবং দেই স্থানে ভাঁহার নিকট প্রার্থনা ফ্রিতে হইবে যে ভানে, যাঁহার নিকট ভাহ। প্রাপ্ত হওয়া যায়। চেন্টা না করিয়া, প্রার্থনা না করিয়া উপाक्क न करा इश्यी लाकमिरगत शरक जमञ्ज. जांश शृथितीएक चरेत्र, मेश्रद्धत নিয়ন বিরুদ্ধ, কুতাপি কোন বিষয় ভাহার मुकी छ पुष्ठे इस ना। यादामित्रात धर्मात অভাব নাই, প্রোজন নাই, ভাছারাই আং-র্থনা না করিয়া তাহার অযৌত্তিকতা অস্ত্র-সন্ধান করে,কিন্তু তাহার অভাবে যে নিতান্ত मीन हीन महिल गर्मान हहेग्रोटह, **गाँउ**न ঘারে তাহার জন্য ভিক্ষা পর্যান্ত করিতে याहात मंदर्कात ना रुधः त्मरे निषदात नि कटि धर्म-छिका आश्च इत अदः मिर्हे मक्ता একার আত্মাঘাতী যুক্তিতকৈ বিধিয় হইছা मिका दम कीवरमत्र मार्थकके परखान करते। चक्रवर द्यार्थमाः कोश्रा है सरवत निहर द er groe, Viens Generalise en

मा कारका डाहात निषय **एक कर्म** हर्म

आर्थना विषयक जुजीय आंशिक अहे दन रेहा दक्दल सटनत कण्णना । हेका चाता इस कि इस काहा अकुक केविक नरह, क्वित् मञ्जूषात मदनत कविमाव। मञ्जूषात স্বীয় চেটা দারা যে পবিত্রতা লক্ত হয় সে তাছাকে প্রার্থনা জনিত পবিত্রতা মনে করে। অতএব এই ভ্ৰমাত্মক প্ৰাৰ্থনার ভাব যত শীঘ্র মনুষাদিগের মধা হইতে নিরাক্ত হয় তত্তই মঙ্গ। উলিখিত প্রকার আপত্তি ठाँशमित्त्रत्र यातारे क्र इत याशांत्रा निष्क প্রার্থনা কার্যোর অনুষ্ঠান না করিয়া কেবল ভাহার অযৌক্তিকতা প্রতিপন্ন করিতে ক্র-তগংক স্প হইয়াছেন। প্রার্থনা কাছাকে বলে, ভাহার কি ফলাফল ভাহা ভাঁহারা জ্ঞাত নহেন, হইতে ইচ্ছাও করেন না, কেবল তাহাদের "বোধ হয়" ইহা সম্পূর্ণৰূপে স-কলের পক্ষে অকার্যা-কর, অতএব তাঁহারা কোন একারেই তাহার যুক্তিযুক্তা উপ-লাকি করিতে সমর্থ হয়েন না। ক্রিন্ত এত-मरदात्र डाँशमिरशत व्यक्ति वक्तवा এই या আর্থনা কার্যোর প্রতি দোষারোপ করিবার পূর্বে ভাহা একবার পরীক্ষা করিরা দেখুন, শক্ত প্রার্থনার যাহ। যাহা নিরম তাহা পা-लग क्यम, उरमा अविषय श्रीमांत्र कता क ভাষাদের কম্পনা নাত্র বোধ হয় ভবে থেন উহারা ইহার অপবাদ রটনা ক্রিতে প্রবৃত্ত হরেন, নতুরা ভাঁহাদিলের আপতি গ্রাহা হ-हेट शांद्र ना। कथिक चाट्य ककन मस्डि জন্মত্বাক্তি কোন বন্ধু কৰ্ত্ক জিল্ঞানিত रहेमाहिन त्य लाहिन वर्ग किवल ? त्य क्रिमां कात दिनाई मा कहिना वित्तत (व त्वा-विष वर्ग साथि जिल्हा स्थानः आयात "८वाध रक रेश बोल कविक नाम पाँच समाय । रमार्थः। व्यापामा संस्थानी प्रदेश के जिल्हे तार्वे

क्रम । कें शानिदश्व "द्वाप इस्र" व्यार्थना कण्यन। মাত্র অধ্চপ্রার্থনা যে কি ৰূপ কার্য্য তাহার। কোন কালে ভাষা স্বশ্নেও অবগত নদেন। द्दीशिष्टिशत "(योषण श्रात्रक छानीमिरशत नि-क्षे किवन अविदिक्त । अ इसिन सात शतिका মাত্র। পরীক্ষার ফল কেবল পরীক্ষার ধা-রাই অনুভুত হইতে পারে। নাধুদিগের अमुथां अन्ड रहेग्राहि स निष्देतन निक्षे প্রার্থনা করিলে ধর্ম লাভ হয়। ইহা ভাঁহা-पिरात कीवन-कांड शतीका-कांड मणा, व्यागांत्राल गांनांना कीवत्न हेशत निकास वा-मान थाश्च इहेबाছि। यदकात्म यामि माजू-বিয়োগ-শোকে মৃতকত্প হইয়া ঈশ্বের শর-ণাপন্ন হইরাছিলাম,একান্ত মনে যথন ভাঁহা হ-ইতে শাস্ত্রা ও বৈর্ঘা প্রার্থনা করিয়াছিলাম, তথন আনার আত্রা পুনর্জীবিত হইয়াছিল, আমার অপহত শান্তি প্রত্যাগত হইয়াছিল: নেই অবধি আমি মহত্তর কোমলতর জননী व्याख इहेबांकि, यिनि व्यामात्र जननी अबः জগতের জননী—ইহা কি আমার ভ্রম ? যথন পাপে গুৰুভাৱাকান্ত হইয়া একপাদও গমন করিতে পারি নাই, সংগার বখন অ-রণাবং বোধ হইয়াছিল তথন তাঁচার নিকট ক্ষা ও প্রদাদ ডিক্ষা করিয়াছিলাম ; আ মার আখ্যা নূতন ক্র্জি নূতন সাহ্দ নূতন ভাব লাভ করিয়াছিল, সেই অববি আমি অম্পে অম্পে তাঁহার পথে অগ্রসর হই-তেছি, ইহা কি আমার अম? ছুরালতার স-মর পার্থনা করিয়া বল পাইরাছি, অজ্ঞান ও সংসারীক্ষকার মধ্যে, যংকালে আনার আহু! ক্ষিপ্ত ও অন্ধ-প্রায় হইয়াছিল, তথনও প্রার্থনা করিয়া বিশুদ্ধ সত্য ও জ্ঞান প্রদীপ लां कतिशाहि, देश कि लागांत लग? এই गक्रल यान अस इस, जर्द गडा कि ? এक वात नग्न, प्रे बाह नग्न, यन वात्रे विनीच वि-योग भून मत्य कारात निक्षे व्यार्थना कति,

তত বারই পূর্ণ হৃদয়ে কিরিয়া খাদি, ভঙ বারই ভাহার করণা, তাঁহার পবিত্তা, তাঁ-হার মঞ্চলভাব, গাঢ়তর রূপে আমার জীবন भुष्ठदक पुष्टिक रहा। हो! हेरा यनि मिथा। रह उदय आमात कीरन मिथा। क्या निथा, क्रमाध्य मिथा। रक्रवन व्यथ-র্মাই সভা। ভূষা কিরণে যেমন অঞ্চকার গৃহের বন্ধ কবাট উন্মুক্ত হইলে রৌক্ত রশ্মি তাহার সকল নিভূত স্থানকে আলোকিত करत. आभात खक ऋषा मिह क्रम श्रीर्थना দারা উদ্যাটিত হইলেই ভাঁহার স্নেহ রাশ্ম তাহার সকল প্রদেশকে উজ্জুল করে। এই জালোক এই উজ্জুলতা আমার আশা এবং क्रिकोत वहिन्छ, याति महन कतिहल है-ছাকে নিবারণ করিতে পারি না। সময় আমার ঢুব্বিত্ত হৃদয়ের ঘোর অহ্বকার এবং লৌহ কৰাট ভেদ করিয়াও সে জ্যোতি প্রকাশ পাইয়াছে। অভএব হে সরল জ্নয় সভ্য জিজ্ঞান্ত মন্তব্য! প্রার্থনা কম্পনা নহে, জন নহে, মনের ভাব মাত নহে। ইহা প-রমাত্মার সহিত আত্মার সন্মিলন, ইল। ভূ-ত্যের দিক্ষা, প্রভুর দান; ইহা ধর্ম্যের, পর-ट्रिक्त, भांखित मध्या । दह भवन मसुवा প্রাণাম্ভে কথন ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা ক-तिएक बित्रक श्रेष्ठ ना।

উপরে যাহা কিছু উলিখিত হইল, প্রা-র্থনা কার্য্যের নিষেধ থ গুনই তাহার উদ্দেশ্য, ভবিষ্যতে এ বিষয়ের বিধি সংস্থাপন করি-তে চেকী করা যাইবে।

गत्ना विकान।

সন। মন শক্তের প্রকৃত অর্থ নির্কারিত ইইল। মনের প্রকৃত অর্থই মদাপি মনুষ্য হয় তবে "আমি" "আল্লন" বা "আ্লা" শক্তে মনকেই বুমান, শরীরের কিঞ্মিন অনুভূত ব্যানা।

चाटनकिक, भागगानिक, निहाटन किर । गटमत कान किराण ? कान विविध चारशकिक अबिबारशकिक व्यवना वानमा-পিক। স্ফ জীবের এক্তি সময়ে বিশ मःगात्रक विविध भगार्यंत (य छ्वांन करम তাহাকে অপেক্ষিক জ্ঞান কহে। আগ্ন স্থ একডির বহিভুতি বিশ্বকার্য্যের স্বভন্ত আদ্যন্ত জ্ঞানকে অসমাপিক জ্ঞান করেন পূর্বেই কথিত হইয়াছে যে মনুষ্ঠোর তাবং জ্ঞানই তাহার অর্তি সাপেক্ষ। ''যে পরি-মাণে মনুষোর শারীরিক বা মানসিক হৃত্তি সেই পরিমাণে তাহার জান। হয়ত এমত কত থকার জান আছে যাহা উপযুক্ত বৃত্তির অভাবেদে জানিতে পারিতেছে না, স্বতরাং তাহার জ্ঞান আপেফিক। কেবল ঈশ্বরের छानरे व्यममार्शिक ও नितदशक। जिनि আমাদিগের ল্যায় স্বাভাবিক ইন্দ্রিয় হারা, इंडि होता, मौभावक उममाख नरहन। ममख বিশ্ব হইতে ভাঁহার মন অনভভাণে শ্রেষ্ঠ, তিনি তাহার আদাও লাভাবিক জ্ঞান-ক্রিয়। দারা এককালে জানিভেছেন। তাঁহার জ্ঞান নিরাপেক্ষিক ও অসমাপিক।

পরস্ত আপেক্ষিক ও অসমাপিক বা
নিরাপেক্ষিক শকএয়ের মধ্যে যে ইডরেছর
সম্বন্ধ আছে ভাষা যে কেবল ল্ডান-কার্য্য
উল্লেখে সংলগ্ন হয় এমত নহে। ভাষাদিগের অর্থ বোধক আবশ্যকতা বিবিধ অন্য
দৃশ বিষয়ে কিরপ উপলক্ষ হয়, মনোবিভ্রোনের ভবিষ্যদালোচনায় ভাষা শাব ই
প্রতীয়মান হইবে।

গুণ, ভাব, এবং মূল-বন্ধ। পুর্বেই কথিত হইয়াছে যে কভকগুলী গুণ লেখিয়া
আমরা কোন একটা পদার্থের আন্তিম্পনর্দেশ করি। আরুডি, বিশু দি আক্রমান
গুণ উপলত্তি করিয়া আমরা জাড়া দ্বিশ্ব

चनतं कठक्छनी छन्त्रात्री वामत्रा महनत चारि इ जानित्व शाहि। अप्रकान रा मन कान वर विविध अकात अवकातन्त्र जनवि माजा अप्रवेश नर्मन कविरम भागता जा-ষার আকৃতি বিস্তৃতি বর্ণাদি ভিন্ন স্বায় কি-हूरे प्रशिष्ट शारे ना ७ कानिए शांति ना; এবং চেতন বস্তু উপলব্ধি করিলেও তাহার জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছাদি ভিন্ন আর কিছুই জা-নিতে পারি না। কিন্তু এই দ্বিপ্রকার গুণ-শ্ৰেণীর অন্তর্গত বিভিন্ন স্বভাব ছুইটি পদার্থ षाष्ट्र। এই इंग्रेजि शनार्थ यनि ३ षामता চকুষারা দেখিতে না পাই, তত্রাপি ভাষাদি-গের প্রতি আমাদিগের অগণ্ডনীয় বিস্থান আছে,কারণ ভাহ। হইতে বিচ্ছিন্ন হইয়া গুণ মাত্র অবস্থিতি করিতে পারে না। এই ছইটী भाषार्थ वस्त्र मूल-मञ्ज (Substance)। ইहा আমাদিলের জ্ঞানের বিষয় নহে কিন্তু বিশ্বা-সের বিষয়। কেবল উপরোল্লিখিত গুণ (Property) আমাদিগের প্রত্যক্ষ দর্শনও स्बादनंत विषय।

যে পদর্থে যাহা কিছু দক্ষিত হয় তাহাই তাহার ভাষ। প্রতি দিন মনের মধ্যে দহস্র চিন্তা, এবং দহস্র ইচ্ছা উদয় হই-তেছে, এই ৰূপ প্রত্যেক চিন্তা ও প্রত্যেক ইচ্ছাই মনের এক একটা স্বতন্ত্র ভাষ (Phenomenon)।

শক্তি ও রুদ্ভি। এক অবস্থা হইতে অব্যান্তর হইতে পারিবার ক্ষমতার নাম শক্তি; এবং বে যে তিল্ল শারীরিক বা মাননিক উপালে এই শক্তি সাধন করা যায় ভাষার নাম রুদ্ভি। মন্ত্র্যা আত্রাণ লইতে পারে। আত্রাণ একটি শক্তি; কারণ মন্ত্রবেরে স্বাভাবিক অবস্থা হইতে নে আপ্নারক সাজাণ এফাবিকা আন্বান্তর পারে।
একটি বিশেষ ইন্তিয়াকে উপায়কলে অব্

तमर्थ इरे. अडकर आर्गिक्त मसूरवात अ-करी भाजीतिक इंखि। दुखि विध्यकात छएमा-निमी । निरंशातिमी । উरमानिमी दृष्टि बाता আমরা একটা কার্যা বেছা সহকারে সাধন করিতে পারে; নিয়োগিনী রুত্তি ছার। আ-পনার উপর অপরের কার্য্য সহন করিতে পারি। আমার সীয় চেষ্টার ছারা স্তি শক্তিকে পরিচালনা করিয়া জ্ঞানের বিষয় স-কলকে চিরকাল মনোমধ্যে আৰক্ষ রাধিতে পারি; এবং কোন প্রিয় ব্যক্তিকে অবলো-কন করিলে স্থাবতই স্নেহে অভিভূত হইয়া পড়ি। স্মৃতি রুত্তি আমার সেচ্ছাধীন ও কার্য্যাধীন, কিন্তু স্লেহ-রুন্তির দারা শামি স্ব লাবভই নীয়মান হই। অভএৰ স্থৃতি শক্তি व्यामानिदशत अक्षी छेटमाशिनी श्रव्यक्ति, अवः स्त्र-त्वाथ क्रकों। निर्धातिनी **अ**तुन्ति भाज ।

গঢ়, ও বিদ্যমান! মান্সিক ভাব এবং রুভি ছুই একার অবস্থায় অবস্থিতি করিতে পারে! এই হুই অবস্থার নাম গঢ় অবস্থা এবং বিদ্যমান অবস্থা। সনের মধ্যে এঞ্জ খনেক সভা, অনেক ভাব, অনেক রত্তি আহে বাহারা দকল দময়ে জ্ঞানের গোচর থাকে না, কেবল কার্য্যের সময় তাহাদিলের পরিচয় এতি हुए हा योग । यथा, धर्माध-র্মের স্বভন্তভাল সকলের মনেই নিহিত শ্হকালে মনুষা জানালোচনায় আছে: বা দাংদারিক কার্য্যে নিযুক্ত খাকে তখ-कारन এই ज्ञांन वीष-भाष्ट्र हम ना ; किन्छ यथन हे त्म कांग अक्षे भर्म कांग वा ध्वनम कार्या नितीकन करत ज्यमरे छ। राज मन हेर् कानक रहेन्। ७८५। वर्षत्रि है-শ্বর সকলকেই দিয়াছেন। কিন্তু পাপ ছারা বা কুতর্ক ছারা মনকে পাষাণবং কঠিন ও নিডান্ত অধ্যুক্ত কেরিয়া ফেলিলে ভাছা महरक व्यञ्जू इस मा। यथनहे शतरम-্রার অনত সাধু অহতের আদেশারুযায়িক মনুষা কাৰ্যা করে, তথনই এই প্রবৃত্তি জাগৰক হয়। উল্লিখিত প্রকার মানসিক ভাব ও রুত্তির নিহিতাবস্থাকে গঢ়ত। কহে, এবং ভাহাদিগের জাগৰক অবস্থাকে বিদামান নতা কহে।

আত্মপ্রত্যায় যত প্রকার বিজ্ঞান শাক্র আছে তৎসমুদায়ের মধ্যেই কতক श्रीन मून-सूज पृष्ठे इत्र। अहे सूज हत्र কোন মতেই বিচার পাপেক্ষ নহে, তালারা স্বাভাবিক বিশ্বাস সিন্ধ, তাহাদিগকে আত্ম-প্রভায় কছে। কোন বিষয় বিচার করিতে হইলে, মূলে উদুশ কতকগুলী সহা স্থী-কার করিয়া লইতে হয় যাচারা বিচার नार्यक नटर, मनुषा मारजत्र यार्शानरवत প্রতি সম্পূর্ণ বিশ্বাস আছে, এবং বাহাদি-গোর প্রতি বিশ্বাস হা থাকিলে সকল প্রকার गुल्डि,विष्टान ও विषात अगस्य बहेश छैटि। ৰখা আনি আছি, বাক জগৎ আছে, ঈশ্বর আছেন,এ সকল বিষয়কে সপ্রমাণ করিতে হ-ইলে মনুযোর স্বাভাবিক বিশ্বাদকে জিজ্ঞানা कतिए इत्। मसुरमात मन यनि ऐसे मिशटक অস্বীকার করে ভাষা হইলে কোন প্রকার विठात्रहे मछव नरह, कांत्रण यणि आमि ना थार्कि, जन्न ना शांदक, क्रेश्वन ना शांदकन, ভবে কে বিচার করিবে, কিসের বিষয় বিচারিত হইবে, কাছার প্রণীত বস্তু এবং किटमह कोमनाक विष्ठांत कता याहेटव। অভএব ঈদৃশ প্রকার সকল বিষয় এককার্টন স্বাভাবিক বিশ্বান নিন্ধ, তাহাদিনের নামই মাঝ্মতায় ৷

আতা চৈতনা। মনে যে সমস্ত ভাব উদান হ ইতেছে তাহার জানকৈ আতাচৈতনা কহে। আতা চৈতনা না হইলে কোন ভা-বই সম্ভবেনা। আমার মনে জানের উদয় হইতেছে, কিন্তু আতি যদি মেই জানকে না জানিতে পারি ভবে তাহা উদয় হওয়া সার না হওৱা নৰান, বাজৰিক ছাহা ট্রন্থ হয়
নাই। আমার মনে প্রীতিভাবের উদয়
হইতেছে, কিন্তু যদি আমি দেই প্রীতিকে
না জানিতে পারি, ছবে আমি কি প্রকারে
বিশ্বাস করিব বে ভাহা কোন কালে
আমি বোধ করিয়াছিলাম ? অভএব আত্ম
চৈতন্যই মনের অন্তিত্বের নিয়ম। বে সম্ম
আত্ম-চৈতন্য নাই সে সময় মনও নাই,
কারণ ভাব-বিরহিত মনের অন্তিত্ব পারি না।
অভএব মনের জীবদ্দশার নামই আত্ম
চৈতন্য।

একাগ্রতা। আত্ম-তৈতনোর নিগৃতভার নাম একাগ্রতা। বিবিধ ভাব মনোমধ্যে উদয় হইতেছে, এবং আত্মজান
ভারা অনুভূত হইতেছে। যদি ইহার
একটা ভাবের প্রতি গাঢ়কপ মনঃসংযোগ
করত ক্ষণেকের নিমিন্ত অপরাপর ভাবতরকে মন হইতে অপসারিত করি ভাহ। হইলে মন একাগ্রতার অবস্থা অবলয়ন করে।
অত্যব স্থাভাবিক আত্ম-তৈতনোর প্রতি গাঢ়
কপে মনঃসংযোগের নাম একাগ্রতা। মনোবিজ্ঞান আলোচনার পক্ষে এই কপ
একাগ্রতা একাস্ত আবশ্যক।

উলিখিত প্রকারে মনোবিজ্ঞান শাস্ত্রে
সর্বাদা ব্যবহার্যা ক্রকগুলী শব্দ বির্ত
হইল। এতংশাসের তবিষ্যালালোচনায়
এবসিধ অপর অনেক শব্দ সংঘটিত হইবে,
যাহাদিগের বিষয় অদ্য কিছুই উল্লেখ ফ্রা
গোল না, কিন্তু দেই শেষ্টের মর্ম্ম তত্তৎকালে প্রদান করিতে চেন্টা করা যাইবে।

बयुक्षीत्वत्र वात्रगाक्का।

২০২ সংখ্যক পত্রিকার খং পুকার পর

অামাদের ভারতবর্ঘ এ বিষয়ের একটী সুন্দর 'চুকী স্তস্ত্র। এখানে ষেরূপ ভাবের প্রীহর্ভাব চুক एवं এक প আ व कान प्रति है प्रथी यात्र नी। এদেশ যদিও অজানতা ও কুদংস্কার-তিমিরে ভয়ানককপে আছেন রহিয়াছে, তথাপি এখানকার পিতা মাভারা বেনন সন্তানের প্রতি অন্তরক, এখানকার ভালা ভগ্নী যেকপ কোনল মেহ-ভূতে আবদ্ধ, পুত্র কনা দিগের ষেরপ মাতৃ ভক্তি ও পিতৃ প্রস্না, ভাষা মনে করিভেগেলে চমৎকুত ছইতে ছয়। অন্যান্য নেলের অপেকা এদেশে তাব ঞ্চল থাকাতে ইহার অনুষ্ঠান গছল ও তদন্ত্রপ **७ है शदछ। आफ्रिकाश, जामाज्यिष्ठ, आक्रामि** অন্তান, সকল স্পট্রপে তারার মাকা দিভেছে। धीम ७ व्यामारमञ्जलन्य मञारमन्य मगरस्य जुलनाय অতি দায়ানা দলিয়া পরিগণিত হয়, ধদিও অ-नाना मकत मध्यम है। अंडि निकृष्ठे अंति व्यव-স্থিতি করে, তথাপি অন্যান্য দেশ অপেক। যে हेश डाइरस्ट (बर्छ धरे लोतन कतिरङ यामता मधनहे मक्षुण्डि इहेर ना। आमारपद रमस्मत এই ভাবকপ মুন্দর কুমুম-পরিশেভিত মনোহরদ-শনে বিমুখাচিভ না হইয়াবে ভাগাকে অবজ্ঞাসূচক ष्ट्रचिंदक पर्नम् करव,म। खानि मि कि कर्छाद कानग्र! এই ভাররূপ মনোর্য প্রস্থা-নিচ্চের শোভা ন দৰ্শনে পুলকিত-জ্নয় হইয়া ভন্মপাস্থ বিশৃত্যালত। দুর করত উত্তর্মরূপ কর্ষণদ্বার। তাহাদিগের অনিক-তর শোভা मम्भामन कविद्यन क्लियाहे बाद्याता কতকণ্ডলি কাৰ্য্য বিশেষে প্ৰাব্ৰক্ত ইইয়াছেন। এই কার্যাস্থারা তাঁহারা নিজের ভারসকলও প্রাকাশ करतन, धार कामारमत एमरचत छाइ नकरनत १ উৎকর্ম সাধন করিছে। পারিরেন। ত্রাক্ষধন্যের जबुक्षीन बनिया यांश अनिष् इहेमाद्य , अ बाह्य सहिता **এ** जिल्ला क्रिक्ड हरेगाड, बहे, कार्ताश्चल তহিরই অন্তর্গত । প্রাণ্ড বিশ্ব ক্রিয়ার

নশানুঠান করা যে বহুষোর রাভাবিক ভাষা
এক প্রকার প্রদর্শিত হইবাতে, সুভরাং রাজ্যের
যদি অনুঠান করেন ভবে এই র্যাক্সা উন্থাদিগতে
লোখারোপ করা বাইতে পারে বে উন্থানা নাম্বা।
বাহ্যিক অনুঠানের যে গুল ব্যক্তা আন্তর্শাক,
স্পর্ণাং হয় ভাষারা জালাবের আন্তর্শিক ভার প্রশাক,
কাশাকুনর ভাষারা আনাবের উন্নাভ নাগন করে—
বেই উপ রাজ্যাবিধের অনুঠান করা অবিভাতি ক
নিভেন্নে কি না আন্তর্গাক। করা ছাইক সাম্ব

ঠানের ব্যাপক অর্থ গ্রহণ করিলে বালিক অনুঠানের সংখ্যা অগণ হইয়া উঠে। ব্রাহন্তর প্রতিবাহা কিয়াই ভাষা ইইলে অনুঠান লাদেব বাচা
হয়। আমরা একণে অনুঠানের তার কি কিং
সক্ষু চিত করিয়া লাইব। অর্থাং ব্রাহ্ম দিংগর নথে।
প্রচলিত বিশেষ অনুঠান সকলকেই একণে মনুঠান অভিধান অদান করিব। যথা অভেকর্মার
নামকরণ, উপানয়ন, গর্মদীকা, বিবাহ অংখাতি
কিয়া এবং প্রান্ধ। কেন না এইগুলি লাইয়া তর্ব
বিতর্ক উপাতিত ইইয়াছে।

যে সপ্রানুষ্ঠানের নাম উলিখিত হক্ষী, বে.প করি মাধারণে ভাহাদের প্রচুত অর্থ অবগত না थाकिएड পाद्रम, এই জন। सः त्करण छोर्शामत व्यर्ग अकाम कतिरुक्ति। । म कालकर्यः-- मसाम জ্মিলে সকল পিতা ন:ডারই মনে অনবভূক बाह्यादमंत्र मकात हरा, ०१९ मारे की जीवित है होई। अकुछ मर्भाही इउग्नाटड अभर था समध्या क ईं।रात গুরু ভার উহিচাবের কল্পে আসিয়া পা,ড়; সেট অ-পুর্বা আফলাদের নিমিত্ত তং প্রদাত। করণাময় পি-ভাকে কৃতস্কতা উপহার প্রধান করা, এবং উপস্থিত कर्डिंबा @डिलालाम् मल्युर्व मक्कर हरिवाद कना ভীছোর নিকট বল প্রাথ্ন। কবাই এই অনুষ্ঠানের উक्तिमा। २स नागकवर्ग-- प्रकाल मिलिस क्रियद्वत উপাদন। করতঃ महाधनत नाम व्यमान कनियांश জनाहे बहे चावकान । ७३ छेलानान--रयन दमर्थः योग्न मखात्मत तुम्ब अतर तर्याधद्राल किंगर श রিমাণে পরিপক হইয়া আদিয়াছে, লে ধন্ম। ाटमण धहरण भक्कम इहेसाटड, उथन लिखा ४ %। भाष्ट्रे अनुष्ठीराचारा मस्तित्व उपयुक्त निकटका इट्डिंगमभू १ कटत्रा हर्य भग्नीमोका- मधान সদ্যাচারী প্রাহানিও শিক্ষাকর নিকট ঘ্যাবিদ্যি निका शहिए। गथन धर्म कि छादा द्विएक शासन, এবং ভন্যহণে সমুৎস্কুক হন, ভখন জিলি अभिवादक माक्का केवल माश्राह्म नगरक ४८-पा: মূলদত্তে বিশ্বাস প্রকাশ করিয়া ভংগাত্রপাল-नार्थ प्रष्ठ व्यक्तिक। करत्न,-- वह गरम ताली भर्मा त्रीका बदन। एम विवाह—हेश मनुषः श्रोबः नत्र अ কটা জীভি উৎকৃষ্ট ও প্রিক্ত শ্রুপ্টান । সকল সভ্য জাভিই ইখার প্রকৃত স্থাদর ও সম্মাননা করিয়া- 🔻 ছেন। ঈশর স্ত্রী ও পুরুষের নথের ফ্রেপ্রির সম্বত্ত मर्द्वाभन के त्राटिकन, कार्टिक तक्का अ भावन य-ब्रिक्टात कनाई वह विश्वक कार्शिदन द्र मृश्वि । ७० वा रखाणिकिया—बहे अधूक्षेत्र अर्थ त्रदेश अर्धन छ: ঘাঁছাদের ভাষরে মৃত বাজিকা প্রতি কোন না देशनि मद्भारतह लिएस इस: "उँ होता कवन हे हेहार क इंडाइड क्रिएड शास्त्र मा। १५ ७ टेनर सनू-क्रीन, आह्व । स्य भिन्त मार्ज आमारमह अन्। गः

বজীবন অসংখ্যা অসংখ্যা ক্লেশু সহা করিয়াছেন বাঁহারা আমাদিগের নিমিত কুথার নময়ে আহার. বিরাম সময়ে বিশ্রাম করিতে পারেন নাই; আমা-त्मत किटम मझल इहेटव त्महे खेलांव छिहांवन করিছে যাঁহারা চিরকাল চিস্তারপে অগ্নিতে দঝ-হ্দয় হইয়াছেন, যঁডারা সর্বা প্রতিপালক পর-মেশবের প্রতিনিধি সকপ হইয়া সর্ক্ষণা আমাদের লালনপালন ও নজল সাধান করিয়াছেন, মৃত্য জনিত দেই পিভামান্তার সহিত দীর্ঘ কালের নিষিত্ত বিচ্ছেদ হটলে ভাঁহাদিগের জনা আমরা ধেকুভজভা, ভক্তি ও একা সঞ্চ করিয়াছিলাম, ভাহার পরিচালনা ও পরিচ্যট এই অনুষ্ঠানের শুদ্ধ পিভামাডার विद्योर्ध क्नि १ ल का। যে আমাদের সম্বিক কুতত্ত্তা, জীভি, ভক্তি এবং শ্রন্ধার পাত্র, উ।হারই সমক্ষে এই অনু-ষ্ঠান অনুষ্ঠিত হইতে পারে।

একট্ট অনুধাবন করিয়া দেখিলেই স্পন্ট লক্ষিত ক্ষ্টবে বে বাহ্যিক অনুষ্ঠানের যে ছুই বিশেষ শুণ থাকা আবশাক এই সকল অনুষ্ঠান ভাষ। হইতে विभिन्न नहरू, वहर हिंदामिश्यंत मस्या समित ভাবেট ডাহা দুট হয়। ইহারা আমাদেব আন্তরিক ভাব একাশক কি না, জাতদৰ্ম, অস্তোটিকিয়া, ও লান্ধের প্রতি দৃষ্টি করিলেই ভাষা জানা যাই হত পারে। অপিচ ইহারা আমাদের আফার উ খতি সাপনের পরেজও মহত্পকারী। 'বভরী আমর। আমাদের আমেবিক ভাব সকল বাধীনকাপে প্র-কাশ করিছে পারি, ভতুই আনাদের আলা উল্ভ ७ दलिले हरा, क नियन गडा इहेटल, कांडकमा, অন্তোফি ভিয়া ও শ্রাদ্ধ ছারা আমরা মহত্বপকৃত हरू भटकर नारे। धर्मानीका ७ विवाद्धत अनुक्रीन ষে মনুষ্য নগ'জের পক্ষে কভ দুর উপকারী ভাহ। লিখিয়া ৰাজ্য করা যায় না। যাহার। প্রকৃত ধর্মার্থী इज्या माध्य छनी मदशा प्रधायमान इउं के बद्दत भर्म म!किञ् च छत्त चातुः ७ तः क्रांत्राट्म, धारः পর্মার্ক পালনে দুড় প্রতিকারত হইয়াছেন, তী-হায়াই ধর্মদীকা রূপ অনুষ্ঠানের উপকার কদ্ণত क्तिग्राटक्न,-- निक्ठग्रहे खनादक हेश वृत्रीन छात्र। পর্মদীক্ষার প্রভাবে মনুখোর জীবন সমাক পার-হ'ব্ড হট্যা ন্ধ্জীবনের আবিন্তাৰ হইরা থাকে, काद्रव भन्निकाद अखाटा मनूमा मार्मातिक मुलिन कीवन हरेए डेजीन हरेगा अविक स्नीय खीवन भारत श्रम कतिएक मक्तम एस। विवाह क्रम जासूकीन पाता कि जिलकात इंटेटक **लाउन लाउन विकिट**न हेटन । अभिक्ष अनुर्काम द्वाद्वां अकि मनूरवादहे বেমন উপকার সাধিত হয়, তেখনি অপন্ন একটী ट्डाइड्ड कलान निक्नामिख **एड्ड**ा बादक । रेश भन्तारक खाकुकाव स्टब क्कन क बनाव कार्

मर्थभागा धरे अपूर्धान मनत जाक बार्जान-शर्क मरशा मरशा अकटक मर्कनिष्ठ करत्र, अवर विश्वष्ठ कर्षात्रकथन ७ उत्रामना बाह्रा त्मरे প্রেম সরপের সমিধানে উপনীত করে, ভাষা-তে ভারাদের পরস্পরেম ভাব আপনাপনিই उपात्रका अव्य करता निष्य वर्षन व्हेरम् উংকৃষ্টভর * পবিত্রভর ব্রাহ্মদিগের আন্তরিক ফ্রিড বল দর্শন করিয়া আমরা আধাজিক वरन वनीयान इहे, मन मरमाद्र करहेाद्र इहेरल छ ভাঁহাদের প্রীভি বিক্ষারিত উক্তল নয়ন বিলো-কন করিয়া বিগলিভ হয়। বস্তুতঃ নিয়ত শাধু গল করিয়া যে অমৃত কল লাভ করি, অনুষ্ঠান ए। दा दम मकल हे लक्ष इहेबाद महाबना। अनुष्ठीन-मकल य चात्र कल जानना कलान माधन करत, সময় থাকিলে ভাষা বর্ণনা করিভান। একণে এই রূপ সামানা বিবর্ণ ছারাই সম্ভুক্ত থাকিলে इंडेटव ।

পর্যাদীকাই বাজি নাতের প্রথম অনুষ্ঠেয় ক্রিয়া, অভারৰ ভাষা ইইটো আরম্ভ করিয়া পাঁচ শেষে প্রাভের বেষয়ে বক্তবা বিষয়সকল বাজে করিব।

(ক্রমশঃ প্রকাশ্য)

- - wishidomin -

मःवीम ।

বিগত ৬ই ভাতে প্ৰদ্ধাম্পদ প্ৰযুক্ত বিজয়কুষ বোষামী এবং জীমুক্ত আগ্রদাপ্রসাদ চটে,পাধাায় महाभंदाता जाकामभादलत उलाहार्यालाम याजित्रक এই द्राक्षण्य एकल उरमाइ छ क्रियाद्या । निश्ची महकाद्ध अञ्चला अर्थास दाक्तपरमात्र छ-প্রদেশ পালন করিয়াছেন ভাষা আলোচনা ক-तिरल **डाँश**िम गरक है डे छ अराज विर्यय **डे अयु**क्ड বোধ হয়। কাহারও অকারণ প্রশংসা করা ত-खुरवाभिनी পত्रिकांत शक्त महत्व नां, किन्छ थहे ছুই বান্ডি গর্মের জন্য যেরূপ ক্লেশ, যতমূর অত্যা-চার সহা করিয়াছেন ভাষা সর্বসাধারণ সকল ত্রা-ক্ষের অবগত হইয়া ভাহাদিগকে দুটাভ স্কাপ জ্ঞান করা উভিত। তাঁহাদিলের মত এক শত आमा आश इहेटल छात्र कर्दर्श स्य कार्भव मझन 1. 1. 1 হয় ভাহার আর সন্দেহ নাই।

ভাহাদিশের অভিবেক কালে অধান আচার্যা মহানায় যে নিয়োগ পার প্রদান করিয়াছেন ভাহা নিলে প্রকৃতিত হইল। গৌরাং।

gfe mai mun-dinften Umiristopera -viam ekeni ginima min-muningen)

वरम कतिर्दे । उपानाताक कर्नेताकान जेली-क दन महामा वजुलील वाक्टिन, बर्के मर्बनायावन मत्था काहा विकत्त कतित्व। अभागम अभागितम ७ गृहधन्त्र बालदन नियंत्रण हरेटि । नियं धर्मी-नेकाटम अविक रहेगा अविक-यत्तरशत महबादम का-सक्त छेलाटकांश कहिट्य धवर मञ्जूष्टमान अ माधु मु-केन्छ खाँदा नेश्वरद्वत शटथ नकरलत मनर्टक जाकर्ष कॅब्रिया। अक्रजनक छल्कि कदिता, ब्रखनिनिक ममानत कतिरव, उ मकलंटक रत्थां शेयुक गन्मान मिटव। श्राधीन इटेशा विनशी इटेटव। शंदत्र অত্যক্তি দকল সহা করিবে, কাহারো প্রতি বেষ করিবে না! অনো ঘদি ভোমার প্রভি অসাধু বাবহার করে, ভুমি শাধুভাব অবলম্ন করিয়। তা-হাকে শিকা দিবে। "পাপাচারী ৰাজ্তির প্রতি आश्रीहाद कदिरव मां, किन्ह मर्खमा माध्**र था**किरव।" गम्भरम विभरम, कुछि-निम्मारङ, मान-अर्थमारन অবিচলিত থাকিয়া ব্রাহ্মপর্ম প্রচার করিবে। ঈশ্র ভোমাকে রকা করন, ভোমার জ্ঞান ধর্মা পোষণ করুন---ভোমার শরীর বলিষ্ঠ হউক, মন বীৰ্যাৰান্হউক, জ্বান উজ্ল হউক, অভিপ্ৰায় মহান্ হউক, ধর্ম নিঃস্বার্থ হউক, হাদয় পরিত্র হউক, জিহবা মধুময় হউক। ভোমার চকু ভাদু রূপ। मर्भन करूक, कर्ष छात्र कथा आवश करूक।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরিঃ ওঁ।

কলিকাতা ত্রান্ধাসমাজ } ভই ভান্তে ১৭৮৬ শক } জ্ঞীদেবেক্তনাথ ঠাকুর।

ব্ৰাহ্ম-সমাজ-প্ৰভি

3

ध्यभान यां गर्गा।

উপাচার্যাপদে উক্ত মহাত্মাত্মকে অভিষিক্ত করিবার উদ্দেশ্য এই যে ব্রাহ্মসমাজ্যের উপাসনার কার্ণোর নিমিত্ত একাল অবধি নিদ্ধারিত কর্মচারি तक्किक स्टेर्टर। डेलामना कानीन डेलाहार्यात অনুসন্ধান করিয়া বাহাকে ইচ্ছা ভাহাকে বেদীর উপর উপবিষ্ট করিলে ব্রাহ্মসমাজের অগৌরব করা হয়। কিন্তু উপাচার্যা হিরীকরণ কার্যাধীও অতি মুক্টিন। বাঁহারা ব্রাক্তধর্মের প্রতি বিশেষ অন্তাবিউ ও অসুরক্ত, বাঁহারা কি বাহাক কি আ-धााचिक नकत अकात अनुष्ठीदन है जीका संधनीत चाममं क्राप्त म श्रीयमान इहेटल शास्त्रमः व हिहा कि कार्य, कि श्रीकिरण, कि श्राविकाल ने के मग्र जाडेन जादन धर्म बार्ड लानन करतन है। होता है · উलाहाकी लटमंत्र खेशबुक्त । दा महिन्स केरल गारात छवल भगावक हरेता कर हिन केत जीत wightens collens die bertint afficen diet-N CA MINE MAN AVCTIONAL CONTRACTOR

काह्न बर्जनांन गनरम ज्ञान এবং श्रीकि, अनुशेन अ जिनहें नी श्रीकटन लाटकत कि जानर्ग व जाना अवन कहा योग ना।

ं क्षेत्र ५५ दम ब्यांतर्ग मञ्जनतीत्त्र श्रीमुक शार्थ-জীচরণ শুপ্ত মহাশয়ের শুভ বিবাহ সম্পন হইয়া विग्राट्ड। পরিণীতা বালিকাটী বিপরা কোন এ-कर्षे श्रकाभा श्रीविमानंदम् प्रभिक्तिला, धव व्यक्ति সচ্চরিতা। শ্রীযুক্ত পার্মভীচরণ প্রোসডেন্সী কালে-জের ছাত্র, তিনি স্বরায়ই বিদ্যালয় হইতে উত্তীর্ণ হইবেন। দম্পতি প্রচলিত সমাজে একজাতি ভূক নহেন : শ্রীযুক্ত পার্শ্বজীচরণের বয়ঃক্রম বোধ হয় আমায় ২০ বৎসর, বালিকাটীর বয়ঃক্রম অসুমান ১৫ বংসর। এই কার্যাটী অভিশয় নহৎ ইহা সীকার করিতেই হইবে! এতদারা প্রান্ধবিবাহের আর একটী দৃষ্টান্ত প্রদর্শিত হইন, উপযুক্ত বয়সে নি-বাহের প্রথা প্রধর্ত্তিড ও ছচিট্ট চ্ইল, এবং শঙ্কর বিবাহ অথবা জাতিবিভিনে পরিণয়ের প্রথাও আরম্ভ হইল। ব্রাহ্মদিগের গর্মানল ও সাহদ কভ দুর তাহা এই ব্যাপারটীর দ্বারা সকল সুজ্বন্ধ বা-क्तिमिद्ध निक्षे अजीयमान इर्देत।

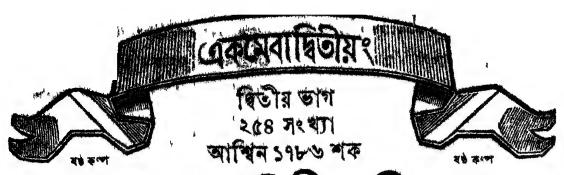
শ্রীযুক্ত রাজা রাধাকান্ত দেব মহাশয়ের পৌন শ্রীযুক্ত ব্রক্তেরনারায়ণ দেব মহাশয়ের পুত্রের জাতকর্মা সম্পুতি ব্রাহ্মপর্মা মতে সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। রাজা রাপাকান্ত দেব মহাশয়ের পৌ-ভলিক ধর্মের প্রতি বেরপে অনুরাগ ভাহাতে উ্-হার পরিবার মধ্যে ব্রাহ্মধন্মের এভ দ্ব উন্নতি দেখিলে মনে অভ্যন্ত আহলাদ জন্মে:

গতবারের পত্রিকাতে বহরম বুর নমান্ধ উ-লেখে কথিত হইয়াছিল যে প্রীথ্যু কাশীশার মিত্র মহাশয়ের দ্বারা উক্ত সনাল প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে; একণে অবগত হওয়া গোল যে তাঁহার সে সমাজের সহিত কোন সংখ্যা নাই, তাঁহা বক্ষমপুরশ্ আর কতকণ্ডলি ভদ্রলোক দ্বারা প্রতিষ্ঠিত হই-মাছে।

বিজ্ঞাপন !

পর্যাশকা-নামক পুত্তক থানি পুনবার সংশোধিত হইয়া ত্রাকাসমাকের যন্ত্রালয়ে মুক্তিত হইতেছে শীঘ্রই প্রকাশিত হইবে।

The state of the s	And a grade and a second and a
কলিবার। বাদ্যুসমেন ১৭৮৬ শব্দের	
অ্যাত ও প্রার্থ নাসের আয় বার	जी पुरू ने किसेन हिंद स्व
रूपा प्रतिव त्रत्व ।	>49140
3354/3	उन्मरण यहाउ समा नाम।
ध्रकात जिल्ला । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	बिर् क श्रहालह्य मह्मनात
ه مستخدم مستخدمه الله الله الله الله الله الله الله ال	् ভाগলপুর ব্রাক্ষান্দাহৈত্ব । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
548820	কোন প্রান্ধ ভাতা
જાતાં >૨૨૨ મ ૧	क्षा सम त्या प
সম্পাত্রের হল্ডে	'বিজয়ক্ষ গোষামী' c
এক ছিল	व्यागमण्डा रंगम् स्रुप्त स
विकास बारिक ১७४/व	কেশবচন্দ্ৰ সেন
्रकार कानक १००	" हिटकस्त्राथ ठोकूस
Service Chamber	व्यक्तिमान द्राम्
ভ্রাক্ষদিগের প্রতিজ্ঞাত নাম্বংসরিক দান।	दिविधानम् व अभियोगस्थितः स्थानानस्य प
	्रिक प्राचन । १९ वर्षा १९ । १९ । १९ । १९ । १९ । १९ । १९ । १९
श्रीयुक्त इवहत्त्र ५	" (मात्रसमाथ ठाकुत्र (शाधुदद्दशाष्ट्रा) :
े कि कुश्चनं क विकास कुश्चनं	ে গোপালচন্দ্র মলিক
is all and the last of any sail	" রাজকুমার মলিক ১
ি কানোগ্ৰাহণ পুৰেশিপাসনাম ও কুঞ্জনিকানী চক্ৰবৰ্তী ২.১	eth.
	" मध्यहास गिर्ङ
্ নীৰ্মাধৰ মিজ ২ ও গোকুলকুল বিংক ২	" অভয়াচরণ হস্ত ৬০
'' राभ्यत्रम् यूर्याश्रामा २	" ভাগৰভীচৰণ ঘোষ
ं जन् रिश्तक विक्र	" दक्मांब्रनाथ तींग्र ।। ।।
⁶⁶ इस्थ स्म	
· इत्राम् पङ्गमति	7,344,
· विश्वताहत्। वास्ताः (५४)।यः ১	নিঘুণী পূজ।
8910	
भागिक नाम ।	भूगा -
महाराज गाजा	কলিকাত। ব্রাকাসমাজের বক্ত 🤫 ৬৫
ब्रिश्च हिमानिष्म वस् २०	উপাসনা ৬৬
া লোলীমোচন যোগ ২০	मदनाविकाम
" क्टरक राज केक्टर 👵 👵 🧎 🥦	अपूर्णादम्य आविभाक्षण 99
" समाञ्चनाम् त्रातः ১०	लश्याम अर्थ
প দারিকানাথ বচফোপোগায় 👶 🐎	আয় ব্যহন্ত্রিকরণ ৮০
" नेश्वतृहस्य विधान्। गत्र 👵 👵 😢	
রামচন্দ্রা বেশিশুল 🔒 🖓	তত্ত্বোধনী পতিকার মূল্য নিরূপণ।
" मार्गत्याच प्र	অधिम मृता (क्लिकाजात क्रमा)
ें नीवकनम बंदलगार्भाशनाम ें कि	((यकः श्राम् स्मा) ७५०
	मानिक मूना
ওভক্রের প্র	CANADA SAN SAN SAN SAN SAN SAN SAN SAN SAN SA
विषक्र कानीनांच क	
man Man in an in the man in the man in the contract of the con	The paralle of the state of the
· 「 「	- California (18) 25 MM (4 18 18 1945) 23



তত্ত রোধিনীপ ণিকা

রশবাধকনিদমগ্রশাদীখান্ত কিখনাদান্তিদিক সর্বাদ্দেশ। তদের নিডাং জানমনস্থং লিবং শ্বজ্ঞানিরবয়রটেমক-মেবাবিতীয়া সর্বাহাপি সর্বানিয়ন্ত্ সংবাভায়সর্ববিৎসর্বাদ্দিনত্ত বিশ্বতিন্দিতি। একনা ডিসাংবাপাসন্যা পার-ব্রিকটেম্ভিক শুভায়বৃত্তি। তশিন্ জ্ঞাতিজনা জিমকার্যসাধনক তদপাসনাম ।

বিপদ্কালে ব্ৰহ্ম স্তোত্ত।

হে পরমান্মন্! যে দিবস হইতে আমি এই পৃথিবীর আলোক দর্শন করিয়াছি সেই দিন হইতেই তোমার করুণামৃত আ-মার প্রতি নিয়ত বর্ষিত হইতেছে। তুনি क्छ ऋथ मन्त्राप्त व्यागादक উৎकृत कतिशाह; ভোমার বাহু প্রসারিত হইয়া কত উদাত বিপদের আস হইতে আমাকে রক্ষা করি-রাছে-কিন্ত তোমার কুপা-বলে অদ্যকার কঠিন পরীকাতে যেন উত্তীর্ণ হইতে পারি। **এই मक्टे मग्रत्य यपि ट्यामात पर्मन शाह** তবে আমি ছুব্ৰলু হইয়াও ভোমার বলে, কুটিলভম ছরবস্থাকে প্রাস্ত করিতে পারিব। नाष । जानि स्मित्मन विकृष्टे मुर्खि (मधिन्न) ভীত হইরাছি, ছঃখের কণাঘাতে অবসন रहेन्नाहि पूर्व कांत्र पूर्व कांक्जि ना। चांबादक विश्वत अ नीम हीन व्यक्तिया जहना नान-वामान नाउत्केत क्रिटिए प्रति भविषां कर, विशव भूगदक अकारी अधिका (काशोध अविद्या १० अशि अविधि मबान्य कात कात रहेते जाना हिन्दून বিকল্পিত হইতেছে, তুমি আমার হন্ত ধা-রণ কর। চিন্তার পর চিন্তাতে ভয়ের পর ভয়েতে আমার আলা ছিল্ল ভিল হইল. षामि थामा-विशेन लका-शैन ७ शिंज-शैन হ্ইলাম, এখন ভোমার শীতল হত্তে আমার মলিন মনকে স্পর্শ কর যে আমার দকলু ষাতনা বিদুরিত হউক। এই কঞ্চা রুটি বঁজ বিত্তাৎ আমার হৃদয়াকাশকে অন্ধকারে আ-জ্লকরিয়াছে ভূমি আমার নয়নের আলোক, আত্মার আশা, চির দিনের সরল, ভুমি আমার कीतरमद कीवन, आमादक पर्मन पिता क्र-ভার্থ কর, আমি ভোমাকে দেখিবার জন্য ৰড় আকুল হইয়াছি। হেনাগ ! তুনিই মেই সূর্যা যাঁহার আলোকে অনন্ত আ কাশের নক্ষত-পুঞ্জ শুভা কিরণে অনুরঞ্জিত রছিয়াছে।

নাথ! অতীত কালে কত বার আমি
বিপদ্ কলধিজনে ভালিতে ভালিতে তোমাকে ডাকিয়াছি তুমি আপনি ভেলক

হইয়া আমাকে কুলে উপনীত করিয়াছ।
কডবার শোকের রিষমতর আঘাতে আমার
মানদ তরনী চূর্ব হইবার উপক্রম হইয়াছে
পুনর্বার ভোমার আদেশে নিমেনে সকলি

निष्ठक श्रीमाण स्टेशाला, जुनिस्मानात श्रीक सामाद (महे सक्या अर्थान कर ।

ा है। जनस्य नास्ति निरम्पन शिक्ष ভোমার পুরুষ্ট্রা ক্রিদের সহিত সম্ব पूर्व बार्क इंटर की उट्टर मा, कामि অর পরাক্তরের এতি লক্ষ্য না রাথিয়া তো মার আদেশ প্রতিপালন করিব। এই ममरत তোমার নিকট কেবল প্রার্থনা যে শোকাতুর হৃদয়ে অঞ্চ পূর্ণ নয়নে ভোমার করুণার উপর নির্ভর করিতে যেন কথ্ন লজ্জিত বা বিরত না হই এবং তোমার আক-পট পিতৃ-ক্ষেহের অতি আমাদের যেন-কোন সংশয় না থাকে। কত লোকে তো-মার নত্য প্রতিপালন করিবার জন্য প্রস্থ निष्ठ व्यक्ति नियोग अहे वह यद्भार भहीत নিক্ষেপ করিতে তিলার্দ্ধ সক্ষ্ চিত হন নাই। জোমার আতিই ভাঁছাদের এক মাত্র লক্ষ্য. দেই জীতি অবলয়ন করিয়াই ভাঁহারা পুণি-বীর কঠোর নিষ্ঠুরতা দহু করিয়াছিলেন, এবং এখন ভাঁচারা ভোমার প্রীভিতেই নিময় হইয়া সকল ক্লেশের পুরস্কার লাভ করিতেছেন। আমার তুর্বলতা ভোমার নি-কট অবিদিত নাই, আমি তোমারই স্বারের चिक्कुक इहेना এकां छ विश्वन्छ स्मार श्रीर्थना করিতেছি আর যেন তোমা ছাড়া হইয়া निশा अन्त वाक्तित नार्ता, अहे जार्तिक সংসারে বিচরণ না করি, ভুমি আমার मृज्ञात वाचाटक कीवरमत मश्रात कर। ছংখ বিপদ্এ পৃথিবীতে নহা করিছেই ক্রবে, ভাহা ভোমার**ই এেরিড, ভাহা ধ**-র্ম্মের পরীকা, পর লোকের নোপান । নেই ছঃথ বিপদ্ ভার ভোমার ভরমার চির জীক नरे नाथा मटल मखटक तस्त कतिय, किंक यश्रम प्रविश्व होत्र एक भारति व्यवनाम् भाषा শরিতাত হইবে, ভরন যেন ভোমার চরণ-ছারার বিশ্রাস পাই । ১৯৯৪ টিনির

কে বিষ্ণাং কোনার মান্ত্রার স্থানিক বালার নালার নালার নালার নালার নালার কালার কালার

छेशामना।

গতবারের পত্রিকাতে প্রার্থনা কার্যার নিষেধ্বর নিরাক্ত হইয়াছে। প্রার্থনা দে স্বাভাবিক, প্রার্থনা যে অটেকীদন্পন্ন, প্রার্থনা যে ঈশ্বরের আদিক ও নিয়মিত কার্যা, প্রার্থনা বার্তাত যে আত্মার উন্নতি সম্ভাবিত নহে বোধ হয় তাহা একণে অনে-কেরই প্রতীতি হইয়া থাকিবে। অতএব মুমুক্তু ইয়া ঘাঁহার। এত কাল একাছ-তদ্যত ভিত্তে ঈশ্বরের অমোঘ সাহায্য প্রার্থনা করিয়াছেন অবশাই তাঁহাদিগের পরিক্র সংকম্প নিদ্ধ হইয়াছে, অবশাই ভাঁহানা যথা-পরিমানে আত্মার উন্নতি সাধ্য করি-রাছেন।

কিন্ত বৰাৰ্থই কি আমাদিনের আছা।
উপযুক্ত উল্লিড করিয়াছে ? বনাৰ্থই
কি প্ৰাৰ্থনা হারা আমরা উল্লেছ হরণ-ছালা
লাভ করত আলোম্ভির সেন প্রকার
প্রান্ত করণা মিনানের কর্মনান্ত বৃদ্ধি জন্য প্রান্ত করণা মিনানের কর্মনান্ত বৃদ্ধি জন্য প্রান্ত করণা মিনানের কর্মনান্ত বৃদ্ধি জন্য প্রান্ত করণা মিনানের কর্মনান্ত

এই ৰূপ বিবেচনায় কন্ত কত নির্বেশ্ব ব্যক্তি আত্মার ও প্রার্থনার প্রকৃত তত্ত্ব না অবগত হইরা উভয়ের প্রতিই উদাসীন হয়,এবং
পরিণামে উভয়েরই অগৌরব সাধনে প্রবৃত্ত
হয়। প্রার্থনার সফলতার জন্য যে যে বিধি
পালন করা উচিত তাহা না পালন করিলে
তাহাদিগের চেটা যে অকৃতকার্য্য হইবে
তাহাতে আর সন্দেহ কি ? অভএব প্রার্থনাবিপক্ষ এবং প্রার্থনা-সাপক্ষ উভয় পক্ষের
বিবেচনার নিমিত্তই আময়া প্রার্থনা সম্বনীয়
নিশ্ব-লিখিত কভিপয় বিধি নিদর্শনে নি-

পূর্বেই কথিত হই গাছে যে অভাব
ভিন্ন প্রার্থনা অনন্তব, যাহার যে ব্রিব্রের
অভাব নাই তাহার নে বিষয়ের জনা প্রার্থনাও নাই। অভএব যদাপি অভাবই
প্রার্থনার আদি কারণ হয় তবে কিনে আনাদিখের মনে মর্শ্বের অভাব জবে, কিনে
আন্মা আপন্দিখের সহস্র সহস্র পাপবলিন্তা বৃত্তিতে পারি, ইম্বরের নিক্ট মুভিন্ন জন্য প্রার্থনা করিবার পূর্বের ভাষা
সমাক রুপে মুবর্গত হইবার চেন্টা করা
কর্মান্ত করিব। তুর্বের হিন্তা করিব
কর্মান্ত করিব। তুর্বের হারার অন্তর্থনা
করিবার করিব্রের ব্রেরার অন্তর্থনা
করিবার করিবার অন্তর্গত করিব
করিবা। তুর্বের হারার অন্তর্গত করিব
করিবার করিবার অন্তর্গত করিব
করিবার অন্তর্গত করিবার অন্তর্গত করিব
করিবার অন্তর্গত করিবার অন্তর্গত করিব
করিবার অন্তর্গত করিবার অন্তর্গত করিব
করিবার করিবার অন্তর্গত করিবার করিবার অন্তর্গত করিবার করিবার অন্তর্গত করিবার করিব

ন সামর শার্থনা করিতেছি খা-रशत कीतरम कि के हुन जान नाकि रहेक्टर १ मध्यार्थना कानीन कि बारानि-(श्रेष्ठ अटन अक्ना मसए। होते चीत्र **च**ार व क्ष्यां कामक बरेशास्त्र, जार क्यांश निषां कियो फिक रहेंचा कि शतिवादनत कमा আসরা ভাষার প্রবাদ অকাজকা করিয়াছি ১ आंगोरिश्वत आंब-विका (कांबा ? मनल निम मानाविष गारमातिक कार्या दनक् मनदक নিযুক্ত করিয়া অবকাশ কালে আরামাও স্থের অত্যেষণ করি; বরস দিগের ঝিন্ন মং-দর্ম, জ্রী পরিবারের মধুরালাপ, আহার বিহার ইত্যাদিতে নিমগ্ন হইরা আআতুদ্ কান ও আঝার অভাব সকল বিশ্বত হই, **এবং অবশ্য-कर्जरा कर्या ए। উপাসনা छा-**হাকে নিতান্ত ভারবহ জ্ঞান করিয়া ক্ষণ কাল चूना-स्नदत स्वा वांका खांता कराठे आर्थना সাঙ্গ করি। পরমেশ্বর অন্তর্যামী: কে কি ভাবে ভাহার সমীপে উপনীত इहेट्डिছ, কি মনে তাঁহার সাহায্য প্রার্থনা করিতেছে किनि विषय करन फरमगस्य कानितक यमाणि क्रमदत्र धर्माञाव ना वाध कतिया किवन भोशिक आर्थन बाहा कर्डवा জ্ঞানকে পরিভূপ্ত করিয়া থাকি, ভবে কি আমর। ধর্ম লাভ করিবার উপযুক্ত যে ঈ-শ্বর আমাদিবের সেই প্রার্থনা পূর্ণ করিবেন ? केश्वरतत व्यक्तरित, धरमात व्यक्तरित स्य वान কুল হইরা জগৎকে অন্ধকার দেখে ঈশ্বর डार्शात व्यार्थमा शूर्न करतन, त्य डीहारक দেবিখার অভাব বোগ করিতে শিবেং দী তাঁহাকে লাভ করিবার তাহার অধিকার নাই। অভএব এত কাল প্রার্থনা করিয়া যে আমরা ভাদুশ আত্মার উর্লিভ লাভ ক-तिरङ भाति नाई हेश स्टब्ल जामानिद्योत्हे व्यभनाय, राखिक अकान भ्यां व्यक्ति। वक्र करम वार्गिर कति गारे। युक मिन

च्याच के प्रतरक अच्छी क्षित्रक व्यवस्था है कार जाकरक अवस्थानिसाहि एक तन गीत विश्वीपक बदल वर्गाविक विम्तु क्रमदक्की राष्ट्र निकटे व्यक्ति कति व शांतिकार, निय-**७६ जाजा**त जाजात सामात कार्यात ব্যাকুল চিক্ত হইয়া তাহার এনাৰ জিকা कब्रिकाम, जाहा इहेटन कड पिटन जागावि-নের হানর কেমন পবিত্র হইড, প্রীতি কে-ধন ধাৰত হইত, জ্ঞান কেমন স্থমাজিত হইত ! াকিছ উপাসনা কালীন অবাৰস্থিত विकास ७ उमानीन हिन्दु शकि विनग्नाई অদ্য পর্যন্ত আমাদিগের একপ আন্তরিক प्रतक्षा। व्यक्तव व्यार्थमात व्यथम विधि आश्चानुमञ्जान । এবং আञ्चलना । याँहा-क्रिट्रबंद व्यार्थामात मकन्छ। मन्दर्भन कतिवात অভিনাদ আছে, প্রার্থনা যে কি গুরুতর कार्या र क्षोदा य शकि मसुर्यात्रहे कछ মঞ্জ সাধা, তাহা ইাহাদিগের জীবনে প্-রীকা করিবার ইচ্ছা আছে তাঁহারা চেকা করিয়া আপনাদিলের গড় অভাব দকল জ্ঞাত হউন এবং অকণট ভক্তিভাবে পরম পিডার নিকট প্রার্থনা করুন, এই আমাদি-গের অনুরোধ। এই প্রকারে কত লোক পাশাক্ষকার হইতে মুক্ত হইয়া মঞ্ল-বৰ্ষণ পরমেশ্বরের মুখ জ্যোতি দেখিয়াছে, এবং চিরকাল দেখিবে তাহার আর সংখ্যা নাই।

কিন্ত কেবল অভাব জানিলেই হইবে
না তাহার নিমিত্ত ব্যাকৃল হইয়া ভলিবারণ
চেন্টা পাইতে হইবে। অনেক হুম্মানারী
ব্যক্তি আপনাদিলের ধর্মাভাবের বিষয় বিলকণ অবগত আছে,এবং তফানা সমরেসময়ে
অভবে ক্রেশ্ড পায়, কিন্তু উদুলা হুরবছার
নিনিত তাহাদিলের মনে কিছুমাত ব্যাকৃদিলা
বা চেন্টা জন্ম না। তাহার পাল কিন্তু
আছ-মানি সন্ত্রেও চিরকাল পালে কিন্তু
থাকিতে চাহে। যদি আত্মানিকার লাক্ষ্য

THE REST OF STREET ! MY AN THE ARE SHOWN TO GREEK WINDOW ares the venture, air counts wi-आंत्र होताका निवासक मी बहेदन किन्द्रदक्षे टर्फामान मदन मक्तमको सा कदन कदन पन-पट्ट नहर निकाद नाश्वा किया कहे. अपन ट्यांगां याचना पूर्व हरेटन, कारन एव ठीरात समा धकार पीम रीन रत वारादकर তিনি আছা দান করেন, তিনি অভি যতের धन, निजास चाकिशन ना कतिता साहादक থাপ্ত হওরা যার না। অতএব প্রার্থনার विजीव विधि वार्क्नजा । त्यमन आमामिटनेत्र অন্তরন্থিত পাপ-সমূহ অবগত হইতে চেটা করিতে হইবে, ভেমনি ভলিমিত্ত ব্যাকুলভা ও কাতরভাকে অবলয়ন করিতে হইবে। অভাব জামিয়া কাতরত। সহকারে যে তাঁ-হার নিকট প্রার্থনা করে তিনি ভাহার প্রা-र्थना मकल कट्रान।

কিন্ত কেবল ব্যাকুনতাতেও সকল কাৰ্য্য শেষ হয় না। আপনার পাপের জন্য যেমন वाकित रहेर इंटर एमि वार्यन का-লীন ঈশ্বরের মঙ্গল ভাবের প্রতি বিশ্বাদ রাখিতে হইবে। পাপ-ভারে ভগ্ন হইয়া শোকাকুল হৃদয়ে যৎকালে পরম পিতার নিকট আর্থনা করিবে তথন যেন তাঁহার প্রতি একান্ত নির্ভয় ও তাঁহার মাতৃ-ভাবের প্রতি একান্ত বিশ্বাস থাকে। আমার আ থনা-বাক্য, আমার কাতরোক্তি পরম পিড়া अनित्वन ना, यं किन किका कहिना रक्निन कारणहे था जिक स्ट्रेट शाबिय ना, खेळा कांच जार रहेट गर्यकार बाबादक प्रका तित्य। यथन (म व्याचन मन्न काट्य के च-**८**इत निक्के निट्यम काइट्य विषय हिट्य ाशात गक्रमण अञ्चल केतिरम । श्रीकेत TAPLE IN POLICY STRIP AND THE SAVIE

विशास कटाम नां। यनि त्यामा समस्म क्षामांकड साथु छात्र बादक, यहि कक सार्ड मत्रल हिट्ड ठीड़ांत्र निक्षे चीत्र चलाव क्षराम क तमा शीजन हरेटक हांव, व्यवसारे তিনি ভোমাকে রক্ষা করিবেন। হা। ভা-হরে অবহা কি শোচনীয় যে শোকভারভয় হাদরে অহনিশি ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা क्रियां अपरन करत मृत्ना त्वानन क्रिकांच, কেই আমার যন্ত্রণায় কর্নপাৎ করিল না, मेश्रेत यामाटक मर्भन मिटवन ना, यामि छै।-হার তাজা সন্তান, চিরদিনই আমি চুংখ-नावाधिदक नक्ष रुश्व ! शः भारे वा कि मोडागामीन, त्य द्वःश विश्वतः म्याना পরম পিতাকে নিকটে দেখিতে পায়, এবং তাঁহা হইতে নিজ প্রার্থনার সায় পাইয়া. ভক্তিকৃতজ্ঞ। বিশ্বাদে পূর্ব হয়। তগন ा मान करत य यनि अ वामि नीन हःशी, যদিও পাণে অপবিত্রতায় নিতাম্ভ মলিন, তত্তাচ অনাথ নাথ প্রমেশ্বর আমার প্রার্থনা প্রৰণ করিলেন, আমাকে চরণে স্থান দি-বেন, আমি চিরকাল তাঁহার প্রতি ক্রতজ্ঞ থাতিব, চিরকাল ভাঁহার পদানত থাকিয়া कीवनटक मार्थक कतिव।

যাহারা ভ্রম ও কুসংকার বশতঃ তাঁহার
মঙ্গল ভাবের প্রতি নির্ভর না করিতে পারে,
এবং তাঁহাকে ত্রস্ত রাক্ষম-সমান রোশপারবশ, বা অভিমান-যুক্ত মনে করে, তাহার।
দেবান্তর কম্পনা করিয়া কম্পিত উপারে
তাঁহার নিকট অনুগৃহীত হইনার অভিসন্থি
করে। অথবা এতান্ত কুনংকার বিব্যক্তি ত
হইয়াও যাহালিলের আগনার প্রতি একান্ত
ভূগা নিব্যান নির্দ্ধিক নাই ক্রান্ত আনার
ভিত্তি সভাবিত নাই ক্রেই ক্রান্তর্গারীর
ভিত্তিক প্রান্তিক বাহা বিব্যান ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রেকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রেকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রেকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রেকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রেকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার

প্ৰাৰ্থিক করে। কিন্তু ভাষাৱাই তাম ঘা-হার সাপ্নাদিগের ছুরবন্ধা ও মলিনতা দেবিরাও অঞ্জিত্ত বিশ্বাদে প্রতিত-পাৰনের পবিজ্ঞার প্রতি নির্ভন্ন করত দিবা নিশি কাতর-স্বরে তাঁছার নিকট প্রার্থন। कर्द्रन, এवर निध्मश्रभाग्न- किरुख सारे धार्थनात्र সকলতা প্রত্যাশা করেন। 🕆 ঈশ্বরের ক্রোধ পরিতোষণের জনা ঈশ্বরাবভার चमृग्ठे-शूर्व रानद्वत चात्राधना कता छाँ।-দিলের পক্ষে আবিশাক নহে, কারণ ঈশার नत-राम् धार्म नः कतिया ७ नीम कृश्मीत समय কুটারে নিয়ত অবতীর্ণ রহিয়াছেন,এবং কা-হার দার। অনুক্রন। হইয়াও তাহার রোগ শোক মুক্ত করিতেছেন। অতএব বিশ্বাস, প্রার্থনার দক্ষতার প্রতি বিশ্বাদই প্রার্থনার ज्जीम विधि। यथन त्य विवद्यंत्र अन्य श्री-র্থনা করিবে তথন ঈশ্বরের সাহায্যে সেই বিষয় সিদ্ধ হুইবে এনত বিশ্বাস করিবে; विश्वाम ना कतिता धार्थना तथा।

কিন্তু অন্তরের অভাব অবগত হইয়া नाकित क्रम्टर विश्वन्ह-मटन आर्थन क्रिटल ह কার্য্য কালীন চেউ। আবশ্যক। আমি যদি উপাদনার দময় আগ্রহ, ব্যাকুলতা ও বিশ্বাস প্রদর্শন করি, অগচ কার্য্যকালে ष आंगगण. পार्श्व रेष्ट्ः भूक्वक विश्व रहे, তবে আমার প্রার্থনার বিশ্বাদে বা প্রীতিতে ।ক কল । শাশ হহতে মুক্ত ন। হহবার ইচ্ছ। সম্পূৰ্ণৰূপে আনার চরিত্র ছারা প্রকাশিত **स्ट्रिट्ट। यथन व्यामात गृह हेव्हा मा**-পেতেই ধাবিত इहेल, अन्तर कि आमात्र মৌখিক আর্থনা ভাবণ করিয়া আমাকে পবিত্র করিবেন? কথনই না৷ যে পাপ नित्रकितरात कांत्र श्रेश्वरतत निकंटे था-র্থনা করিবে, সেই পাপের প্রলোভন উপ-व्हिष्ठ इरेटन श्रोत कियाबाता व्यानभटन स्वा-মাকে রক্ষা করিবে, এবং তাঁহার সাহাত্য

পুনঃ প্রার্থনা করিবে। তিনি সময়ে সময়ে है। इस खङ्गिमारक शत्नां चरन मस्या নিক্ষেপ করিয়া তাহাদিগের সরবত। শ্রহ্মা ও ধর্মান্তুরাগ পরীক্ষা করেন,এবং ভত্নজীব হই-বার জন্য যে একগুণ চেক্টা করে ভাষ্টকে তিনি সহ্স্তুণ হল বিধান করেন, যে এক-छान महिता आर्थन कटत डोहाटक महत्य छप সাহায়। প্রদান কানে। প্রার্থনাও করিব অবচ পাপানুষ্ঠানত বারিক এ উভয় এককালে म अद्यामा। आर्थनः चाहात ८७ निग्र कार्य। त्म छे चर् नभीदम , यनात छ। छछ। तम करिएक भाषां जुलान कार्य रूपकेन्य इश्, कथनरे ७ ाडि ८०% व गोत्र मा , অক্ত-ৰূপে প্রাধান করিলে জীবন কেতে ভাষার চিত প্রামত হইবেই হইবে, গা-শের বিশানীশে একী অফিবেই মার্টেরঃ কে-ৰল লাগিলা কৰক্তৰ অনিজ্নেশৰ ভৰ্ণনে এই জাৰ লক্ষিত হয় না ৷ চেকা প্ৰাৰ্থনয়ে চত্য এবং শেষ বিভি । যে প্রি**মাণে প্র** ণ্না "বিশ্বৰ প্ৰকৃত ও আন্তবিত সেই প্ৰ विशाहन क्षीवन পारेख, स्मारे পंतिमादन পাर्षत विभवीरक क्यां विविष्ठ का हेश निश्वास्त्र शङ्या ४८म्मे यस्त शृहास्त পাপেরও দেইৰাপ। পাপ-শ্রন্তি একবার হৃদ্য:ক অধিকার করিলে শীঘ তন্ত হওয়া অভান্ত ক্রিন। ঈশ্ররের প্রতি যথা কথঞিৎ ভক্তি নাকিলেও পালের প্রতি অ-विक अत जिया शास्त्र अकरार था-প্রাও অধক্ত হইছে পারে। খাল ব্লানা ও নিপ্রহাতিশার হয়, কিছ ইহা । এন্ও ক্থান **আত্মার প্রকৃত** উন্তি সম্যা**বিত** বাং । পরন নারিবান প্রমেশ্বরতে কেবল 'থকে উপহার বা বাকা **উপহার দিলেই হ-**উবেনা, কিছ স্থীবনোপহার দিতে **হইবে**, জুমি গে পাপকে ঘূণা কর,এবং ভাঁহার পথে

গমন করিতে প্রতিক্ত হইয়াছ কার্যাধারা তাহা প্রদর্শন করিতে হইবে। তবে তিনি তোমার হন্ত থারণ করিয়া ধর্মামূত-থামে লইয়া যাইবেন, তবে তিনি ভোমার ক্ষুদ্র ক্লয়কে প্রশস্ত করিবেন, এবং ভোমার ম-নোবাঞ্জা পূর্ণ করিবেন। অভএব কেবল প্রার্থনা করিয়া কার্যাকালে উদামীন থাকিও না, কিন্তু প্রাণগত চেকা দ্বারা দ্বায় প্রার্থনা কে সম্পূর্ণ করিও। এই প্রকারে ক্লয় দ্বারা, বাকা-দ্বারা, কার্যা-দ্বারা এবং চেকা-দ্বারা প্রার্থনা করিলেই পরম-পিতার নিকট প্রার্থনা প্রান্তা হয়, নতুবা তাহা অকার্যা-

প্রথম কার্যের বিধি চতুঠয় নির্দ্ধারিক হটল। প্রথমতঃ আছাচিতা ছালা হৃদদের অভাব এবং গাপে দকল পরিষ্কার কলো জালিতে হুইবে, ছিতায়তঃ সরলভা,কাভরভা ও আগ্রহাতিশয় সহকারে ঈশ্বের নিষ্ট দেই মকল অভাব নিবেদন করিছে হুইবে, অকঃ-পর অভি বিশ্বস্থ বিনীত চিত্তে ভাঁহাব দা হায়া প্রাথনা করিতে হুইবে, এবং প্রবেশবে চেন্টা ও কার্যা ছারা নির্দিট পাপ্তে বর্থা সাব্য পরিভাগে করিতে হুইবে।

এই প্রার্থনা অতি কঠিন কার্যা, ইহারই
প্রতি আমাদের ধর্ম, ইহারই প্রতি আমাদের ধর্ম, ইহারই প্রতি আমাদের করিছেছে। সমরে সময়ে
এই প্রার্থনাকে পূনা ও বিফল দেখিয়া
আমরা প্রার্থনীকে পূনা দেখি এবং অস
হার-প্রার হইয়া পরি। প্রাকৃত প্রার্থনা
করিবার সামর্থ পুনর্বার ইশ্বরই প্রেরণ ক-রেন। এককালেই যে প্রার্থনার মকল ভাব
সমাক কপে সকলের ক্লয়ে প্রস্কৃতিত হইয়া
উঠিবে এমত আমরা প্রত্যালা করি না,
কিন্ত কালে ভবিষ্তের সকলেরই উম্পিত ও
উংকর্ণতা লাভ হইবে, এবং ভদ্বারী সকলের জীবন পরিশ্বর হুইবে ইছাই আমা-

দিগের বিশাস। প্রার্থনী অভি ছ্রুহ রচ, আমরা ইশ্বরের সাক্ষাতে ব্রাক্ষধর্মের সক্ষে সক্ষে সেই রত গ্রহণ করিয়াছি, তাঁ-হাকেই সাক্ষী করিয়া মৃত্যু পর্যান্ত সেই রত পালন করিব। প্রাণ সত্ত্বে তালার ক্রিটি করিব না। বার্যার বিকল যত্ন ও হত-চেই হইলেও প্রার্থনা করিতে বিমুপ হইব না; একবার নাপারি শত্রার, শত্রার না পারি সহস্রবার তাঁহার প্রসাদ ভিক্ষা করিব, কারণ আমরা বিশ্বাস করি যে তিনি সাধু ইচ্ছার সিদ্ধি বিধান করিবেনই করিবেন। তার্কিন্দিগের কুসন্ত্রণায়, নাস্তিক্দিণের প্রলোভনে আমরা ভূলিবার নাহ, কারণ তালা হইলে আমাদিলের আল্লাহত্যার

থতএব ছে নির্মাল চিত্ত সাগু বাজি:
বলি ভোনার এই সংসার-মোহ-কোলাহলে
নির্মার পাইবার অভিলাধ থাকে তবে অলা
বিধি দিখনকৈ প্রার্থনা করিতে আবস্ত কর;
সংলারের অনিতা বস্তু হুইতে সময়ে ননয়ে
বিরুত হুইয়া আত্মান্ত্রসকান কর। আত্ম লোষ
জনা কাত্র হুইয়া শীর্ল হৃদয়ে ভিক্তুকের
নায় প্রতি দিন তাঁহার ছারে উপনীত হও,
এবং সকল আমোন সকল সম্পদে জলাগুলি
দিয়া কেবল সংকর্ম সাধনেই যান্ত্র কর,
ভোমার আ্রা পূর্ণ হুইবে।

কলিকাতা-ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা।

भका १४०८ मका

माजतः भिष्णस्यक्षेत्रं नांकां १ क्षाणुक्तान् रहार । मचा धुरी निरंदरयण गता नुसंक्षागुरु ।।

গৃহী বাজি পিতা মাতাকে সাক্ষাৎ প্র-তাক্ষ দেবতা সক্ষপ জানিয়া সর্ক-প্রয়ত্ত্র সর্কাণ তাঁহারদের সেবা করিবেন।

शत्रदम्बदत्रवरे भन्ने तस्त्राव, जिन रेरात

পরম পিতা। তাঁহার সন্তানগণের মধ্যে তিনি এক এক পরিবারে এক এক পিভাকে আ-পনার প্রতিনিধি-রপে নিযুক্ত করিয়া স্থানি-भूग खगानी शायन कतिरनमः अवर निरक्त মঙ্গল-ভাবের প্রতিরূপ যে সেহ মমতা, তাহা জনক-জননীর বিকশিত ক্ষায়ে অপ্ন করিলেন! এই কপে ভিনি প্রভি পরিবারে আপন প্রতিনিধির প্রতিষ্ঠা করিয়া তাঁহার এই বিশাল বিশ্ব-সংসার পালন করিতেছেন। (यमन नरज्ञास ७६न এक এक स्र्यारक व्यद-লগ্ন করিয়া এছ উপগ্রহ্-দক্ত প্রজ্ঞানিত तिहर्दाष्ट्र, मिरे बल এই गण्मात-कार्य এক এক পিতার অধীনে থাকিয়া পুত্র কন্যার। জীবন ও সম্পদ্ লাভ করিভেছে। সকলা গুরুর মধ্যে মাতা পরম গুরু, মাত্রি সেচ ও চুন্ধে প্রথমেই বালক পরিপোষিত হয়। ইশ্বরেরই মঞ্ল-ভাব মাতার জ্বলে সেক্ ৰূপে, স্থনে ছ্রানাপে পরিণত হ্ইয়াছে। मकटनत बननी मकदनत धातिकी त्य अहे शु-चिनी, मांकः এই পৃথিती অপেকাও গ্রী-য়দী ; আবার পিত। তাঁহা হইতেও ওক্তর। অভ্ৰে গৃহী ৰাজি পিতানাতাকে সাক্ষাৎ দেবতা-স্বৰূপ কানিষা, ঈশ্বরের এতিনিধি-স্থাৰপ জানিয়া, মল প্ৰয়ত্মে উছোৱদেব সেৱা করিবেক। কুস-পারন মৎপুত ভাইারদি-থের গাতি মতু বাকা ক্রিকেক, ভাঁছারদের শিষ কার্যা করিবেক ও দরেল আড়াবছ थाकिटवकः। मनमदिवस स्मर्क सिमन्द्रीः, (अङ्-७|क्राटक दक्षण मक्दल मन्दण्ये कदर। ভক্তি কিন্তু দেব-ভাব, তাহা নি া । । । । । । । । । । । । পশুর মধ্যে দেখা স্থেন্ত্রতি কেলন প্রকা, माविक निवंदर और हो किसस स्माट्स किसस যতে গালন করে, কিন্তু পিতা মাতার প্রতি নেই পশু শাবকদিলের জ্বা ভাজি কোথায় ১ ভাক্তর ভার কেবল মনুষ্যো। ভক্তির ভার পশুতে নাই , ইয়া অভি উৎকৃষ্ট ভাৰ স্থ-

ভরাং আভি বিরল কি পিতামাতা সহজেই भुखन्तिक (सह करतनः किन्छ यशिता ग६-পুল-কুলপাবন সৎপুত্র, তাহারাই কেবল ।পতামাতাকে কর্মবান্ত্রায়ী ভক্তি করে। যে পরিসালে ক্ষেহ, দে পরিমানে এখানে ভক্তি মাই। একটি যে নিউরের ভাব, দেই নিভারে ভারটি ভতি ভারতে উত্তে-জিত করে, মেই জনঃ বালকের বত দিন পিতার উপরে নিংস খানে, ৩৩ দিন তার गद्य मद्य खिंड थ्रिक। किनु विचा-तक युना इंडेग्री, कथाकम ७ खाधीन रहेगा, হাহার রন্ধ পিছ আছেকে ভাক্ত মংগারে (मत्र) कद्रः, (महें ७।व निक्रोम किंश्रा है छ-माम भूतिहरू अवत दर्खभाग मापू भिर्धत कीदम-छतिएक अयस राज नाट एम्छेन्ड आदछ শে পিতার জন বুলভার। অগণা কই স্বীকার। कविष्ठांत्रक, शिष्ठात । कन्नके कार्यादम्ब मत्रव चा (अमस्ति। कारो पं नियान हेमात अनि हैं। স্থান বিভাইরণ খাছে। ব্যন পিতা নতি-क्लिक्ष थं छि क्रिक इरेशा विश्व लग स्य ''লেডামানে বনেকে লেলাম ভখন অন্ধাৰিকী ब्हिटकुरु। विश्वा कड़िट इन्हे निहास स्व शि औ यमि अझीकात करिशां अवशक्तरादि आं-बारक धमख्दरन शार्शकेलाना स्नम, खर् ভাঁহার কথা সিখ্যা চইয়া উঠির সাংঘাতিক জনিউ হট্রেক: অওএব তাঁহাকে তিনি क्षे (वर-वाता यात्र क्रित्रा निटनन। "च-भुशका म्य. शृह्यं श्राडिशना छथा भरता শ্লামির মতাঃ প্রতে শ্লামিরাজায়তে भुनः।" "भूकं भूकं भुक्रस्वतः गोह। कतिया বিধাটেছন, তাহা অনুপ্রিম করিয়া দেখা; গার এখনকার সাধু **নজ্জনেরা যে প্রকা**র অভিবৰ কবি চেডেন, হাহাও দেখা। শদোর नः व मन्या कीवं करेश भारत, व्यक्ति कारमात साग मुन्यात जग शहर करहा। अमन अ-निटा समाद्र भिथा कहितात धाराधिक.

কি? অতএব হৈ পিডঃ! তুমি আপনার
প্রতিক্রা পালন কর, আমাকে বম-সদনে
প্রেরণ কর।" দেখা তাঁর কেমন পিতৃ-ভক্তি!
আপনাকে যমেরে দিয়াও পিতার ইন্ট-সাধনে তিনি তৎপর হইয়াছিলেন। আবার
যম যখন তাঁহার প্রতি সন্তার্ট হইয়া তাঁহাকে
বর দিতে অভিলাষ করিলেন, তথন সর্বা
প্রথমেই তিনি বর চাহিলেন যে "শাস্কসংবংশঃ স্থমনা যথা সাহি " "আমাকে
তোমার নিকটে পাঠাইয়া পিতা অভিশয়
শোকাকুল হর্লাছেন; অতএব গাহাতে
তিনি শান্ত-চিতা প্রমনা হন, তাহাই বিধান
কর।" কঠেগানিমদের আব্যাহিকাতে সংক্রা নাত্রিকার পিতার প্রতিক্র

প্ৰফ দেও লাব্ধ গ্ৰাণণ **হইর। ঈশ্ব**রের অধিনি দ্বৰণ পিতামা থাকে ভক্তি ক্যাই खंनाधरपान अथम छेन्दरम् । जासाभिरणस ৰল-বীয়া যাহা কিছু সকলি পিতাহাত। इ-ইতে পাটয়াছি, পিডা মাতারই প্রতি ভক্তি হুত্তি সৰ্ব্ব গ্ৰাথমে উল্থিত ছাউক। কুল-পাৰ্যন নংপুত্র মর্ক-প্রথতে যেন পিতা মাতাকে মেবা করেন, নার্বদা ভাঁছারদের ব্রিয় কার্যা করেন अ आक्रावर् थारकन । अचित्रार्भ मीद्यारनत প্রদানাই, বাঁহারা ত্রাক্ষধর্মের শাসন ও উপদেশ অবহেলা করেন, তাঁহার। হয়তো বিলার গৌরবে পিতা মাতাকে লঘু জ্ঞান करतन, व्यथना धन मरम मख क्रेज़ा कैंक्।त-দিগকে অবহেল। করেন। হে প্রিয় ব্রাক্ষ-সকল। ভোমরা কদাপি এমন গহিত কর্ম করিও না—তোমরা বিদ্যা-মদে বা ধন-মদে উমত্ত হইয়া পিতৃ-ছেলন করিও না। ভো-মরা পিভাষাভার আত্মরে থাকিয়াই বল वीर्या, विमा। यूकि, উপाक्क न कतिशोह अवः ভাঁহারণের প্রমানেই ধন মান প্রতিপত্তি যাহা কিছু লাভ করিয়াছ; অতএব ভাঁহার: দিগকে অবহেলা বা পরিতাগি করিও না।
তোমরা রুক্ক পিতামাতার যকি-স্বক্রপ হইরা
আমৃত্যু তাঁহারদিগকে রক্ষা করিবে: এই
দ্নাতন রাক্ষদর্মের আদেশ। যদিও তোমাবদের প্রতি তাঁহারা বিরক্ত হন, ও তাঁহাদের সেহ অলপ হয়, তথাপি তোমরা তাঁহার
প্রিণ আচরণ করিবে, তাঁহাকে সমধিক
ভালি করিবে। 'খং মাতাপিতরো ক্লেশং
দহেতে সন্তবে নৃণাং। ন তদ্য নিস্কৃতিঃ
বিকাশ করিবে। গংলামাতাপিতরো ক্লেশং
দহেতে সন্তবে নৃণাং। ন তদ্য নিস্কৃতিঃ
বিকাশ করিবে। ক্লেশ সহ্য করেন, শত বল্দা
বেশ ভাচার পরিশোঁর করিতে কেহ শতে

খদা হইতে পরিতাপের বিষয় আর কি াণ্ডে ে ছ:শীল ও স্থার্থার পিতার দোষে भारतक भाग मध्यया करेटच छाछे करेसाट्स, এবং তাঁখার দাসনে ও দুঝীক্ষে তাঁছার। पर्यात्मञ्ज परिचयन कतित्व योनित हरे-গ্ৰহ্ম ৷ ক্ষিত্ৰি পুত্ৰ যদি ভাগ্য ক্ৰমে সত্ৰৰ इहेन, मण्यानी उभावतान् अञ्चलकावन ব্ৰেছা হইল, ভবে ভাঁহার চুংগোর ও কো-দের আর পরিংশ্য পাতে না। ভিনি সেই অসংখ্য নিজপায় ্বলিককে দেব-মেবা ধর্ম-পথ ২ইতে অন্তম কুটিশ্বতম পথে আনি-ধার জন্য তাঁধার আতি নিরব্ধি নির্মাতন করিতে কিছুমাত ত্রুটি করেন না। এমন পিতা কণাপি পিতাই নহেন, তিনি মঙ্গল-নিকেতন ঈশ্বরের প্রতিনিধি-পদ ধারণ ক-রিবার উপযুক্ত নহেন। যে পিত। সংমারে প্রতিপত্তি ছানের ভয়ে তাঁহার পুত্রের ধর্ম-পথে কণ্টক আরোপ করেন ও অধর্মা-চরণ করিতে শিক্ষা দেন, তিনি তাহার ভক্তি-ट्यांच्टक अटक वांद्र गम्टल खुक कदतन। পরক্রব্যাপহারী, নাস্তিক, শঠ, মিথাচারী, প্রবঞ্ক,বিশ্বাদ-ঘাতক, রুভদ্ন পুত্রের নিকট হইতে পিতাকি কদাপি স্বাৰ্থহীন অজা

ভক্তি অত্যাশা করিতে পারেন? কামোপভোগে মত হইয়া তাঁহায় শিরণেছ-मन ना कटत. उटत डिनि कीवन প्राष्ट्रिया व्याख्यादम मृज्य कत्मन । मत्या मत्या वि এমন প্রবাদ ক্রান্ত হর না যে কোন পুতা মল্য পানে উন্মন্ত হইয়া ভাহার পিতাকে গদ্ধী ত্রির সময়ে বাটী হইতে বৃহিষ্কৃত করিরাছে; কোন পুত্র বা ধন-গোলে ভয়কর পিতৃ হত্যা-পালে নিপতিত হ্ইয়া সক্তেভাবে বিন্ট स्वेगोरिक। भूछ वर्गेरीन स्वेटन लिखात बृक्त नग्रदार तक गा इतेवा शक्ये यह । अन তেএর পিতা বলি ভোৱ আভিবায় করেন, उत्त वयां-मा वत्राहर याना ल विद्वारा करें-रवम मा, चीत कर्नरवाद खाँछ (छत-कृष्टि हाथितः छेलदन्य ७ कृष्णेष्ठ घोतः अख-ध-গতের ভাষাকে জ্ঞান ধক্ষের শিক্ষা দিবেন এবং ভাষার সন্ধান-দক্ষা উন্দাপন করিবেন। ভবেই পিভবি শৃষ্ঠের প্রতি কর্না কথা मण्यात का, सर्वा, जनव भूजार आग गएकी स्थिकिक क्षेत्रा, जीवात धारि महर्वाहे যথোচিত ভিভি ও অনুৱাণ প্রধান করিলে।

হে পরমালন । ভাল লিভা-প্রেল বে প্রকার সকল নিবন্ধ করেল দিললে, ত শ উভানেই লোল বালগনে হইয়া রক্ষা করেল, উভারই বেল মনাজানে ভোলারই প্রান্ত করেল, উভারই বেল মনাজানে ভোলারই প্রান্ত করেল, উভারই নেন গাল-জানের সালো নাকল পরিন্তারই সেন গালার জান ঘালস্থা করে। বদল পরেল সকল প্রিলারে পিজা-প্রান্ত অনুবার গোলার মঙ্গলা ভার প্রেল্য করে, তোমার মঙ্গলা ভার প্রেল্য করে। তামার মঙ্গলা ভার প্রেল্য করিলা ভার করে, ইয়ার পতি হু সন্ধান-মক্ষা ভারালিলা করিয়া হুলুনার প্রান্ত প্রান্ত প্রান্ত প্রান্ত প্রান্ত স্থার্থ স্থান করিয়া হেলুনাকে প্রান্ত প্রান্ত সিয়া রুজ্যি স্থান করিয়া হেলুনাকে প্রান্ত প্রান্ত সিয়া রুজ্যি স্ট্রন।

ও একমেবাদিতীয়ং

মনে। বিজ্ঞান।

মনের অন্তর্কেশে প্রবেশ করিলা আজি-জ্ঞান সহকারে অনুসন্ধান করিলে তিন বেকার ভাষে অনুমুভ হয়, জ্ঞানবৈগাক, भवें का जिल्ला कर स्वाह । वायस । ননের মৃত প্রকার অবস্থা সংঘটি । ছট্যা पाटक उरमधुना एके अडबाट्डा उकान मार्टकान ८ अनीत अनुशं ४ ४ हेर् वर्षे ४ ४ द्वा । ক্ষান, ভাহপারে জগতেকাশন, চরিনোরের স্থেকা। कि क्षकार जाकिया क्लोबन मध्यात विश् বিষয়ন্ত্র মানবের মনীর-খনবের সংগঠন ক বিল্লাডের ভাষে আলবরর পরেক্ষ সমাক্রাপ্র 'समुधावन करिए हैंग प्रशाक्षा । (संक्ष्य क्षेत्रक्षकांत्र भट्टा, एक्योदम चार्चाद ०द् ্ভিন এব কাধার চড় প্রেশ ক্রিডে পাচর মা, সেই চুগ্ৰ জানেলেকৈ জালালা অনুষ্ঠিক মার্কা খৌগটোর-পূর্ণ দে হাম্পুণকে সংক্রাফান্ড করি। েন ভাষাকে আলেচনা কান্য উঠিতে শংক্রি। সেন অনু শুভ প্রান্থা মান্থীয रकास-७% हरीत्र हो। हो। इस धर्म भाग महिन्दकी-্রনে আরুজ করিবার জন্ত নিজ্ভপ্ত নিলায় জগনাও সাম কাৰ্যালালা সংস্থাতন নবিয়ালে নান বেধাপ্রার সংক্ষার বৃদ্ধির আন-ल रागा कि । भट्टनत तहना टकोशन अक कारन भुभाकः अत्। (अहार्ल्या)। वीक श्रेर्ड प्रमन ৯ বল উহপুর হর, ভুলার **হইতে যেমন ব**∮রি উৎপত্ন হয়,ফাচিনাপুর্ণ শরীর দেইবাপে উৎ-পন হইয়াছে, এবং রুফালি ভাৰিতা প-দাথের মত এক দিন ভূমিসাথ হইবে। কিন্তু জ্ঞান প্রতি পরি দরা, হর্ম ক্ষোভ স্বাধীনতা, চদত্ত্ত মহান অবিনশ্ব জীবাতা, এবং ভাষার ভেজ্যপুঞ্চ চেডনামর নিয়মাদি কি প্র-কণ্ডৰ কাছার ছার' কোনু সময়ে সংরচিত হুট্ড ! যদাপি ঈশ্ব সেবাপ ক্ষেত্ৰ দিতেন ভবে সদাঃ ধাসূত শিশুর অন্তরে প্রবেশ ক-

রত বিজ্ঞানবিৎ মহান্সারা মনের রচনা প্রণালীকে হৃদ্যাত করিয়া জগতের জ্ঞানকে উজ্জুল করিতেন। কিন্তু ভাঁহার ইচ্ছা অন্য প্রকার ভিনিরারত শিশু-হৃদ্যে অলক্ষ্য ভাবে পর্মাণিতা স্থীর প্রতিকৃতি মুদ্রিত করিয়া চলিয়া যান,উণযুক্ত সমরে তাহা জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছা দশের জীবাত্মা কপে প্রকাশিত হয়, এবং মাদর্শাক্ষত স্থমহান্ কীর্তি নংস্থাপন পুর্বাক মান্ব জণোর গোরব প্রচার করে।

আমাদিবের বিজ্ঞান ঈদুশ মান্দিক প্রিপকার্যা ভিম্ন আরু কিছুই গ্রহণ ক েতে পারে না। এবং কদসুষায়িকই আমর। বিচার করি ১য় মহাবের মন সহস্কীয় সকল ভাব हे ड्यान, वन-स्वर्गल এवा स्वर्णा, अर्थ लिलिनन्द्रम निच्छन। देश निद्यंत माधा % নই মথ্য এখন, ভংগারে ইন্-ক্রাভ,এবং প্রেশেষে থেক্।। মে কোন বিষয় সমকে इंडिक .कां 🖰 यः आंक्जाम गरेताः। भूदस्य ८म हे विकार कुल्दा वा बन गाउँ। उन्हर्न ट्रन्लिन कतः আন্ত্র , এবং ভাছা অহন বা প্রিচ্যাপ ক্রিবার ইচ্ছা হই গার পুরের তদ্দর্শনে ধর্ম ন কোভ বত্তা অনুশাক: মনে কৰ আমি একটা অভি স্থানর পাণার্থ ধারলোকন করে লাম, দেপিবার ভাচা আমার জ্ঞান-গোট্য হট্ল, এবং ভারে-গোচর হট্রা**মাত্র ভারার** भोन्त्य क्रिक जाशत महन इटर्बत উट्यक ছাংল, ৪ব॰ অভঃপর মুক্তা দারা ক্রার বা অপর কোন উপায়ে তাহা গ্রহণ করিতে ইচ্ছা **হইল।** अम्मत वश्च मत्रत्वा या अश्र कृश्विक श्रेमार्थ तप्रत्यत्व य सुभू विकारमहेव था। व्यास अवान-বিষয়ক ভাষ্টয় মন্ত্ৰোল আ**লাতে প্ৰথমে** जग अर्भ करत, छ। त्नित अक्रिक वसुराजिक হর্মবা যে-ডের ভাব অভংপর তাহার

ফরণ করে, এবং পরিশেষে মনের ছথের বা ফংগের অবস্থানুবায়িক মনে ভবিহিত ইচ্ছা জন্মে। অভ্যান্থনিবিক্তান আলোচনায় প্র- বৃত্ত হইয়া প্রথমতঃ আমাদিগকে জ্ঞান সম্বপ্রায় ভাবৎভাব ও প্রবৃত্তি নিরূপণ করিতে

ইইবে। এক আত্মটিতনা এবং আত্মজ্ঞানই
আমাদিগের অবসম্বন, সেই কঠিন এবং ছুর্নাবহার্যা অস্ত্র হারণ করিয়া আমবা অতি সাবদানে বিজ্ঞান-ক্ষেত্রে উপনীত হইতেছি, ভ্রমক্রপ অসং কল লাভ না করিয়া যাহাতে প্র
বিশ্রম দারা সত্তার অমৃত কল লাভ করিতে
প্রায় ইহাই প্রামাদিগের উদ্দেশ্য।

রাজভরঙ্গিনী।

६४८ स. गा अधिकार १८ अक्षेत्र शहर

ল কলেজেল রাজ্য স্বল্পকাল স্থানী ভিল, উদোর সহায় উজ্জিনীর অধিপতি লম্ব্রিফ লোচ্ডরিড হুইলেই প্রজাসকল কুঁচিব হুছি অমাস্থান প্ৰদাশ কৰিতে আঁ-রায় করিল। এবং ভাছারা মুক্ত ভূপভির প্রত্যুত্ত উত্তর বিজ্ঞানী প্রবর্তনমতে আন न्त्रांन कतिल। धारहरमन रेमना मान्छ मध-গ্রহপুর্বাক কাশ্মীরাভিয়তে গ্রহন করিলেন। মাত্র হু স্থায় রাজ্য রক্ষার্গ কোন উদ্যোগর करवन संग्रे, अहे काडू धारततमम जामाशादम ও বিনাধুতক রাজাধিকার করিলেন। ম[া]-कुछन मिल्ह्मन्। छ हहेता दातानगी, ध-মন করিলেন এবং ভগায় ধর্মা,চরণ ও ইন্ট-সাধনেই কালাভিপাত করিতে তাগিলেন। তিনি প্রায় পাঁচ বৎসর রাজত্ব করিয়াভিলেন। প্রবরদেন অতিশয় প্রজারঞ্জ ও বিক্রম শালী নৱপতি হইৱাছিলেন, তিনি উজ্জিনী নগর আক্রমণ করেন, এবং তথাকার গ্রাগ-পতি বিজ্ঞাদিতাভনয় শীলাদিভাকে যুক্ত প্রাজয় করিয়াছিলেন। এই সময়ে তিনি উজ্জারনীর বিখ্যাত ছাত্রিংশৎ পুতলিকাল-क्ञ भिश्शंगन श्रीय ताक्षधानीटङ वहेता शि য়াছিলেন। ভিনি শ্রীনগরকে নানা প্রকার

ফুদর ও দুখন অন্তিনিকা হার। সংশোভত করিয়াছিলেন। প্রবিদ্যান ৬৩ বছনর বার্গিয়া রাজত্ব করেন। জীহার পর তানার তৎপুত্র ও পৌত পুরাজির ও নবেলার তৎপুত্র ও পৌত পুরাজির ও নবেলারিয়া জালার করিয়াছিলেন। করেলাদিতার পর জীহার জালা রাগাদিতা বিশ্বানার হয়েন। ইতিহাস লোকক গ্রীনার রাজত্বলা বিয়াছেন, কিন্তু ইচা কর্লাপি সন্তানিত নহে। বোপ হয় এই পির্লিক ব্যালিয়াকে করিয়াছিলেন জাহারিয়াকে নহে। বোপ হয় এই পির্লিক ব্যালিয়াকে নহে। বোপ হয় এই পির্লিক ব্যালিয়াকে নহে। বোপ হয় এই পির্লিক ব্যালিয়াকে নহালিয়াকে করিয়াছিলেন জাহারের বাস ও ইলিয়াকের করিয়াছিলেন জাহারের করিয়াছিলেন জাহারের করিয়াছিলেন জাহারের হার করিয়াছিলেন জাহারের হার বাস ও ইলিয়াকের করিয়াছিলেন জাহারির হার বাস ও ইলিয়াকের বাক্রানার স্থান করিয়াছিলেন জাহার হার বাস বাস বাক্রানার স্থান করিয়াছেন বাক্রানার স্থান করিয়াছেন বাক্রানার স্থান করিয়াছেন বাক্রানার বাক্রানার করিয়াছেন বাক্রানার স্থান করিয়াছেন বাক্রানার বাক্রানার বাক্রানার বাক্রানার বাক্রানার স্থান করিয়াছেন বাক্রানার বা

হাণ দিকা দেশালুখণাত তিলেল এ০০ भीधार वेजिसाम घटनक धटना कर भी विंद्र भितिभूत, विक्र खाइन व करता प्रदेश कर्ना था। (तर्भकः) हानानिहरूम् वात हिः অম্বাদিত্য ও ব্যাদিতা কাম কর্ ১৮ लोफिटा महाउत्तर देशितीन ६ कुक महत्व र्रावयः विभागि (हर्मान, विर्मान न स्मृत क्षेत्रक देमकः ग्रीमस्य ग्रामक्षित्। १८०० । अस्तरः সমুদ্র দিয়ি তামণ্ড পেঞ্জনির ভারতে সংগ্র করিয়া ভ্রমণ আন কাঁতো চিব স্ত্র अवस्था अल्पा करियं धराना । बाहर দিক্তেয়াল আবমাজে নামান ছিবা, আবং নাম द्यासक रहतक तसक पुर्वाण पूर लहा. रेमरका ५ 🕬 ग्रहासिम्बर्ग १८८६ । छ *কাৰে অগলা লায়, বলিয়াছিল, যে উ*্টো প্রতিক্রমণর করে। ভাগ বংগার ১ ১১ का भौरहरू विकास स्थापिक राहित्क। श्राक्ता क्षत्रे छितिमाद बोकाएक वार्थ करिवांत निम्छि शीय क्षाटक छ। तर्कि दर्ध। भागा किछ रेष्ट्रविषया प्रमुख्यक्रिय म -মক এক জন ভূপতির প্রিয় সভাসদ ভূপ-ব্লোর মাতিশয় আহি-ভালন হট্টাচিলেন,

এবং গোপনে তাঁহার পাণিএহণ করিয়া-ছিলেন। স্থতরাং রাজার মৃত্যু হইলে পর অধান কর্মচারিগণের সহায়তায় তিনিই রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন।

छूर्ल छ-वर्षान कटकी है नार्शत वंश्टमास्वव ছিলেন। তিনি স্বয়ং ধর্মপ্রায়ণ ছিলেন এবং প্রকাদিগের ধর্মোল্লভির প্রভি বিশেষ भरमार्याण कतिरखन। जिनि ७७ वर्मत রাজত্ব করিয়াছিলেন। তাঁছার পর তৎপুল প্রতাপাদিতা রাজা হন। ইনি সীয় নামে এক নগর স্থাপন করিয়াছিলেন এই নগর अन्य काल भट्डा अञ्चल ममृक्षिणाली इहे-এই নগর মধ্যে নোনা নামক এক জন মহাধনাত। বণিশ্ বাম করিত। এই ব্যক্তির মহিত রাজার পরম বরুত্ব হই-श्रीकृता। अस पित्रम वांग्क नत्रशिक्टक নিম্প্রণ ছারা খীয় গুলে আহবান করিয়া রাজি কালে দীপালোক পরিবর্তে রাশীকত হীরক স্বারা গৃহকে আলোকিত করিয়াছিল। রাজ: ইহা দেখিয়া আশ্র্যা ও হর্ষে পুল-কিত হইয়াছিলেন, ইতাবসরে বণিকের এ-কচি প্রম ৰূপক্তী ভোগ্যা নারী অক্সাৎ রাজার দুটি পরেশ পতিত হইবা মাত্র রাজা াল্য কণ লাবণো একে বাবে বিমোহিত-(५% क्षेट्राना কিন্তু লজা ও কলঙ্ক ভয়ে স্বীয় মনের ভাব ন্যক্ত করিতে অসক্ত হুইয়া উপস্থিত মনে।বিকারকে দমন করি-পরস্তু ভাহাতে তদন্ধি তিনি বিষম রোগে আক্রান্ত হইয়া শ্যাগত হইয়া প-ড়িলেন, এবং ভীহার প্রাণ পর্যান্ত সংশয়া-পর হইয়া উঠিল। ইহাতে বণিকরাজার মনোবিকারের ও পীড়ার কারণ অবগত व्यक्तिस्य । तम्हे युवधीदकः वृ-হাইবামাত প্ৰদৰ্শন প্ৰেরণ ক্ষিলেন। কিন্ত মুপতি ধর্মভীত ছিলেন তিনি পর জীকে এহণ করিতে অস্বীকার করিলেন। পরে বণিক ভূপতির সহিত্ত অনেক তর্ক বিভাকের বারা ভাষাকে तुबाहेदन शत, जिनि त्मने नातीत्क धार्व कतित्वम, अवदः छाहात नाम मदत्व-প্রভা রাখিলেন। এই জ্রীর গর্ভে রাজার माउपि मछान इरेग्नाहिल। इरुद्रपत मद्रधा চন্দ্রাপীড় তারাপীড় এবং ললিভাদিত্য নামক তিন পুত্র রাজার মৃত্যু হইলে পর একাদিক্রমে রাজ্যাভিষিক্ত হইয়াছিলেন। ললিতাদিতা অতিশয় বিখাতি ও বিক্রম-শালী নরপতি ছিলেন। তিনি স্বীয় বিজয়ী দৈনা সমভিব্যাহারে লইয়া প্রায় সমস্ত ভারতবর্ষ মধ্যে একাথিপত্য স্থাপন করি-রাছিলেন। প্রথমে তিনি অন্তর্কেদী নামক দেশ জয় করেন, তৎপরে যশোবর্শ্ম নামক কান কুজ নগরাধিপতির প্রতিকৃষ্ণে গমন করিখা তাঁহাকে যুক্তে পরাক্ত রাজ্যচুতে कतिशाष्ट्रितन। यदमावन्त्रं भक छन दिः प्तारिमारी जूपिक **हिट**लन। नैतिह स्थात কবিবর ভবভুতি কবিবাচস্পতি এবং রা জন্ম বাস করিতেন। ললিতাদিতা ভদনভূর গোড় ও কলিঙ্ক দেশাভিমুগে যাতা করি-লেন এবং তথায় স্বীয় জয়পতাকা উভ্জীয়-मान कतिया जिक्करण कर्गा छ प्रदास श्राम क्रिलिन, उथा इहेट शाक्त मगुष्टित-বজী হইরা দারকায় উপস্থিত হইলেন। দারকা হইতে নিগতি হইয়া বিজ্ঞাগিরি ল-अवन क्रिया चनकीनगदत **अट्यम क्**रिटलनः व्यवः वहं कदल ममुनाम ভात्र वर्ष वानिकन করিয়া ও বছ্তর রাজগণকে পদানত করিয়া শ্বরাল্যে, প্রত্যাগ্রন ক্রিলেন। কাশ্মীরে আগমনামন্তর স্থীয় দেমাপতি ও व्यभान व्यभान कर्माहाती पिशादक शुतकांत्र च-क्षेत्र विद्वा विद्वा विद्वा विद्यारमञ्जू কার্য্যের ভারাপণ করিলেন। কিন্ত ভিনি श्रिक कान दित्र शांकिए शांद्रम् नाहे, अंत नार्ट्य कुकात डिट्ड बंड स्टेंब भून-

রার হিমালমের উত্তর উত্তর কুরু নামক श्रुतान व्यमिक दम्माञ्जिम्दर्श याजा कतिदनन । এই স্থান কুবেরাস্থার স্বক্ষণিগের বাসভান विद्या शांक, देश मलुट्यात वर्गमा। किछ ললিভাদিতা স্বীয় পৌরুষ বর্জনার্থ এই স্থানের অন্বেধণে হিমালয়ের অভ্যন্তরে প্রবেশ করিকেন। কিয়ন্দ্র গমনান্তর তিনি মহাক্লেশে পতিত ইইলেন, পথ অতিশয় कुर्भम इड्रा डिठिन, এবং পর্বভ-বাদী বন্য জাতিরা নানা দিক হইতে তাঁহার সেনা शनक भिर्व कतिए नाशिन। धरे थकांत প্রমাদ দেখিয়া নূপতি পত্র দ্বারা স্থীয় ম-স্ত্রীকে জ্ঞাপন করিলেন যে তাঁহার প্রতি-গমনের আশা নাই, তুরাকাজ্ফাই উংহার মৃত্যুর কারণ হইন, স্কুতরাং যুবরাজ রাজ-সিংহাদনে অধিরোহণ করুন। রাজার আর কোন সংবাদ প্রাপ্ত হওয়া গেল না। ললিভাদিতোর জ্যেষ্ঠ পুত্র কুব-লয়াপীড় রাজা হইয়া, পাছে ভাঁহার ক-নিষ্ঠ ভ্ৰাঞ্রাজত্ব পাইবার জন্য বিভােহ এই আশ্কায় ভাহাকে উপন্থিত করে, শ্বয়ে কারারুদ্ধ করিলেন। পরে কিয়ৎ কাল রাজকার্য। নির্বাহ করিয়া তিনি উ-দাস্চিত্ত হইলেন, এবং পুনরার স্বীয় ভ্রাতা বজাদিতাকে কারাযুক্ত করণান্তর তাহাকে त्राक्र भटम क्रांभेन कतिहा। योश माधनार्थ সন্ন্যাপাত্রম অবলম্বন করিলেন,এবং এই রূপে দুক-পূৰ্বামক প্ৰতিভৱ এক গুছাতে বাস করিয়া জীবন অভিবাহিত করিতে লাগি-লেন। বজুপিতা অতি নিষ্ঠুর ও ইন্দিয়-भद्रोत्रम क्हेत्रा छिटिलन। তিনি কেবল चीत्र जिंगा तमगीमिदगत दिन जुराटण्डे यमांशात श्रमा कतिशाहिटलम, এবং जारर्थत ৰিমিত আপন অজা সকলকে মেচ্চ্দিগের निक्षे विक्य कतिर्देश। छात्राकरम এहे সূপতির রাজর ৰাপাকাবানাত ছিল। বজু।-

দিলোর তিন পুদ্র ক্রেম রাজন্ব করিয়াছি-লেন, তল্পধ্যে ক্নিষ্ঠ জয়াপীড় যিনি শেষে **সিংহাসনত হ**ইয়াছিলেন তিনি **অনে**ক গুণালস্ত এব॰ সুথাতি ঠিত হইয়াছিলেন। তিনিও অপরাপর বীর্যাবন্ত নরণতির নাায় অনেক দেশে স্থীয় জয়প তাকা লইয়া গিরা-ছিলেন। অপর ভিনি স্বদেশে সংক্ত भारत्वत होननात क्षां विस्मय मरनारयात्री क्हेशिहितन। किन आधारितकत आग्न সমুদায় অধান ও নিখাত পণ্ডিতগণকে श्रोध म जार व्यानशन कतिया वर्शियां कि तनन। এই मक्न পণ্ডিতের মধ্যে मख ध्यान वाक्तिभिद्यंत नाम ७३ ७ मोदगोनद्रश्व এবং क्विग्रान्त मरना मरमान्य, मञ्च मन्त्र, ठांडक मन्त्रीमान, अवर वामग,अहं कअदः বাক্তির নাম প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই প্র-কারে কিছু কাল রাজ্যের কুশল বর্দ্ধন করিয়। জয়াপীড় নেপাল রাজ্য আক্রমণ করিতে रशदनन। किन्नु এই म्हाल व्यदिण करि-বার পতাদি তিনি জানিতেন না, স্কুতরাং কিয়দুর গমন করিয়া এক নদী পার হই বার সময়ে হঠাৎ নদীর জল ও স্ত্রোত রদি হওয়াতে ভাঁছার সমুদায় দৈনা ভালিয়া ও कालमध इरेश (शन। ताकांत्र अरे काल প্রাণ্ডাণ্য হইত কিন্তু বিপক্ষ বৈদন্যর। ত্রীলাকে ভাগিতে দেখিয়া জল হইতে উদ্ধার করিয়াছিল। এবং নেপালরাল ভাঁছাকে वरेश शख्यीननी जीत्रष्ट এक छूर्न मर्पा तन्त्र করিয়া রাখিলেন। কাশ্মীরে এই ভূঘ টনার কথা শুনিবামাত্র প্রজাগণ মহাব্যাকুল হইল। প্রধান মন্ত্রী অপরাপর রাজকশ্বচারিদিগের মহিত পরামর্শ করিয়া আপনি কিছু দৈনা लइंश (नश्रांत तमम कतिरलमः) ध्वर তথাকার ভূপতির সহিত দক্ষি স্থাপনের কথা ধার্য্য করিয়া একবার তুর্গ রুদ্ধ কাশ্মীর রাজের সুহিত সাক্ষাৎ করিতে চাহিলেন।

তাহাতে নেপাল নরপতি সহজেই সমাত হ-ইলেম। পরে নিজ্ঞবর জয়াপীড়ের দহিত শাক্ষাৎ হইলে পর ভাঁহাকে পলায়নের भहामर्भ मिटनन। বিস্তু রাজা কিনপে একাকী গণ্ডকী পার হইবেন তাহা কিছুই ত্তির করিতে না পারিয়া প্রভুভক্ত মন্ত্রী কহিলেন যে মহারাজ আমি আপনার নিমিত্ত প্রাণত্যার করিতেছি, প্রাপনি প্রামার মৃ-তদেহ নদীতে ভাগাইয়া তদবলম্বনে পার हरेट आदित्वः। এই वित्रा मन्ती छर्भ-আচীর হইতে আপনি পতিত হইয়৷ প্রাণ-ভ্যাগ করিলেন! এবং রাজা তাহার দেহা-বলম্বনে নদী পার হইয়া ছঅবেশে কাশ্মীরে প্রত্যাগমন করিলেন তাহার কিছুকাল পরেই लाहात मृजा शहेल।

অনুষ্ঠানের আবশাকত।।

- গ ং সংখ্যক প্রিকার ৭৮ প্রার গরে। (প্রাপ্ত

প্রাক্ষাদিনার সন্মুষ্ঠান কি কি এবং সেই সকল অনু-ষ্ঠান কচ্চদুর কার্ট্য ভাহা কথকিং আলোচিত ইইল, এক্ষণে সেই সেই বিষয়ে ধে সকল আলাহি উটি-মানে বিশ্বাধিকি থকন করিভেছি।

ে টে আপতি এই যে ব্রাহ্মদিগের অনুষ্ঠান-भक्षः . १९८९ : श्रीकविक पिरशंत **अनुष्टी** देव नगांत्र कू-সংসার 🚧 জনীয়া দাইবে। ইহার অর্থ আমি প্র-কুড়রু,প বু, 🤏 পারিডেছি না। তবে ব্রাকোরা কি শাস্ত্র ভাঠান কালে পৌত্তলিকদিগের মত १२४ मितीह शका कतित्वय शकावात कि अमन - ' ভইতে ধখন শিলা অস্তরের পূজা না করিলে ্ৰামানিলেৰ অনুষ্ঠান সকল সম্পন্ন হইবে না ? ইহা লালে বিকাস ক্রিম স্থাদ এক **ঈশ্রে সকলেরই** ৬০ নিশ্বাস থাকে খলি সকলেরই **এ জ্ঞান থাকে** . भव रमरी मिणा, खंदर कि क्षकादा . शूनकांद्र रणी-'হ'লকভাৰ সংগতন **হইবে.**? (भो खनिक मिन्न क्षाकित रिकास धर **धर्मातिवास अक्षान्छ।,** মাত্রাল ভালাদিলের কিয়াতে কুশংক্ষার সকলারি-াল বৰে: ভাষারা বিশ্বাস করে প্রিওদান ক-िक्क लिले वर्ष इनेटल जासन कविया शिवक्ध খন বাগরে) ব্যঞ্জার সহিত পিত্দান করে; प्टाराजा विश्वाम करत शक्षात करने मसूरमार्व अहि परमाज शन्ति इरेटलई म उनाइ लाइ, काहाता

गरुबादक भेजीत नर्स्ड एडिन कहिए मा भाहिता महा क्रिके ଓ कुछ हर, खालांबा एमंब एमंबीत पू-कारक शहर भवन कान करत, पुष्तार अनुष्ठीन-कारन ভारामिशक शृक्षा मा कविया श्रुनित रहेरड शादिता। किन्धं रचन जोकि मिरगद मन्मूर्व दिश-রীত বিখাদ, যথন তীহারা গলাকে গেষী জ্ঞান करत्रन ना, नेश्वत जित्र जात्र काशांदकও आहा करत्न না, পিতা স্বৰ্ণ হইতে পিও ভোজন করেন ধর্মন তাঁহার। ইহা অম বলিয়া জানেন, তথন ভাঁহাদের লিয়াতে কিরুপে পৌতানিক কুসংস্কার দৃট হইবে। তবে হয়ত এমন জাতি থাকিতে পারে যাহাদের ভিভরে ভেমন বিদারে চালনা নাই, যাহাদের প্রাকৃতিক ঘটনাও অন্যান্য বিষয়ে অনেক কু-স°ফার রহিয়াছে, অণচ ব্রাহ্মধর্মকে গ্রহণক-রিয়া ভদনুষ্ঠানে প্রবৃত হইয়াছে। এরপ জাতির ক্রিয়াতে কুশংক্ষার দৃষ্ট হইখার নিজান্ত অসম্ভা-বনা নাই। কিন্তু ব্ৰাহ্মপৰ্ম গিয়া যে ভাহাদি গকে কুসংস্কারে জড়ীভুত করিয়াছে ভাহা নহে, 🖫 হাদের আহা। কুদংস্কার জালে জড়িত পাকাতেট ব্রাহ্মধর্মা কথায় উচ্ছেন্ত্রপে থেকাশ পাইডেচেন নাই। ফল্ডঃ যে জাতি আপনার আগতে যত উন্নত করিবে, ভাষার মধ্যে ব্রাক্ষাধর্ম ডালই সমুক্ষ্য বেশে প্রকাশিত হইবে, এবং বে জাভির আত্মা যত হীন অবস্থায় থাকিবে, ব্ৰাহ্মধৰ্ম্ম চেথানে ভত্তই মলিন রূপে আবি ভূতি থাকিবে। অপিচ ইহা যেন कामारभत कात्र भारक स्य स्मर्क काम्रोन काक्र त्म हे (मरभे हे एवं कुमरक्षांत अल्ला अपन गाड। कुमर-স্কারের অর্থ-- জন্মানত। অন্ত'নতা এক দিক मिशार्रिश मा शोश अमा मिक मिना विशित ३ है दव है इहेरत। यूमलयात्मदा ७० ज्येश्वरक विश्वाम क्रि-য়াও অন্তানতা বশভ এন শচিত অনুষ্ঠান সকলে व्यक्टल मा रहेश। थानि एन शास्त्र माहि । जुनश्कात সকল দুৱ করিব নাঃ ২থচ আগাধর্মের মুন্দর রূপ তानुक्रीम कतिन हेरा गत्म कहा जुना। औन्नाम कग्नाड क्ष्या कि एक विश्वन ज्या द्वाचारा चार्टी माल्य কুসংস্কার সকল ভুর করিয়া পরে কেন অনুষ্ঠান मक्स छार्वा छ ना कहान ? ध खालाब उनेब धरे ee, जारणता कि वह सम्भारक की नारलारक छेक्क्न े क्रिट्ड अनुष्ठ कर माहे ? डीक्रीश स्कनहे नानक-मिटशत सानिकार्य विमेशानस सानिक केसिसारिकेन, কেনই বা তাঁহারা অন্তঃপুরে জীশিকার নিয়ম क्षावरिक करिएक छन । दक्ष विलियम है हा है कि मानामा हहेल, द्वारमात्रा नेपूना मानामा निर्माह कि गहरे थाकित्यन ? मा ब्रांक्सरी देश कारमन व्य डीहात। डीहाएम्ब हेक्समेक सक्त कार्या नगाधा कतिएक कमालि भारते हरेक्स नाहै। उँहिन्ही अभ्या प्रश्निज जारक्य । जानिक जीवादनंत्र यनि ভেমন সঙ্গতি থাকিত, জ্ঞানালোক প্রদান করিতে যাহা যাহা প্রয়োজন তাহা যদি উহারা বিশেষ রূপে সংগ্রন্থ করিতে নমর্থ ইইতেন, তবে উহারা এ দেখকে মতাও জ্ঞান রত্থে বিজ্ঞাত করিতেন সন্দেহ নাই। যাহারা এ দেখকে বিদ্যাধনে সন্দান করিতে জ্ঞাজনামী হয়েন, তাঁহার। ব্রাক্ষাদিণাকে সাহায়া করিয়া দেখুন, দেখিতে পাইবেন এ বাকা কভ দূর যথার্থ। ঈশ্বর করন যেন ব্রাক্ষেরা এ দেখকৈ দিন দিন জ্ঞানালোকে জ্ঞালোকিত করিতে পারেন।

অনুষ্ঠানের বিপক্ষে দ্বিতীয় আপত্তি এই যে ত-लाहा (करन व्यर्थ-हास इस। इशा दास कार्राक वटन उलिया मिटल इंडेरन। अर्थ कि निभिन्त ? आमारमत গ্রোজন সাধনের নিমিত্তই কি মুদার প্রচলন न १ अनुष्ठीन मकल य आमादमत कीवटनत মহং উপকারী পূর্বেই ভাষা দিল্লান্ত হইয়াডে, भूडतार अनुष्ठीन जरून कि आमारमंत्र व्यासामनीय বিষয়ের মধ্যে পরিগণিত হইবে ন। ? ভাহা যদি আবশ্যাক হইল ভবে ভাহাতে অৰ্থ লাগে দিভেই হইবে। একথা উপস্থিত হইতে পারে যে বিদ্যা মভ দুর আবিশাক অনুষ্ঠান ভাত দুর আকশাক भटि। खोटकात् विषादिक अमापत नो कलम, কিন্ইহাকি সভানহে কিলা অপেকা ধর্মেতে অপিকজর প্রয়োজন? এ কথা শুনিয়া কেছ কেল অবাক্লটনেও পারেন, কিন্তু ইছা অমূলা সভা। ভবে লোকে ধর্মের জনা অর্থ প্রয়োগ করিছে কেন্ট কাতর হইবেন ? যদি বলা ধায় आधाश्चिक अनुष्ठीन कतिलाई सर्मा इडेटड शाद्र, गरिक अनुष्ठीन ना कतिनाम ? किन्ह आमि जिन ভাষা করি অনুষ্ঠানের প্রকৃত ফল আছে কি না ? अरमदक बरलम ममारङ मा बाहरत कि धर्म इस मा। ইশ্বর নকুযোর প্রকৃতি এনন ক্রিয়া নিয়াছেন বটে व विश्वादन जाकाममाञ्च नाहे, व्यथादन अनुक्षेत मकल आर्मिल नाहे, स्थारन मनुस्मात उसन সামাজিক চেন্টা নাই সেথান কার লেকেও ধ-র্ম্মের উচ্ছেল মুখ দর্শন করে। কিন্তু সে গত্য ঈ-चत्त्र अन्छ महिमाहे श्रकाम करत, अनुश्रीदनत अ-নাবশ্যকত। সপ্রমাণ করে না। বেথানকার লোকে আগার উন্নতি সাধনাথে সমবেত হইয়া চেটা দা করে, দেখানকার ধর্মোন্নতি কখনই ভঙ্গাস্ত সম্পাদিত হয় না। আমি অনেক সময় দেখিয়াছি य "मभारक ना बाहरल कि अर्थ हम ना" अहे कूहक বাক্য খারা সরল যুবাদিগোর মন যুগ্ধ হইয়া সমাজ एडेटल हृत्त काल वार्शन कताएल करम **कारात** कम अ व्यवस्थित निम्तं इहेग्राशिग्राट्ड। त्यहे क्रेश व नकन जान अनुश्रीत अत सूच रहेग्राइन, डैहिन-রাও কনে পৌত্রিকভার দাস হইয়া পড়িয়াছেন। যাহা হউক অনুষ্ঠানচয় বখন মনুবোর খাভাবিক
কিয়া এবং নহস্ত্ব সাধন কারী বলিয়। ছিরীকৃত
হইয়চে, তথন বহোর। অর্থ-বায়ভয়ে ভংপালনে বিরম্ভ লন উচার। নিভান্ত জনসকল যুক্তির
অনুসরণ করেন। আর একণে ইহাও লিজাসা
করা বাইতে পারে, ব্রাক্ষদিগের অনুষ্ঠানে অধিক
অর্থ বায় হইবে ইহারই বা সম্ভাবনা কি! পৌতলিকদিপের অনুষ্ঠানে দে অধিক অর্থ-বায়হয় ভাহার প্রভুত কারণ আছে। ভাহাদের মন প্রায়
ধর্মের দিকে বড় দৃষ্টি করে না, ভাহার। অনুঠান কালে প্রায়াই যশঃ নান আমোদ প্রান্দাদ অভিমান হার। উত্তেজিত হইয়। ধাকে।
ক্রমশঃ প্রকাশা।

নুতন পুস্ত আপ্ত।

"কেচিল দৃত্ত কাসাং"। এই চারা থানি কালিপয়আদিরদ সংঘটিত, চাসার্থ সম্বলিত সংস্কৃত কবিতার সমন্টি। কবিতাগুলি স্থানে স্থান্ধ-পিশত ও সুন্দর, কিন্তু অপিকাংশই শকুন্তলা পদাক্ষদৃত প্রেকৃতি সংস্কৃত কাবাচয়ের অনুকরণ নার্র। বাহা হউক সংস্কৃত রচনার চেন্টাই মহং। লেখক মহাশয় বে য়ত্ব ও বায় সহকারে সংস্কৃত ভাষায় নিজ বিদারি এবং দেশীয় প্রোচন ভাষার উত্তকা ভাষাকে সাধ্বাদ দিতেছি।

''চিন্তানালা''। এই ক্ষুদ্ৰ পুন্তক থানি বিধিধ বিনয়ক কতকশুলি চিন্তা দ্বারা প্রিপূর্ণ। শক্ষের ঘণ্ণতা নিবন্ধন সর্বজ্ঞই গ্রন্থকার মহাশয়ের চিন্তার্থ সংগ্রহ সাধা নহে, কিন্তু স্থানে ভানে গ্রন্থ-ধানিতে উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট সতা উলিখিত হই-য়াছে, বধা মানব জীবন সম্বন্ধে এক স্থলে কথিত ইইয়াছে,—

'শানবের ভাগ্য সর্মদাই চঞ্চল, কিন্তু চঞ্চল-ভারই মানবের ভীবনী শক্তি।'' প্রায়শ্চিত সমকো;—

'প্রণ আর নরক, আনন্দ আর যক্ত্রণা ভোগের ছইটা বিশেষ অবস্থা মাত। কক্ষানার বসন হইতে সেই ছই অবস্থাকে শ্না কর, আগন অন্তরেই ভাহরে আভাস পাইনে।'' পুনর্কার এক স্থানে কথিত আছে;—

''সভা, দয়া, কনা প্রভৃতি গুণ সমূহ পূথক পূথক নহে। সে সজল সেই নিরাকার জ্ঞানেরই গুণ দার, এবং সে জ্ঞানের ভাব অনস্ত এবং অ-থণ্ড। স্কুডরাই ভাদুশ জ্ঞানই পর্য জ্ঞান ''

"লোকে যদি পৃথক পৃথক রূপে সভা, জ্ঞান, দ্যা, ক্ষাাঃ, উপাসক হইল; ধদি আলোচনা ক-রিয়া ভাহার একটীকেও শেষ করিভে না প্যারিল,

এবং ধনি ভাষার মধো একটীকেও ছাড়িয়। না ब्लिट्ड शाहिल, जरन क्वाविमा दन्य देवीय द्वारक একরণে অন্ত, অথও,নিয়বয়স, সভ্যক্ষপ শ্রাল-यक्रण शहस उड़ाटमह "छेशांत्रक इह कि से ?"

''श्राहोत्र क्षेत्रध वक्ष कार्यन्, तम त्म हे श्रीमाखा मटक ভাত বিভাগ করিয়া ও অপূর্ণ ভাবিয়া উপাসনা ৰুৱে। কিন্তু গাঁহার আত্মা যত পূৰ্ণ, তিনি তাঁ-হাকে তত পূর্ণ ও অথও ভাবিয়া পূলা করিয়া श्राटकम् ।"

পুনর্যাব জ্ঞাপর এক স্থানে--

''अर्फा कियानी उत्तरिका धर्मा कार्थाय ? इनि পনাতিনানী ও বিদ্যাভিয়ানী অপেকাণ যুণিত। ইহা বুনিয়া সাধুরতে বাতিদিগতে সাবধান হওয়া कर्द्धगा"

''অভি নাদ থে নিষ্ঠার সেও সময়ে সময়ে ধর্মোর অভিযান করে। এতিমান বিশ্বাসের হস্তকারক।'' ঐক্য সমল্মে কথিত হইগাছে।

"खेकाहे भरमाद्वत कीवन, जबर धर्मा मिड् बेटकाइ वक्कन । धर्माक शतिकाशि लड्ड, बेका मिथिल कहेरवा औका मिथिल इहेरल मर्माद की-थन जील इंडेरन ("

थान्द्रः खर्याच इडेनांग र्यामान खामामाटकद কোন কৰাচাৱী ছাবা এই গ্ৰন্থানি প্ৰকাশিত इदेशारह,गार्च अडेक मगरस मगरस केहमा अब अक।-बिल क्षेट्रेट प्रतिश्च खरमक मद्यालन महानिना।

''প্রক্রোদেশ অমহে।'' প্রভা দেশ, আগুরাকা a Revelation) विश्वत्यव व्यक्क-वर्गा ७ डेप्ल्मा वि-पाखित जना लहे शुस्त्रक्षानि एक्ती कुर्खिमा जाक দ্বারা বিষ্ঠিত হইয়াছে। ইংরি বিষয়ে মতানত खितात्व क्षकान कहा याकेटवक।

"লোকতরস্থান ক্রামা একথানি ক্রা গুড়ক আমরা প্রাপ্ত এই লাভ। ইতার বিষয়ে কোন মতা-মুদ্ধ প্রেকাশ কর, ভারেশাক বোধ হইতেছে না।

বিজ্ঞাপন

বিবিধ উপালে ত্রাকাশ্র্ম প্রচার ও ভার-ज्वसंस् ममूनास द्वास्त्रीमारकत मट्या धेका সংস্থাপন উদ্দেশে আগামী ২৫ কার্ত্তিক রবি-ৰাত সকল প্ৰত **অভিকার সময় কলিকাত।** ব্রাক্ষমতে ভিতীয়তল গুড়ে ব্রাক্ষিতিগর একটা "প্রতিনিধি সভা" প্রতিতিত ইইবে। व्यक्ति भाषा डाजामारमत मुक्तिकितात वाकि निद्यम्म (स. छोहात्र। म्याक मश्कार ব্রাক্ষিরে অভিনত চুসারে কলিকাতা-প্র-वागी (अर्थ निवामी) कान डामदक অতিনিধি নিযুক্ত কর্য়া সেই সেই প্রতি-নিধির নাম নিম স্থাকর কারির নিক্ট পাঠা-रेश (पन, এবং अ पिन्टम डेक मछात्र डेश-স্থিত থাকিতে তাঁহাদিগকে উপদেশ অদান করেন।

> ত্রী কেশবচন্দ্র সেন। কলিকাতা ব্রাহ্মদ্মাজের मन्त्रामक ।

१८३ पाशिन २२४७ भक।

বিজ্ঞাপন!

আগামী ২৩ সে আন্ধিন শ্রিবার সন্ধা ৭।। ঘণ্টার সমরে যোড়ার্মাকে হু প্রা**ত্য**় হিক ব্রাহ্মসমাজের চতুর্থ সাম্প্রাক্ত সভা হইবেক।

রত্ন সরকারের গাড়েন के कि. ६१ मरशाक छवन।

> कि शहाला मि उन्हें। উপাচ।र्य।।

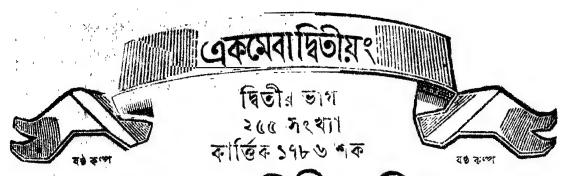
Recently Published.

THE RELIGIOUS PROSPECTS OF INDIA. To be lead at the CALCU TA BRAHMO SOMAJ.

PIPE & ANNAS. BY POST 5 ANNAS.

बिर्ध ए शक।

	श ुका
विशानकात्म उन्ना टकाळ	by 3
উপানা	৮২
ক্রিক্তা ব্রাক্সনাজের বজুতা	1.41
म्द्रमातिक्षांन १४० वि	3 •
द्राक्छद्रक्रियो	***
बरुकेरनत बावभाक्षा	, 5 58
মূত্ৰ পুস্তৰ প্ৰাপ্তি	, ne
हिन्ते कर जबरनाहिनी सेविको स्थिताछ। म म रिकारिक बायमीनीरिक्ट कार्य निकार स्टेर	मंगदत देशाङ्ग- ७ क्षांडि मार्ट



তত্রোধিনীপ্রতিকা

রক্ষাএকমিদমগ্রহাসীল্লান্থ কিঞ্নাসীজনিদং সকান্ত্রণ তদেও নিত্য জ্ঞানমনতং শিবং ত্তক্ষির্বয়বংমক-নেংবিতীয়ং সর্কার্যাপি সর্কানয়ত্ত্ সর্কালয়সক্ষিত্রশক্ষাজ্ঞিনজ্ঞ ক্রম্পূর্বমগ্রাতমনিতি। এক সংত্রেগণে দন্যা পার ক্রিকনৈতিকক শুক্ত দ্বাতি। তাল্লান প্রীতিজ্ঞায় প্রিয়কার্য্যাধনক ততুপান্নমেত।

কলিকাতা-ব্রাক্ষসমাজের বক্তৃতা।

১৬ কাজন ১৭৮০ শক।

পাপঞ্চিন্তরতে তৈব এনীতি চ করোতি চ। তুমাধির্মো প্রেরিস্টান্য গুণানশ্যন্তি নাধবঃ।

যে ব্যক্তি পাপ-চিন্তা করে, পাপানাপ করে, পাপানুষ্ঠান করে, ভাহার সাধু গুণ-নকল নই হয়! যেমন অংপ ছিদ পাইলে ब्द्ध स्तोका**७ कटन मध इयुः (महे अ**कांत यनि গুণ-সন্ধিপাতে একটা দোধকেও পোষণ করা বায়, ভবে তাহা মনুবেয়র সমুদায় ভাবকেই কলক্ষিত করে। "ইক্রিয়াণাম্ভ সর্বেষাং যদোকং করতীন্ত্রিয়ং। তেনাস্থ করতি क्षका पृट्छः भावापिट्यांपकः।" যেমন বালু-কণা পড়িলে তাহা তথন আর উত্তম-ৰূপে দেখিতে পায় না, সেই প্ৰকার অন্তরে পাপ-রেণু প্রবিষ্ট হইলে তাহার क्षान-एक्कु बात्र शृक्तर महानटक मन्नान कडिएक नाट्य मा-जारात (य गकन गार् थन, डांश कदम कदम विनान नाम। अउ-वर रोहाडा का नहांड निसंदर्भ भूना-क्रांचिटक क्यांकियात व्यक्तिक शहनतः कें। हात्रो स्वस

षानाश कतियात गमरत भाभानाश मा करतन, चतुष्ठीत्मद ममत्त्र भाभाभूष्ठीन ना करतम। এই रहेन निरमय वाका, आंद्र विधि कि, অনুজ্ঞা কি, না, ইছার যাহা বিপরীত, তাহাই कलाभ-हिचा कति-আচরণ করিবেক। বেক, কল্যাণ-কথা কৃছিবেক, কল্যাণ-অনু-ष्ठांन कतिदवक। यिनि এই একার উপদে-শারুষায়ী কর্ম করেন, তাঁহার সাধু গুণ निष्ठ हे फेकी श्र थाटक। श्रांश को धहे ভিন প্রকার, পাপ চিন্তা, পাপালাপ, পাপানুষ্ঠান। কিন্তু এই ত্রিবিধ পাপের মূল কোণা ু মূল (সই মনেতে—প্রথমে পাপ-চিন্তা উপস্থিত হয়, পরে জিহ্বা তাহা ব্যক্ত করে, পরে আচরণে তাহা প্রকাশ পার य वाङ्गि এकांकी निर्द्धात मदन मदन शांत्र চিন্তা করে, দে একত হইয়াও পাপালাপ পাপামুষ্ঠান করিতে চাহে; অতএব পাপকে মনেতে কণাপি চিন্তা করিবেক ন। থেমন भाभ मत्तर जन तिष्ठ स्टेर्ट, जनि छा-হাকে মন হইতে উৎপাটন করিয়া তাহার भूटनोटक्न कतिदवक। य वाक्ति किवन लाक-उद्य शांभावांश शांभावृष्ठीन मा करतः; दम कथन नाथू नहें, जागदक विश्वाम मारे।

निब्छ ने छान शाहेटल है उरक्षार म गुए পাপে প্রব্রুত হইবে, দে কখনই পাপের প্রলোভন অভিক্রেম করিছে পারিবেন।। পাপের হস্ত চইতে প্রযুক্ত হইতে হইলে অত্যে পাপ-চিন্তাকে বিদূরিত করিতে হয়, মনকে পবিত্র করিতে হয়। যেমন কোন পুরাতন অট্রালিকাকে অশ্বথ-মূল আবেইন করিলে কেবল তাহার উপরের শাখা পল্লব कर्जन बांता (म श्रृहत तका इस ना ; कि ख যে তাহার মূলকে বিনাশ করে, দেই তা-হাকে রক্ষা করে - ভজাপ পাপের মূলকে रय नके करत, रय गरनत गर्धा পांभरक आ-मिटल ना (मज़, भिष्टे तका शांता। यनि কাহারো অন্তরে গাপ-মূল বন্ধ গাকে; আর गिष भाषा कथा नाउ करह, वाहाक शा-পানুষ্ঠান নাও করে; তথাপি জানা যায় যে মে কেবল কপট বানসার করিতেছে, তা-খার রোবের কারণ মম্পূর্ণ রহিয়াছো – যদিও মুর এথানো ভাষার শরীরে প্রকাশ পায় गारे, (म जन्जं (त मक्ष इरेटज्रह—म পাপ কেবল লোকের ভয়ে তাহার মনের ছুর্গের নধ্যে প্রাথেটি চইয়া আছে; যথন त्म (मिश्रद्ध कि को बात नाकित्त महोत ज्ञाल, অমনি দেনিভয়ে ভাহার সকল শরীরকে আক্রমণ করিবে, পাপ-বাাধি তাছার সকল অপেতে ফুটাল উঠিবে। কিন্তু পাপ থা-াতে এপ্রকার বল প্রকাশ করিতে না পারে, (४) लिएमा कम्मणीयम श्रास्थात (पथ कड) প্রকার কৌশল নিশ্মাণ করিয়াছেন। প্র-थटम (मर्थ भारभेत मरक मरक टकमन এ-কটি ঘূণা, একটি প্লামি, আদিয়া উপস্থিত হয়। সেই যেএক পাপের প্রতি বুণা, তাহা আমার্রদিগকে কেমন রক্ষা করে। যেমন পাপের ভাব মনে উদয় হয়, আমনি ঘূণা ও আঅ-প্লানি আনিয়া তাহাকে দ্বানী করিয়া करन। य योशा श्रक्तिक शांक, तम

আত্মাতে কি পাপ কণ কালের জন্যও তি-ষ্ঠিতে পারে; পাপ উদয় হইবা মাত্র স্থা ও আক্সানি আসিয়া তাহাকে দূর করিয়া দের। যথন মনের ভাব আর কে**হই জা**-निट्छि नां, किवल এक विश्ववरे कानिटक-ছেন ; দেই সময়ে যাদ খ্ণা ও আত্ম-মানি আদিয়া পাপকে পরাস্ত করিতে গারে; তবে আমারদের পরম সৌভাগ্য। কিন্ত যদি দেই মৃণা-দেতুকে পাপ-প্লাবন আ-গিয়া প্রবল বেগে অতিক্রম করে, ভবে তাল ভালতে লজ্মন না করিতে করিতেই আর এক সেতু আদিয়া তাহাকে রোধ করে নেই দেতুটি লজ্জা-দেতু। যথন ৄগার উ-পরে আর নির্ভর না রহিল, প্রথম দেভু য-খন ভগ্ হইয়া গেল, তখন দেই দিভীয় সেতু লজ্জা আসিয়া উপস্থিত হয়—তথ**ন** নে আত্মীয় পরিবার গুরু-জনের লজ্জাতে প্রকাশ্যরূপে আর পাণ্ডরণ করিতে পারে না। দেখ ঘূণা অভিক্রেম করিয়াও দে ল জ্ঞার শাদনে পাপ হইতে নিবারিত এইল। কিন্তু পাপের উচ্ছাদ যদি এত অধিক হয় যে সে এ ছুরের আর কিছুই মানে না, সে উদ্ধান্ত ভাবে হৃদয়ের কবাট ভেদ করিয়া শরীরময় ব্যাপ্ত হয়, ও মনের আর আর দকল র্ত্তিকে বৃশীভূত করিয়া কেলে; জ-খন দে পাপকৈ। ত মনুবা উন্দেশত হয়। যখন পাপত্রোত উচ্চু সিত হইয়া ছুণা লক্ষা উভয় দেতুকেই ভয় করিল, তথন অবশিষ্ট কি রহিল, না ভয়সেতু। পাছে গুরু লোকেরা প্রহার করে, বিষয় হইতে ব্ঞিত করে; পাছে শান্তি-রক্ষকেরা দণ্ড प्तत्र, कांत्रांगादत वक्त तारथ—अहे **ध्यका**त চিন্তা আসিরা সেই পাপামার পাপ গতিকে বাধা দিবার উপায় দেখে । ইহাকেও ব-थन तम व्यक्तिक कटत, उध्यम तम त्रीन-পুরুষদিমের হত্তে পতিত হয়, উপবৃক্ত

দণ্ডোপড়োগ করে। সে লোকের বার। পরিতাক্ত ইয়, গুরু জন কর্তৃক অবমানিত হয়। স্ণালজ্জা ভয় এই তিবিধ লৌহ দেতুই যথন ভগ্ন হইয়া গেল, তথন কি সেই ঘোর পাপীর পরিতাণের জন্য আর किছूरे छेशांत तरिन ना ? यथन गकन লোকৈর ঘূণা-দৃষ্টি তাহার উপর পড়ে, যথন পরিবারেরা ভাষাকে গৃহ হইতে দূর করিয়া দেয়, যথন রাজ পুরুষেরা তাহাকে দও বিধান করে; তথন ঈশ্বরও কি ভাগকে পরিত্যাগ করেন ১ তথন ভাহার কি কেইই পরিত্রাতা থাকে না? যখন সকল সেতুই পালের নিকট পরাস্ত হইল, তথন সেই পাপীর পরিত্রাণের নিমিত্ত স্বরং ঈশ্বর গিয়া উপস্থিত হন। যথন আর আর সকলেই তাহাকে হেয়কপে পরিত্যাগ করে, যথন ভার নাম মাত্র শ্রুত হইলেও মনেতে ঘুণার फेनस इस; उथन এकमाज जेन्यत्रे ठाहात সহায় পাকেন। যথন আর আর সকর মেতুই ভয় হইয়া গেল, তথন তিনি নিজে পরম দেতু ৰূপে দেই ঘোর পাপার নিকটে অবতীর্ণ হন। পাপের কি কখন এ প্রকার প্রবল উচ্চৃাদ হইতে পারে যে দেই পরম **मिजूटक ७ इस इयन कटत** ? এ श्रकात कथ-নই হইতে পারে ন। "সমেতুর্বিধৃতিরেষাং লোকনামসম্ভেদায় "। তিনি লোক-ভঙ্গ নিবারণার্থে সেতু-স্বরূপ হইয়া এই সমুদয় ধারণ করিতেছেন। তিনি তাঁহার রুত্র মূর্তি অকাশ করেন, ভয় দেখান এবং সাস্ত্রা করেন। এই থকারে কত কত ছোর পাপীরাও পাপ হইতে পরিতাণ পাইয়া শননের উপর জয় লাভ করিয়াছে, ঈশ্ব-रतत स्नीवन जानिक्रन वाश क्रेसार्छ, মু**জির গৃহে প্রবেশ** করিয়াছে। কিন্তু খা-मोबद्देश यान अक वात्र डाहात रूप मृद्धि मिथिटक मा इस्रा महम क्रिया कि कात

পিতার নিকট হইতে তিরক্ষার থাইতে অভিলান করে। অভএব আমরা যেন কথনই ভাঁহার আজ্ঞা অবহেলা না করি, আমরা
যেন পাপ চিন্তাকে মনে কথনই আদিতে
না দিই; কিয়া যথনি তাহা মনে উদয় হয়,
তৎক্ষণাৎ ভাহাকে উৎপাটন করিয়া কেলি।
আমারদের পাপের জনা ফুণা যেন নিয়তই
থাকে, লক্ষা দেন নিমতই থাকে, ভয় বেন
নিয়তই থাকে এবং সকল হইতে পরম সেতু
যে তিনি, ভাহাব পাবত্র দৃষ্টি দেখিয়া যেন
পাপ হইতে সক্ষদাই বিরত থাকি।

হে পরমায়ন্! আনি বখন ভোমার মঞ্ল-মূর্তি প্রত্যক্ষ করি, তথন শ্রীর মন্উত্ত-खिङ इय, वाका-मकल आफ्र हहेया भट्छ । যুগন এখানে উপবেশন করিয়া পর লোকের বিষয় ব্যক্ত করিতাম, তখনো তাহার মধ্যে তোমার করুণাই দেখিতাম। আবার এখন যথন তোমার নিয়মিত ধর্ম-দাধন বিষয়েরও আলোচনা করিতেচি, তথনো তোমারই করুণা প্রতাক্ষ করিতেছি। তোমার দম্মুথে যা কিছু আলোচনা করি, তাহাতে তোমা-রই করুণা দেখি। বলিতে যাই অমুঠান, মনে হয় তোমার করুণা। গগন পাপী-দিনের উপর তোমার ধর্ম-দত্তের কথা ক-হিতে যাই, নে সময়েও ভোমার করুণার ভাব একাশ পায়। হে পরমাত্মন্! তুমি আমার্দিগকে পাপ হইতে নিজ্তি দাও; আমারদের রক্ষার নিমিত্ত ভূমি যে সকল দেতু নির্মাণ করিয়াছ, তাহা যেন আমরা কদাচ উল্লপ্তন না করি। আমরা যেন পাপ-চিম্তা না করি, পাপ-কথা না কহি, পাপায়-ন না করি--পাপের সহিত সংস্পর্ম যেন সম্পর্ণ রূপে পরিত্যাগ করি,নিম্পাপ নির্মাল-চিত্ত ও তোমার সভাতে নিংসংশার হইয়া বেন ভোমার উপাদনাতেই নিযুক্ত থাকি।

ওঁ একমেবা বিতীয়ং

নিবাধই চতুর্দ্দশ্ সাম্বৎসরিক ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা।

२৮ आधिन ३१४७ भक।

যাঁছাকে লইয়া আমাদিগের অদ্যকার এই মহোৎসব, আজি কি আমরা উহোর অপার প্রেম্যাগরে নিময় হইখা সমুদায় হ্লদয় মন শীতল কারব না ? অসীম আকাশ बाँशिदक व्यवनम्य कतिश चार्ड, व्यवस्थान মাহার জোড়ে জীড়া করিতেছে, তিনি আমাদিগের ক্ষুদ্র আক্ষাতেও পূর্ণকণে বি-রাজ করিকেছেন ; আমর্গ্রাক ভাঁচার শুরু-ভাব অনুভব কারত না ? আজি টাইংকে হৃদর্শারা স্পর্শ করব, তাঁলার অনৃত গামনদ-तम पक्राञ्चर्यादत भाग कहित ७५ अनाई তিনি আমাদিশকে সন্মিলত কাঞ্চাছেন। ডিনি আমাদের অন্তরে কুধার সঞ্চার করি-তেছেন, আমরা বহু চাহিতেছি, তিনি মুক্ত-शाख कडाई काँकात ध्यम ध्यवाहिक क्रिक-ছন। আমাদের জীবন কি প্রিক স্থ্রাময় इइटल्ट्र । स्मेड पूर्व १ तिलाक महान् भू-রুষকে প্রত্যক্ষ করিয়া আজি হৃদয়ের দাঃ সকল কেমন উন্মৃত্য হইতেছে—প্রদ্ধা, ভক্তি, প্রীতি, ক্রডজ্ঞ আপনা হইতে তাঁহাকে ষালিকন করিতে উচ্চুদিত হইতেছে। ধন্য জগদীশ। ধনা তোমার মহিমা। ধন্য তোমার করুণা। তুমি ধূলিধ্ধরিত মলিন কীটদিগকে এৰপ বিমলানদে কুতাৰ্থ ক-রিতেছ।

আহা। এই পবিত্র ব্রহ্মানন্দের আশ্বাদ প্রিবীর আর কোন জীবই পায় না— মসু-নাই ইহার অধিকারী। কিন্তু কি আশ্বর্যা। আমরা কত সময় ইতর ইন্দ্রিয় স্থবে প্রশ্নুষ্ঠা ইয়া পশুদিশের পশ্চাদ্বর্তী হইতেছি। নানব জন্ম বিকল করিডেছি। সংনারের অনিত্য স্থানকা কি আশ্বাকে ভূপ্ত করিছে পারে? তাহাতে পশু প্রকৃতি চরিতার্থ হয়,
কিন্তু আত্মার গভীর ক্ষুধার শান্তি হয় না।
এই জনাই পূর্বে কালের স্থানদর্শী ধৃতর্ত্ত
খ্যবিগণ বিরল অরণ্যে গিয়া জীবন পাত করিতেন। তাঁহারা সেখানে আত্মার তৃত্তিকর দেই সতাং জ্ঞানমনন্তং ব্রহ্মকে লাভ
করিয়া নিতাানন্দে ময় থাকিতেন, আর
কিছুরই প্রার্থনা করিতেন না।

যিনি একমাত্র দকল স্থাংথর নিকেতন এবং ধাঁহার সহিত আমাদিলের চিরসম্বন, তীহা হইতে যত দিন আগবা বিভিন্ন থাকি ভত দিনই আমাদিগের মৃত্যু-তি হোকে পা-रेटल हे अगृष्य भाज रहा। द्वांभानम् व्यापा-मिश्रदक अहे मामाद्र शाकिशारे (महे मिछ। मम्भन् वाटअत अथ अपनीन कति श्रीहरून। मनुद्यात ऋषटा एए अटमात वीक निक्रिक ছিল, ভাষা এত দিন স্কারণ ৰূপে বার্দ্ধিত হইয়া অমৃতায়মান ফল-নকল প্রদান করিতে পারে নাই। মানব জাতির উন্নতির সংখে मदक ताई दीक चक्रुतिङ इहेशा विविध শাথা প্রণাথা বিনির্গত করিয়াছে, কিন্তু তাল কুত্রিন পাত্রে স্থাপিত এবং ক্লিস্ড पावता निक्क इहेश पालनात अखिव প্রকাশ করিতে পারে নাই। ব্রাহ্মধর্ম সে সকল বাগা কপ্পনা দুরীভূত করিয়া স্থা-শন্ত মানগদেত ইহার ভিত্তিভূমি এবং অবারিত অন্য আকাশ ইহার উন্নতির আর-তন করিয়াছেন। এখন ধর্ম **আর স্থান**-বিশেষ, কলেবিশেষ, ব্যক্তিবিশেষ, জাতি-विद्याय ना भूलकविद्यादय वस्त्र नाहे ! त्याहे मङा सुन्तत सकत चन्ना भारती प्रार्टिक व्यक মাত্র আদর্শ করিয়া আত্ম তাঁহার পথে ক্ৰেমণ অগ্ৰসর হইয়া মুক্তি ও শবিক অনিক লাভ করিবে। আমাদের চিরজীবন কর त्यात शर्थ **अक्लाइन व्यक्त हरू कहेरव**िक् वात सामका स्टान क्रीय ; भारत हर

স্থানন হইয়া পাপে পড়িব; কিন্তু নেই প্র-ভিত্তপারনকৈ আত্রায় করিলে তিনি আবার আমাদিগকে উদ্ধার করিয়া তাঁহার পথে চলিতে বলীয়ান করিবেন। তাঁহাকে প্রতি করিয়া এবং তাঁহার প্রির কার্য্য সাধন করিয়া যত চলিতে পারিব, ততই আমাদিগের চির-কল্যাণ লাভ হইবে।

ব্রাহ্মধর্মা স্বর্গের জ্যোতি মর্ত্তা লোকে আনয়ন করিয়াছেন—দেবভোগ্য অমূতে मसूर्यात आंद्रांटक उन्हें ও वनिष्ठं कति-टिट्रमां आमता এই গঢ় मश्मात-अक्त-কারের মধ্যে যে এ ৰূপ ধর্মজ্যোতি লাভ করিয়াছি ইছা আমাদিগের সামান্য সৌ-ভাগোর বিষয় নয়। কিন্তু এই জ্যোতিতে কি আমাদিলের সমুদার জীবন জ্যোতি-श्रांत इरेटवक नः ? यथन (महे खण वामी-দিবের একমাত্র লকা, ভাহাতেই আমা-দিগের নিভ্যোৎসব,তথন আমরা কি নমুণায় জীবন তাঁহার দোবায় অপণ করিব নাঁ? আমরা শরীর মন, বন জন সকলই যেনন তাঁহার নিকট হইতে পাইয়াছি—সকলই অদক্ষ্ চিত্রচিত্তে তাঁলাকে প্রতার্পণ করিব ইয়তে আর আপত্তি কি? ভাঁহার প্র-দত্ত শক্তিতে ভাঁহার কার্যা করিব ইগতে আর বাধা কি? কিন্ত কেমন দারুণ আ-মানিগের মোহ! আমরা আপনানিগকে चन्नु , এ हे कीवनदक निठा এবং সাংগারিক धन मान सूथ मन्भि डिटक मर्दाय मदन करें। किन्छ এक मृत्रा यानिया यानित्वत लास्डि कि गर्रामः। व्यातनं कतारेशः। मिट उट्ह ना ? ষানাদিগের নাগার কত লোক এই মর্ত্তা **लाक लीमा क**िशांছिल, करु धन अश्वर्यात व्यशेषत्र क्रिका । किन्छ । ८क्तपान्न जाहाना, णांत क्यांत्र डांक्लियत वहे পार्थित भविकात-मक्षाः जामानिरशत विवसामा ७ विषयभक्त मिश्रिया भुजू। वितरन बाग्य कति-

তেছে। বস্তু । যাহা আত্মার সহগামী ছইবে না, ভাহাকে আপনার সর্বস্থ ননে করা কি উপহাসজনক নয় ?

বিষয়ে আত্মার লাভ নাই কিন্তু বিল-কণ কভি! একত ভাষতে জীবন এবং সমুদায় শাঁক িরর্থক নট ছইতেছে;-আবার তাহার উপর পাপ সঞ্জা স্বার্থ-পরতায়ত প্রবল হইতেছে, তত্ই হৃদ্য় কুটিল হইতেছে, আবার কভ কফে ভা-ছাকে সরল করিতে হইবে। পশুপ্রবৃত্তি-সকল যতই চরিতার্থ কইতেছে, আয়ো ত-তই মলিন হইতেছে—আবার তাল নমুছ यटज ध्वकांगन कवित्व इवेत्तः, विषय-धः (म् उत्म ग् उत्ने मनदक चांकृष्ठे कतिरहर्षः ভত্ত আলার স্বাধীনতা বিন্ট হটতেছে, ভাহা উদ্ধার কর। সামান্য সংগ্রামের কার্য্য নয়। এই সকলত আন্তরিক অপকার: এছন্তির বাহ্যিক অনিউ রাশি রাশি আছে। যাহাকে স্থা বলিয়া গ্রহণ করিতে যাই, তাহাই হয়ত ছঃখৰপে পরিণত হয়, নে थात्म भूतकात्वव याना कति, त्महेथात्नहे হয়ত ভিরস্কার লাভ হয়। এই ৰূপ একে আন্তরে আমিমানিৰূপ জঃসহ নরক ভোগ, তাহার উপর চারি দিকে বিমাদ ও নিরাশা: मःगांदी लांदक এই बदल शांदल जारन শোকে মোহে জর্জরত হইয়া অবশেষে व्याग्य यञ्जगाय मक्ष इय ।

যাঁহারা সাংশারিক জীবনকে বলিদান
দিয়া ধর্মজীবন লাভ করিয়াছেন, তাঁহারা
সংসারের সমুদার ভয়,তাপ, ও নোহ শোক
হইতে মুক্ত হইয়াছেন। তাঁহাদের নেত্রে
সংসার এক অভিনব মধুর বেশ ধারণ করে।
তাঁহারা সক্ষত্রই সেই পরম পিভার ক্রোড়
প্রসারিত দেখেন, সকল জগৎ তাঁহার প্রেমে
অনুরঞ্জিত দেখেন, এবং সকল ঘটনায় তাঁহার মঙ্গলস্ক্র সঞ্চারিত দেখিতে পান। তাঁ-

হারা অমৃতর্দ পান করিতেছেন, 'বিপদ রাশি ছুংখ দারিছে" কিছুই করিতে পারে मा २ इंश्रे छ। इंपिटनंत तल, काँशिंगिरनंत আশা ও উৎসাহ, এবং চির কালের উপ-জীবা। সভোগ, থৈষা, ভিডিক্ষা ভাষা-भित्तत्र व्यक्तिय मध्ये दश्च। এই मकत्त ४-র্মান্ত্রের। সংসারের মৃতিত—পাপের সহিত ঘোরতর সংগ্রাম করেন; আক্রুট হাদরে সকল তাড়্যা যন্ত্রণা মহা করেন ; মৃত্যুকেও আনন্দের সহিত আলিজন করেন, তথাপি লশ্বরের মহিমাকে মণীয়ান করিতে—ভাঁ-ধার জয়পভাকাকে উড্ডীয়ম ন করিতে নি-স্তেজ হয়েন ন।। "সভামের ক্রয়তে না-मृदः " "यानमः वनाता दिवान निर्देशि कुड "हमर" 'स्वाहर नाभूडा गाए किमहर · अस कुर्यापः ?' अहे मकत सङ्गाका छ। हा-দিশের কণ্ঠ হইতে মর্বাদাই নিঃস্ভ হয়। भ्यमि चारम ठीत कोरक मिनाइबन (य थान, ছাড়ি যাৰ অনায়ানে তাঁতো করিব দান' এই ওঁছে। দলের প্রতিজ্ঞা। 'ধন মান চাহি না তোমা হতে, দেও এই আবিকার, নিয়ত নিয়ত যেন সভচর অনুচর থাকি তোমার" এই डीक्फिरशत अधिना। योश्ता क्रु नःमारतत पाम, छ। । ता है वर्षा तका आमाधा মনে করেন, কিন্তু এরূপ ব্যক্তিরা তাহা অ-नाशामनामा (एशिएड शान। এই मापू-ब्राके प्रवास-इंड्डिंड इंक **कीवरनरे** मू-ক্তির দোপানে আরোগণ করিয়াছেন—অ-ब इ लाटक कि लिलित कमा 'खोगामम, ध्यमानम् ७ उकानत्मत् देश्म छेश्मातिष র ইগ্রছে"।

হে সংসারপাশবদ্ধ নত্তাগণ ৷ তোমরা হস্তকাটের নাার আর কঠ কাল আপেনাদের কণ্পনা-স্তার আপনার৷ জড়িত থাকিবে ? অনও আকাশে থাগীন রূপে বিহার করিন বার জনা যে স্বর্মীর পক্ষে ভূষিত হ্ইয়াই; তাহা কি এক বারও লঞ্চালন করিবে না? এই মৃত্যুর পাশে বত দিন আবন্ধ থাকিবে, তত দিন হাজার বিষয় বিভব, মান ঐশ্বর্যা गः धर कर मकलहे शख्यम मकलहे । ध-नवियापित्र कात्रण क्रेंदि। किन्छ अक बांत्र এ বন্ধন কাটিভে পারিলে আনন্দমর লোকে বিচরণ করিবে, প্রত্যেক নিঃশ্বালে অন্তর **इडेटड मञ्जनां समृधिक ভाব বিদূরিত इडेटब,** अदः क्रमत निमन हिल्लाटन भूने हहेटन, छ-খন সমুদায় আত্মা আনন্দত্যোতে ভাসমান হইতে থাকিবে. জ্ঞান উজ্জুল হইয়া সেই সতা স্বৰূপকে ধারণ করিবেক, প্রীতি প্রশস্ত হইয়া তাঁহার মঙ্গল ভাবের অমুকরণ করি-বেক, এবং ইচ্ছা পবিত্র ও সবল হইয়া মু-ক্তভাবে তাঁহারই সঙ্গণ ইচ্ছা সম্পন্ন করিছে থাকিবেক;—তথন ভাঁহার সহিত সমুদায় বিমল কামনা উপভোগ করিতে পারিবে ; সংগার পবিত্র ধর্মক্ষেত্র এবং আননদ্ধাম इशेटवक ।

मिहे जगदिशिजांत धार्मारम এই अका-নাক্ষ পাপ-প্রপীড়িত বন্ধ দেশে পরিত্র আক্ষধর্মের প্রভা দিন দিন বিকীণ হই-তেছে। যেখানে ইহার আনিভাব হই-তেছে, দেই স্থানই অপবিত্র ভাবসকল ফইতে মুক্ত হইয়া পবিত্র মঙ্গল ভাবে পূর্ব হইতেছে। দৌভাগাক্র**মে চতুর্দ্দশ বর্ষ প**-যাঁত এই নিবাধই গ্রাম যে ইছার শীতল ছায়া প্রাপ্ত হইরাছেন, তজ্জনা সকলে সেই कक्ननागराक धनावाम गांछ। हेर्हाहरू देन-নাদে মপ্তাহে সপ্তাহে যে কতিপর আত্মা कित्रए कोटलत कना अन्तर्भात्रभाग स्टेटक মৃত্যু হইয়া ঈশ্বরের জ্বানন্দর্য পান করি-বার জনা এখানে একতিত হন, ইহাও স্থাপ পরিতোবের বিষয় নয় কিন্ত তালাকের যেৰপ অভাব ভাহাতে এত বাাপক কালে कि हेरा मदलका मधिक कर्म जारका क

ভাগা করা যায় না ? এখানে ত্রাক্ষটীবনের কেন এত অভাব দেখা যায় ? ধর্ম কি কে-বল বাকোতে বন্ধ থাকিবেক, না ক্ষণকা-লের চিন্তাতেই পর্যাবাসত হইবেক ? ই-হাতে কি আমাদিপের হুদয় অগ্রিময়, আত্মা উত্তেজিত এবং সমুদায় অল প্রভাল প্র-সারিত হইবেক না ? ইচাতে কি দেশের সর্ব্ব প্রকার অকল্যাণ বিশ্বংস এবং মঞ্চল উংপায় করিবেক না ? আমরা যদি সেই সংসারেরই উপাসক রহিলাম, যদি প্রতি নিমিষে প্রতি মুহুর্ত্তি প্রতি কার্যো ঈশ্বরের মহিমা অধিকতর রূপে প্রতার করিতে না

অবলয়ন করিবার গৌরব কি?।

চে প্রমালন্! তোমার অনু এতে অদা त्य व्यामती अहे भटकः (धनतत्कत्व व्यानिशा আমার অপার আনন্দ লাভ করিলান, ত-জ্বন্য তোমাকে একান্ত হৃদয়ে বার বার প্র-ণিপাত করি। তুমিত দকলই দেখিতেছ, সকলেরই প্রতি ভোমার প্রেমদৃটি বিস্তা-রিত রাখিয়াছ, আমাদিগকে তোমার অভি আকর্ষণ কর। তোমার এই ছুর্বাল সন্তা-নগণকে তোমার বল অদান কর, আমরা সম্পূর্ণ রূপে তোমার আশ্রয় গ্রহণ করি। এ কাল পর্যান্ত তে।মার কার্য্যে আমাদিলের य जगःशा खम ध्यमाम ও जानतां इहेशांट इ ভালা মার্কন। কর; যেন পর বৎদর অধি-কতর উৎসাহ ও আনন্দের সহিত তোমার महम्यम गान कतिए भाति। এই धारमत श्रान बुक्त वनिष्टा मकत्नवहे क्रमत्त्र (ड्री-মার সভা অবিক ছউক, ইহার পরিবার স-কল তোমার প্রিয় পরিবার হটক এবং এ-বানকার ভাঙা ভগিনীগণ, স্কল বাজ্য-खनीत महिक अकव्य ठ रहेश (कामात मक्न खाँव थाडाज । क्यून । नाथ ! व्यापाकांत्र य-क्षित्रव (वन कार है क्षित ना है। कि**छ** (व

অমৃতভোজে আমরা বলিষ্ঠ হইলাম. তাহাতে মামাদিগের প্রতোকের জীবন যেন
তোমার সহিত দৃঢ় সহস্ধ নিবন্ধ করিতে সমর্থ হয়। তাহা হইলে প্রতিদেন আমাদিগের মহোসবের দিন হইবে এবং নিতা
কাল আনন্দন্য হইবে।

ওঁ শান্তিঃ শানিঃ শান্তিঃ হরিঃ ।ওঁ।

রাজ-তরঙ্গিনী।

২৫৪ সংখ্যা পত্রিকার ৯৪ পৃঠাব পর।

জ্যাপীড়ের পুত্র ললিতাপীড় রাম্ব্যাভি-विक इहेशा (कवल नीह ও धगर मःगरर्भ এবং অতি কুখানিত আনোদে প্রকৃত্ত হইয়া কালাভিপাত করিতে লাগিলেন। ভাঁছার পিতার সঞ্চিত রাজভাণ্ডারস্থ ধনরাশি তিনি স্বীয় পারিষদ ও ভোগার মণীগণের মধ্যে মুক্ত হল্তে বিভরণ করিতে লাগিলেন, প্রাচীন রাজকর্মচারিগণ তাঁহার কুচরিত দেখিয়া ক্র**মে** ভাঁহাকে পরিভাগি করিয়া যাইতে লাগিল, কিন্তু এই চুরাচারী নরপতির রাজত্ব অধিক কাল স্থায়ী হয় নাই; তিনি দ্বাদশ বৎসর রাজ্য ভোগ করিয়াই লোকাশ্রিত হইলেন। তাহার পার তাঁহার ভাতা সংগ্রামাপাড় রাজা হইয়াছিলেন, ইাহার রাজত্ব সাত বৎসর ছিল.পরে চিপাতজয় নামক ললিভাপীড়ের এক জারজ পুত্র রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন। এই নরপতি স্বত্পবয়ক ছিলেন, এই নিমিত্ত তাঁখার পাঁচ মাতুল মিলিত চইয়া রাজকার্যোর ভার গ্রহণ করিল। বাল্ডবিক তাহারাই আপনাদিবের নধ্যে সমুদ্র রাজা বিভাগ করিয়া লইয়া সম্পূর্ণ ৰূপে **আধি**-পত্য করিতে লাগিল। পরে চিপা**তজয়** বয়ংপ্রাপ্ত হইয়া স্বীয় হতের রাজ্য ভার লই-বার মান্য প্রকাশ করিলে, তাঁহার মাতুলগণ পরামর্শ করিয়া গোপনে ভাঁহার আণ বধ করিল, এবং তৎপরিবর্ত্তে ত্রিভুবনাপীড় না

মক ললিভাপীড়ের একটি পৌত্রকে সিংহা-সনে ভাপন করিল, ও পূর্ববিৎ সমস্ত রাজ-কার্যা আপনারাই নির্বাহ করিতে লাগিল। এই প্রকারে ভাহারা নির্বিবাদে ও অভিশয় পর্বাক্রমের সাহত ৩৬ বৎদর ব্যাপিয়া ত্রিভু-বনাপীড়ের নামে রাজা করিয়াছিল। পরে ভাষাদের প্রস্পারের মথে। ই ঈর্ষা ও দ্বেদভাব উৎপন্ন হইয়া উঠিল, এবং পরস্পরে মুদ্ধ ্আরম্ভ করিল,ভাহাতে এক জন নিহত হই লে অপর চারি ভাত। পুনরায় থিলিত হইয়া ত্রিভুবনাপীড়কে রাজ্যচাত করিয়া ইচ্ছামত রাজবংশীয় অপর এক ব্যক্তিকে সিংহাস-নাভিষিক্ত করিল। এবং তদবধি তাহারা बरनक कांन अर्थाय এक এक छि कारछेत পুত্তলিকা স্বৰূপ নাম মাত্ৰ রাজাকে সিংহা-সনে বসাইয়া নিবিরেরে ধেরাজাত্ব করিয়াছিল। এই চারি ভারার মৃত্যু হইলে পর,ভাগদের राञ्चहत्रशंग এक व हरेश। र्हाहिन त मर्गा छे९-পল নামক এক ভ্রাভার পৌত্র অবন্থিবর্মাকে রাজপদ প্রদান করিল; এই ৰূপে কর্কেটি ৰংশ রাজাচাত হইল।

অবন্ধিনুধা নিংহাসনত্ত হইলে অনেকেই
শক্র হইয়া ভাঁহার প্রতিকূলে অন্ত ধারণ
করিল, ভাঁহার আপন আত্গণও স্ব্যাপরবশ হইয়া ভাঁহাকে রাজাচ্যুত করিবার চেন্টা
ইরিকে লাগিল। কিন্তু ভিনি স্বয়ং বিক্রমশালী ও অভিশয় বৃদ্ধিমান ছিলেন, এবং
ভাঁহার হার নামক অভি বিচক্ষণ মন্ত্রীও
ভাঁহার সহায়তা করিয়া উভয়ে বলে ও কৌশলে অপ্পকলি মধ্যে শক্রা দমন করিলেন।
শরে রাজা হারবর্মা নামক এক ভাতাকে
যুবরাজ করিয়া তুই জনে মিলিত হইয়া কুশলে রাজ্য শানন করিছে লাগিলেন। ন্প্রিও যুবরাজ উভরেই আপনাদিনের
উদার ভাব ও বদান্তাগুণে অন্ধাগণের অভিশার প্রাতিভাজন ইইয়াছিলেন। ভাঁহারা

जाकाननिशंदक अपूर्व कार्य नाम कहि**रक**म अवश স্থানে স্থানে দেবমন্দির অস্তুত করিয়াছি-लान। जानत, जूनकि । उरक्ष मृत्येर बत व्यक्तामी हरेश। ताक्रमजी अ रह्मिश महात ত্বারা বিথা তি ইইয়াছিলেদ,তিনি স্বয়ং স্থর-পুর নামক এক নগর স্থাপন করিয়াছিলেন, এবং স্তরেশ্বরীক্ষেত্রে এক শিবমন্দির ও অতিথিশালা নিশাণ করিয়া দিয়াছিলেন। অপর,তিনি পণ্ডিত ও অধ্যাপকগণের অভি-পাগন, ও শাস্ত্রালোচনার প্রতি বিশেষ উৎ-माइ थमान क्रिट्टन। এই ममरत रा म-কল পণ্ডিত কাশ্মীরে ছিলেন তাঁহাদের मत्या मूळकाल, भिवश्वामी, श्रानन्दर्शन, इ-ত্নাকর এবং রামজ এই কয়েক ব্যক্তির নাম ইচিহাদে খ্যাত আছে। অবজিবন্মার শাসনাধীন প্রকাগণ কুশলে ও বৃচ্চ্লচিত্তে বাস করিতেছিল, কিন্তু ছুঙাগ্যক্রমে কোম নৈসর্গিক কারণ বশত বিভক্তা নদী উদ্বে-इडेश काशीदत कनक्षावन इडेल, भगा (कञ्च मकल नक्षे इहेशा (शन এবং छा-হাতে ভয়ানক তুর্ভিক্ষ উপস্থিত হইল। এই ৰূপে বারয়ার জলপ্লাবন দারা কিছু কাল শদ্যোৎপাদন একে বাবে নিবারিত হইল। প্রজা সকল অন্নভোবে প্রাণ্ড্যার করিছে नांशिन अनः श्रीयुर्गान म्रात अधकात छ-র্মাল্য হইয়া ছিল যে এক আড়ক পরিমিড नगा गरुख भीनाह(३) काता क्ली ७ स्ट्रेटक ना-গিল। ভুপতি এই বিপদ্ হইতে উজাতর স কোন উপায় চিন্তা করিতে না পারিয়া হতা-খান হইরাছিলেন। পরে স্কা নামক এক জন দামান্য বাক্তি ভাষার সমিখানে আ-मित्रो करिन य महाताल, असूमिक इन्हेटन यामि এই ছড়িক, উপশ্যনের উপার টেক। করিতে পারি। রাজা ভাষার **কথা**র নি-

⁽⁾⁾ नीनात ।—नुर्का कारतत क्षत्रतिक सूजा, व सहस स्वीध स्त्र देश कांध्र स्त्री हर्षेट्रक ।

শ্বাস করিয়া ভাষার অভি এই ছবহ কার্যোর ভারাপণ ইরিলেন। স্থজ্য রাজ ভাঙার হইতে অচুরার্ঘ লইয়া এক নৌকা করিয়া एलिटलन अवर कन्छारम एक्यू म एव काटन গভীর জল জমিয়াছিল তথার তিনি এক এক মুক্রা পরিপূর্ণ কুয় নিকেপ করিচে नातिदनन, ভाहाट लांक मकन (गरे मृज्य পাইবার জন্য ব্যক্ত হইয়া নদীর দিকে প্রস্তরের ছারা বাঁধ প্রস্তুত করিয়া জল দি-প্রুম করিছে লাগিল, ভাগতে ক্রমে ক্রমে জলপ্লাবিত ভূমিও কেত্ৰ সকল জল শ্ৰাও एक क्टेबा चामिल। পরে পুনরায় নদী উচ্ছু-ति इ इश्रा जनशावन ना इट्रेंट पादत छा-ात कना माने स्ट्रांगनकाती वर्गाङ ফাশ্মীর মধ্যে রহৎ রহৎ থাল কাটিয়া দি-লেন এবং বিভন্তার ভীরে উচ্চ বাঁপ নির্মাণ मकल डेभारत এই क बित्वन। পূর্বাদেকা অধিকতর উবরো হইরা প্রচুর শস্য উৎপাদন করিতে লাগিল। রাজা গ্রেজার প্রতি পরম সমূচী চইয়া তাহাকে বছবিধ পুৰস্কার প্রদান করিলেন এবং ত:-হার কীর্ত্তি স্মরণার্থ বিহস্তার তীরবর্তি স্বজ্ঞা-পুর নামক এক নগর স্থাপিত করিলেন। এই ঘটনার কিছু কাল পরে রাজার মৃত্যু হইল, ও ভাঁছার পুত্র শঙ্করবর্মা সিংফাদনস্থ ছইলেন। ইহাতে অসম্ভব্ত হইয়া কতিপয় প্রধান কর্মচারী রাজবংশীর অপর এক वाकिएक तांचा कतिन, अवर मकतवर्षादक পদচ্যত করিবার নিমিত্ত অপ্রধারণ করিল। কিন্তু পরিশেকে তাহার। পরা**জিত** হইরা প্রায়ন করিতে বাধা হইয়াছিল। শক্ষরশ্রী আপন রাজ্যে শান্তি সংস্থাপন केतिया पिथिकत कित्रिष्ठ अर्थ हरेटनन। ভাষাতে অপর তুই তিন রাজাও ভাষার সহিত স্থালিক হইলেন এবং তিনি চারি नक अगोजिक वक नक नवादनाकी ও তিন শত হস্তী সমভিবাংখারে লইয়। কা-শ্বীর হইতে বহির্গমন করিলেন।

ভূপতি প্রথমে কৈগর্জনাল পৃথিবীচন্দ্র-কে(२) পরাভূত করিলেন। পরে গুজ্জরাবিপ-ভিররজেল অবেশ করিয়া যুক্তে তাঁহার সমস্ত দৈন। নিহ্ত করিলেন, এবং ভাষাকে একটি ক্ষুত্র দেশ প্রদান করিয়। তার্ছার মহন্ত ব্যক্ত। ও রাজভাণ্ডার অদিকার করিয়া লইলেন। পরে শঙ্রবর্কা ভারত-বিখ্যাত মহাপ্রা-প্রশালী ভোজনাজের দর্প দুর্গ করিয়া প্র-শ্চিমে গমন করিলেন। তথায় বলপত দরং ও তুরস্করাজা গণের (১ নিকট কা গ্রহণ कतियां अहारका क्षडांग्रंग्ड व्हेरलगा 😿 🥌 পরে স্থনামে এক নগ্য স্থাপন করিলেন। नकत्वभा अधिमार वनत्वा हो हित्वन, अवः वक्टविध छेलारम अब्दाधनरक निक्लीएन क-রিয়া তাহাদিগের অর্য শোষণ করিতেল। তিনি প্রচলিত রাজস্ব ও শুল্ক গুরুতর মা-ত্রায় গ্রহণ করিতে আরম্ভ করিলেন, এবং ভূমির উৎপন্নের যে নিক্পিণ্ড অংশ রাজায় প্রাপা, ভাষার অধিক লইতে লাগিলেন। অপর তিনি দেব সেবার্থে প্রদন্ত ভূমি সকল বদ-পূর্বক স্বরং অধিকার করিরা ভোগ ক तिर्देश, वर हम्मन कार्य. युग का जवा, रेडल ও অপরাপর বাণিজ্য ক্রবং বিক্রন্ন করিবার দাধারণের অধিকার রহিত করিয়া, কেবল বিশেষ বিশেষ ব্যক্তিকে ভাঙা প্রদান ক-রিতে লাগিলেন। রাজা এই দকল নিহু**র** নিয়ম ও গুরুতর কর স্থাপন বিষয়ে কতিপর কায়স্থ কর্মাচারীর প্রামর্শ গ্রহণ তলিতেন। এবং তাহাদের ভারাই সমস্ত কার্য। নি**ৰ্বা**হ করিভেন। এই সকল কর্মচারীর মধ্যে লবত নামক ব্যক্তিই সর্বপ্রধান ছিল; রাজা ভাহাকে ৩০০০ দীনার বেতন দিতেন। অ-

⁽२) रेजगर्ज--गर्डमान मार्टभार ।

^(°) বাস্মীরের উত্তর পশ্চিমে অন্যাপি কর্ম ন্মুমক কাতি আছে।

পর রাজনভান্ত পণ্ডিত, অধ্যাপক ও কবি-গণরাত্ত অভাবে অভাত্ত ক্লেশে পতিত কইয়াছিলেন। শকরবর্মার এইরপ নিষ্ঠুর শাসনে ও অন্যার বাবহারে প্রভাগণ অ-তিশয় সুংখাপর ও কতির ছওয়াছে, রাজ-মন্ত্রী ও রাজপুত্র ভূপতিকে তাহা জ্ঞাপন বরিলেন। কিন্তু ভূপতি পুত্রকে এই মাত্র উত্তর দিলেন, যত কাল তুমি না হয় রাজা ষ্ঠ ৮৬ দিন অপেকা কর,তাহার পর তো-মার ইচ্ছা হয় প্রকাগণের জংখমোচন ক রিও। শঙ্করবর্মা কিছু কাল অর্থ সঞ্চয় ক-तिथा भूनतोष रेमनः अरेशा छे छत्रा जिप्रदर्श अभन कहित्वन, मिक्नुनिभी होइवाजी एम्स म-্বল জয় করিয়। দিরম দেশে (৪) প্রবেশ করিলেন: কিন্তু এই ত্রে পর্বাশ্য এক বক্ষারের কালে বিদ্ধা কটায়া ছিনি আণিসাগি क बटलन । उत्थित समार्भीयम उत्थाब सुकुर गःताम (धालान कर्तुः सञ्दर्ध रेगनः) वाहेशः। স্তুদেশে প্রত্যাগ্রন করিল, এবং কাশ্মারের নিকটবভী হটয়া র'জার মৃত দেহ এক অভি উচ্চে চিভি: প্রস্তুত করিয়া দাই করিলি ; তাহার সহিত রাজার তিন রাণী ও জয় নিংহ নামক একজন পণ্ডিত সহমূত হইলেন !

শক্ষরবর্ষার পর তৎপুত্র গোপালবর্ষা রাজ হুইলেন। গোপালবর্ষা নিতান্ত শিশু ছিলেন, এই হেতু তাঁহার মাতা রাণী দুগল্পা রাজ প্রেশি নাপ হুইয়া সমস্ত, রাজ কার্নার ভার গ্রহণ কবিলেন। কিন্তু রাণী ক্রীপ্রন্দি ভিলেন, এবং প্রভাকর দেব না-নক মন্ত্রী ভারে প্রিল পাত্র হুইয়া সকল বিধান প্রত্যা প্রত্যা প্রত্যা কলি বিধান প্রত্যা প্রত্যা কলি বিধান প্রত্যা প্রত্যা ক্রিছা কথিত আত্র থে বালাবর মন্ত্রী মন্ত্র প্রভাবে তাঁ হার প্রাণ নাশ করিয়াছিল। তৎপরে গোপালবর্দ্মার এক ভ্রাতা রাজা হন, ইনিও কিছু
দিন পরে অকালে মৃত্যুহন্তে পতিত হওয়াতে রাণী স্থান্ধা সিংহাসনন্থা হইলেন।
কিন্তু ছুই বৎসর রাজত্ব করিয়া রাণী রাজপদ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন
এবং তৎপরিবর্ত্তে সুরবর্দ্মার পৌত্র নির্জিতবর্দ্মা ভূপতি-পদে অভিবিক্ত হইলেন।

ইয়া উঠিয়াছিল। তত্তি ও একাঙ্ক নামক তুই দল রাজদেনা মহাত্রিত হইয়া স্বাধীন-ভাব ধারণ করিয়া আপন্যদের স্বেক্ষামত ব্যক্তিকে রাজপদে ভাপন করিয়া দেশ লুগন ও প্র-জাদিগের নান। প্রকারে প্রীড়ন করিতে আ রম্ভ করিল। এই এই নৈনা বিজাতীয় কি না ভাহার কোন উল্লেখ নাই: বোধ হয় ভাহারা হাতার ও আফ্রান জাতীয় হইবেক, কারণ ইমারাই সচরাচর বেত্রভোগী কইয়া বিদে-শীয় রাজাদিলের দেনা খ্ইয়া থাকে। যাহা ইউক অনেক দিন প্রাপ্ত ই**ই**রিট অত্য**ন্ত** পরাক্রান্ত ও স্বেজ্ঞাচারী হইয়া কাশ্মীরে আধিপত্য করিয়াছিল, এবং এক ভূপতির পর অপর ভুপতিকে আপনাদিগের স্থবিধা ও স্বেচ্ছামত সিংহাসনত্ত অথবং সিংহাসন-চ্যুত করিয়াছিল। এই প্রকারে নির্জিত-বর্মার পর তৎপুত্র পার্গ, ত**ৎপরে পুনরায়** রাণী সুগন্ধ, পরে চক্রবর্মা, তদন্তর সুর-বর্মা ও শঙ্করবর্দ্ধন, ইহারা অপ্প কাল মধ্যে একাদিক্রমে মিংহাসনে উপিত ও তথা হুইতে পুনশ্চ দূরীক্ত হুইয়াছিলেন। **ইছ**া-দিগের মধ্যে চক্রবর্মা রাজচ্যুত হইলে পর প্রাণ ভয়ে পালায়ন করিয়া ডামর নামক পর্বাতবাদী এক বর্বর জাতীয় রাজার আ-প্রায় লইয়াছিলেন; এবং ডামর রাজ ভাঁহাকে পুনরার দিংহাসনে ভাপনার্থ বছসংখ্যক প্রতীয় লোক একত করিয়া ভারাদের

ত্রক দেশ তান ন বেল ভাগে নির্থ করা সভ্ত লাজ নির্পানিত চিক্তন্ত্রিকায়ত কিন্তু ভাইরা ভারত বার্মির নির্ভানি এনে বেল্ডানের। বেশি হয় উত্সলাম্ক কোল এনে, ব্লুভিন্ন

সহিত কাশ্মীরে গমন করিয়া অপ্রতিহত ভাবে এনগর পর্যান প্রবেশ করিল। ত্তা-হাতে শঙ্কাবৰ্দ্ধন বিক্ৰান্ত তত্তি দেনাগণকে लहेशा व्याक्तमनकाती छामत रेमनारक शब-भूत निकटि युक्त ध्वनान कतिर्तन। এই যুদ্ধে তত্তি দেনাগণ সম্পূৰ্ণৰূপে প্ৰজিত ও ছিল ভিন্ন इट्टेन এবং তাशास्त्र অবি-काश्म हे निरुष रुहेल। भन्नत्वर्क्षन अ ममत् ক্ষেত্রে প্রাণভ্যাগ করিয়াছিলেন। চক্রবর্ম। স্বীয় বিজ্ঞানী ডামর দৈন্য লইয়া অতি নমা-त्तां भूर्यक तांक्यांनी मत्या अत्यन कतिश निकितादम ताकाञ्च शका कतिहलन। जिल कीम नीम अद्गुष्टि (श्रृ मी प्रदे अज्ञा-দিগের অঞ্জিয় হইয়াছিলেন। একদা তিনি ছুইটি জোন্ত (ডোম) জাতীয় স্থাদরী ন-র্ত্তকীকে দেখিয়া ভাহাদিগকে আপনার পুরস্ত্রী করিলেন; এবং ক্রমে ভাষ্টাদের এ প্রকার বশীভূত হইয়াছিলেন যে সমস্ত কার্যাই ভাহাদের অনুমতি ক্রমে করিতেন ! অপর তিনি আপনার মাহা্যাকারী ডামর **দেনাগণকেও সম্পূ**ৰ্ণ ৰূপে বিশ্বত হইয়া গিয়াছিলেন; ভাহাতে কতিপয় ডামব একত্র ইইয়া রাজি কালে তাঁহার শ্যনগোরে প্র-বেশ করত তাঁহার পাণ বধ করিল। তদন-ন্তর উন্মন্তিবর্ত্তি নামক পার্থের এক পুত্র রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন। এই রাজার চরিত্র অতিশয় ঘৃণাজনক ওনিঠুর ছিল। ইনি নৃতা গীত ও জ্রীদংদর্গেই সমস্ত সময় অভিবা-হিত করিতেন, পক্ষিযুদ্ধ ও বন্য জন্তদিগের যুক দেখিতে তাঁহার বিশেষ আমোদ ছিল। অপর পাছে পরে কোন বিদ্রোহ উপস্থিত হয়, এই আশকায় যে যে ব্যক্তির প্রতি তাঁ-হার বিপক্ষ বলিয়া সম্পেহ ছিল তাহাদি-গকে নিহত করিতে আজা দিলেন; তিনি षां पन खां जारक अक अक्कातां नारत सक করিয়া নিরাহারে বধ করিলেন; এবং তাঁহার পিতা পার্থকেও কভিপয় অস্ত্রধারী দারা নিহত করিয়াছিলেন। কিন্তু এই শো-ণিতপিপাত্ম নরপতি ইহাতেও দস্তুফী হন नारे, जिन की इंदिर्थ ध्वर श्रद्ध निकादर्थ স্বয়ং অনি ধারণ করিয়া আপন অনুচরগণের मञ्जल रिक्ट्रन्थ अवर मार्त्रोश राव अन रिक्ट्रन्स করিতেন। অপর রক্কদ নামক ডামর দেনা-পতি তাঁহার মন্ত্রী হইয়। প্রজাদিলের সর্বস্থ वल भूरतक अभवत्व कविराव लागित। এই ৰূপ নিঠুল শাসন তুই বং দর মাজ ছিল, ভাগর গবেই এই জুরাচার রাজার মৃত্যু হইল এবং ভাধার পুত্র স্ববর্ম। ও নিংহা-নম্ভ হইরা স্থাপে কাল মধ্যে লোকান্তর প্রাপ্ত इहेल। इहाटच ताक्षकपानाती अभिक्रिकान একত্র হইয়া বৃশক্ষরদেব নামক এক জন দামান্য ব্যক্তিকে বাজপদে স্থাপন করিল। यमकत लिमांच्यूत वांनी कामरनव नामक এক ব্যক্তির পুত্র ছিলেন। তিনি বাল্য কা-লাবধি অসামানা বুদ্ধি শক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন এবং ভাষাতে যেরুবর্দন নামক এक ताक्रमलीत विरमय अनुशब्दाक्षण हरे-য়াছিলেন ও তৎকর্তৃ হ শন্তর্বমার রাজ্য कांद्र अञ्चारिकांसा (१) शक् व्याश्च इड्सा ছিলেন। যশকর সভাবত যেমন বৃদ্ধিশান ছিলেন, সেই ৰূপ তিনি বাজকার্য্যেও বি-শেষ দক্ষত। প্রকাশ করিয়াছিলেন। ভিনি রাজা নধ্যে প্রথমে স্থানিরম ও শাস্তি ভাপন করিয়া চৌহা। ও দস্মারুত্তি নিবারণ করিলেন। ওঁছোর সময়ে রাজপথ দকল ভয়পুনা ১-ইয়াছিল এবং বিনা প্রহরী সমস্ত রাতি দো-কান দকল মুক্ত-দার থাকিত; এক জাতি অপর জাতির বাবসায় গ্রহণ করিছে পা-রিত না এবং প্রজা সকলে রান্ধার ন্যায়-গুণ ও স্থানিচারে পরম সস্কৃষ্ট ইইয়াছিল। কিন্তু একটি ছুৰ্ টনা উপস্থিত হুইয়া যুশক্ষ-

⁽a) दैमना मः क्यां छ भन ।

रवत गमल जीवनरे **प्रःथादर ७ ताल एवत** প্রতি ব্যাঘাত চইয়াছিল। জাঁহার এক স্ত্রী চুল্চরিত্রা হইয়া বাজবাটীর এক নীচ জাতীয় ভ্রোর প্রতি আসক্ত হইয়াছিল; এই বিষয় তিনি জ্ঞাত কইয়া চঃখ ও লক্জায় অভিভূত হইলেন ; এবং এই কলম্ব অপ্ নয়নার্থ প্রায়ণিত করিয়া বাকাণ পণ্ডিত-श्वरक विल्त अर्थ मान कतिरलन, 'अति अ-किं मिठे खाशन कतिराजन। किन्न ठाँशत मन इहेटक धरे कलक मुद्रीक्छ बहेल ना। ভিনি ভদ্বিষয়ের চিজার নিরভর বিমাশ-ভাবে থাকিতেন:এবং পরিশেষে গাক্য ভাগ করিরা আপনার প্রভিষ্টিত সঠে প্রবেশ করিয়া গোপনে জীবনের অবাশন্ত ভাগ আহিবাহিত করিলেন। তিনি ।-থন রাজগদ প্রিত্যাগ করিয়া বুন ত খন তাহাৰ এক পুতা ছিল, কিন্তু এই भूट्यत जत्मत श्रीड डाइर्रित महम्मह दिया, এই চেতু মলিবর্গকে আহরান করিয়া তা-হ্রে এক জ্ঞাতি বণাট নামক ব্যক্তিকে দিং-क्षान्त अनाम कतिए० किशो किएनन। किन्न মশক্ষরের পূত্র সংগ্রামদেব নিভান্ত শিশ্ ছিল এই কেই মন্ত্রিণৰ ভাঁহার রাজত্ব হইলে সম্পূর্ণ আধিপতা করিতে পারিবেক এই আশায় সংগ্রামদেবকেই রাজা क्ष हे कुटल ख्यांच कम्बंहातिश्व मयस क्रमण অাপ্ত হইয়া কিছু কাল সধ্যেই পরস্পার विवाम बावज कतिन, अवः डांशांपत गर्या পার্বপ্র নামক মন্ত্রী কতিপয় লোক সং-এছ করিয়া এক বিদ্রোষ্ উপস্থিত করিল, এनং मिहे श्लिचरयार्थ ताकारक ७ ठीमात मर्भका वाङ्गिषिशदक निरुष्ठ कतिया व्यापनि নাহস পূৰ্ব্যক নিজোবিত ভরবান্ধি ধারণ ক-রিয়া সিংহাসনে আরোহণ করিল, আর তা-ভার অনুচরগণ ও ভরযুক্ত অঞ্চারণ তাহাকে त्राका महाधरन व्यनाम कतिल। किछ भा-

क्षिण एवर कामजा व्यक्षिक निम हिल मा, ए क्षित প্রতিপক্ষেরা পুনরায় প্রবল হইয়া ভাষাকে পদ্যাত ও নিহত করিল, ভাহাতে তৎপুত্র কেমগুপ্ত রাজা হইবেন। কেমগুপ্ত অতিশয় ইন্দিয়পরায়ণ ও ভোগত্থাসক্ত ছিলেন স্বরাং তিনি রাজকার্যার আভ किছू मांबरे मत्नात्यांश कतिर्टन ना, रेशाँड (मगबर्धा त्रांकणामन निकास गिथिल इहे-য়াছিল, এবং পর্বভবাদী বর্বারগণ আদিয়া नशत्रामि लुर्छन ও বৌদ্ধদিগের বিহার मक्श पक्ष कृतिया पिट्ट लागिन। বাকা লংহোবাধিপতি সিংহরাকের দিদা নাগী কন্যাকে বিবাহ করিয়া আপনার চরিত্র ক্রিঞ্জ সংশোধন করিতে পারিয়াছিলেন, এবং ভদবধি অপর সকল বাসন পরিতাপ করিয়া মুগ্যাতে প্রকৃত্ত হইলেন কিন্তু ইছ'-তেই তাঁহার অকাল মৃত্যু হইল। তদনন্তর ठाँगांत भूल अভिमन्। ताकां इरेटलम, किन्न **फिला तानी समछ ताक कार्या खतः निकार** ক্রিতেন এবং প্রায় সকলকেই আপন্র कमरुभीन कतिशाहित्यन। इंशाट का-ন্তুন নামক প্রধান মন্ত্রী নিতান্ত অসম্ভূষ্ট হইয়া এক বিদ্রোহ উপস্থিত করিল; কিন্তু নরবাহন নামক রাণীর এক বিশ্বাসী অস্তুতর দৈন্য সংগ্রহ করিয়া উক্ত নত্ত্রীকে পরাজয় करिल। এই करिश नवर्याद्य व्यक्ति বিদ্রোহদমন করিয়াছিল। অভঃপর অ-ভিমন্তা রাজা লোকান্তরিত হইলেন, এবং ভদবধি দিন্দা রাণী এক একটা শিশুকে রাজ বিংহাসনে স্থাপন করিয়া আপনিই রাজত্ব করিতে লাগিলেন।

আমাদিগের ইতিরুত্ত লেখক কছনে প্র-প্রিত এই পর্যান্ত লিখিয়া দীয় প্রস্থ সমাপ্ত করিয়াছেন স্করাং তাঁহার ইতিহাস ১৪৯ শকান্দা (ইং১০২৭) পর্যান্ত আনীত হই-য়াছে। তাঁহার পর অপরাপর ক্রেক্সান তৎপরবর্ত্তা সময়ের ইতির্ভ অকটিক করিবার য়াছেন: কিন্তু ভাষার অনুধাবন করিবার আর অয়োজন নাই, কারণ এই সময়েব কিছু কাল পরেই কাশ্মীর মুসলমানদিগের অধিকারভুক্ত হইয়াছিল। স্বতরাং হিন্দু রাজত্ব কালীন কাশ্মারের ইতিহাস ও অব ভার সংক্ষেপ বিবরণ উল্লেখ করাই আমা-দিগের যে উদ্দেশ্য ভাষা এক প্রকার সংসা-

উদ্ধৃত।

ভবানীপুব ব্ৰহ্ম-বিদ্যালয়।

প্রধান আচানোর উপদেশ। প্রথম সংখ্যা। ৮ টেন্ত ১৭৮৫ শক।

ইহা অভান্ত আফ্লাদের বিষয় যে ভিন বংস্থ পরে পুনর্বার এই ভ্রানীপুরের ব্রহ্ম-বিদ্যালযে জামরা শুক শিধে, পিডা 'পুতে, সন্মিলিত হই-রাছি। ইহারমধ্যে পরিচিত অসল মুখ অবলো-कन कतिया आभात क्षण आनित्म उर्थन कहै-ভেছে, আবার মুভন উৎসাহ-পূর্ণ ব্রহ্ম জিজামুকে উপস্থিত দেখিয়া আশার অভীত ফললাভ করি-জেছি। এ ভিন বৎসরের নগে। কত প্রকার পরি-বৰ্ত্তন হইয়া গিয়াছে, কিন্তু ব্ৰহ্মান্নি ভেমনি জাজ-नामान बहियाटह। याहाटङ ट्यामात्रदमत क्षट्य পৰিত্র ঈশরকে ধারণ করিতে পার, বাহাতে জানের উন্তি-সহকারে প্রীতির উন্তি হয়, যাহাতে পশ্য-वरम राज्या वनीयांन् रख-शाधीन रहेया विनयी रुष, धरे प्यामात लक्षा। धर्यात्न मात्मत्र मत्या क्वल छूडे घती काल उपरमध अनिवात जना উপদেশ নয়। বাহাতে তোমরা শাস্ত দাস্ত উপ-तक कि कि कू नगारिक हहेगा उक्सधारम खेलनी क हरेटल शांत्र, এই खामात लका। ट्यामदा हित জীবন ধর্ম্মের উন্নত পথে ঈশ্বরের সহচর অনুচর হইয়া থাকিবে, এই শুরুতর অভিপ্রায় সিদ্ধ করি-बात निविष जिन बरमत शदत आमात्रदमत अधादन निमान : आनम मत्न विमन क्षारत यक हेकू नाथा मार्थायां कतिएक धानुक आहि। जामात्रदमत ज त-कार्न चारकत मिनिएड त्व अकात बच्च, का शह क करणाय । कार्य कार्य क विकारि । किन् वर्गत

The state of the s

श्रुद्ध य मकन উপদেশ দিয়া 6 नाम, ए हा कि हु है वार्थ इस नारे। ८७।म'त्रामत जात्नाकत क्मार्य ব্রাক্ষপর্যের মধ্রতা প্রবেশ করিবাছে এবং ব্রহ্মকে আরে। বিশেষ ক্রেপ ক্যানিবার নিমিত্ত জোমার-भित्र क्यापीमां क्रिया। ८६ : जेश्व क्यायात्रावद सम्बे জ্ঞার্থন। সিদ্ধ ককন্। কেট নিভা অমুদ্র **অভর** कृष्टेक अवन अन्य भागस्यात्व अर्थी कर्माक अवारम ভেগরা সমাগত হটয়াদ, ইহানে ব্রাক্সবর্দ্ধর खिशटमभ बका कवियाक-- " जिल्लानार्थर म खक्र**म**-वा जिनास्यः। ্যাথনা বাজীত শুক মঙ্গল পুলংগল অনুভাগৰ ভাৰে প্ৰকাশ পায় না ৷ ভাঁহ'তেও জানিবাৰ যাঁচ র ইক্ষা হইলাছে, জিনিই অভীব গ্রুপাধা ব্রহ্ম জান লাভ কবিতে পারেন। ব্ৰদ্যকানেৰ ভাগন নোপান প্ৰাথনা: দিভীয় লোপান মতুও চেটা। তোমধা গাঁ, তুভকাব্য कहेरल ५ %, फर्ट नेश्रह्य न निर्माल है। जिस्सा ননা হইয়া যন্ত্রপুক্ত অ্মার উপ্দেশের মধ্য मकल व्यक्तिशास कता व्यक्ति व्यक्तिश्व सिमिटल ভোমারদের নিজের অনুকার ও মছের উপর মত নির্ভর করে, আমার উপদেশের উপদ ভঙ নহে। ভে'নবা বিদ্যালয়ে যে ভারে বিদ্যা শি-शिट्ड बाङ, य जात बक्तुका स्वीत्र बाउ. भिष्ठे खादन कि aथादन ज्यामिगाइ ? स्मेडे खादन যদি আসিয়া পাক, ভবে ভালা উট্ভ হয় নাই। এখানে প্রিছ ভ বে আংশিতে হইবে। যে ঈশা বের জনা কড় লেকে অর্ণো অর্ণো ভ্রণ করি য়াড়ে, অণচ উভোকে পায় নটি; কত কন্ত দার্শনিকেরা ভর্ক-জাল বিস্তার করিয়া থাচালে জানিছে বিয়া অবসম হইয়া ফিরিম আবিষ্টেছ , कैं। हार्ति निकार व हे दाव कारा अधारन कारिन्य है। প্রমেশ্রের নিকটে ঘাইতে সহলে প্রিত্র হার্যে स्वन अभारत या है। क करेरता व्ययम स्विभ व्यवस ভার সমাজে ঘাইতে কুণিত চইতে হয়, ঘেষম माधु-गमाटक व्यक्तिय-व श्वाव वर्कदत्त्व नाम्य जैशहर শন করা যায় না : তেমনি পরিত্র-ধকপের যদি धारन जाश्विक इंदेश घाउस यात्र नः। क्रमन করিয়। অপবিত্র চক্ষু ভাঁহার চক্ষুর প্রতি অর্পন করিবে ! পাপে রভ থাকিয়া কি প্রকারে সেই প্রমেশরের প্রিক মুখ দর্শন করিবে ? বিশুদ্ধ-ভাবে শ্রদ্ধা-ভাবে সেই প্রম পিভার নিকটে উ-পদ্বিত হইতে হইবে। তিনি আমারদের প্রম পিজা, আমরা দকলেই ভাঁহার সম্ভান : ডিনি व्यामादएमत अञ्च, व्यामहा नकदल है जैशित कुछा : তিনি আমারদের রাজাধিরাজ, আমরা সকলেই তাঁহার প্রজা, ভিনি ''একোবশী,'' আমরা সকলেই তাঁহার বশে রহিয়াছি। আইস আমরা হত্তে হস্ত ধারণ করিয়া, ক্ষেক্ষ ক্ষেক্ষে মিলিজ হইয়া, সেই

क्रेबारहड म'वधादम फ़िश्मीक क्रेडे-- मानादमह পার সোপানে আরোহণ করিয়া উদ্ধুথে সেই দের-দেবের নিংছাসনেও নিকটব ভ^ট বই। জা-নকে উন্নত কৰিয়া সভাকে লাভ পৰিতে ইজা করু, আ এক সহক তে সভোৱ অনুষ্ঠান জারা হাদ-গতে প্রিক্ত করে, ভাষে পাসর করুপ এথনাই আংলি। क्ष्मिक केटेटबस । शॉम अपन करहे। इस, उस्क भारचत् व्यावदर्ग का भागमानिम क्या कर करव सम्बे পৰিত স্বপ্ৰকাশ স্থানের কির্ণকে নেয়ে। নথা দিয়া कि ध्वकाद्व भवान कविद्व 🔧 एयमम् योज्यः ইन्छियः भरयस्य धचुचीतः इटग्रम, उध्मम हकालहोता हाल-পালনে তৎপর প্রকেন: সেই প্রকার কেমারদের ্ত্র-সহকারে ত্রাক্ষা-থর্মা ব্রন্ত প্রধান করেছে চইবে। এথ নি কি ভোগারদের গালতা ১৯৫০ ইছে ১ই-•ছে না? তেবে প্রকারণি চান্তর সংয়ম করিয়া ानिक क्रेक्स क्यारिम न्याभितः हक्रीत, जित्र श्र-ोरल शांकरक शकु कहिरन। अति म किरम इकेंद्र १ ्रिन भाष्त्र हेक्तिस मध्यम कत्. छात् श्रीवात क्षेट्रदा ों। स्थ-भाषम कि १ न् ए ४,- फेल्म्फ् काल्य है जिस्स দিপকে সর্ফাপতে নিয়েকে চনা ৷ যেনল অস্থাক্রচ अमारक मिराजान करने १ ज्यांक है किसामियोदक निवसम र्राजित्य । । क्षीनिष्ठक ० ५० । इ.पुनाक्ष्र कदा ग्रह् কড় শক্তিম দার, সত্তত্তিকে, ভাইটি অপ্রি-· कार्रे । विकास की लिया कि गाउँ के खा व्यक्त शिव अध्यक्त করিব ন্থাকে বকান্ত প্রকৃতিন হয়, আলো। প্ৰতি ও জানন ২৮। হানিংগ্ৰিলাক পক্সেপে কেয়েপে কর্তি ই শ্রে সংখ্য কর। । মহাজে শরীর পুদ্দ 'দ, মন বিলিন'- ১ম, আরো মড ড ােশ্র হুইল। লক্ষ্যের প্রিয় আ্রাম্মান লয়, মেই च्छक 'द्रा है' क्षेत्रमियरक स्थान कर्नुहरू । क्षेत्रण शहा-দক্ষণ ব্রারেক কানিছে ২ইকো মনের প্রোথমা र है, शास्त्र भाडे शायान, शिक्षत्र मिलाम गाउँ एकि। গ্ৰহ্ম ১৯ বেশিখায় নিয়েপ্তি কবিত্ৰ ১ - জন্মনাকে ्रिय कहिन व विभिट्ड । कि अक्ट्र बालनाटक तर कवित्त १ विक्रिया १ वर्ग द्वां (। कि धाकाद्व প্ৰায় মণ্ড্য কৰিলে ! তেখা তুলি প্ৰেটি নিম্নন্ত र्देश अभितं अर्थ है कियुविकारक विद्यान कहिला। া, চইলে সহতে সেঘ শুনা আকাশে যেমন ७० चक्र भ लाह, उन्हें कुल जिल्लाल यद्धभीना ি দৰেৰ অন্মিটত ইশ্বয় প্ৰেকাশ পাই**বেন।** জী-ার ১০১৯ ক নাম-কূপ মুইজে প্রজাপ্তির বিক্ষাবিক লি নগাত বটারে, ি ্রাপ স্থিয়ের রুপনা ক্টাটের মধ্যম मना मक्ट किंगा विक इस्ट्र ভূমি ভইকে অধি-पण प्राच विकेश र जिल्ला क्षेत्र, इष्ट व्यक्तिक सम राभिरीटन प्रतिकतान प्राप्त । ८ केंग्रिंग वर्षा क्रिक्किता प्राप्ता प्रवास अवत ज्यम जामानिक कालिक्स िन अस्ति। हामिति प्रतिक संधीना विक्ति निवास सहस्रा

बाहेरवम । ७५ कार्छ स्वयंन खाद्यि नशरवादना जाएता महन-विशिष्ट्र इस, बल (यादमत श्रीविक आला) श्रीविक-স্ক্রপের সংযোগে সেইরূপ আরো প্রিত্র-স্ক্রপের ष्यांचारमत रयांचा रुहेरव ! जाना रुहेग्रा यांच वि-भिय-कार्श खन्नात्म स्वानित्त हेन्हा कह : खर है-थान कह, जाशः इस. उदक्के आहार्याद मधि-पाटन गमन कर । अभारत्व भिश्वशंभन जानि जा-কাশে প্রতিষ্ঠিত রহিয়াড়ে, বাহা বিষয়ে সর্বত ভিনি দীপ্তি পাইতেছেন, ভিনি সকল ঘটনাকে যথাযোগা-রূপে চির কাল নিয়মিত করিতেছেন, हेर्। (क म। कारम ? किन्नु जानापर्या वरमम ''छ-षिकि कागर्व ' लैंकाटक विटमेश-करण कानिएक देव्हा কর। তাঁহাকে উপরে উপরে জানিলে হইবে ন। : ব্রামাধর্মোর আশ্রা লইয়াছ, স্মত্ত্র সকলের অ-করে প্রবেশ করিয়া তাঁহাকে বিশেষ রূপে জানিজে ইজাকর। কি শভা জাতি, কি বনা জাতি, भक्टलत्हे मध्य भिक्ते भक्ता भी भक्त भक्त भक्त कि-মানের সভাতে বিশাস আছে: কিন্তু তোমার-দিগকৈ সকলের মধ্যে প্রবেশ করিয়া, সকলেতে নিমল চইয়া, বিশেষকপে উ(হাকে জানিতে চইবে। উশ্রেব মহিনা বাহা বিষয়ে যে প্রেকার প্রকাশিক মহিয়াছে, ভবানীপুরের এই বিদ্যালয়ে ভিন বং-সর প্রক্ষে ভাষা বলা হইয়াছে: এ কলে সম্বরের নিগ্র ডব্র-সকল জোমর। অনন্যমন। এইয়া গ্রীয় यस्त भीष चारा एउं असम्मान कद, कति रि শেষ কপে জীহাকে জানিতে পারিষে। বলা হইয়াডে যে জগতে যালা কিছু আছে, যাহা কিছু কইন্ডেছে : মেট প্রাণ-প্রগোর অধিপ্রান তিনি ও কার-প্রতিপাদা, তিনি সৃষ্টি-ছৈতি প-लय-कार्चा। जिन नदमद श्रद्ध क मकल दिशाहम হট্যা গিয়াছে : এখন সাচা ধলিব, ভাহা সীয় আলাকে নিমগ্রইল দীনত জান ছারা, মুখা-জিজ বৃদ্ধি দ্বাবা, পবিত্র হাদ্যা দ্বারা জানিতে कर्राय-एकः ও छाङ्ग मक्कार्य छ। निष्ठ इहेर्ट। वधम ताकि कारल सक्क मस्त डिमिड इश, यथम मुभाकत मुभा-जाल जा खोर्न करत्रम ; खर्चम स्मर्टे শোকার মধো শুক্তিত হইয়া ঈশবৈর আবিতাব रमिथरक णाकि। यथन छेवा काटन स्था छेमग्र হয তথ্ন স্থুদায় আকাশে উচ্চারি মহিমা ভাষ-लाकन कर्ता अर्थक नियद्ध, निष्धांत्रात, मना-क्लिट्ड, अडे अथंदिकडे महम क्या विद्वारक বলন্ধানতে উত্তারি শক্তি প্রকাশ পায়। বিশ্ব अदल (कांकि को को वाजूब अञ्चलको भने (मध्या রচনা-কর্তার বিচিত্র শক্তি অনুভয় করি; জাবার न्दीरशते नाम अभस जिम संदर्गत मुल्येन गर्रानः डाहात कानात्माक क्रमानिक मिथि। सर्थन आका-भर्म अस्त कविशाहि, जामहो ज्यानि । देनके- वर्गाली मर्खनिष्ठ वा भारत मार्च भारत था श्री श्रीक रखन দত্তাকে বিশ্বাস করিয়াছি। এথন হস্ত পারণ ক-বিয়া তোমারদিগকে থীয় খীয় আয়ার অভাস্তরে, क्रेम्रद्रत व्यक्तश्रुद्र, प्रद्रत द्वकाश्रद्ध, लहेश य:हेत। বেখানে এখন অক্সকার দেখিতেছ, দেখানে পরে ज्यादक्षांक दम्बिटेव।' ज्यालनात मतीत दम्बिटक७, ইহাও অন্ধানার। আতার আবাদ-তান এই দেচ-পিঞ্জর ভ্রমশারভ। রক্ষের ভাব বেরূপ, শরীবের 'अंत्र अक्ट कल। अहे महीरत्व अब्दत निमग्न হইরা সীয় আত্মাকে নেখ। আত্মার কিরণে সু-োর আলোক প্রকাশ পাইতেছে। ধনি আত্মা मा भारक, करन एक दम्बिटक शाहा ! अंतीरतत महशा আত্মার প্রভাব দেখ, তাহার অন্তর্ভন প্রদেশে शत्रमाधारक दंगियहरू शाहित्य। त्म अवक्ष हित সম্বন্ধ এক সময় শ্রীর প্রিভাভ কইবে, ভখন শ্র'র এইডে আহা। অবসুদ এইয়। লোচান্তরে গ্যন করিবে। এখন এট চক্ষু গেল, ত্থন মণা কোথায় ^{দ্ৰ} অন্তর্যাতাকে স্থানে অন্তার क्रथम कि श्रेकाट्ड का मन । यथम गर्माडन क्लान करिदक भा भाविनाम, भा सभौतामत मरपा छै।-হাকে ক প্রেকারে জন্ ক্রিক সূত্রণ আপ-শাক্তি भाकिरतर नो, छथन काउन काक पूर्ण्योमगटनत सुधारक है। इंदिएक कि व्यकारन डिश्नांका कतिन? ঘদিও স্থা থাকিবে, সমার্থ প্রবাহিত ছইবে, প্রক্রোদান নিয়ভ গল্প দান করিবে: কিন্তু মৃত प्राप्टर मध्यक्त बैठात किछूठे भीकित्वक मा। खथरन्। তে। আলা নিকাণ চটকেত না। আলার অভা-खद्ध 'सम्बद्धां वादक दम्बिट' छ दे शाकित। नाहि द्वत भक्ष भति दिव या मध्या, कि'। वर्डभारम आहि । াক্স ভবিষাতে পাকিবেক না, ইছা সকলেই জা নেন : কিন্দু আত্মার সঙ্গে পর্মাত্মার যে ভিরু স-দক্ষ, ভাষা ভোমার্রিপকে বিশেষ করিয়। জানিতে व्हेरत । मध्य मभूमास वाका विषय मिक्कीत है জিয় হইতে ভিরোহিত হইবে, ভগনো আহার অভান্তরে অনুসন্ধান করিলে পর্যাহাকে দেখি তেই পাইর। এই প্রকার প্রমান্তার সঙ্গে অ'-মারদের আঁথার চির কালের সমন্ত্রা জুলা চ-ल्फात मटल व्यामात्रदानत विद्याल क्रेट्स, किन्नु श यगोबात महिल कमालि निटक्षम इंग्रेटक मा। यथन मेंद्रिव्हें माचा काचाटक प्रस्थि, उथन मंद्रीहरक ভালার আবাস-ভান বোপ হয়; যথন সেই আ धारिक आरोत शहसाबादक मिथ, उथन 'धरे म-तीत शनिक रमय-मान्तित इय । मन्नीत-मान्तिरत वाजा-वान्त डीकाटक वानीन आविशे, डेर्डाटक जानात व्यान-करन अध्यक्ष करन जानित्व नीतिवा 一夜名 多

वास्टित्र व जाकान स्मा सटक किन्छ अंतरम-

সারের পরিক শভাজে পূর্ণ রহিয়াডে। এই সমু माग्न काश्य (मार्ड श्रांत्र) गटककात्त्र आवाम-याम : এই निश्व-मिश्व मिहे (मन-एम्टवत् है निश्वन्त मन्दि। यकि (कामात) छने मन्तिरवत वाष्ट्रित थाकिया पुत হইতে তাঁহাকে প্রণাম করিতে চাও, ভবে জোমা-রদের উন্নত ব্রাহ্মপর্যাকে আনুশ্র করিবার সকল ফল প্রিবেন।। পদি জোমর। ইচ্ছা কর, জবে ব্রাহ্মধর্মা ভোমারেদের এট মন্দিরের অন্তঃপুরে হস্ত পার্ণ করিদা লইয়া যাইবেন, মেথানে ভাহার অবিষ্ঠাতী দেবতার সাক্ষাৎ পরিচয় প্রাপ্ত ইইয়া ভোমরা কুভার্গ হুইবে। এই বিশ্ব-মন্দিরের অ-क्षा श्रुव सव-नातीय आशा , परे आ आहि क्रेक्सदत्त छै-क्किन इसीय दकान, धरे आहेता इसके उनके न साम्बर मिन त्यदेख्याः १ तत्य दम्तान्। दक्षां देशितिष्टे । स्था स्टन यात-१८ वस् । तक्कानामित मित्र लाग करिता भिरीक्षण क[न्छा त्रथ, भागीत्हद सम्मन भक्षः जाहा. আংগ্রার জেমনি ভিনটি দ্র নেধিতে প্টেবে দেই দিন দ্বার দিয়া ঈশরের জ্যোতি অস্তবে *তা*-নিক্ট হই কেছে। ত্রকটি স্বার আমার জান, একটি দার সামার প্রতিত আর একটি দার আতার গর্মা। জ্ঞান স্বারা ভূত কাল-সিদ্ধ সকা স্ক্রপকে দর্শন করি, বর্ত্তমানে জীতি ছার, তাঁর মজল-ব-রূপের অন্তর্ন: করি, ভারী কালে কর্ত্তরা পর্ণোব অনুষ্ঠান দ্বি। শুদ্ধ অপাপানিদ্ধ পারিদ স্বকাপের দ্ধিকৰ্ম অভ্ৰয় কৰি ৷ ব্ৰে: ফাচে, সেই সিদ্ধ বস্তু, সভা বস্তকে, ভানা স্থার। ভানিকে পারি। তাঁহাতে বৰ্ডমান জানিয়। গ্ৰীতি দ্বার ভাঁচার আ-জ্বাকরি। ভখন খারক আমারদের প্রস্প হয় এবং পর্নিত্ত,ন ভাষারেদের জীবন জান পর্ম্ম শ্রীক্রেমধের যদি একটিরও জাভান হয় করে অনির। উপরের পাপে। ও রম্ভ ত্রতিত পালে না । 爾河 蜀剑 听说 计图记信制 河南之 刘 竹便。 配件 কাহার প্রাণ জাজ প্রকাশ কবিব ! যাদ প্রাণ ব ভিক্তি দ্বাল উপাসনা না করি, ভবে ঈশ্রণে কর্ जन-माञ्च आधनकतः जानियाहे व। कि ७० ति १ राम और हा को छ। अस्य लाजम् ना कति, छति छैत्रच ल्यान ज्योखिछ। পাপিযে'কে কলে জনে নিৰ্মাণ চট্টা যায় ৷ সকল ममधने छै। शहक लक्षा व्यथितम । हेट्या कि छेला-পনার প্রথ, কি স্থেস্টার্ক কার্টের সময়। অব-ৰ্ম্মাচরণ ক'ৱব'র ভো ক'বাই এটে। যাহা কিছু शर्या-काण कदिदयः काष्ट्रां अ क्रेयटप्रय मटल ज्यापि हाः चित्र। कतिराज इष्टेश्य । याग्र कश्चराक न। लक्का করিয়া কার্গা করি, ভবে আপনার কার্যা চটল ; यांन अवहरक लका किया कार्या कति, उत्वहें के-শরের প্রিয় কার্যা হইল। ব্রাহ্মপর্মের উপদেশ এই ; निस्क ज्ञान काता दीहाटक पर्यन कदित्व,

মিশাল প্রাতি ছারা ভাঁছার পুজা করিবে, পর্মানু-के म खाता लेका खादमण शामन करियत । य-भाग करन बना शहरक साद्ध, कान-व्योकि-अबू-श्रीम-खांब पिया श्रीमाचारक काशामात व्यवदाद दन-चित्रा है। हात्र शुक्रा काहत्व कतिता । वह जाक পর্ম্যে জ্ঞানের বিষয় জানায়-স্বরূপ, প্রীভির বিষয় अअव अकार कार्या मायदम्य कार्या भावता, तेल भन्नीवर भवरमभव। अमन करे द्वाराभना नतन পর্মা ছইলে উংক্রট : জেমান কোমার্দিগকে সকল प्रमाधिनकी पर्वत गर्धा । आहे इहेटल कहेरत । यथम ভোননা এই সকাবয়ৰ সম্পন্ন ব্রাহ্মপর্না গ্রহণ করি-গাছ : ভখন ভোমার্দিগকে সমুদ্ধি তাঞ্চে সম্পন্ন হইতে হইবে--শ্বীব্যন আলা তিনেরি উছতি সাধন করিতে হইবে. কণ্ডে কালেডে ভাবেডে मर्ख क्षकारत है अन एहंटल कहेरत. त्लामातरमत की-बर्भ करें जानाभराई। माराया। ध्यकामा करिए र ইবে। আমার এই কস্তবিভ প্রিক্ত ব্রাহাপর্যা গ্রন্থ ব্রন্ধবিদ্যার জ্বোজি-রূপ অনুলা মুক্রা-মণি-সকল ইভস্ততঃ রাশীকৃত বিজিপ হট্যা বহিমাতে : তেই ম্বা ইহা হইতে এক একটি মুক্তা ৰাছিয়া লইয়া আ-পানার মানোজপ ভুত ছাবা ভাচার মাল। গ্রিয়া বিধের প্রক্রীয় সকলের স্তব্নীয় ব্রন্ধের জ্বণে অ-र्भाक्ष ।

বিজ্ঞাপন

ভালাগমাজ-গৃহ সংস্কারের প্রয়োজন ক্ইরাছে: যে অব্ধি ইক্রে সংস্কার সম্পন্ন না হয়, সেই অব্ধি এখানে ত্রক্ষোপাসনা স্থাত থালিবেক। অভ্যুব সাধারণ সজ্জ-নকে অব্যুত্ত করা ঘাইতেছে, প্রীযুক্ত দেবে-জনাথ ঠাকুর মহাশয়ের ভবনে প্রতি বুধ-থারে সায়ং কালে ত্রক্ষোপাসনা হইবেক। ঘাঁছারা মানস করেন, ভধায় ঘাইয়া উপাসনা ক্রিবেন।

श्री जानसम्बद्ध (वमाखवातीम।

বিজ্ঞাপন।

আগানী ৩০ কার্ডিক সোম বার সন্ধান ৭০০ ঘণ্টার সময়ে বেহালা গ্রামের একাদশ সাম্বংসরিক ব্রাহ্মসনাজ হইবেক, ব্রাহ্ম মহা-শয়ের। তৎকালো তথাকার ব্রাহ্মসমাজে উপস্থিত হইয়া ব্রাহ্মাপাসনা করিবেন।

> ত্রী জগচ্চক্র চট্টোপাধায়। সম্পাদক।

Recently Published.

"THE RELIGIOUS PROSPECTS OF INDIA '
To be 'd at the
CALCUTTA B HMO SOMAL.

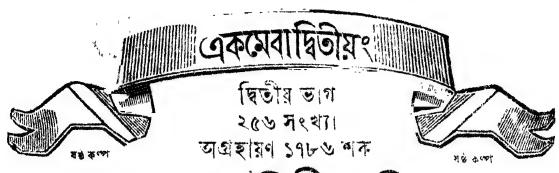
BE" PRICE 4 SNNSS. By POST 5 ANNAS.

নিঘ'ণ্ট পত।

পৃষ্ঠ।

कनिकाणा जानामारकत यक्षा	P 6
নিবাপই চতুর্দশ সাধংসরিক ব্রাক্ষসমাজে	র
বন্তা	>**
त्राभणतम्मी	300
खवानी श्रुत्र उक्तविमानस्यत छेशसम्	400
Prince of the Control	
তত্ত্বোধিনী পত্তিকার মূলা নিৰূপ	रेव ।
তত্ত্বোধিনী পত্তিকার মূলা নিবংগ অগ্রিম মূল্য (কলিকাভার জন্য)	र्गन । ७,
,	
জাগ্রিম নূল্য (কলিকাভার জন্য)	ره
জাগ্রিম নূল্য (কলিকাভার জন্য) (শকঃবলের জন্য)	340

ক্রী এই তত্তবোৰিনী পত্রিকা কলিকাতা নগরে বোড়া-নাঁকোছিত ব্রাক্ষসমাজের টুক্তবিগের অনুনত্যসূত্রারে অতি নালে প্রকাশিত হয়। ১৩ই কার্ত্তিক ব্যক্ষবার কর্মৎ ১৯২১ কলিগতাকা ১৯৬৫।



তত্ত্ববোধিনীপ্রতিকা

ব্রংখনা এক মিদম প্রজ্ঞানী স্থান্ত কি কন দী আদি দং সংক্ষম দূজ ২। তাদের নি হংং জান্মনতংগণিত প্রক্ষিত বিষ্টান্ত বিষ্টানিক বিষ্ট

ঈশরের সহিত জগতের সম্বন্ধ।

এই জগৎ পু: ব্য কিছুই ছিল না। ঈশ্ব ইহাকে উৎপন্ন করিয়াছেন, এক্ষতেও তিনি জগৎ হইতে নিজিয় চইয়া অবাস্থতি ক্রিতেছেন না, সেতু স্বৰূপ হইয়। ইলাকে ধারণ করিলা আছেন। ধেমন জীবারা শরীরের অনলমন ছইয়া আছে: নেই ৰূপা তিনি সমুণায় জগতের আল্লো ইইরা সমুণা য়কে অবলয়ন করিয়া রা গ্রাহেন। যেমন कीवाजात कडाटव भतीत निष्णुक इत्र, भिरे ৰূপ প্রমাতার সহিত বিচ্ছিন্ন হইলে জগৎ উৎসন্ন इहेता यात्र। यमन जीवाजात हेन्छ। करम এই শরীর পরিচালিত হইতেছে, দেই ৰূপ প্রমান্তার ইচ্ছামুদারেই সূর্য। উরাপ দিতেছে,অগ্নি প্রজ্ঞালিত হইতেছে, म्य याति वर्षन कतिराज्याह, मञ्जूनाम कना স্ব কর্মে নিরন্তর নিযুক্ত রহিয়াছে।

আমরা কাহারও জীবাত্মাকে দেখিতে পাই না, কিন্তু মনুষোর শরীর দেখিয়া জী-বাত্মাকে উপলব্ধি করি। যখন মনুযা দেখিতেতে, শুনিতেতে, কথা কহিতেতে,

গমন করিতেছে, তথন কেহ তামকে আজন হইতে বিভিন্ন বলিয়া বিশ্বাদ করেনা। নেই ৰূপ দ্দিও প্রমানা সকল ই প্রিয়ের অগোচর, কিন্তু জ্ঞানের অগোচর নালে: महीद्वत भद्धा छीतात्रात मात्र क्लद्दत আত্মা জ্ঞান-গোচর পরমেশ্রকে সার্বজই প্রতীতি কর। যায়। প্রতিনানি টি ধীরের। স্থান কিরুপে তাঁহারি জ্যোতি দর্শন করেন: भून हरस छै। इन्ति काँचि छेलनाँब करतम. क्रमक्रिक उँवाति वस विवाद धान . নিজু-সালনে ভাগারি গাছারা প্রভীভি ক त्तन, वितिनंभवत्त हैं शति व्योक्षा ११० করেন ; পিতামাতার স্বেহে উচ্চারি করুণা অনুভৰ করেন: পতিব্রভার খেনে উলারি প্রতি অস্থিদন করেন। উহোর। নদ্ধায় জগতে তাঁহাকেই ওত্তপ্ৰাত ভাবে ব্যাপ্ত (प्रश्ना

আগনাদের আত্মাতে মনে করিয়া দেখা।
বিশিও আত্মা ক্ষ, ভাবাল, ও আর এক
সর্কাশক্তি প্রবের ইচ্ছার পরতন্ত্র; ভথাপি
ইছার শরীরে ইছার শা ৮ কত দূর প্রচারিত
ছইতেছে। আত্মা শরীর ৫ তে যাদিও দংপার্ব
বিভিন্ন, তথাপি আত্মা ধর্মন যে প্রধার ইচ্ছা

করিছেছে, অবয়ধ-সকল স্থচতুর ভূতোর নামি লেন বুদ্ধি পূর্বেক সেই ইচ্ছা সম্পন্ন করিতেছে। আত্মা যথন দেখিতে ইচ্ছা করে, চম্মু- তথনই উন্মালিত হয়; আত্মা যথন চলিকে ইজা করে, পদ তথনই জাঁহার আভিলেত ইজা করে, পদ তথনই জাঁহার আভিলেত স্থানে ধাবিত হয়; আত্মা যথন ধারণ ক্রিতে ইচ্ছা করে, হস্ত তথনি প্রামারিত
হয়। আ্মানের ক্তু আ্মার যতচুকু শক্তি, লেনেই পরেল পে শরীরকে পরিচালিত করিভেছে। এই চুন্টান্ত দেখিয়া জগতের
সহিত তাহার সম্মান আধারণ কর; এই আ্মীম আকাশের দহিত সমুদায় ব্রহ্মাণ্ড
তাহার শরীর, ভিনি ইহার আত্মা। তিনি
বে প্রকার ইচ্ছা করিতেছেন, ইহা তথ্যাণাং
ভাহা সম্পান করিতেছেন, ইহা তথ্যাণাং

কিন্তু আ্নানের আ্না যেমন কুজ,
তিনি সে কপ ক্চ লংন তিনি মহান্ আ্লা
তিনি প্রকা, তিনি নিরাতশয় মহান্ । আ্নাদের আ্লা যেমন শরীরের সহিত একপ
সথল যে, শরীরের স্পত্তের সে স্থছুথী হয়; তাঁহার স্থকণ দেকপ নতে;
তিনি নির্জিপ্ত, তিনি অনক্ষ, তিনি অপরিবর্জনীয় আনন্দ স্থকা। আমাদের আ্লা
ঘেমন তাঁহার ইচ্ছার পরতান্ত্র, তিনি সে কপ
কাহারও পরতান্ত্র হহেন; তিনি শত্তা,
তিনি সর্বাশ্তিমান, "ন ততা কন্ডিজা
নিতা ন চাধিপঃ" আমাদের আ্লা যেমন
এক সময়ে ছিল না, তাঁহারি ইচ্ছাতে
উৎপন্ন হইয়াছে, তিনি সেকপ নহেন।
ভাজোনিতঃঃ শাশ্বতোয়ং পুরাণঃ।"

অনেকে মনে করিয়া থাকেন, "গৃহ
নিশাণের সময়েই নিশাতার সহিত গৃহের
যোগ থাকে, নিশাণ কার্য্য সম্পন্ন হইকে
আর ভাগর সহিত যোগ থাকিবার আক
শাক্তা নাই। মেই কপ কৃতির সময়েই
প্রতীর সহিত ইহার বোগ ছিল, এ ক্রে

আর যোগ নাই, যোগ থাকিবার আবেশ্য-কতাও নাই; সেই স্বাশক্তিমান্ পুরুষ যা-হাকে যে প্রকার স্বভাব-বিশিষ্ট করিয়া স্থট করিরাছেন, সে সেই স্থভাৰ অমুসারেই স্থ নিয়মিত কার্য্য সম্পন্ন করিতেছে।" ধাঁহারা এৰূপ বলেন, স্ফি ও নিৰ্দ্বাণ এই উভয়গতু रेबलका डाँहाटमत ऋषग्रयम रस नारे: উভয় ক্রিয়াকেই ভাঁহার৷ একবিধ করিয়া ভাবেন। সনুদায় উপকরণ বিদ্যমান আছে, কেবল সংযোগ বিভাগ প্রভৃতি প্রক্রিয়া ঘারা ভাষার অবস্থায়র প্রতিপাদন করাই নির্মাণ; স্কুতরাং নির্মাণ ক্রিয়া সম্পন্ন হইরা গেলে নির্মাতার নহিত যোগ থাকিবার আবশ্যকত। নাই। কিন্তু স্থলি ক্রিয়া সে ৰূপ নতে। একেবারে অভাবের অবস্থা হইতে বস্ত:ক উদ্ভাবন করার নাম স্থটি—ত্রাটার ইচ্ছা মুর্তিমতী হওয়ার নামই স্বাষ্টি — ফ্রান্টার শ্জিবাজ হওয়ার নামট ফ্টি; স্থতরাং गिरे देखा वा मिलित यमहाव इअराउ याहा. रुखित व्यमहाद हउत्रां ७ छाहे। व्यक् এব.স্টি ইইডে ঈশ্বকে পৃথক্করা আরু ঈশ্বরের ইচ্ছা বা শক্তি হইতে ঈশ্বরক পুথক্ করা, উভয়ই সমান। কিন্তু ইছা কাহার বিশ্বাস যোগ্য হইতে পারে ১ অভ-এব আত্বা হুইতে পৃথক্ হুইলে শরীর যে ৰূপ विनक इत, मह कप प्रवाद्या इहेटड शृक्क रुरेटन समुनाग्न स्टिनिन इहेश श्रीता ।

আমাদের আত্মা জগতেরই এক অংশ, স্থতরাং অন্যান্য জগতের নাায় আত্মাও ভাঁহার স্থ ও আত্মিত; কিন্তু অন্যান্য জগত বেমন যক্ত করপ, আত্মা সেরপ নহে। আত্মার সহিত ভাঁহার সহক্ষ জনাবিধ।

, মেঘ, বায়ু প্রভৃতি কর ক্ষণতক তিনি পৃথক জ্ঞান দেন নাই, আপেনাগ্রই পূর্ণ জ্ঞানে তাহাদিগকে চালাইতেত্তন; এই কন্য তাহারা চির্কাল অঞাভ-রশে কার্যা করিয়া আদিতেতছে। আত্মাকে তিনি পৃথক্ জ্ঞান দিয়াছেন। ভড় জগৎকে তিনি পৃথক্ ইচ্ছা প্রদান করেন নাই, ভাঁহার অ-পরিবর্ত্তনীয় ইচ্ছা উহারদিগকে কার্যা করা-रेटल्ट्ड ; अरे क्या छेश्वरणत कार्या कथन অবসম হয় না। কিন্তু আত্মাকে তিনি পৃথক ইচ্ছা প্রান করিয়াছেন। এই যে পৃথক্জান ও পৃথক্ইজা; ইছা প্রতি আত্মাই প্রতীতি করিতেছে, সন্দেহ নাই। এই পৃথক্ জান ও পৃথক্ ইচ্ছা প্ৰাপ্ত হইয়াছি বলিয়াই আমহা আত্মা শব্দে. পুরুষ শব্দে উক্ত হইয়াছি—স্বাধীন হই-থা ছ---ধর্মের অধিকারী হইয়াছি এবং দণ্ড পুরস্কার লাভ করিতেছি। স্থুতরাং অ-ন্যান্য জগতের ন্যায় আত্মা তাঁহার যন্ত্র নয়। ত্রকীর মহিত ক্ষির যে নম্বর এবং আত্রয়ের সহিত আ'ব্রেটের যে সহন্ধ, তাহ। চেত্রা-চেত্র সকল জগতের সঙ্গে সমার থাকিয়াও আছা ও পর্যাত্মা উভয়ের মণ্যে আর এক ধর্ম সম্বন্ধ দীপামান রহিয়াছে। তেমন আর একটিও সম্বন্ধ দেখিতে পাওয়া হায় ना, याशांत मरू प्रश्ने मञ्चलात जूनना ए-हेटल भारत। मश्यक्टभ विनटल इहेटल व्या-মরা **অংস্কা,তিনি পরমাত্মা**; কিছু স্পা**উ ক**রিয়া বলিতে গেলে এই মাত্র বলা যায় যে তিনি আমাদের পিডা মাতা মধা স্ক্রাজা প্র ভূ, আমরা ভাঁহার পুত্র ও পদানত বকু এবং প্রকা ও কুতা।

পিরোভোর পার কররের পতা।

থিয়োডোর পার কর বেটিনের ক প্রিগেসনাল নামক সভাতে ৰে পার বেথেন আমরা ভাষা স-কলন করিয়া আকাশ করিছেছি।

व्यक्ति यथन व्यन्त्रिक्त वालक हिलाग, रमहे व्यवस्थि वर्णवाबदकत्र भग व्यवसम করিতে আমার অন্ত করণে একান্ত যত্ন ও উৎসাহ সঞার হইয়াছিল। এ কার্য্য অভি-শর প্রশস্ত ও বিস্তীর্ণ। এ কণে আমার বোধ হইতেছে আমার প্রকৃতিই বল-পূর্বাক আ-মাকে ঐ বিষয়ে প্রবর্তিত করে।

অনা লোকে প্রচুর অর্থ বায় করিয়া বি-দ্যাভ্যাস করিয়া থাকে, কিন্তু সৌভাগ্রক্রনে শৈশবাবস্থায় আমাকে সেৱপ করিতে হয় নাই। আমি পিতা মাতা ভাতা ভগী-গণের আদেশ ও উপদেশানুসারে শিক্ষা-প্রণালী স্থুস্পার্ট অবগত চট্টাছিলাম। আমি নিরবচ্ছিন্ন স্থিরভাবে কোন ২স্তুর (करल प्यक्रमोन्प्रया नितीक्षण न। कतिश তাহার প্রকৃতি পর্যাবেলাচনা করিতাম। যে-মন মাধ্যাকর্ষণ শক্তি সকল বস্তু অস্থালি-বিত ভাবে ধারণ করিতেছে, আমার স্মরণ শক্তিও ভদ্ৰপ ছিল। আমি ষাহা বাহ শুনিতাম তৎসমুদায় অবিকৃত ভাবে সারণ করিয়া রাখিতাম এবং স্বেচ্ছাক্রমে সম্পূর্ণ-ৰূপে লোকের নিকট ব্যক্ত করিতে পারি-ভাম। বিচারশক্তি ও কম্পনাশক্তি উন্নত করিতেও আমার গাঢ়তর অধ্যবসায় ছিল। এই সমন্ত ব্যতিরেকে আমি নীতি ও ধ-র্মান্ত্রশীলনে অতিশন যত্ন করিতাম। শৈ-শ্বাবস্থাতেই আশ্লার স্বাভাবিক সংস্কারকে केचटरत आमिन विवश ममानत ও मनान করিতাম। অকপটে সভা বাবহার, নারি-পরতায় প্রতি, গদমর্যাদা এবং সম্ভ্রমের প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া গুণামুগারে সক-লের সমাদর করিভাম। প্রম অস্থাস্পদ ঈশবে বিশাস ও তাঁধার প্রতি প্রীতি স্থা-পন করাই সর্বাপেক্ষা আমার মুখা উ-দেশ্য ছিল। আমি সকলেধান মহার।-জের নার ভাঁহার আবির্ভাব লক্ষ্য করিতাম না; অত্যুত্ত ডিনি সম্পূর্ণ নাগরপর ও পরিপূর্ণ প্রীতির অকের প্রম পুজা পিডার নার

দাধারণের অভি তুলা দৃষ্টি বিতরণ করেছেছেন বলিয়া বাধ করিতাম। সকল বিষয়ে
আপনার প্রতি নিভর করিয়া নীতি ও বুকিরুত্তি অনুসারে কার্যানুষ্ঠনে ও স্বচকে
সমস্ত বস্তু অনুসন্ধান করিতাম। ধর্ম অন্
মার বিশ্বাস ও মত ন্যায়ানুসত বলিয়া বোধ
হুইত, তাহার রক্ষা বিধানার্থ দৃঢ়তা অভ্যাস
করেতাম। এই রুণে আমার অনুসন্ধান
সকল বিষয়েই উত্তেজিত হুইতে লাগিল।

ण्यांग भिन्ने ममराहत **अरनक** वित्राक्त अ অদক্ষ গ্ৰহ্মত গ্ৰহণ করিয়াছিলাম ; কিন্তু বেধে করি আমিদির দেশের তথনকার ধা र्षिककृतमञ्जूष्य अप्त । जात्कहे (सब्ध অপে কুনংস্কার শিক্ষা করিয়াছিল। নীতি-ও ধর্মপ্রকৃতি যে প্রকৃতিমূলক, ত্রিষয়ে বিশ্বাদ সাপানের নিমিত্ত কেন্ট্র যত্রশীল ছি-লেন না। আমার পিত, মাতা লোকের ধর্ম-প্রের্ডি ভাগাসিদ্ধ বলিয়ে প্রতিপাদন ক-রিতেম, স্কুত্রাং তাঁহাদিলেরই সন্তান বলিয়া আমারেও ঐ নিশা্স অনায়ামে উৎপত্ন হইটা ছিল: কিন্তু উ শাদিগেরই প্রমন্ত্রে আমার ঐ বিশ্বাস হইস্লাছিল বলিয়া আন্মি ঐ বিষয়ে কিছুই আপনার গুণগর্বা করিতে পারি না। আমি শ্রুনিয়াছি, তীহার। মনুষোর চরিত্র ও বিশ্বাদের সবিশেষ পরীক্ষা করিতেন; কিন্ত কালারও চরিতা বিশানের অনুরূপ না হইলো উট্টো ঐৰপ লোকের প্রতি কদাচ অসমা-শের বা্ক। প্রেরোগ করিতে**ন না।**

আমি শারীরিক পরিশ্রমের ন্যায় মান্সিক পরিশ্রম গছলে আয়ন্ত করিয়া লইলাম এবং যথন গাঢ়তর অভিনিবেশ সহকারে কোন বিষয় পর্যাংলোচন। করিভাম, বাহ্য পদার্থ কিছুতেই আমার শ্রভিবন্ধকভাচরণ করিতে সমর্থ হইত না। অধিক কি, যথন শ্বহেশ্ব কার্যা সাধনে প্রস্তুত্ত হুতাম,তথনও শ্বেজ্বান্য অন্ত অন্যাহিত সমর্থ হিলা করিছে করিছে পারিভাম।

আমি বালাকালেই উপযুক্ত শিক্ষকের

মালায়ে উৎরুষ্ট পুক্তক সকল অধায়ন করিয়াছিলাম। ইংলগুরি পাণ্ডিলদিরের গদ্য ও
পদ্যে এনীত স্থলনিত গ্রন্থ, বাইবল এবং
গ্রীক ও রোমকাদণের সর্কোৎকৃষ্ট স্থরস
পুক্তক সকল অনুশীলন করিতাম। কিন্তু,
আমি সর্কোগ্রে ঐ সমস্ত পুস্তকের অনুশাদ
মাত্র পাঠ করি: পরে অন্তিকাল মধ্যে মূল
একের মন্তিও সম্পূর্ণ পরিচিত ইইয়াছিলাম। এক নার যাহা পাঠ করিতাম, তাহা
সমাক্ আয়ন্ত ও স্থলাক্ষম না করিয়া ক্ষান্ত
হইতাম না। যদিচ বালাবিস্থায় যে সমস্ত
পুস্তক অবায়ন করিয়াছিলাম, তাহার সংখ্যা
অতি অন্পা; তথাপি তৎ সমুদায় সারবৎ
ও মনোপ্রায়ক ছিল তাহার সন্দেহ নাই।

পদার্থ বিদ্যা ও মনো-বিজ্ঞান অনুশীলন করিবার নিমিত্ত আনার অসাধারণ যত্ন ও অনুরাগ ছিল; উহা শৈশবাস্থাতেই আমার অন্তরে প্রীতিকর উৎদাহ সঞ্চার করিয়াছিল এবং আমার পিতার স্থন্য ও বিচারপটু ও স্থান্তর মনো, তির গতি ঐ বিষয়ে থাকাতে আমি তাঁহা হইতেও যথেন্ট সাহাষ্য লাভ করিয়াছিলান। প্রকৃতির রাজ্য আমার চতুলিকেই বিস্তীর্ণ রহিয়াছিল, আমি স্বিশ্বেষ অভিনিবেশ সহকারে উহার সৌন্দর্যা সন্দর্শন ও উপযোগিতা অসুধাবন করিতাম এবং বালাকালেই স্বদেশের কীট পাত্র স্বায়াহপ ও মৎদা প্রভৃতি স্থলচর ও জলচর

कीर अब मकन करर भूका कर कर्न के किए निर्माण करियां कि निर्माण करियां कि करियां कि निर्माण करियां कि करियां कि निर्माण करियां कि कर्न के निर्माण करियां कि स्टूबर कर कर्न करियां कि कर्न करियां कि करियां कि निर्माण करियां कि निर्मा

अहे बद्ध चारात विमान्यभीनन क्रमन **উब्रज रहेट्य** वृत्वमात्र-विटमच व्यवस्थ করিবার প্রকৃত সময় উপস্থিত হইল। তথন আমি ধর্মবাজকদিগের বিষয় বিশেষ অমু-ज्ञान कडिया (मधिलांग, छीहादा मकटलई আয় বিশ্ব বৃদ্ধিনান ধার্মিক ও সুনীল এবং ভাঁচাদিলের চরিত্রও অকলক্ষিত। কিন্তু ভাঁখাদিবের বাবশায় কিছুতেই আমার চিত্ত थाकर्षन कतिएक ममर्थ इहेल ना। নার আড়মর, উপদেশের দরিক্রতা ও নির-ৰ্থকতা, ঐশিক অভ্ৰান্ত প্ৰত্যাদেশ বিষয়ক^{*} মতের অনৈদর্গিকতা ও অভিরতা, দামাজিক আর্থনার নিজাবত। এবং উপাদকদিগের অ-মনোবোগিতা দর্শন করিলে ধর্মঘাক্তকের পদ অবলম্বন করিতে বিচক্ষণ বাজি স্বভা-বতই পরাজা্থ হইয়া থাকেন। এতদ্ভিন্ন षारमतिकात वर्मधाष्ट्रकता त्लारकत्र मीडि, বৃদ্ধির্তি ও ধর্মপ্রবৃত্তির উন্নতি সাধন ক-রিকে তাদুশ যত্রবান নহেন। যদিও তাঁহারা তবিবয়ে সচেটিত হন, তাহা কেবল বাহ্যিক माज। जामि यथन जन्भवत्रक हिनाम, एएकाटन এक वाकि आयाटक किछामा कतित्राहिन : धर्मागामद्युता कि त्याञ्तरपत প্রকৃত দোবের কথা উল্লেখ করিছে পারেন? "यामि कहिलाम" यामि त्याञ्वदर्शन त्या মুক্তকণ্ঠে উল্লেখ করিতে পারি"। মহাত্রা रेगार्गन् त्याञ्गरनत त्माच मर्गन कतिता के ए पिरम्ब निक्षे अवस्त वाद्य क्रिया-बिद्रमन्। , जाजब है।। निः , जादमबिकाव धर्मगाञ्चकिरशत मद्या व्यवान हिटलन धदः चार्यात सद्द दिनिके ग्रास्त्रोद लक्का वर्द हा व

করিরাছেন। আমার বন্ধু বান্ধবের। ধর্মধান্ধকতা অতি সামানা কার্যা এবং উহাতে
সুমধিক উপকার সাধনের সন্তাবনা নাই
এই বলিয়া তাত্ত্তে আমাকে বারংবার
ক্রিতাম উহাই অতি বিস্তাবি কার্যানেক এবং লোক সকলকে সংপ্রে আন্মান কনিবার অবিনীয় অবলয়ন।

রাজনীতি সংক্রান্ত কার্যো নানাঞ্চলার व्यत्नां इन व्याष्ट्र । এই वायमात्री त्नारकत्र मर्वा व्यक्तदकरे छेक-भन्छ ७ तांकनीविष्ठ वित्रा मापांद्रश्व मन्यान-जारून इटेस था-কেন এবং ধর্ণাযাজক দিগের অপেকা উহঁ। দের সমধিক স্বাধানতাও দৃতিগোচর হইয়া थांदक। এই ममस পर्यादनावना क्रिजा আমি রাজনীতি সংক্রাম্থ কার্যা অবলয়নে এकान्छ অভিলাধী करेशा डेहाর অपूर्नीलन क्रिंडि नोजिनामः; किन्छ भ्रतिस्थि थे वा-वर्षादश्रद्ध (पांष अञ्चलकाटन व्यव्य इहेशा ष्मिश्रामा, वावकातांकीवीमित्रात भन्मश्राद्धां इ নিভাস্ত অকিঞিৎকর। তদর্শনে আমি এ-क्ष व्यत्नाज्य चाङ्गके ना व्हेवाद निमिष्ठ मेश्रद्धत मार्श्या श्रार्थना क्रिलाम। य वि-ষয়টি স্পষ্ট মিখ্যা বলিয়া প্রতিপন্ন হইতেছে. তাহা কিৰূপে সমৰ্থন করিব এবং কিৰ্কুলেই ৰা আভিবাকদিগকে ভাষেধ্যে অভুমোদন क्ताइंटच माथासुमादत ८०का क्तिव ! कमा এक वाकि न्छ बाहेश्यत वाका छेक् छ করিয়া কহিয়া ছিলেন 'মিথ্যাকে সভাৰতে প্রতিপাদন করিতে না পারিলে কেছ বাব-হারাজীবী বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন ना"। आमि । प्राथनान यत्न क ू जिनान लाक এই ব্যবসারে প্রস্তু হইয়া যাহা সফলতা বলিয়া অনুমান করেন, আমার বিবেচনায় তাহাই বিশাশ। নির্দোষ লোকের ধনস-ম্পান্ত, স্বাধীনতা, ও জীবন বিন্ট করা অ-

भिक्रा निरुक्त कार्या चांत्र कि **स्टेट**ड शाहब्राय **এই ममक अर्थाह्याह्या करिया व्यक्ति वे** वावमात्रः व्यवसद्भाव मन्त्रुनं भवाषा धः 🕸-लाम अवर स्क्रीयाक्टकक्र कार्या निर्देशाय वि-বেচনা করিয়া তাহাতেই জীবন অভিবাহিত করিতে মনোনীত করিলাম। তথন আ-मात्र मरमामरधा এই ভিনটি श्रश्न উপস্থিত रहेल। आमि कि क्यांन मध्यमंत्रविद्य-বের দিকান্ত বাক্যে অভিভূত না হইয়া প্র-ক্ষত পতা অনুসন্ধান করিতে পারি এবং উহা माधार ८१ व वनामृङ ७ व्यवति गृही इ इहेरल ७ कन ममारक मुक्तकर्थ चौकात कतिरक मनर्थ হই ? আমি কহিলাম হাঁ ইহা আমার স-ল্পূণ সাধ্যায়ত। আমি কি সামাজের বিরুদ্ধ, রাক্ষনিয়দের বিরুদ্ধ ও খ্রীটীর ধর্মের বি-ক্লক থক্ত অধিকার অনুসন্ধান পুর্বাক ত-দিষয়ে সাধারণকে প্রবর্ত্তিত করিতে পারি ? আমি কহিলান হঁ৷ ইহা আমার সম্পূর্ণ সাধায়ত। আমি কি প্রকৃত সত্য ও প্রকৃত अधिकात चुन्नः अवनध्य क्रिट्ड ममर्थ हरे अवः वाका अभारक छेलामा मिया शांकि ভাষা কি স্থাং কার্যো পরিণত করিতে পারি ? ভখন আমি এই বিষয়ের প্রত্যুক্তর माद्र मिक्क रहेताम। छेश्टनमासूनश वारकात कता वड़ महत्र वार्थात नरह। কিন্তু আমি কহিলাম আমি ভবিষয়ে যত্ন ও অধ্যবসায় এদর্শন করিতে পারি।

এই তিনটি প্রশ্নে ধ্রুপ ছ্রবগাই ও গভীর ভাব অভিব্যক্ত ইইভেছে,আমি তথ-কালে উহা অভি অল্পই বুরিয়াছিলাম; িন্দু একানে অপেকাক্ত সমধিক হার্মক্রম করিয়াছি।

এই সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া আদি ধর্মধালক পদে প্রতিষ্ঠিত হইকে আগ্রাবসা-াক্ত হইলাম। মনুষাদিলকে জীবিকের গ্রাধান উদ্দেশ্য দর্শোপার্জনে সাহায্য শ্রাধান

अविवाह ज्यांका रणव है। एरेटक अनिवेतन कर्मन जानि एव विकास्य छोटन पर्य निका ररेएक नाएक, जाहरू संयुक्त कार्याच्या जाहरा मस्तीनस्य अवृत्व व्यक्तातः। अध्यक्ति क्षित धर्मात मर्ना चानूम्।वस कतिया विशिष्ट, তাহাতে আমার বিশ্বর সংশার উপস্থিত **इहेन। उपार्था कडक्छ निः अक कारत है जि** খীকার করিলাম এবং কডকগুলি বখালখ ঞিৎ সিদ্ধান্ত করিয়া লইলাম। আমি শৈ শবাৰন্থাতেই শান্ত-শ্ৰুপ ঈশ্বরে ক্লোধ-প্রবৃত্তির আরোপ এবং অনস্ত কলি ভয়কর নরক-বস্ত্রণা ভোগ বিষয়ে সম্পূর্ণ অবজ্ঞাও অশ্রদার করিতাম। বধন আমার বয়ঃ ক্রম সাভ বৎসর, তথনও ঈশ্বর ভায়ের কারণ বলিয়া আমার বিশ্বাস ছিল না স্কুডরাং তাঁল হইতে আমার অন্তঃকরণে কলাচ কিছু-মাত্র ভয় সঞ্চর হইতনা। অভুভেতিনি চির বিশ্বাস ও স্থির শীতির আধার বলিয়া ' অবগত হইয়াছিলাম।

দেবত্রয়বাদী প্রি**ভী**য়ানদিবের মত নিতান্ত অমূলক, উহা কিছুতেই যুক্তি ও বিচার দিছ वित्रा श्रिक्ति करा बाहरक शास्त्र मा। यनि ७ व्यामि । এक-मे अत्रवानी हे डेनिट है तिहान् विकीशंन मच्छामारसंत्र भरधा कवाधरन कतिया-ছিলাম, তথাচ এক বংসর কাল আমেরিকার অটেস্টাান্ট ধর্মাজক ডাক্তর লিমান ৰীচারের উপদেশ তাবণ করি। তিনি पर ৰলমিত ধর্মের মত অদ্রান্ত বলিয়া ভাষাতেই সিকান্ত বুজি করিয়াছিলেন। এ মহাত্মা ইউনিটেরিয়ান, ইউনিবার্সলিক, পোপ-मञानदी ও नाखिकनिरगत महिक धर्मा मेर ক্রান্ত মততেদ নিবকাৰ ছোরজর: বিভাগ্র করিতেন। আমি ভাঁহার সংস্থাপিত স कात भवन श्रुक्त छरतार मन्त्रम बार्कि निर्मात्र व्यक्तियः गटकक योको व्यक्तिक भरतन, महीक ও आर्थना विदेश कहिलान।

আনি ভাষার বৃদ্ধি, যন্ত্র ও অধ্যবসাংক্র
স্বিশ্বে অসংসা করি। তিনি আয়াস ও
পরিক্রম অকার পূর্বক আনাকে ধর্মণাত্রে
শিক্ষা অবান করিয়াছিলেন কিন্তু কোন
করিতে সমর্ব হন নাই। আমি ভাষার
অক্ষিতি সভ হত প্রগাঢ় অভিনিবেশ
সহসারে অসুধাবন করিতাম, ততই উহা
অসমত, ভ্নিত ও অস্বাভাবিক বলিয়া প্রভিপন হইত।

বিশুপুরের অনৈসর্গিক জন্ম-বিষয়ে বিশাস বন্ধমূল করিবার নিমিত্ত আনি কোন বিশেষ শ্রমান প্রাপ্ত হই নাই। বাইবলে যে ৰূপ প্রমান প্রাপ্ত হওরা যায়, তাহা নি-ভাত্ত অসকতে ও অমূলক। তাঁহার জননী মেরি এবং তিনি স্বয়ংও এই বিষয়ে কিছুই প্রকাশ করেন নাই।

মূতন ও প্রাচীন বাইবলে নানা প্রকার
থালীকিক ক্রিয়া কীর্ত্তিত আছে; কিন্তু তৎসম্পার নিভান্ত প্রবিশাস্য ও অপ্রেজের।
থ সমস্ত প্রেলাকিক কার্যোর মধ্যে কতকশুলি সম্পূর্ণ অসম্ভব, কতকশুলি একান্ত
উপহাসাম্পদ এবং কএকটি নিভান্ত ক্রের।
এই সমস্ত কারণে স্থামি অধিকাংশ এককালে প্রবিশাস করিলাম এবং স্থবনিষ্ট
সামান্য-রূপ সিজাস্তের উপর নির্ভর করিয়।
সন্মোদন করিলাম। স্পাদীরার যে প্রাকৃতিক নিয়ন অতিক্রম করিবেন, ইছা কবন্ধই যুক্তি ও অসুভব সিজা হইতে পারে
না। স্তরাং বাইবল-প্রনীত থ সমস্ত অলৌকিক কার্যা স্বর্ণ-নির্দ্রিত প্রস্তর পারের
নায় বিতাক অসকত সন্দেহ কাই।

বাইবল সম্পূর্ণ অত্যান্ত ও ক্রম্বরের গাঁকার অত্যাদেশ বলিরা কোন ক্রমেই বীকার করিতে পারিনা এবং উহার অলো-ক্রিকার করিতে পারিনা এবং উহার অলো- भारतंत्र मात्र-शरकात मण्णून विक्रम । मूफन वाहेवरण य ममल मीकि ७ धर्म विवक्रम गणा निकाल । मूफन वाहेवरण य ममल मीकि ७ धर्म विवक्रम गणा निकालि हहेगार , करममूनात्र (क रेन्स-वल विवह्रिक वालि कर्कू म् शूर्व्स निर्मिक हम नाहे हेश किकार श सन्तरमान करा यो-हेर्फ शारत । शूलक ७ वस्त्र विरम्पत महाम श्री श हशार श्री श्री कर्म विवक्रम मर्क किंद्रु हि विकास श्री होरान विवक्रम मर्क किंद्रु हि विकास श्री हो साम क्रिक शर्ता मां।

ডুইড মত।

ইউরোপের অন্তঃপাতী গাল, কর্ণনি ও বিটেন বীপে খুকি ধর্ম প্রচারের পুর্বের যে প্রকার ধর্ম প্রচলিত ছিল তাহাই ডুইড্ মত বলিয়া পরিগৃহীত হইতেছে। এই ধর্ম সংক্রান্ত যাবতীয় কাষা ডুইড্দিগেরই হস্তায়ন্ত ছিল এই নিমিন্তই ইহা ডুইড মত বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়া আছে।

ডুইড নামে একটা স্বতন্ত্র জাতি কোন কালেই বিদ্যান ছিল না। এ দেশে যেমন ভট্টাচার্যা বলিয়া কোন জাতি নাই, শাস্ত্র বিশেষের আলোচনার নিমিত্ত ভটাচার্যা নাম প্রাপ্ত হয় এবং প্রাক্ষণিদিগের মধ্যে ঘাঁহার ইচ্ছা, দেই ঐ ব্যবসায়ে নিযুক্ত হইরা ভট্টা-চার্যা হইছে পারেন,দেই রূপ ঘাঁহারা ধর্ম সং-কাল্ড কার্যা করিতেন ভাঁহারাই ডুইড বলিয়া প্রাস্থ্য হইছেন এবং অন্যান্য ভার বংশের মধ্য হইছেও যে কেই ইচ্ছা করিভেন, ভাঁহা-রাই ডুইড হইছে পারিতেন। ছলেশের ছৎ-কালীন ভাষাতে ওক রুক্ষের নাম ডুই; এই শব্দ বছ বচনে ডুইড হইরা বাইড। উক্ত সম্প্রায় ওক বুক্ষের উপাদনা ক-রিভেন বলিয়া ডুইড নামে প্রস্কি হন।

केक नमरत चात्रकदर्य जामारनदाह

मद्भगर्वा हित्तनः जन्मानि काश्रह हान বর্জমান আছে। ক্ষত্রিয়ের। রাজা ছিল বটে। किस बाबाद वार वार वार वार कित कित বিচার করিভেন, 'পৌরোহিড্য' করিডেন, এবং আচার্যা হইতেন। কেবল युদ্ধকেরে রাজ্যদিগ**কে রাজা** বলিয়া বোধ **হইত।** ডুই-্ডদিগের অধিকারও দেই রূপ ছিল। <u>এ</u>ক এক রাজ্যে এক এক জন অধিপতি ছিল, काश्ता (कवन युक-एकटक टेमनागरणत व्यक्त-ক্ষতা করিত, অন্যান্য যাবতীয় ক্ষমতা ড ইডগণের হস্তগত ছিল। তাঁহারা বাবস্থা व्यवंत्रन क्रिएन, यावचा अन्त क्रिएनन, म कल विनदश माश्रि अन्। य विष्ठांत्र कति द्वन, मखोक्टक मध निर्देश, अर्परम खामान-দিপের মতারুষারে না চলিলে বেমন সমা-জ-চ্যুত কইতে হয়,সেই ৰূপ খাহারা ভুইড किरशत मध विधान समाना कति उ. पुरेरपूता ভাষাদ্যিকে যজ্জ কাৰ্যো আসিতে দিতেন सा. काश्र व जित्यांश कथाश करेट; এवर লোকে তাহাদিগকে অভিশপ্ত ও অপবিত্র বোধ করেয়া ভাহার সুংুমর্গ পরিভাগ # 45

ভূইভেরা লয়মান শাশ্বন ও মন্তবে অ
বীঘ কেশ ধারণ করিতেন, সচরাচর প্রশস্ত পরিচ্ছদ ও ধর্মকর্মের সময়ে শুল পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ ও ধর্মকর্মের সময়ে শুল পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ করিছেন। তাঁহারদর গলে একটা করিয়া প্রশমর মাছলী থাকিছ; তাঁহারা তাহা প্রশাহ্রাদিত সর্পান্তম বালিয়া লোকদিগকে বুঝাইলা দিতেন এবং এই বপ্রশাহ্রা ডিয় উৎপল করে, অনন্তর উহা সর্পান্তর নিশ্বাদে আকাশে উপিত হয়। ডিয়াখী বাজি জনতগানী অন্যে আর্মেইণ প্রকিক এ ডিয় পুনরার ভূতবে না প্রিট্ছ পরিক এ ডিয় পুনরার ভূতবে না প্রিট্ছ

ভাষাতে সর্প্রাণও কুল হইয়া তাঁহার লাভাতে থাবদান হইড; বত তথ কলা বে কোন বোৰ না পড়িত, তত তথা সংগ্রিছা ভাজ হইড না জারত ডিছ স্থাক্টাদিত প্রতিরাভিত কি তেপ করিলে আদিতে ভাসিতে ভোডের বিপরীতে গমন করে। উহায় বিশেষ তথ এই যে, উহা স্থানতিত করিয়া থাবণ কলিবে কেহ বিচারে পরাস্ত করিছে পারে না এবঃ' ধনশালী পরাক্রাম্ব লোকের ক্রীতি-ভালন হওয়া যায়।

জুইডেরা তিন শ্রেণীজে, বিভক্ত ছিলেন। এক শ্রেণী এদেশের বন্দীদিশের
ন্যায় লোকের বংশোপাধান ও ব্যারগণের
বীর-কার্যা বর্ণনা করিভেন, আর এক শ্রেণী
ভবিষাৎ গগনা কারা রচনা এবং ধর্ম কার্যার সময়ে গান ও বাদা করিভেন। তৃতীয়
শ্রেণীর ভুইডেরাই ধর্ম সংক্রান্ত কর্ম সকল
অনুষ্ঠীন করিজ্বন। ভুইডিদিগের মধ্যে
এক জন ভুইড শ্রেণান থাকিছেন। ভুইডিরা আপ্রান্ধের মধ্য হইতে কোন সম্ভাক্ত
ব্যক্তিকে প্রধান পদে শ্রুভিত করিয়া তান
হার অধীন হইয়া চলিভেন।

ভূইভেরা একেশ্বরণী ছিলেন এবং ওক বৃক্ষকে তাঁহার প্রিয় আবাস মনে করিয়া ওক বৃক্ষের সবিশেষ সন্মান করিভেন; এমন কি, ওক বৃক্ষ রূপে লিশ্বরের পূজা করাই হাঁহা-দের প্রধান উপাসনা ছিল। এ ছেলের বিল্পতাও তুলসী পরের নাার, ওক বৃত্তি বাত্তিরকে তাঁহাদের কোন পূজাও কোন ধ-প্রানুষ্ঠান সম্পন্ন হইত না। তাঁহারা ওক বৃত্তিক বাহা কিছু উৎপন্ন হয়, ভাষা লিশার ক্রান্তা করিয়া মিলিল্টো নামক পর্বাহা এক বৃত্তিক উৎপন্ন হইলে ক্রান্ত সমানর প্রাক্ত কালা নংগ্রহ করিভেন। রৎসারের প্রাক্ত কালা ভূইভেরা স্থাকের প্রাক্ত করিছে ক্রিভেন। ছুই শৃলে ওক রুকে বন্ধন করিতেন। তথপরে শধান ডুইড শ্বেড বন্ধ পরিধান করিয়া
বর্গ ছুরিকা হতে লইয়া রুক্ষারোহণ পূর্বিক
মিনিল্টো ছেন্ন করিতেন; আর এক জন
ডুইড রুক্ষভলে শুক্র বন্ধ পাতিয়া রাখিতেন,
এবং ছেনিত মিনিল্টো তালার উপর পতিছ
হইলে কুড়াইয়া স্বর্গ পাতে সংস্থাপন করিতেন। তথপরে নানাবিধ বলিদান করিয়া উৎসব করিতেন। এক সময়ে পার্ম্য
লেশেও মিনিল্টো প্রগাছার অভান্থ ম্মান্

केटछड़ा कटकश्रविषा हिटलन वटछे. किस कानकरम छल स्र्या नकक मर्ग প্রভৃতি স্থ নস্ত এবং মনঃ কম্পিত নান। रमव रमवीतः । जेशामना कतिराज्य । चाजीकः দেবতার উদ্দেশে অগ্নিতে আছতি দান এবং প্র ও মনুষাকে বলিদান তাঁগাদের উ-পাসনার প্রধান অভ ছিল। জাঁহারা এই দকল ধর্ম-জিয়া সম্পাদন করিবার নিনিস্ত বনের মধ্যে কতক ভূমি পরিস্কৃত করিয়া বৃহৎ বৃহৎ ধান্তর ঘারা ভাহার চতুদিক বেন্টন করিতেন; ভাহার মধ্যে প্রথমে তুথানি শস্তর দিয়া বেদী করিছেন। **এই বেদীতে** তাঁহাদের ছোম ও বলিদান ক্রিয়া সম্পল क्रेड; य म वाक्ति जाहांत्र मत्या अदवन করিছে পারিত না। যাহার। ভুইডদিগের উপর সম্পূর্ণ নির্ভরের চিহ্ন স্বরূপ এক প্র-কার শৃষ্ণল ধারণ করিয়া আসিত, ডুইভেরা (करन को हो निगटकरे धाटवन करिएक मि-ভেন। ডুইডদিগের বার্ষিক মহোৎসবাদিও এই একার স্থানে অনুষ্ঠিত হইত। ভূইড গণ-**क्या भ्रमामित विमान गमटत डाहात अञ्च** गक्त मर्भव कतिहा छविदार क्रान्य कर्मन क्तिएकत। बद्र बलिय समस्य बलि श्रुक्त मन् য্যের ৰক্ষঃস্থলে থড়্গাঘাত করিয়া সেই रव्याभाकि धकादा कुवता পविष रह,

কোন্দিকে ভাহার রক্তপারা নিঃস্ত হয় **এবং कि बाल एम अम विद्याल करत ए-**ব্দুটে ভাবী শুভাশুভের অবধারণ করিত। किवल निर्मातिक मनदारे (य विनिन्न इरेड़), ভাহ: নছে। কেছ নুদ্ধকৈতে অভাস্থ বিপাদে পতিত অথবা ঘোরতর রোগে আ क्रांच क्षेट्रल, क्रांकड़ श्रीत्रवार्ड अश्रात्त व्यान मान ना कांतरल स्वतंन धमझ इहेरवन না, এই ভাবিয়া নর বলি দিত অথবা তৎ-क्रमां एक नत् नां ना निया । प्रतंत्र राक्षे নর বলি দিবার অঞ্চীকার করিত : ভিন্ন আর এক প্রকার ভয়কর নরবলির প্রথাও প্রচলিভ ছিল। সময় বিশেষে ও ঘটনা বিশেষে লভা নিৰ্মিত মনুষ্যাকাৰ এক পিঞ্চ শ্রন্ত করিত এবং রাজ বিচারে যে সকল বাক্তি পোষী বলিয়া স্থির হুইত, তাহাদিগকে ওদ্মধে। প্রবিষ্ট ক রিয়া দিত ; ভাহার মধ্যে নানা বিধ গশুও থা কিত। যদি অপরাধিগণে নেই পিঞ্জর পরি-পূর্ণ না হটত, তাহা হইলো নিভাম নির্দোদী ব্যক্তিকেও দেই অপরাধীদিনের সঙ্গী ক हैट हहें। এই धकारत महें शिक्षत পরিপূর্ণ ছইলে ভক্ষমাৎ করা চইছ।

ভুইডনিগের চারিটি মাহাৎসব ছিল।
মার্ক মানের প্রথম ভাগে (১০ই অথবা
তাগার চুই এক দিন অগ্র পশ্চাৎ.) যে দিনে
মতী তিথি পড়িছ, সেই দিন নব বর্ষ নিবন্ধান
মহোৎসব হইত। দিতীয় মহোৎসব সে
মানের প্রথম দিবসে হইত। এই উৎসবের
পূর্বে মন্ধায় মকলের গৃহে ধাবতীয় আগ্র নির্বাণ করা যাইত এবং পর দিন দেবমন্দিরের চির-প্রজ্জ লিত অগ্নি গ্রহণ করিয়া
নিক্ষ নিজ গৃহে লইয়া যাইতে হইত। জুন
মানের একবিঃশাদিবনের পুর্বাহেল তাঁহাদের
ভূতীয় মহোৎসব ও অক্টোবর মানের
শেষ দিনে চতুর্য মহোৎসব হইত কালের করাল হল্তে সংসারের সমুদায়ই পরিবর্তিত হইতেছে, কিন্তু আআর সাভাবিক বিশ্বাসের উপর ভাষার কিছু
মাত্র অধিকার নাই। ভুইডেরা প্রায় সকল
বিষয়েই ভ্রমান্ডর হইয়াও আল্লার অমরম্ব বিষয়ে দৃঢ় বিশ্বাস করিতেন এবং হিল্ফুদিগের ন্যায় আল্লার জ্ঞান্তর অঞ্চীকার করিতেন। ইহা দারা একটি বিলক্ষণ উপকার
ইয়া ছিল। যোজার। এই জ্লান্তরবিষয়ক
উপদেশে মুহাকে তুল্ভ জ্ঞান করিয়া যুদ্ধক্ষত্রে অসাধ্যেণ সহেস প্রকাশ করিত।

ডুইডেরা মৃত বাক্তির সমাধি প্রদান ক-রিত এবং পর-জ্ঞাে উপকারী চইবে বালিয়া বছ মূলা অলঙ্কার, বিবিধ অস্ত্র শস্ত্র, ধুনচী, পান-পাঞ্জ কখন কখন কুকুর প্রভৃতি জন্ত-দিগকেও শবের মহিত একতা করিয়া মৃ'উ-কার মধে। প্রোধিত করিত।

ডুইড্রিগের ধর্ম-শাস্ত্র কেবল পরমার্থ বিষয়ক ছিল না; নীতি স্তি,কানা জ্যোতিদ ও আয়ুর্বেদও ধর্ম শাস্ত্রের অন্তর্গত ছিল ! ভীছার জোতির্বিশার কোন কোন অংশ ও চাক্তমাদ গণনা করিবার রীতি অবগত ছিলেন; কেন না চাত্র দিন অন্তুসারে তাঁহা-(मत उ<मत मकल अनुष्ठित क्हेंच, यशी</p> তিথি আরন্ত করিয়া মাস ও বৎসর গণনা **১ই**ত এবং এই অনুসারে তিশ বৎসর অন্তর ভাগদের এক এক জ্যোতিষিক মহা-চক্র সম্পূণ হইত। জ্যোতির্বিদ্যায় দৃষ্টি না থাকিলে এৰপ ফুইবার সম্ভাবনা নাই। এ-ভদ্রি আন্ত প্রমাণ আছে। আয়লটেও রঙ্গ ভাষ্ নিজ্ঞিত একটি চক্র পাওয়া গি-য়াছে। ভাহার নেমিভাগে চল্লের কক্ষ নি-किए आहि अ हस्तानात हाम द्कि धन-র্শনের নিমিত্ত ভাহাতে আটটি অলুরীয়ক সংযুক্ত আছে এবং তাহার আভাষ্কর ভাগে পৃথিবীর কক্ষ অদর্শনের নিমিত্ত আর এ-

কটি কুদ্র চক্র অবস্থিত আছে। বোধ হয়
ইহা ডুইড জ্যোতির্বেজাদিগেরই ব্যবহার্যা
ছিল, আয়ল তেও ও ওয়েল স দেশে কতক
গুলি চক্রাকার বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তর, অদ্যাপি
ভূমিতে প্রোধিত আছে, বছকাল অবধি
উহা জ্যোতির্বিদ্দিগের চক্র বলিয়া কিংব
দক্তী আছে।

शृत्क छेक इरेब्राइ य, हिक्सिन শাস্ত্রও ভূইডদিগের ধর্মশাস্ত্রের অন্তর্গত কিম্ব চিকিৎসা বিদাতে তাঁহাদের কি ৰূপ অভিজ্ঞা ছিল, তাহা নিশ্চয় বলা যায় না, ভীহোরা মামানা সামানা ঔষধ প্রস্তুত করিতে পারিতেন ভাষার সন্দেহ নাই। ভাষার: উষধ সেবন কালে নানাৰিধ গণনা ছাত্ৰ: ভাবী শুভাশুভ নিরারণ করিতেন এবং রোগোপশমের নিনিক্ত হিল্ফুদিরগর ন্যায় বিবিধ দৈব ক্রিয়ার অন্তর্ভান করিতেন। তাঁহার ঔষধের নিমিত্ত যে সকল উদ্ভিক্ত ব্যবহার করিতেন তাহা সংগ্রহ করিবার বিশেষ বিশেষ নিয়ম ছিল। তদকুসারে দে সকল সংগ্রহ না করিলে কেবল স্থাডা-বিক গুণে আরোগাকর হইবে বলিয়া ঠাঁ-হাদের বোধ ছিল না।

শিক্ষা কার্য্যের ভার ডুইডদিপের হস্তেই
সমর্পিত ছিল। যাহারা উত্তর কালে ডুইড হইবে, ভাহারা কেবল ভাহাদিগকেই
শিক্ষা দান করিতেন। শিক্ষা দিবার নিমিত্ত নিবিড় অরণ্য মধ্যে তাঁহাদিগের চতুম্পাঠী ছিল, ভথার ছাত্রেরা কথন কথন
বিংশতি বংশর পর্যান্ত শিক্ষা গ্রহণ করিত। তাঁহারা বিষয় কর্মের সময়ে পত্র
লিখিতেন কিন্তু শিক্ষা দিবার শ্রেম্বের
লিখন পঠন ব্যবহার ছিল না । ছাত্রা
দিপতে কতকভালি লোক মুক্তে মুক্তে আঁক্তি
করিতে ইউড়া

none could invent the outline portrait of Jesus, no difficulty appears in the way of a theory, that the moral sentiment of the church has cast a soft balo over a observer perhaps rather aters and ambitious, than discriminating, wise, or tender.

We cannot recover tost history. Into the narratives and discourses of Jesus so much of legendary error has crept that we may write or wrangle about him for ever: Paul is a pulpable and positive certainty. In what single moral or religious quality Jesus was superior to Paul, I find myself anable to say. Is it really a duty incumbent on each of us to decide such questions? Why must the task of awarding the palm of spiritual greatness among men be foisted into

religion?

It is a fact on the surface of history, that Paul, more than any one else, overthrew ceremonialism. Hereby he founded a religion more expansive than that of Isaiah, and, in his fund belief, expansive as the human race, as the children of God. He was not the first Jew to propound the nullity of coreconnes. If time allowed, that topic might a fact instructive amphication. The controversy equinst ceremonies was inevitable, and, with or without him, must have been fought out. What be effected, let us thankfully record; but God does not allow us to owe our souls to any one mun, as though he were a fountain of life. It is an evil thing to call ourselves a man's followers, to express devotion to him, and blazon forth his name. Every teacher is largely the product of his age; whatever light and truth he imparts, the glory of it is due to the Father of Light alone, from whom cometh down every good and perfect gift. Any glory for it would be inexpressibly painful to a true-hearted prophet; I mean, for instance, to and true hearted as Paul. He had no wish to be alled Master, Master. He could not bear to most any one say " kam of Paul." show yo have believed?" What! when a man believes himself to be the channel Ly which at has pleasad the Unseen Lord to pour out man poetion of hidden truth for the feedings of huntry souls, can such a one hear to be praised and thanked for his ministrations ? Nay, in properson as he knows himself to speak God's truth by the impulse of God's spirit, in the same properson her feels his own personality to be annihilaind, and he broathes out an intense desire that God in him may be glorified, but the man be forgotten. Fray then, fet not us thwart and countoract such generalness of the simple hearted instructor. Hear Paul himself farther on this matter. "Let no rian glory in men; for all things are yours; whather Paul and Apollos or Gephan, or the world or life or death, or things present or things to come all my pours. Homeans that the collective children of God are the end for whom God has provided beachers as tooks and instruments. But this is not all. Is proportion as the teachers are elevated the taught become unable to judge of their relative way? in honour. Paul therefore forbad the attempt, and deprecated praise. "With me," he continues "to is a very small thing that I submiddingly and you or of man's judgment you. I judge my convect labels he that judgment is the form. Therefore judge nothing before the time, until the Lived come; self-deplement and editions to light the hidden things of deplement and editions. Therefore the converte of deplement and editions. What else did he much to say but: Think not to distribute awards among those to whom you look up. To graduate the claims of equals and inferiors is generally more than a sufficient task. Leave God to pass his awards on those who are spiritually above you; who possibly, like Paul, may rereive your praise as poinful, and be wholly unconcerned at your blanc. The glorifying of religious teachers has hitherto never borne any fruit but canonizations and defications, "voluntary humility and worshipping of messengers," vain competitions and rival sects; stagmation in the letter, quenching of the Spirit.

By Francis W. Newman.

কলিকাতা ব্রাহ্মদমাজের ১৭৮**৬ শকের ভাতে,** কান্মিন, কার্তিক ও অগ্রহায়ণ মা**র্চের** আয় ব্যয় বিষয়ণ ।

আয়			200	\$
र्श्य क	র ক্তি		હ	a S
		entra de constante tras	२४३	0/0
ৰ্যয়			7.39	540/5.
मण्याम	কের হত্তে		4	219/20
	এভদ্ভিৰ			man him
	स्वारक	• • •	*	te le
(कार		 		2-3-45. t
	চদিগের প্রতিজ্ঞাত স	185 ग		
	व्यमगीत्माहन को धूनी	• • '		R C
64	चित्रकारम्ब	• •		> 2
£:	कालिकामाम पछ		• •	¢.
66	त्भाविक्षा अप्र	• •	• •	•
"	व्रामकामाङ त्मम	• •	• •	8,
**	वाकनांद्रभ माग	"		9
££	त्रामहस्य भाग		• •	2
. 64	नीलगाधव मिळा	41.4	. 4	ર
a	श्चिमाथ मात्र			ર
6;	প্রসলকুমার দত্ত	• •	e*i	₹'
74	म्बिनान मिलका		• •	2
"	वमस्कृषातः मन्ड	4'*	• •	২
"	व्यकाशहक्त स्थाव		• •	5
418	मदश्कानं मिळ	***	• •	3
	क्लोनच्छ महिक	• •		>
et.	खात्रकगाच मंड			\$
. 60	वश्ष्यम शाउँ।			5
iè	इंद्रिटेशाइमः व्यक्त			5
6.0	व्यक्तास्य विश्वानी		* 1	5
	काममाथ मारा	• •	'	15
	4 THE CT	• •		5
46	- अप्रवक्षात विश्वान	·		3
	कार्तिकावन महिक	, ,	• •	· 44 •
	क्रान्त्मस्य दक्षवर्गा			Mar
Mr. Th. W.	A Comment of the Comm			•

(- #-B)	मांगिक मान।	
378	त्राका मफामंत्र्व त्यांचात्र	a.
E.c.	कि, धन, अस्थिति।	88
64	लाशीत्माइन त्यांच	20
**	उषाध्यमान राभ	= 9
44	क्रमगीरमाञ्च कोधूती	58
84	অভয়াচরণ কম	ن
8.4	नेश्रवहता विमामागद	ь
t.	क्रांका आमनाहायम क्रांग .	52
u	देवकुर्श्वनाथ रमन	৬
1.5	উপেख्यास्य श्रेकृत	b -
46	भारतत्वमाथ राकृत	า
"	क्यरगोलान (मन	Q
"	यमनस्यादन स्मन	9
40	द्रांपाटल त्यायांन	২
"	मा भारतात मञ्च	২
6 4	नीनकमन बद्याशीशात्र	
		225
ᅠ	শুভকর্মের দান।	
	प्रदिसमाध ठाकूत	© co
16	ख्रीदाम शांतिष्ठ	9
4.6	हमध्द्र मास्रक · · ·	30
48	ह्र्गाठरण वहाच्च	>
14	कालीनाथ मंख	
	এককালীন দান।	CP1/2
श्रीपूर्व	(भरवस्थानाथ ठाकुत	{
	कि, भार, वि	
44	किश्वाहन व य	5
.,	वसचीकां छ = ले'हांगा	10
		910
भागांध	ादि मान थीं	0h/30

বিজ্ঞাপন।

কলিকাতা ব্রাক্ষণমাজের কার্যের ভার ভাহার টুকী প্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহা-শর হয়: গ্রহণ করাতে তৎসংক্রান্ত সম্পাতির সহিত আমারদের সম্বন্ধ অদ্যাবধি শেষ হইবা।

্ৰী তারকনাথ দত্ত।

जे डेमानांव छछ।

व्यथाक।

नि (कर्ण बहस रगम ।

PIPE

্পৌষ ১৭৮**৬ শক**। विकाशनस्य सम्बद्धाः । सन्दर्भावे विकासक কলিকাতা ব্ৰাহ্মনথাকের টুকডিও অনু-যারী উপানন। কার্যা সম্পাদনের জনো শ্রীযুক্ত বিজ্ঞেনে ব ঠাকুরকৈ ভাষার সম্পা-দকীয় কার্যো নিযুক্ত জন্ম গেল এবং যাবতীয় টুক্ত-সম্পত্তি ভাষার হচতে অপিত ক্রজা।

কলিকাতা ব্রাক্ষনমাকের ^{গ্}ন্তানিকের সহায়তার নিমিত শ্রীযুক্ত, অব্যোদ্ধানাথ পাকড়ানী মহাশয়কে সহকারী সম্পাদকের পাকে নিযুক্ত করিলাম।

> कि (मटचल्लामां शक्त । क्लिकाण आक्रमारक है के।

ব্রাহ্মধর্ম প্রচার উদ্দেশে কলিকান্তা ব্রাহ্মনাজের দান সংগ্রাহের জার জীযুক্ত প্রভাপচন্দ্র মজুমদার মহাশয়ের থাতে অর্পিত হইল। তিনি দাতাদিগের অভিমন দান্যা ব্রাহ্মধর্মের প্রচার কার্যো ভাচা বায় করি-বেন। ঘাঁহারা ব্রাহ্মসমাজে উপাসনা কং-ঘাঁব বায় নিকাহ নিমিত্ত দান করিতে ইজ্ঞা করেন,সেই দান তাঁচারা জীযুক্ত বিভেন্দনাথ ঠাকুরের নিকটে প্রেরণ করিবেন।

> 🗐 (मरवलनांथ ठाकुव। क्रिकाण वाक्तमारकः है 🖣 ।

আগানী ১১ নাঘ সোম বার অপরাহ্ন ৭ ঘটিকার সময়ে কলিক,তা পঞ্জিংশ সায়ৎগরিক ব্রাহ্মসমাজ হইবেক। ব্রাহ্মগণ এখান আচার্যা শ্রীযুক্ত দেবেলুনাথ সাকুর নাহাশরের ভবনে আগমন করিয়া ব্রহ্মোপা-সনা করিবেন।

> জী विक्कासनाथ ठाक्त। সম্পাদক।

ধাঁহারা প্রাক্ষণমান্তের পুস্তকালতে বিজয়ার্থ পুশুক রাখিয়াছেন, উাহাদিশকে বিজ্ঞাপন দেওয়া
বাইতেছে যে, আগামী ১লা নাম অবধি দেই সকল
পুস্তক বিজ্ঞার মূল্য হইতে চতুর্বাংশ কমিসানু লতয়া বাইবে। বাঁহারা অনুবিধা বোধা করেম, বর্তীমান পৌব মানের মধ্যে দ্বাম্ব পুস্তক লইয়া বাইবেন।
বিজ্ঞানোধ্যানানি পাকড়ামী।

महकादी मन्नामक।

আগাণী ১৯ পৌৰ ব্ৰিকান ব্ৰয়ণকা আৰু গ্ৰাকের পাৰ পেনিক গ্ৰা ক্ষ্যুত্ত । ব্ৰয়ণ্ড আৰু পাৰ কি কি কি কি কি কি কি ব্ৰয়ণ্ড আৰু কি কি কি কি কি কি কি কি উक् छ। ভবানী পুর এক বিশালয়।

: क्षथान चाहार्यात डेनरपन । चिजीत मध्या ।

ी > ० देवलांचे अपन मक।

अक्त धरमीत अथम वारकात छोरलर्रगटकरे धरे जारिक स्व मकरलंद्र जा जारिक हे जुरमाद समस-मनन-ভাৰ কৰিনখন জকরে বিথিত আছে। খীয় খীয় আত্মাতে অনুশন্ধান করিলেই অনম্ভ-अक्रुश मह्म्ल- यक्षण द्रेश्वरत श्रीत्रव श्रीख रहेरन । মাত্রৰ অন্তর্গুটি স্বারা গীয় আবাতে অংগ দেখা সাধারণ মনুষ্য জাভির মধ্যেই আত্মাজান আছে। আমি যে আছি, এ জান মনুষ্য মাতেরই আছে। আত্ম-ভ্ৰাম থাকাতেই আত্মার অন্তিত্ বুকিতে পারিতেছি। আমি কিছুই ন'হ, এই বাফ বিষয়-সকলই ভাবৎ, তবে ইহার্দিগকে দেখিতেছে কে ? स्य एमशिएकटक, *'*छ साङ्गटक एमशिएकछि, देशता পরস্পর অভান্ত ভিন্ন। যে দেখিতেছে, সে আমি : আর ষাহারে দেখিতেছি, সে এই প্রাচীর। ধে जार्शमारक ना जारन, त्म शतुरक कि अकारत जा-मिर्व १ लंदरक जानियांद्र मटक मटक है जालनाटक জানা যায়। আত্মার সহক্ষে এই শরীরও পর। আত্মা যথন এই শরীর হইজে উৎক্রমণ করে, ভখন यहे मंदीदार बाद वहे आही दार विस्मित कि থাকে ণু ভখন এই শরীরও আচীরের নাায় নি-শুর হইয়া যায়। শরীরে নিমগ্ন হইয়। প্রথমে ৰীয় আত্মাতে দেখা, সকল সতোর মূল পাতুন দে থিতে পাইৰে; ভাহাতে প্রনামার উজ্ব-মঙ্গল-দ্বি দেখিতে পাইবে। ব্রহ্ম-জ্ঞান-রূপ যে স্বগীয় অগ্নি नकरनद्व स्नार्य निष्ठि आह्म, मिरे अश्निरे আত্মার জ্যোতি। সেই আত্মার জ্যোতিতে অন্ত-র্ঘটি বারা বীয় স্পাত্মাকে দেখিলে ভাহাতে পর-माञ्चात अमस-मनन-काव त्विधिक शाहेरव। त्महे जनस-मझस्कावरे अविन्यत जन्दा ग्रदलत चा-पाट्ड दाकात अन्य-मङ्गा- छाव अविन्यत अकदत निथित आहें, मकरनद्वे श्वाद उक्त-क्रान-क्रथ वर्गीत जीत जास्त्र छाट्ट निहिष्ठ जाटक ; अस्ट-र्वाट्य विकासम् कार्याद्व कार्याच्या वाता त्वर जागरक जाकशिक करिएकरे जाजारक श्रेमां जात चविनचत्र-महन-मुखि । छामात्रस्य खोन दनत्वत विकास रहेरव। त्र आशंतात्र व्यक्तिरंड गर्नवाद्यात भविष्य ना भा**रेक अप्रताम क्यांटक जार**िक उक्तिरव । अपि अप्तक्षेत्र जानमात्र जानमात्र

আত্মাতে প্রমাত্মার অনম্ভ ভান পাঠ করিতে হইবে। আনি ভোমারদের নিকটে আলার আ-প্রার পর্যাত্মার পরিচয় করিয়া দিজে চেক্টা করি-তেছি: ভোমরা নিম্মে নিজে দীয় আন্মাতে তা-লার পরিচয় না লইয়াকেবল আমার কথার উপরে নিষ্ঠর করিবে না: বখন নিবিণ্ট হইয়া আবা ছারা আত্মাতে দেখি, তথন দেখি, গেনে পরিমিত জালা, দে সপর এক জনির্দেশা পুরুষের নিয়মের পরতন্ত্র হট্য়া কর্মা করিতেছে। কোন আয়া কিছু আপনি সংকল্প করিয়া এ পুথিৱীতে আইসে नार्डे, मित्र काल अथाटन थाकिवात हैका कवि-লেও শভ বংশরের অগিক পাকিতে পায় না। বিনি আযোরদিগকে কুখা তৃষ্ণা দিবার পুরের অল পানের বিধান কবিয়াছেন, যিনি চকু দিবার পুরেই মুর্যা চলেকে অহোর।তের প্রাদীপ করিয়াওছন, ভিনি জন্বিহীন মহান্তারে।। সেই অনন্ত পূর্পু ক্ষের কুপাতে আমরা জীবন পাইয়া ভাঁহারই আপ্রায়ে নিয়ত বাস করিভেছি। ভাঁহারই শা-मरन स्थामत्रा भूषा भीरभद्र वर्षा छेभगुक पर भूद-কার লাভ করিয়া দিন দিন সমুলভ হইভেছি। যিনি জানেতে পরিপূর্ণ, তিনিই আমারদের পরিমিত আত্মাতে জান প্রেরণ করিভেছেন; यिनि भूर्व मक्त-यक्तभ, जिनिष्टे आमात्रदम्ब आ-আতে ধর্ম-ভাব, পুণা ভাব, সাধু-ভাব, প্রেরণ করিজেছেন। সর্কশক্তিমান পুরুষই আমারদের আয়াতে এখানকার কর্মোপযোগী শক্তি সংযুক্ত করিয়াছেন। এই অকারে আমরা আপনার আ।-আতে পরিমিত জান, পরিমিত শক্তি, পরিমিত সাধু ভাৰ দেখিয়া সেই অপরিমিত মঞ্জন্ম পর্ব পুরুষকে উপলব্ধি করি। এই পরিমিত জাগা এক সময়ে ছিল না; কিন্তু জন্ম-বিহীন প্রমাতা সকল ममरबहे आह्म। यिन लडे काजारक अकान করিয়াছেন, ডিনি নিজে সপ্রকাশ। যিনি আ चारक अपे गः मात्र धरमा नित्याश कवियादहन, তিনি আগনি কাছারো কর্ত্তক নিয়োজিও হন্ ' মচাসা কশ্চিক্তনিত। ন চাগিপঃ।" ' ইহাঁর কেই জনকও নাই এবং অধিপত্তিও নাই।" যিনি আত্মার শুটা, পাতা, নিয়ন্তা, ভিনি পরমাত্মা। বেশন কুদ্ররাজ্যেধরের সহস্কে পর্মেশ্বর, বেমন ঐহিক পিভার সম্প্রেম পিভা, ভেমনি আত্মার সহজে প্রশামা। আত্মা জ্ঞানেতে পরিমিত, প্রমায়া জানেতে অনস্ত; আত্মা শক্তিতে পরিমিত, পর্নাত্মা শক্তিতে পূর্ণ; আত্মা সাধু ভাবে পরিমিভ, পরমাত্মা ধর্মাবহ धारे धार्कात পরিমিত আঝা यं अने न न न न न হইতে অপরিমিত আত্মার পরিচয় প্রাপ্ত হই। বৰনই দেখিলাম বে জাত্মা আভিত ও পরিমিত,

ব্যনই ভাষার নহিকে আনত রাজণ কাল-বর্জণ আন্তর্যনে নাভার সংখোগ গেলিলাব। আত্মাকে পারে কালি কালিলে পারে বার কালে কালিভের মহিক আত্রের চিল্ল সমস্ক রহিলাটি। একল অবণ করিবল, ইহার পর নিফ নে আনোচনা করিয়া ছেখিতে বে এই পরিমিত আনার অন্তর্যনী অন্ত-বর্জণ পরিমাতা কিনা।

্"ভিনি আপমার বিশুদ্ধ বলল-বদ্ধপ এই कार्यः त्कोकिक श्रमार्थं अवर मनुरुवात मानम-शरहे ষুক্তিত করিয়া রাখিয়াছেন।" কিন্তু ভাহা দে-বিজে পায় কে ? ভাহার পাচক ও অপোতা কে रहेट७ निर्दे ? मा मह-माहीत आधा र न्यार মঙ্গল-মরাপকে আত্মা কাহায় জ্যোভিতে চেথিছে: পায় ? ভাহার কাপনার জ্যো ভিকেই, আ্যা জৌ-ভিতেই দেখিতে পায়। সেই আত্ম-জ্যোতি সে काथा इटेटल शहिल १ এक क्रेयन-अभाषाद : क्रे-क्षेत्र क्रावारक क्षांम-क्ष्मां कि मिया शृथितीय कादर बीर स्ट्रेंटल छम्ड कदिताद्या । 'एमरे नेशत-अवस्य काम स्वार्धि निर्याण वस किरम ? भाभा-চরণ ছারা, অসন্তাব ভারা, কুতর্ক ছাবা ৷ দেই मंत्रीम अर्जन-रक्षांकि श्रकान दश किरत देवित्रक. ভাষকে, চরিত্রকে সেই ফ'নের অস্কুচর *ক*রিলে। ধলি বুদ্ধি, ভাৰ, ও তৰিজ সেই সহজ্য জ্ঞানকে পো-वर्ग करत, उरव रमेर्ड मटक छ। न चाराज मिन मिन 🕏 জ্ঞান ও সভেজ হইগা, বুন্ধিশ ভাৰ ও চরিআকে माजिल क स्व में देशा शिक्त करते। शत्रक्रारहेत मा-शास्या मिन मिन छान, वृक्षि ; कुन्ना, कार्या ; भा-महामा जीव शहर करहा, এतर स्मग्रमन मंदीह এশাস্ত-ভাবে শমবেত হত্য়; আয়াকে প্রম *লক্ষা* ছানে উলভ করিভে থাকে। পর্ম ভাগানান্ সম্ভূদি নত্পৰ নিজপাপ বড়শীল নহালার৷ অনস্ত-करान राज्यक अक्रम श्रद्धा श्रद्धा के मध्य सम আত্মাতের সাক্ষাৎ প্রতিতি করিয়া এবং সক্ষেদ্ধ भव्या जारात जिल्लाम अमान केन्द्रा उक्तानी रूत । ''अमाबिंद । अक्तातानी इन्नेतात करना अध्या-বিলোক কি কাল-বিশেষ কি জাজি-বিশেষের জালি शिका भारे। अकल प्रभीय अञ्चलका प्रीप्रित्नवर्षे अ খা-বিষয়ে উপদেশ দিবার অধিকার আছে।" ভা-রভবর্ধের পুরুতন প্রজাবাদীবিগের জান-রুত্বে আন-নারদের**ুজ্ব**ধিকার ; আসমা **ধর্ম-বিষয়ক**্**ইপান্তুক** भाग प्रभीत । सह भन जामाइटमक भेदन अन् अक्र. कारा जानवा आगांतरमञ्जू शिक् शुक्रम हरेरा आ-প্ৰয়াশ্ব কাভ কৰিবাঢ়ি: ভাষা অনা কৈছি, স্বা-নিয়ে নিকট হুটতে তিকা ক্ষিতে পুৰুষ্টে প্লা। এই ভারভারর ধন্ডের আদিন, স্থান 🚛 বৈশিক্ত শক্ষ্ম नाव प्राप्त जन शर्म जात्र त्वाम दश्मी, मुख क्या वालिटल नारे। श्रुविद्योहल अवस् देवतिक दन

त्संत्रहे कारिकांत्। असिहरूपंड महस्त्रांत्र समग्र ट्डेट्ड व जातामना <u>श्री कारन व्य</u>न-व्यक्त-तक्त विनिर्गं इड्गाइन; त्र कार्य कार्यक्रम रम्ब चक्रान-चर्चकारम् बाइक किन । इटम्पन ब्रुप्ता व्य-थर्म धरे जातजनविष्ट हम, धन् अवर्ष स्रिक्ट तिहे পবিত রচনা धर्मी-कन-माखा क्रेश्चरवृत्र स्त्रात्वे छा-र्शिङ रहा। केसत जाइक/कृतिहरू सटमात जाकत-योन कतिपाट्टन, ভাহার काशना त्र तिकि अधाना निः मिष्ठ रत्र मोरे। रामेन উछत्र विमानस जी-রত ভূমির, বেশন দক্ষিণ লাগর ভারত-ভূমির, নে यन शका नभी जातक कृषितः : क्यामि त्वयं क्या-নিষদও ভারত ভূমির, তেখনি পুরাণ উপপুরার নারত ভূমির। ধর্ম বাইয়া ভারতবর্ষে হত জা-त्कानन रहेबा निग्राटि, এड आह क्वांबर हर দাই। ভারতবাদীদিগের ধর্মা-বিবদ্ধে স্বাভাবিক অনুর্গি। এখানকার সকলে পর্যক্ষেম্ন প্রিক্ত ভাবে দেখিকে পায়, দে পরিমাণে আর কোন म्हणत लाहक इ भाष ना-भहन्ति धनन आहा, ঈশবেতে এমন নির্ভর, আর কোখাও নাই। তা रात्रा भ्रहे अधिक्षे। करूक, रखहे नम्न कक्षक, কোন স্থানেই বা গামন কঞ্ক, সিক্ষিপাতা, স্থি-থাতা পুরুষকে অত্যে স্মর্থ করিয়া সকল কর্ম্ব আ वेड करत । छोरोद्र। मामाना भव विधिनाहर भूटक श्वेत्रदक विच्या छ इय ना ; श्रेत्रद्वत नाम निविद्या পরে পত্র বিখিতে আরেছ করে। যে দেলে ধ-र्यात कृत अधिक लाहे, छाजाब्रा हेशत यश्री कि-ছুই दुक्टिङ शांद्र नाम् दर्दमंत्र आमिष अवस् হইতে এই অকার ধর্মের ভাব চলিয়া জাসিতেছে। धक अक विषया धक धक क्यां चि श्रेश हु। कहू যুদ্ধে, কৈহু বাণিজ্যে, কেই শিল্পান্দারে, কেই বা धर्मा-कार्ष। जातकवर्धत विभि आहे किछूर की थात्क, छश्राणि व भर्मा छःत्व मकत्वद्र आहे हरे-पाद्य । कांब्रकनर्ववार्यिनो क्वीपिटगर्व संबंध ७ स-ভীত্র ইহার অধিকতর প্রমাণ কিছেছে । यना कांच्यि विकृष्टे प्रहेटच प्राक्षकार्याञ्च, निश्ल-नाटअव, वानिकावावनाटवर, नाक्रीक्राफ छ एक्क भिका नाम कतिए शावि, किन्दु बर्क क्रिक्टाइ जि-कांत्र निविद्य अन्तर कालितः मार्थास्तर क्रिक्क काक शासक नार्वे । अस्त्रव । कार्यक स्टाइक स्टाइक अकारानी कविद्वा अकारिकदा हा नक्य बन्धा के ख स जारा-बालाय निम्न महिलाई छैलाई में क्रिया जिल शरिष्टम, छाराचे भागका तक करिया मानि करे TITE A SECRETARY WAS NOT THE E-THE PART CAN'T SEA OF SHEET AND ALL MELO TANNEL PRINCIPAL MAIN ACADE PERIOD OF THE PERIOD OF THE PERIOD OF THE TICE SERVICE SHEET SHEET WESTER MI

भूत त्यांचा त्यस्त्रित चानत्स उरक्त रहेता कर्षः नेयद्रत व्यवस्त क्षेत्रक क्षित्रंच चार्कितः।

THE VOICE OF GOD IN THE SOUL OF MAN.

There is something sublime in that trusting faith which reaches us through all ages and from all nations, asserting God's positive presence and controlling power. "The ford spake unto me." "The Lord commanded me," sence of God has spring from no external faith, but from an interior recognition of a power within the soul, that was superior to all external commands. It was the sign of the divine life expressing the divine presence.

Philosophy and reason have both come and questioned this faith. What! is God the Infinite speaking to man the finite? Is there any possibility that the life of worlds and universes of worlds individualizes itself, and interferes with the trivial affairs of so iusignificant an atom as a man, and with his relations to his fellow man? But philosophy an i reason in auestioning as do not entirely silence the interior sense of a life, a presence, a power a oneness in and of what is termed that. Sometimes the spirit in its moments of exaltation recognizes its part and presence within the infinite, and thus knows itself closer to God than to any individual spirit in the unverse; but these moments do not satisfy the heart, which calls upon reason and upon philosophy to bring the positive presence of God before the spirit, either as a life or an interior power, or an outward agent individual and supreme.

There is within man a sarse, if we may so term it, or a spiritual consciousness, of the divine. It is sometimes scarcely active, but it is always existent. It is a feeling through the myriad channels of life, a bond, a union, a reception of that universal life and that infinite presence which it terms God.

From the highest to the lowest, in living threads of light the presence extends, and man speaks within himself to God, and yet that inward voice reaches through all space and time, for it is life within well to life without that impels the thought, and that thought vibrates as it goes out, and is an actual power in the universe.

Then prayer to God is an aspiration, an inward sense of an appeard destiny. It is the heart's testimony of immortality, of an univing life and an eternal progress. But prayer for special good must have finite means of answer, and thus every aspiration reaches some spirit that with loving thought endeavors to respond, and to pour back for only an answer of life but so to phence has polatione of man to man that the good sought shall be gained.

This answer comes as an evidence of infinite love and so the heart says, " God hears me, "I know that I have a Father who is close by my side." It is this inward recognition of spiritual aid that has given to the world such proofs of an actual God-that the idea often becomes individualized and limited. The religious world places Christ between the Infinite and the tinite, and he becomes an ever-prsent individual, so that God is only a name but not a necessity. The irreligious world puts the interior self-head as the only power of existence and find is not much cared for. The Spiriunalist places the spirit-world as the active agency of life and makes God as an incomprehensible infinity, that need not be sought and cannot be recognized. The mediation or com. ing between the highest and lowest of some pesitive presence has been made necessary because of the intellectual conception of God as intmitely high, infinitely pure and holy, and thus impproachable. But the wisest of intelfigences can never fully satisfy the spiritual life within man. It knows itself like every other son! except in degree, and it turns from highest Christ and from most explied angel to that which Christ and angel also turn unto. It is then positively affirmed by the aspiration of the spirit itself that it individually holds its close bond to God, and receives in its inner life testimony of him, oven as do the higher intelligences of heaven.

We must then seek God in our own souls, because it is within ourselves that we find the termination, in our individual consciousness, of those threads of divine life that reach our and bind us to the infinite universe and to the infinite God.

Theodore Parker says of himself, "When a little boy in petticoate in my fourth year, one fine day in spring my father ted me by the hand to a distant part of the farm, but were sent me home alone. On the way I had to pass a little pend-hole, then spreadone its waters wide; the lora in full becom-a rare flower in my neighborhood, and which grew only in that locality-attracted my attention and drew me to the spot. I saw a little apot-ted tortoise maning himself in the shallow water of the root of the flaming shrub. I lifted the stock I had in my hand to strike the barmless reptile; for though I had never killed may arenture, yet I had seen other hove out of sport destroy birds, squirrels, and the like, and I felt a disposition to follow their wicked example. But all at once something checked my little arm, and a votee within me said clear and loud, 'It is wrong', I held my uplifted stick in wonder at the new emotion—the consciousness of an involuntary but inward check upon my actions--until the tortoise and the rhodora both vanished from my sight. I hastened home and told my mother, and asked what was it that told me it was wrong? Sho wiped a tear from her eye with her aproughand taking me in her arms, said: 'Some mon, enil' it conscience, but I prefer to call it the woice

of God in the soul of man. If you listen and obey it, then it will speak clearer, and clearer, and always guide you right; but if you turn a deaf ear or disobey then it will fade out little hy little, and leave you all in the dark and without a guide. Your life depends on heeding this little voice. She went her way, careful and troubled about many things, but doubtless pondered them in her motherly heart; while I went off to wonder and think it over in my poor childish way. But I am sure no event in my life has made so deep and lasting an unpression on me."

The "voice of field in the soul of men" is proof of the divine life that awaits every spirit. It is the recognition of a destiny that can never be achieved antil purity, and right; and holiness shall prevail.—From the Herald of Progress.

বিজ্ঞাপন।

পর্মান্তর্ক নামী মাসিক পাত্রিকার প্রথম সংখ্যা প্রচারিত ইইয়াছে। গর্মানীতি; ধর্মান্তর্ব; সানাজিক উন্নতি; নাতিগর্ভ আখ্যারিকা; নাধুদিকার জীবন; বেদ পুরাণ বাইবল কোরাণ প্রকৃতি দক্ষা পুরুক ইইডে সভ্যা প্রমাণ প্রতি পাদক লোক; এই সমুদায় এ পাত্রিকার লেখা বিষয়। দছাল অগ্রিম ভূলা বার্মিক হাতে টাকা এবং মামাসিক হাত এক টাকা চারি আনা নির্দ্ধানিক ইয়াছে। প্রতি সংখ্যার মূলা।০ আনা। নির্দ্ধানকলন্থ প্রাহক দিগলে ভাকের মাজল দিতে ইইবে। প্রথাকে মহাশ্যের। কলিকান্তা ব্রাহ্মানক অনুসন্ধান করিলে অথবা নিয়া-লিখিতে শিন্রানাম দিয়া প্র লিখিলে প্রাপ্তি ইইবেন।

ধর্মজন্ত সম্পাদক। *
কলিকাভা ব্রাহ্মসমাজ ।

প্রকার।

নিয় লিখিত প্রবন্ধ রচনার জন্য, রোহিল খণ্ডের অন্তর্গত বেরিলীর মিউনিসিপাল কমিটি ভিন শত টাকা পুরস্কাব দিবেন এই প্রবন্ধ ইং-লাকী অথবা কোন ভারতবর্য প্রচলিত ভাষায় লিখিত ইইবেশ।

· 41

তার ভবনীয় বানিকাগণের বিদ্যানিকা এবং ভাষার সমুদ্ধতি ও প্রোৎসাহের উৎকৃত উপার। ?' গালস্ক প্রবাহন নাম সাক্ষর না করিবা স্থনাম চিক্তমার্ক লিখিতে হইবেক। এবং প্রের্থ ক্ষরেয় উক্ত চিক্ত সম্বলিভ ক্রক স্মান্ত আবর্গে রচনিক্রির। নাম ও ধানের গারিচন প্রেম্বান ক্রিতে হইবেক अवक गर्क आगाति । जा गार्क जातित्वत शृत्वतं, जात्कत्र गास्त्रक्षणिता, त्वाविक संत्यत्र अव्यक्ति त्वकि लीत निकेशिंगनील क्षेत्रित त्यक्रकेति निकेश गांशिंदिक स्टेर्स्ट

विविधी

७० व जानके । ३ ७६ स

प्राणिष्ठे, तम क्षण्डशास्त्र । स्वत्र शास्त्र क्षणित्र वर्षः

আগায়ী ২৩ ই অগ্রহায়ণ রবিরার অপরক্স ৪ মটি-কার সময় কলিকতা ব্রাকাদনাক্ষের বিতীয় তল গুলে সধারণ প্রতিনিধি সভার বিতীয় ক্ষিধিবেশন হইবেক। প্রতিনিধি মহাশারের। তৎকালে সভার উপরিত হইয়া কার্যা সম্পন্ন করিবেন।

কলিকাজ: ৪ অগ্ৰহায়ণ ১৭৮৩ গ্রী কেশ্রচন্দ্র সেন্ প্রতিমিধি সভার

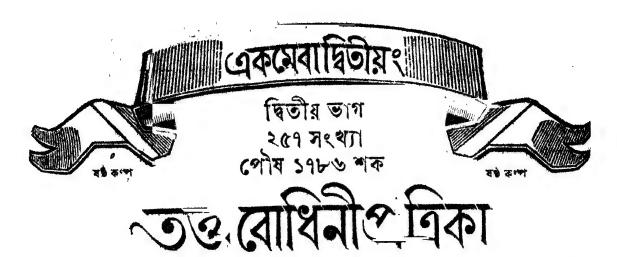
जम्मामक ।

সাধারণ প্রতিনিধি সভার জন্য করিকাতা ব্রাক্ষান্তর প্রতিনিধি নিযুক্ত করণোদেশে আগামী ১৩ ই অগ্রহাণ রবিবার অপরাক্ত ও ঘটিকার সময় কলিকাতা ব্রাক্ষামাক্রের দ্বিতীয়তল গৃহে বিশেষ সভা হইবে। ব্রাক্ষামহাশায়েরা তৎ কালে সভায় উপস্থিত থাকিয়া উক্ত কার্যা সম্পন্ন করিবেন। কলিকাতা ব্রাক্ষামাক্রের প্রাক্ষামাক্রর প্রাক্ষামাক্রের প্রাক্ষামাক্রের প্রাক্ষামাক্রের প্রাক্ষামাক্রের

河明村田市 1

নিঘ তি পত ।
भृष्ठी
मेश्रद्भत महिल कर्गटल्य मध्य ১১०
থিয়োডোর পার্করের পাস ,. ১১৫
ডুইড মভ ১১৯
রাজভরজিনী ১২৩
रेमबी >१००
छतामी पुत्र अक्तरिमगुलद्यत उल्लेटमण ै >२६
देश्त्रीवि
তত্ত্বাধিনী পতিকার মূল্য নিরূপণ।
অগ্রিম মূল্য (কলিকাড়ার জন্য)
'' (गकश्चद्रवात कना)
मानिक भूता
Q 40
And the second s

कि ०२ उन्दर्शिको निकास स्विकास समाहित स्थापा-मारकाष्ट्रिक ताक मधारक मुजामित्तव ज्ञाहरू स्थाप्ति सारम क्षाकामिक वृद्ध । ४३ स्थापन सुरशीय मुख्य १३३० व्यक्ति स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन



ব্ৰহ্মবাএকমিদমগ্ৰহ্মানীদ্বান্ত কিঞ্চনাসীতিদিদং সৰ্ব্যমূজৎ। তদেব নিত্যং জ্ঞানমন্তং শিবং স্বতক্ষিব্ৰয়বামক মেবাৰিতীয়ং সৰ্ব্যাপি সৰ্ব্যালয়স্থালয়সৰ্ব্যবিৎসৰ্ব্যাভিনদ্ধ বৃষ্পৃৰ্বমপ্ৰতিমমিতি। একস্য তটুস্যবোপাসন্মা পার ব্ৰিষ্টমৈন্তিকক শুভৱাবতি। তদ্মিন্ প্ৰীতিস্তস্য থিয়কাৰ্য্যনাধনক তদুপাসনমেব।

স্যাক্সন্ শত।

বল্টিক সাগর, উত্তর সাগর ও রাইন
নদীর তীরে জুটস্ প্রভৃতি ক চকগুলি জাতি
বাস করিত; স্যাক্সন জাতি ভাহাদিগের
অন্যতম। ইহারা কালক্রমে ইংলগুরও
অধিবাসী হইয়াছিল। এই স্যাক্সন জাতি ও
তৎকালের ইংলগুর জাতি মিপ্রিত হইয়া
বর্ত্তমান ইংবাজ জাতিকে উৎপন্ন করিয়াছে!

ইংদিগের মতে এক অনাদি অনন্ত পরনেশার সকলে দেবতা সকল লোক বিন্তু হইবে, তথনও তিনি বিদ্যানান থাকিবেন। ইনা ভিন্ন ইহারো আপনাদের স্বভাবের অনুরূপ কতগুলি দেব দেবীর কম্পনা করিত। ইহাদের ক্ষেতারা শুরাতন রোমক ও একি-দিশের দেবতার আন্ত নিতান্ত কামুক ও জ্বালা ছিলেন না বটে, কিন্তু সেই, সকল দেরকার সহিত স্যাক্ষ্যন ক্ষেত্র আহ্বালা ছিলেন না বটে, কিন্তু সেই, সকল দেরকার সহিত স্যাক্ষ্যন দেবতার আহ্বালা ছিল। অধিকল্প ন্যাক্ষ্যন দেবতাদিশের স্বভাব স্থাকিক স্থাকিক

ম্যাক্সনদিপের প্রধান দেবভার নাম ওডিন, ই হার আকার অতি প্রকাণ্ড; বাম रुख मञ्जी इंड हक् उ मिकन रुख अक निटकांच धङ्श थाकिछ। हेनि मभूनांब्र দেবতার জনক বলিয়া কীর্ত্তি হইয়াছেন এবং নিতান্ত ভীষণ, রক্তপাতপ্রিয়, রণোৎ-সাহদাতা, জয় দাতা, যুদ্ধে মৃত ব্যক্তিদিগের নিয়ন্তা ও যুদ্ধের অধিষ্ঠাতা ছিলেন, সমর **সামী বাক্তিরা ইহ**ার স্থময় ধাম আপ্র ইহারই নামানুসারে সুগ বারের নাম ওডেনম্ডে বা ওয়েডনেমডে হই-ब्राट्छ। इंश्लख थाङ्खि (मटन इंग्लंब नाटम অনেক স্থান ও প্রানিদ্ধ আছে। কৃষ্ট্রগা वा रक्त्रा नारम देहाँद अक अञ्जी हिटलन। হিচ্ছুশান্তে কামদেবের পত্নী রতির ঘেৰূপ বৰ্ণনা আছে, ফুেয়াও প্ৰায় সেই ৰূপ हिटलन।

হিন্দুদিগের পবন দেবের ন্যার থর নামে
ল্যাক্সন্দিগের এক দেবতা ছিলেন; ইনি
বাত্যা ও জলোজ্যাদের কর্তা। ইহঁার মন্
ভবেক নক্ষত্র চক্র থাকিত, ইনি আনাদের
ক্রেক্সের ন্যায় গদাধর ও ইক্সের ন্যায় বজ্লধরও ছিলেন। ইহার গদা এমন গুরুতর ও

বৃহৎ যে, দশ জনের ফারে তাহা বহন করা এই গদা সদা প্রস্থানত অন-याइँड ना। লের নায় উত্তপ্ত থাকিত। একদা ধর দেব নিদায় অভিভূত হইয়া আছেন, এমন স-মটো অস্ত্রগণ সেই গদা অপহরণ পূর্ব্বক স্বদেশে লইয়া গিয়া মৃত্তিকার চারি ক্রোশ নিমে লুকাইয়া রাখিল। দেবগণ ভাষা জানিতে পারিরা তাহার পুনঃথাপ্তি বিষয়ে অননাগতি হইয়া ফেয়া দেবীর সহিত এ-ধান অস্করের বিবাহের প্রস্তাব করিয়াঁঅ-স্থ্রদিগকে কহিলেন, সেই অপস্ত গদা কন্যার পণ স্বৰূপ-প্রদান করিতে হইবে। অস্থুরেরা তাহাতে সম্মত হইল। ব্যমন অমৃত বিভাগের সময়ে বিষণু মোদিনীর বেশ ধারণ করিয়া অস্ত্রগণকে মোহিত করিয়াছিলেন, লেইকপ ধর দেব ফুেয়া দে-বীর বেশ ধারণ করিয়া বিবাহ সভায় উপ-স্থিত হইলেন। অন্তর ভোজনের আরো-জন হইল। কপট দেয়া নেবী একটি রুঘভ ७ वा ठेकि वृहद वृहद १९मा व्यनासारम छन-রসাৎ করিলেন। তদর্শনে অস্থরগণ স।তিশয় চুমৎকৃত কইয়া উঠিল। অভপের অস্কুরপতি পাণিএহণের অভিলাধে বর বেশে কেয়া দেবীর সলিধানে উপস্থিত হই-লেন, কিন্তু কন্যার ভরঙ্গর ঘূর্ণমাণ লোচন গ্য দেখিয়া ভয়ে পশ্চাৎ ভাগে অপ**স্**ত অ্যনি খর দেব নিজ মুর্কি হাজালোধ 📗 ধারণ করিশা **গুদ**। লইয়া গড়ার **স্বরে অস্তর**-গণকে আক্রমণ পূকাক সংহার করিলেন ! থর দেবের মদা পানের শক্তিও অতি মদ্ভ ে অস্তরগণের এক**টা অভি রুহৎ ও** অভি গভীর পান পাল ছিল। একদা ভাষারা নেই পাত্র নটো পুর্ব করিয়া থর प्तवतक श्री शृक्तक शास कितिहें कहिन। পর দেব ভাষার কিঞ্জোত পান করিয়াই क्रांख करेशा পण्टिन, मानास्त्राहित (क्रिक्र)

করিয়াও সমুদার নিঃশেষ করিতে পারিলেন
না, ভাহাতে তিনি অভিযান্ত অথাতিত
ইইলৈনী পরিশেষে অকাশিত ইইল যে
অপ্লরেরা ঐ পান পালের নিম দেশে। ছিজ
করিয়া ভাহার সহিত সমুদ্রের যোগ করিয়া
দিয়াছিল। থর দেব কেবলী যে ঐ প্লেন্থ পালের সমুদার মদ্য নিঃশেষ করিয়াছিলেন
এমত নয়, সমুদ্রের লবণায় ও কভিপার হস্ত
পর্যান্ত পান করিয়াছিলেন। পূর্বের উলিথিত ইইয়াছে যে থরদেব বস্থারও ছিলেন।
এই নিমিত্ত ভাহার নামানুসালেই বজ্বের
নাম থনর বা থণ্ডর বলিয়া শ্রমিক ইইয়াছে।
এবং ভাহারই নামানুসারে সপ্লাহের পঞ্লম
দিবদের নাম থস তে ইইয়াছে।

ওডিন ও থর ভিন্ন আরও নয় জন দে-বতা ছিলেন। বাল্ডর আলোকের দেবতা, টীর বারগণের দেবতা, ত্রাগ্কবি ও বাগী-দিগের দেবত। ও হেমডাল স্বর্গ ছারের ও ইন্দ্রবুর দেবতা ছিলেন। স্পাক্সনের। এই একাদশ দেব ও ইহাদের পাত্রী একাদশ দেবীর উপাদনা করিত। এতদ্বিল অনেক উপদেবতাও ছিলেন। মনুষ্যের দৌভাগ্য. ছুর্ভাগ্য ও মৃত্যুকাল নির্ণয়ের ভার ্তিমটি উপদেবীর উপর সমর্পিত ছিল। বলিকিরি নামে তিনটি উপদেবী স্বর্গের পরিচারিক। ছিলেন; ইহঁারা ওভিন দেবের **আ**জ্ঞা-ক্র**েম** যুক্ষ-স্থলে যোক্ষাদিগের জয় পরাজয় দান ও প্রাণ রক্ষা বা শ্রাণ হরণ করিতেন। পাপের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা লক, তাঁহার সাভিশয় নৌন্দর্যা ছিল কিন্তু অভিনয়শুর্জ, হিংসাপ-রবশ দেব ও মানবগণের অভিকৃষ্টারী ও নিতান্ত অবাধ্য বলিয়া ভাহাকে নেবগণ এক গিরিও হার রুদ্ধ করিয়া রাশিয়াছিলেন। नतरकद अधिष्ठां की की देवती, दक्षाह न নামৰ বৃক্, অহাও সৰ্প ও অক্সগণও भाभभूक्षमंपिरगत मध्या शातगान्छ क्रियन।

नेगाक मनगिरशंद खरशंद माम वाजराला। च जावजः युक्तास्त्रकाती माक्नित्वता युक्तदकरे পরম স্থানাধন বলিয়া জ্ঞান করিত ! স্থ-ভतार ভাহাদের স্বর্গও দেই প্রকার স্বর্থেই পরিপূর্ণ ছিল। ভাছার। মনে করিত, বাল-হালা-গত বীরগণ দিবাভাগে ঘারতর স্থাক করিয়া পরস্পার আঘাতে পরস্পারকে ক্ষত दिक्क कटत, मिनारमाद्य महमा (महे मकल ক্ষত শুক্ষ হইয়া যায়। তৎপরে তাহারা কিম্নর নামক অক্ষয় ব্রাহমাংস ভোজন ও শত্রগণের মন্তক্নির্দ্মিত প্রসাত্তে মদ্য প।ম করত প্রমানন্দ সম্ভোগ করিতে থাকে। স্যাক্সনদিকের নরকের নাম নিফ্লাইম; পাতালবাদিনী ছিলা দেবী তাহার অং্ধিষ্ঠাতী; তাঁহার আকার ও দৃষ্টিকেপ অতি ছংকর, তদ্দর্শনেই সকলের হৃৎকম্প উপস্থিত ইয়। জলপ্রপাত দারা সেই নরকে প্রবেশ করিতে হয়। তথাকার গৃহ-সকল পরিতাপনয়, বিপণি দকল ভুডিক্ষময় এবং পরিচারকগণ নিভান্ত দাঘ সূতী ছিল।

এই স্বৰ্গ নরকের স্থখ্য ভাগ ছিরস্থানী নয়। আনংখা বৎদরের পুরে মহাপ্রলয় উপস্থিত হৈ বে: স্বর্গে ও পূর্যিকীতে ভী-मन लकन-मकल मुक्के इइट छ थ†किटव ; পাপায়ারা মুক্তি লাভ করিবে; তাহাদিগের षां क्रमर्ग किल्या (मवका विवृक्षे इहरनन, কতকগুলি দেবতা সরস্পর আহত হইয়া कालधारम श्रदनमं कतिर्वनं, रमवगरनत जनक ও অধিপতি 'ওডিন দেবও পঞ্জু পাইবেন। **এक यह ७ जमन व्यक्ति ७ इ**हेश- छेठित्व ; ভদ্যোগালচালা, নিল্লাইম প্রভৃতি সমু-माम् क्रिये क्या वटनय इटेटर के देवलन त्महे अन्ति अन्छ श्रद्धमञ्ज वर्षकान ্রাকিবেন। অভ্যপর বালভালা অপেকা সহস্রওণ উৎকৃষ এক সূত্র পর্য ও নিক্ नाइंग म्हाना महस्रक्षेत्र करिया नाम

ট্রাণ্ডি নামক এক মূতন নরক স্ট ইইবে। তথন মানব জাতি স্ব স্ব কর্মামুসারে স্থর্মে বা নরকে নিজিপ্ত হইবে।

म्बर्जाम्टनत छन-छव ७ **डाँ**श्निटनत निकर्णे विषयान मार्क्मनिष्यतः खेलामना ছিল। উপাসকদিগের গাতে উৎস্ক ব-লির রক্ত প্রোক্ষণ কর। হইত। সময় বিশেবে নর বলিদানের অধাও প্রবর্ত্তি ছিল। সাধা-त्रानंत **अ**र ভारकरण वस्त्रश्याक वन्ही ७ मीग- त्वांतमान कहा ब्रहेख। तांकाता युटकत সময় জয় লাভ বা রোগের সময় আরোগা লাভ করিবার নিমিত্ত নিজ্ঞ নিজ্ঞ সন্থানকে বলিদান করিছেন। স্যাক্সনদিধের এই প্রাক্র গাঢ় সংস্কার ছিল যে, নরবলি প্রদান না ক-রিলে মৃত্যুর পর স্বর্গ-লাভের সম্ভাবনা ন:ই। এই নিমিত্ত তাহারা ছুজাগা বন্দীকে বলি-দান দিয়া স্বর্গের দার উল্মাটিত রাখিত। আল্মা ও ভীরুতা স্যাক্ষনদিগের একান্ত বিষিষ্ট ছিল; ঐ ছটীকে ভাষারা উৎকট পাপ বলিয়া গণনা করিত। তাহাদের বি-শাসে ছিলি, কাপুরুষেও অলস ন∺্তিকেখ-নই স্বৰ্গ প্ৰাপ্ত হইবে না, প্ৰত্যুত, নেরৱগামী হুইরা নির্ভিশ্য যন্ত্রণ ভোগ করিবে।

অন্ত্র্যারণ ও অন্থারোহণ করিলে বিশুদ্ধতা বিনফ হলবে এই অভিপ্রারে স্যাক্যন যাজকাদণের উহা অভ্যন্ত নিষিদ্ধ
ভিল। শ্রীলোকেরা দৈববানীপ্রকাশক বলিয়া স্যাক্দনের ভাহাদের স্বিশেষ সন্মান
করিত। কথন কথন রাজকুনারীরা ধর্ম্মাজিকা হইতেন ও লোক্দিগকে দৈববানী অবগত করিতেন। এদেশের অনেক লোকে যেমন স্পের মন্ত্রে, ভূতের মন্ত্রে ও ডাকিমীর
মন্ত্রে অদাশি বিশ্বাস ক্ষিয়া থাকে, স্যাক্
সনেরা সেইবাপ মন্ত্রের প্রতি স্বিশেষ আছে।
প্রদর্শন করিত। ভাহাহা বোধ ক্রিত, মন্ত্রবলে ইক্ষান্ত ভাহাহা বোধ ক্রিত, মন্ত্র-

নাইকে পারে। কর্মকরের। ক্ষানা বর্ম নির্মাণ কালে বিশেষ বিশেষ বিশেষ মাজ পাঠ কর্মিনাণ কালে বিশেষ আলাত ক্ষনিবার্যাও লেই বর্ম নিতান্ত অভেনা হয়। কোন মজে বাত্যা ও ক্ষনোক্ত্রান কাবল ও কোন মজে তাহা নিবারিত হয়, এই সংক্ষার পাকাতে স্যান্ সনের। ঘোরতর কটিকার সময়েও পোতারোহণ প্রকিক দেশ লুকন প্রভৃতি দন্তার্তি করিত। ভাকিনী আছে বলিয়াও ভাহাদের অভ্যন্ত বিশ্বাস হিল। অদ্যাপি ইউরোপের হানে হানে ভাকিনী বিশ্বাসের কথা গুনিতে

ম্যাক্সনেরা বায়ুর গতি আকাশের রূপ,
পক্ষিগণের গমন ও শক্ষ এবং উৎস্কীবলির অন্ত দিরীক্ষণ বারা ভাবী শুভাশুভ
নির্ণয় করিত; সমাধি ক্ষেত্রে মৃত ব্যক্তিদিগকে গরোধন করিয়া অভিলবিত বিষয়
কিন্তাসা করিত এবং গুরুতর বিষয়ের ভাবী
কল জানিতে স্থানে কিলেপ করিয়া, ঐ খজাহত ব্যক্তির রক্তধারা কি রূপে নিঃস্থত
হয় অথবা ঐ জল-নিক্ষিণ্ড ব্যক্তি কিরূপে
নিমন্ধ হয়, ভাহা দেখিয়া ভাবী শুভাশুভ
অবধারণ করিভ।

থিরোডোর পার্করের পত্ত।
২৫৬ সংখ্যক পত্রিকার ১১৯ পৃঠার পর।

জনন্তর আমি ধর্ম-বিজ্ঞান অনুশীলন
করিবার নিমিত্ত প্রকৃত সময়ে কেম্ব্রিজের
এক বিলালয়ে প্রবিষ্ট হইলাম। ছৎকালে উল্লোলয়ে ইউনিটেরিয়ান্ সম্প্রালারই
উহার ভত্তাবধান করিতেন। আমি এ বিদ্যান
লবে প্রবিষ্ট হইড়া দেখিলাম, তথার ধর্মন
বিদ্যান অনুশীলন করিবার নিলাক্তর ক্র

गाँभाका बांबिश्वदक बाकुक वर्ष न र्गाडिक स्टबके पानीनचा वानान निका पारकनः पानमा परगत शरकता वीकाड করিতে কার্যকেই পীত্রন করেন না। शता वर्ष-विकारमत विषय (व कर्श का विकास. मक्रा के कारात के केनारान अवान कति-**्टन।** जामनानिश्चरक मर्काछ कदश जार्थ-মাদিগের মত অভান্ত বলিয়া কদাচ পদ্ধি-भागम कतिरकन ना। **'कांशांता नकरमा**रे मर्भरथत नियको हिर्दान ; व्यनाचा मुख्य-দায় অপেক্ষা অধিকতর বিতপ্তাবাদ করি-তেন না। তাঁহারা ধর্ম-বিজ্ঞানে অভিজ্ঞত। লাভ করিয়াছেন বলিয়া অন্যের নিকট আ-চার্য্যকতার ভান করিতে একান্ত পরাধ্যুধ ছিলেন। দেখিলাম ঐ বিদালয়ে পূর্বতন এত্বরাদধের সঙ্গবিত ভুরি ভুরি এত্থ আছে, কিন্তু তুর্ভাগ্য-ক্রমে তথ্যবো জর্মানির পণ্ডিত দিগের ভূতন একখানিও ধর্মবিজ্ঞান দৃষ্টি-গোচর হইল না। আমি ঐ বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিয়া ধর্মানুসন্ধানের প্রচুব স্থাধী-নতা ও জাবকাশ প্রাপ্ত হুইলাম এবং অসা-ধারণ যত্ন ও পরিশ্রম সহকারে ধর্ম-বিজ্ঞান व्यक्तभी । न कति ए वांशिवाम। स्म समस्म ধর্মোপদেশকের আসন গ্রহণ করা অভি मक्क गांशांत हिल, किंद्ध प्रिश्वांय एवं म-মন্ত লোক ধৰ্ম-যান্তকতা পূদে প্ৰতিষ্ঠিত ছিলেন, চ্যানিঙই তাহারদের মকল সংপ্রেক। ममिक थाधाना लाख करबन ।

অনন্তর আমি ধর্ম বিষয়ক বিশেষ মাভাব পরিপূর্ণ করিবার বিমিন্ত স্বতর করে।
নানা প্রকার পুত্তক পাঠ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। একানে আমি সহকেই বাক্ত করিতে
পারি যে ভংকালে উদ্দেশ্য না লানিরা
কি প্রকার চেকা ক্রিয়াছিলাম এবং ধর্ম
মান্তবের পার এইণ করিয়াছিলাম এবং ধর্ম
মান্তবের পার এইণ করিয়াছিলাম

জামি প্রথমত অভিনিবেশ পূর্বক বা-हेवन शाठ कब्रिटड बाहुख इहेनाम- वाहेदन কি, এবং কোন্ কোন্ পুস্তক ও কোন্ কোন্ खोषा लहेशा छेशा मकलिंड इहेशाइह. वाहेव-(नत उत्मनाहे वा कि बाग, এই ममल विषय পর্যালোমনা করিতে আরম্ভ করিলাম। এই बट्ट रूप एन प्रतिका निर्मिष भरीका कतिया মূল ভাষার বাইবল অমুশীলন করিতে লাগি-लाम। छेडांत विद्यास विद्यास व्यश्टमत व्यामिम রচনাগুলি তন্ন তন্ন করিয়া পাঠ করি-লাম। ঐ সমস্ত আদিম রচনার মর্মা বোধ করিবার নিমিত্ত ইছদি ধর্ম-যাজকদিলের প্র-भी छ পুরাতন বাইবলের টীকা এবং খঞ্চিয়ান আচার্যাদিগের প্রণীত পুরাতন ও মূতন বাই-বলের টাকা অনুশীলন করিতে লাগিলাম। এবং জামান্ গ্রন্কার দলের রচিত বাইবলের खनटनाय-दिवांत्रक श्रञ्ज अ विकास भागे कर्ति-এই সমস্ত প্র্যালোচনা করিয়া দেখিলাম, বাইবল বিভিন্ন প্রকার গ্রন্থ হ-हैटड मक्तिंड इरेशंट्ड। जे ममस अस् य, कान ममरत कि करल कारा कर्ड़क थ-ণীত হয়, ভাছার কিছুই নির্দেশ নাই। যদিও কোন কোন এত্তে প্রণেভার নাম নির্দিষ্ট দেখিতে পাওয়া যায়, ভাহাও কোন ক্রমে বিশ্বাস-যোগ্য হইতে পারে না। याहाई इंडेक, थे ममल भूलक श्रन्थ-श्रवाद চির-পরিচিত প্রণালী পরিত্যাগ পূর্বক व्यवाविष्ठ बद्ध वानीठ इंदेश्रांट्ड। वंत मक्रवम काटन ये मक्रव श्राहीन श्रट इत মধ্যে যে কি নিমিস্ত কোন খানি পরি-গৃহীত ও কোন খানি পরিতাক্ত হইল. তাহা নির্ণয় করা নিভান্ত হুরুঠিন। বাই-वरणत काम काम चर्टम मरजूत मन्त्र म বিসহাদিতা লক্ষিত হইরা থাকে ৷ ীপুরাতন वारेवन त्य अन धर्म बिटर्सने कविरक्रम, सूछन বাইবলৈ ভাষার একান্ত বিশরীত দৃতি লো-

চর হয়। মৃতন বাইবলে প্রণেতাদিগের কেবল রচনা-প্রণালী ও ভাবগত বৈশক্ষণা লক্ষিত হয় না কিন্তু ভাঁছাদিগের মত-বৈষমা ও অভিপ্রায়-গত তারহমাও দৃষ্ট হইয়া থাকে।

অনন্তর আমি বাইবলের প্রত্যাদেশ, ও অলৌ किक कार्यात विषय अर्यारमाहमा করিতে লাগিলাম। দেখিলাম, কেবল हेरूनि ७ शृधिश्रोनीं ने देशत मत्या है नाना थ-কার অলৌকিক কাও ঘটিয়াছিল ৷ অন্যান্য সম্প্রদায় যে কি নিমিত্ত উহার কল ভোগে ব্যাফত রহিল, ভদিষয়ে ঐতিহানিক বা অন্য কোন ৰূপ অমাণ প্ৰাপ্ত হওয়া যায় না। তথাচ এই প্রাক্তিক-নিয়ম-বিরোগী অলৌ কিক কার্যো সর্বাক্তিমান্ ঈশ্বরের সাক্ষাৎ হস্তকেপ বিষয়ে আমি অপ্রসন্নমনে বিশাস করিলাম। আমি তৎকালে ইতিহাদ-ঘটিত অমাণের অণালী আুলোচনা করি নাই এবং माका विषदा किंबल अनुमक्तांन कहिट्ड इस, তাহাও জানিতাম না, এই নিমিন্ত ঐ অলৌ-किक घरेना मकल आभारक निराम स-প্রত্যাদেশ-বিষয়ক মত ख १ ख করিল। কথ প্রিঃহ সিদ্ধান্ত করিয়া लईलाम--- जफ् জগৎ ও মনুষ্য উভরেই ঈশ্ব আবির্ভ এই দ্বিধ পদাবে তাঁ-इहेश⁴ अ(इन। হারই কার্যা। তিনি এই জড় জগৎ ও মনুষাকে আপনার শক্তি দারা পরিচালিত করিতেছেন; স্কুতরাং যাহার যেৰূপ ক্ষমতা अवश्राय (महे कमजोत एम शकात वावहांत করিতে সমর্থ হয়, তাহাকে তত দুর থা-जामिक तला गाहेटक शांदतः मखाहे युक्ति-वृक्ति এवः नामि नौजि-वृक्ति अकारमन-विषयक विरम्भ अमान इस । वाह्रवाछ छ-লিখিত-ৰূপ প্ৰতাবেশ বাতীত পৰা প্ৰকার रहेट आदत ना अवर डेरांट र अतिमादन गण-ध गाव निवलिक बाट्ट, तारे गाइ- মাণেই উহাকে প্রভাগিত বলিয়া স্থীকার করিতে পারি। এমন কি, উহার কোন স্থলই অভাস্ত ঐশিক বাক্য বলিয়া হৃদয়-স্থন হয় না; কেবল এই মাত্র বলিছে পারি ধে গকল সভাই ঈশ্বরের বাক্য।

অনস্তর 'আমি ইছদি ও " খৃষ্টির ন্দি-নৌর ধর্মাও ধর্ম-বিজ্ঞানের যেরূপ উল্লভি হইয়াছিল, তাহারও ইতিহাস অনুশীলন করিলাম। দেখিলাম, যাহা এফাণে পৃথিবী-মবো অঞ্ভিত্ত শ্ভাবে আবিপতা স্থাপন कतिवादह, जे माख्यमातिक भउतक कमारे মুক্তন সূতন প্রিরুর্ত্ত সহা করিতে হইয়াছিল। বাইবলকে যেনন মন্তুদ্য-ক্লত বলিয়া প্ৰতীতি कवित, (मञ्चेकार्य शृष्टियान् निरंशत উপाम-नात दान के दाख-लाका, अनना जीन रगत আপণ ও ক্রবকের শন্য ক্ষেত্র অপেক্ষা অ-ধিকতর পুণাস্থান বলিমুণ নির্দেশ করিতে সমর্থ হইলাম মা। কল্ভ আনি বাইবল ও ভদ্ধনালয়ের বিষয় গওই অভিনিবেশ পূর্বাক অন্তুসন্ধান করিতে লাগিলাম,ততই উহাদের অলৌকিকতা ও মদ্রান্ত। আমার অন্তর ছইতে ভিবে হিছ কইতে লাগিল। আরও থ্টিয়ান্দিকের ধর্মবিজ্ঞানে যেৰাপ ধর্ম निर्फिश क्रिक है, के जिहान का होत गमाक् বিপরীত।

আনি কেবল যে ইছনি ও থুকিয়ান দিলের ধর্ম-বিজ্ঞান ও ধর্মের উন্ধতি-বিষয়ক ইতিহাস আলোচনা করিরাছিলান একপ নহে; হিন্দু, বৌদ্ধা মুসলনান, প্রীক্ ও রোমক প্রভৃতি ভানানা সম্প্রদারের ধর্ম ও ধর্ম-বিজ্ঞানের যে কিনার উন্নতি ইইমা-ছিল,ভালারও অন্প্রকান করিছে লাগিলান। আমি বিশ্বস্ত টিকালার্মিকের সাকাবেদা ভ্রমান ক্রিকের বিশ্বস্থানিকার কার মুল ভালার পার করিবান। হওয়া যার না; কুজরাং প্রক্রিক রোক্ত কিরের কারা ও দর্শন লাজ আলোচনা করিব। দেই
অভাব পরিপূর্ণ করিলান। আমি অসভাও
বর্ষর জাতিদিপেরও ধর্মের মর্মাববর্ষা
করিছে লাগিলান এবং হন্মারা ছ্রুছ বিষয়ের
দিন্ধান্ত করিবার জনেক সাহায্য প্রাপ্ত হইলাম। দেখিলাম, যাহাদিপের বাকা-ক্রুছি
করিবার সামর্থ্য আছে, পৃথিবী মধ্যে এমন
কোন সম্পুদারই ধর্মের শৃক্ষণ হইতে উমুক্ত নহে।

অনন্তর আমি যত্ন সহকারে মনোবিজ্ঞান ও আত্মতত্ত্ব আলোচনা করিতে লাগিলাম। দেখিলাম, ধর্মাজ্ঞান মনুষা জাভির সাধারণ ভাবকার। সভাই কি ধর্মজ্ঞান মনুযোর স্বাভাবিক ? উহ। কি মনুবোর আত্মাতে অবিভিন্ন ৰূপে বিদ্যান বহিয়াছে? এবং মনুবোর উন্নতির সহিত কি উহার উন্নতি হয় না? আমি অন্তর্টি ভারা দেখিলাম ধর্মাক্তান স্বতংগিদ্ধ ও ছ্রপনের। তবে আ-मात नात गकन मनुया है कि व्यन्त्र विवाद। ধর্মা-জ্যানকে স্বতঃসিদ্ধ ও অপরিহার্য্য বলিয়। অঙ্গাকার করে ? বাইবল ও খৃষ্টিরান্ সমাজ क्रे अट्यात उन्दर्भ अनात क्रा च सममर्थ। क्र জন্য আমি মনুষোর সভাব সূক্ষ্ম কমে পরী-काश अबुङ इड्लाम এवः त्य छेशानां म इडेटड আমার ও অন্যান্য মনুষ্টোর অস্তরে ধর্মকান ब्याहर्ज् उन्हेश शात्क, **बाचदिकान वांता** ভাহা উদ্যাবন করিতে চেক্তিভ ইংৰান—্য কারণ অবলয়ন করিয়া পরীকা ও অভিজ্ঞতা ছার। কোন বিষয়সিদ্ধান্ত করিতে হয়, সেই কারণ অবলয়ন করিয়া, ধর্মজ্ঞান কোন খান म्हेटड छेद्रमध् स्**हेट्डट्ड, खारात वर्ष्ट्र गसान** করিছে বালিলাম । সক্ষা লাইছের লাইছিন मानाना शक्क अर्थादिनाइना करिएन अ विवर्ष পতি তৃত্বী হৰুৱা বাহ না। সাহ আ THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

हदग्, राटकृति, स्थिय, श्रिति धवः कदा-निन, कर-वानीता याश्रदक माना व्यकादत পরিপোষণ করিয়াছেন এবং রিড্ও ক্রীয়ার্ড যাহাকে বিস্তৃত করিয়া গিয়াছেন, তাহা इहेटड यदकिन्दि माहाया आहा हहेनाम। এই বাহা দর্শন আমার ধর্ম-বিষয়ক সহজ •জ্ঞান উৎপন্ন করিতে পারে নাই, অথবা भागव कांचित व्यवक्षत्रत्व किंदिल धर्माजीव প্রাতুর্ভ ড হইল, ভাহারও কোন ইভিহাস প্রদর্শন করিতে সমর্থ হয় না। এমন কি, যাহারা সহজ্ঞ জ্ঞানকে ধর্মের পন্তন ভূমি विनशं विश्वाम करत ना, এই मछ मिट जि-টিদ্ জ্ঞাতির উপরেও আধিপতা স্থাপন ক-রিতে পারে নাই। ক্লার্ক ও বট্লরের ন্যায় विष्यान, कछ अञ्चर्थ ७ वादतात नाम विषान ধর্মদাস্ত্র-প্রণেতাগণও এই জটিল ভাবের मिक्कां कि कि विद्या मगर्थ इस नारे। यामन जु-গর্জ-নিহিত লৌহ চুয়কের নিরক্ষ গতি প্রতিরোধ করে, সেই ৰূপ অপ্প বা অধিকই হউক নিগ্ঢ় শাস্ত্রের শাসন উহাঁ-দিপের বিচার-শাক্তির স্বাধীনত। অপহরণ করিয়া থাকে। ফরাদিস্দর্শনকার কু-জিন, যে উজ্জুল দর্শন শাস্ত্র প্রচার করিয়া-ংছন, ভদ্মারা বিস্তর উপকার দর্শে. কিন্তু উহা তাদৃশ প্রীতিকর নহে। চিন্তা-শক্তিতে অদিতীয় ইমানুরেল কাণ্টি জর্মনির মধ্যেও নিতাত নিক্ট লেখক ছিলেন; ভিনি যদিও এসন কোন সিন্ধান্ত করিতে পারেন নাই, বাহাতে আমার ভূঞি হইতে পারে, ख्थाठ **यागादक विश्वक धनानी** ७ बहुर भाष क्षामान करियारहर ।

জামি দেখিলার মনুষ্যের কতকগুলি
আজ্পাত্তায় আছে। ঐ সমস্ত আত্ম প্রচায়
মনুষ্যের আভাবিক সংস্থার হইতে সমুৎপান,
অবস্থার বিষয়। তৎ সমুদার মুক্তি ও
তর্কের উলার নিজ্ঞ করিতেছে না। সংমি

এক্ষণে ধর্ম সংক্রান্ত তিনটি আবশ্যক বিষয় উল্লেখ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

প্রথমত ঈশ্বর বিবয়ক সহজ জ্ঞান— ঈশ্বরের অন্তিত্ত্ব বিশ্বাস সহজ জ্ঞান প্রভা-বেই উৎপন্ন হয়।

দ্বিতীয়ত নায়ে বিষয়ক সহজ জাব— আমাদিনের ইচ্ছার একান্ত অনারত, অবশা-পালনীয় নীতির অন্তিত্বে বিশ্বাস সহজ জ্ঞান পভাবেই উৎপন্ন হয়।

তৃতীয়ত আত্ম-বিষয়ক সহজ্ঞ জ্ঞান— স্বাহস্ত্রা জ্ঞানের মূল কারণ সন্মুয়ের আত্মা অবিনয়র ইহাও সহজ্ঞ জ্ঞান প্রভাবেই উৎপন্ন হইয়া থাকে।

মানব প্রকৃতিতেই ধর্মের ভিত্তিমূল निवन्न तरियाटह। नांखिक वा उधायांचाव গোঢ়ারা অস্বাকার বা স্বমত-সমর্থন করিবার নিমিত্ত যতই কেন বিতপ্ত। করুন না,কিছুতেই ইহা খণ্ডন করিতে পারিবেন নঃ। আমি সফলভার আশা ও বিফলভার ভয়ের বিষয়ে বাক্যক্তি না করিয়া আধ্যাত্মিক পরীক্ষা করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। আমি সৌভাগ: ক্রমে ভিনটি সভঃ মনোবিজ্ঞান বলে সংস্থাপন পুরাক অতিশয় মন্ত্রী চইলাম এবং এই রূপ একটি প্রণালী উদ্ভাবন করিলাম, যন্ধারা স্থ-শিক্ষিত বাজি বর্গের মনে ঐ তিন্টি সভা इन तक्षम क्रिएक ममर्थ क्षेत्र ; क्रांत्रण मूजी-ভূত স্বাভাবিক সংস্কার-দকল আপনা रहेर हरे माधातगरक ये महाश्रील क्षमान করিতেছে 🗄

অনন্তর আমি ঈশ্বর নীতি, ও আত্মার অবিনশ্বরত্ব বিষয়ক আত্মপ্রতায়কে উজ্জ্ব ল করিতে সভা দৃঢ়াভূত এবং ঈশ্বরের শ্বরূপ, নীতির শ্বরপ ও অনস্থ জীবনের গতি অমুস-জান করিতে এবৃত্ত হইলাম। এই সমস্ত বিষয় দিল্ধান্ত করিতে আমাকে তুই প্রকার প্রকালী। অবলয়ন করিতে হটুবাছিল। প্রথম কার্ণ দারা কার্যা নিরূপণ, দিতীয় কার্যা বারা কারণ নিরূপণ।

প্রথমত আমি সভা অসভা, স্থানিকত অশিকিত, সকল প্রকার জাতির ইতির্ভ इट्रेंट क्रेश्नर, भी ि ७ सर्ग नतरकत विषदेश কি ৰূপ অভিপ্ৰায় ব্যক্ত হইয়াছে তাহা সং-গ্রহ করিলাম এবং যে প্রকার মত প্রাপ্ত इंडेलाम, उपसुमारत्हे भ ममुपात्रत्क এकथ-কার শেণীবদ্দ করিয়া লইলাম, কিন্তু উ-হাতে আমার তাদুশ প্রীতি জন্মিল না,কারণ ঈশ্বরের স্বরূপ, নীতির প্রকৃতি এবং অ-নস্ত জীবনের গভি বিষয়ে সর্ববাদি-সম্মত कांन मड़ा डेटा रहेट उ सेश्वक रहेव गा। क्वित क्विक्शिल लांच এई ममन्त्र विमय কিৰপ অনুভৰ কৰিয়াছিল, ভাছাই এক প্রকার অবগত হই গান। তথাত ইহা দার। তংকালে আমার বিত্তর উপকার দশিয়া-ছিল, তালার আর জোন সংশয় নাই।

দিতীয়ত আমি আমু প্রভায়-সিদ্ধ অন্ত-দুটির মূল বিষয় ২০০৩ সংখ্র, নীতিও পর কাল বিষয়ক জ্ঞান সংগ্রহ করিতে চেফা कत्रिनाम। এই काल एथन मनुस्यात थ-্তুতি হইতে মত্য সংগ্রহ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম, তথন আর মানব জাতির সংকীৰ্ণ ইতিহাস আমার প্রতিবন্ধকতাচরণ করিতে समर्थ इट्टेन ना। किन्हु এই সমস্ত বিষয় যে কি পর্যান্ত কঠিন এবং তত্ত্বানুসন্ধায়ী মনুষ্য বিশ্বজনীন সভা অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হুইয়া যে কড দূর ভ্রমে নিপতিত হন, তৎ-কালে আমি তাহা বিশেষ অবগত হইতে পারি নাই কিন্তু এ ক্ষনে অপেকারত সমধিক হৃদয়ঙ্গম করিয়াছি। এক রেপু রাণুকায় আমার তারকা ভাম হইয়াছে কি না ভাষার পরীক্ষা করা বিচক্ষণ বাজির मम्भून जाराज मत्मर नाहे।

थामि करन किम किम कावित स्था

শাস্ত্ৰ, ধৰ্ম সংক্ৰান্ত কাৰ্য ও দৰ্শন স্থাত্ত্তের मार्गका व्यवस्थ कविश याशामिक देखि मकर्म अर्था लाग्नात अतु इसे माई; किस यक्ष-मध्दन, यक्ष, अविवाधानी, যাঁহার ভবিষাৎ গণনা, देन्द्रवानी, जाकिनी, जूक ও ইন্দুজাল প্রভৃতি বিষয়ে হস্তক্ষেপ করি-शंद्रिन, आंगादक छै।शंनितात संक्**लिए** অস্তেরও আশ্রয় গ্রহণ করিতে হইয়াছিল। ধর্মাবিজ্ঞানের প্রকৃত পদ্ধতি হইতে পু-রিচ্।ত বিখাতি ইছদি ও পৃটিয়ানদিলের বলিয়া প্রথিত অঞ্জ্বত পুস্তক, পুরাতন বাইনলের অমূলক সন্দর্ভ ও মূতন বাইব-লের সন্দিগ্ধ মত এবং নিয়োধেটেনিই ও নফিকন সম্প্রদায়ের অন্ত কম্পনা পাঠ कतिनाम। यनिष्ठ उदकारम छेदकृषे धर्मा গ্রন্থ সমুদায়ই পর্যালোচনা করিতে আরম্ভ করিয়াছিলাম, ভথাচ মিটিক সম্প্রদায়ের मक्षणिङ প্রবন্ধ অনুশীলন করিছে অবজ্ঞ। वी अञ्चल। अमर्भन कति नारे।" गाँशता ধর্ম-বিজ্ঞান সঙ্গত অনুষ্ঠান, জ্ঞান-শিক্ষা ও অন্যান্য নীতি প্রতিপালন না করিয়া কেবল পরোপকার দাধনে যত্নশীল ছইয়। থাকেন, थामि छै। हो फिट्र अव विषय मित्र भिष्य भिर्मा-লোচন। করিতে লাগিলাম। আমি এই প্রণালী অবলম্বন করিয়া আত্মার অঞ্চক্ত কাৰ্যা সকল শিক্ষা, যাহা সভা বলিয়া এচ্চ বিত হইয়াছে এই ৰূপ অমূলক ৰুপ্নাৰ বিষয় পরীক্ষা এবং যাহা অপ্রতিহত বেগে: সহস্র সহস্র বৎসর অতিক্রম করিয়াছে এইৰপ অলীক মনোরথের বিষয়ও আলো-চনা করিয়। সাধারণের অপরিজ্ঞাক সভ্য गकल नकलम कतियां नहें नीम।

উন্ধ তা

ভবানীপুর এখা বিদ্যালয়।

প্রথান আচার্য্যের উপদেশ। ভূতীয় সংখ্যা। ৩ ক্যোত ১৭৮৩ শক।

अवर्ध ध्वरम्य मुखक डेशनियरम्य ध्वरंत आह् যে মহাশাল শৌনক অন্তিরাকে জিল্ঞান। করি-লেন "কল্মিল ভগবোষিজ্ঞাতে সর্বামিদং বি-জ্ঞাতং ভৰতি "কাহাকে জানিলে হে ভগবন্! সকল জানা যায় ? "ডেলৈম সহোবাচ" অজিরা ভাঁহাকে বলিলেন। ভূমি যে বিদ্যার প্রস্ন করি-**७७, 'त्र विमा कि ना "यम्रा उनकरमधिगमार्ड"** যালার ত্বারা সেই অক্ষয় পুরুষকে জানা যায় মেই ব্রহ্ম-জানেতে সামান্য-রূপে আর সকল জানা যায়। সর্ব্ধ-শ্রুটা ও সর্বাশ্রয় পরমেশরকে জানিলে যারজীয় সৃষ্ট ও আশ্রিভ বন্তুর সহিত ভাঁহার যে এক সামান। সম্বন্ধ, ভাহা অবপত হওয়া যায়। পরা বিদ্যা এই ব্রহ্ম-বিদ্যা; ভদ্তিল ঋক্ যজঃ माम (वम, ইহার। সকলি অত্যেষ্ঠ विদ্যা। পরা विमा। गकन विमा । अक्तिकी । यमन जकत्नत्र भून जम, ज्यमि नकन विष्यात मूनी ज्ञ जमा विष्या। বেমন ব্ৰহ্ম দকল বস্তুতে ওডপ্ৰোড হট্যা আছেন, তেমনি ব্ৰহ্ম-বিদাা সকল বিদ্যাতেই দীপ্তি পাই-ভেছে। যে কোন বিদ্যা হউক, ভাহার ছারা ত্র-का-विमा लाख करा यात्र। कि भारीय-विधान, कि छु-छब्, कि मदना-विकान, कि क्यां छितिमा, সকল विमारि ভাঁহার জ্ঞান শক্তি মঙ্গল-ভাবের निका (परा। उकारक मका त्राचित्रः बाहा कारणा-চনা করি, সকল হই ভেই ভাঁহার উপদেশ পাই। जामता उभागतम् त्वाना श्हेत्त, नेनी मानत, রক পদ্র, অচেডন নিস্তব্ধ বস্তু ইইভেও টোহার উপদেশ পাই। आमत्र मेचदंत बंदना-निद्दमं क-রিয়া জ্ঞান-গর্ক যে কোন পুস্তক পড়ি, তাহা **हरेट्डरे जन्म-विमा। बाक क**ति। बात्रीत-विधान পড়, দেহের অমুত কৌখলের মধ্যে দেই জান-ষরপকে প্রভাক করিবে। ভূ-ভব্ব পাঠ কর, ভূ-गट्डित जारणांमदमत मटथा छाहात महली चिल्त পায়িত্ব পাইবে । আত্ম-তন্ত্ৰ আলোচনা কর, णाशस्य **छै। हाति कक्षणात निवर्णन**्भाकेटव। हे-ভিহান পুরায়ত অধানন কর, নেই সকল বিচিত্র परिनात मत्या जांशा त महन-रख मिर्छ नारेत । त्व विमा अधामम कत्र, आची स्ट्रेटन कार विमादि त्वंगारक जन्म कान विकास कतिहरू। जन्मस्त्रका

ৰায়া আমৱা এই শিকা পাইছৈছি যে এক সাক বতাকে আজিয় করিয়া সমুদায় জগং বুকিত ছ-रेट्ड ; क्रेश्वर बक गांव मृत मड़ा, जांत मसून्त নতা তাঁৰা হইতে নিংস্ভ হইয়াছে। সেই মূল সভ্যকে জানিলে আরু সকল সভ্যের অর্থ বোধ रग, डारा ना कानिट्ड शाहित्स आमार्मह काळा-ন-অন্ধার আর কিছুতেই ধার দা। যামস্তরে বর্ত্তমানাবয়ৎ ধীরাং প্রতিত্ত মনামামার। मक्तमामानाः পরিपश्चि मृहाकदक्तारेनव नीव्रमाना-যথান্ধাঃ। (কঠোপনিষদ্) যাহার। ঈশরকে না জানিয়া অবিদ্যার মধ্যে বর্ত্তমান পাকিয়া আপ-नारक धीत ७ পণ্ডिত विनश। मेरन करत,. स्मर्डे মূঢ়েরা অন্ধ কর্ত্ত নীয়মান অন্ধের ন্যায় মুক্ত-নামান হইয়া ইভস্তভঃ পরিভ্রমণ করে; জানের গম্ম স্থান দেখিতে পায় না। অভ এব সকল বি-मार्गत व्यक्तिश्री, नकल विमान मूल, दक्कविमार्ड পরা বিদ্যা; "যয়া তদকর্মপিগ্নাতে" বাহার স্থারা সেই অক্ষয় পুরুষকে জান। যায়।

ध म्हानंत लाहकत धरे धक्छी म॰ऋहत खाहक, যেন ভারত বর্বে কথনই মভের পরিবর্ত্তন হয় নাই; কিন্তু বাস্তবিক এ সংস্কার অভীব অমুলক। ''ভকাইপারাঝগ্রেদোগজুকেদিঃ সামবেদোইথকবেদঃ শিका करण्या तमकत्रशः निकल्डः छत्ना देवै। जि ষ্মিভি। অথ প্রাষ্য়াভদকর্ম্থিগমতে''। करगृन यक रर्सन माम द्वन अवसं द्वन भिका कणा वाकित्रं। निकल इन्ह बार्डिय, व मगूपय आक्री বিদ্যা ; ৰাহার দ্বারা আক্ষা পুরুষকে। জান। যায়, ভाষাই (अर्थ विमा। भूतंकात देविषक ভাবের যে কভ পরিবর্ত হইয়াছিল, ভাষা মুওক উপনি-यदमत अञ्च बादकारक दे कान। याहेरक हु। इन्द्रांत्रत उम्बिक्तीय द्रांटका পরিবর্ত হইবেই হইবে। य সময়ে আত্ম-জ্ঞানের ও ব্রহ্ম-জ্ঞানের জিজ্ঞাসা হইয়াছিল, সে সময়ে বৈদিক কর্ম্ম-কাণ্ডের উপর অনেকেরই অপ্রজা হইয়াচিল; তথ্য আর ইক্স মিত্র বরণ প্রভৃতির উপাসনা দ্বারা তাঁহাদের স-নের ভুল্ডি হইত না। এক সময়ে বৈদিক মভ পরমোৎকৃষ্ট ও বেদোত যাগ যক্ত নিভান্ত আন नूरकेश वित्रा नकरनंत्र तोध हिन, भरत उभिन-वरम्त ममद्य प्रविद्ध शास्त्रा यात्र द उदकारमञ् জ্ঞানবান পণ্ডিভের। বেদোক্ত কিয়া-কল্লাপে পু-र्वत नाव अस्तिन हिलन ना। अञ्च है।-হারা কক্যজুং সাম প্রভৃতি সমুদ্ধ বেদকে নি-कृषे विमा, क्वत जमानिमाक्ट शता विमा विविश व्यक्तिभा कतिश निष्ठाद्यम् । व्यक्ति सद्धाः নংহিতার পর ব্রাহ্মণ, ব্রাহ্মণের খেষ ভাগ উল-नियम् त्य नमरम् साविक् क रहेन, तम नममनाम পরিবর্তন অপা পরিবর্তন নছে। উপনিবদেই

বৈদিক কর্মা-কাণ্ডের নিশা-কাছ , আহছে । শিকা-হোডে অচুচাবজরণা অটাদনো জনবরং বেষু কর্ম এডকে রো বেগতিন দান্তি মুচাজরামুভুনতে পুন-রেব', পয়ন্তি''। এই বক্ষ-রূপ অঞ্চেষ্ঠ কর্মা-সকল অ-স্থায়ী ও অচুচ, যাহা অটাদশ ক্ষতিক ছারা সম্পন্ন হয়; যে মুচ্চেরা ইহাকে প্রেয় বলিয়া অভিনন্দন করে, ভাহার। পুনঃ পুনঃ জরামৃত্যুকে প্রাপ্ত

रेविनिक भगरस्त्र अविद्या जिन्दातक रकवन बाह्य विषदम् दिश्यदेखन, जिल्लीस्यदेश समदम् दौद्यात्र। তাঁহাকে আহ্বাতে অনুসন্ধান করিতে শিকাক-রিয়াছিলেন। যত দিন প্যান্ত ভাঁহারদের বা-হিরেভেই মনের অভিনিবেশ ছিল, ভভ দিন তাঁ-হারা ঈপরের দীপামান মঙ্গল ভারকে খণ্ড-খণ্ড-কপে দেখিয়াই তুপ্ত কইতেন। তাঁহার। নবীন নেত্রে অগ্নির আভা, ভুর্বোর প্রভা, উধার সৌ-ন্দর্যা, মেঘের কান্তি দেখিয়া হর্ষে উংফ্রেও আ-म्हर्पा भिक्षि इहेर्जन धवः जैनादव स्मार्थ नकल অন্তভ কার্যোর মধ্যে ঈশ্বকেই প্রভাক্ষ করিভেন। অনম্ভ ঈশ্বরকে পরিমিত ভাবে সকলেতেই দে-থিতেন। ভাঁহার। অগ্নির অধিদেবভাকে শ্বভুম্ব দেখিলেন, বামর অধিদেবতাকে প্রতন্ত্র দেখিতেন, মেংখন আপ্রেবভাকে স্বভন্ত দেখিভেন্। যেমন রাজপুরুযদিগের এক এক বিষয়ে অধিকার থাকে, তেমনি জাহার৷ প্রভোক দেবভার এক এক বি-ষয়ে অধিকান্ন মনে করিজেন। যিনি ভূষিত ধ-রাকে জল সিঞ্চন দ্বারা ভূপ্ত করেন, ভাঁচার বায়ু সঞ্চালনের উপর কোন অপিকার নাই। যিনি मनीद्रागत माधा थाकिया मनीद्रशतक दश्चद्रण काद्रमः, ভাঁছার সমুদ্রের উপর কোন কর্ত্ত নাই। যিনি नमूट खत खत्रअ-रकाना हरन वितास करतम, खिनि নদীর লহরীতে ক্রীড়া করেন না। যিনি জ্ঞানের অধিষ্ঠাতী দেবভা, ভিনি ধন পান্যের নহৈন। এই প্রকারে পূর্ব্য কালে ভাঁছার। সেই এক ঈশ্বরকে মানা ভাবে পুজা করিতেন। ভাঁহারা অথও সফিদানন্দ পরব্রহ্মকে পুথক্ পৃথক্ দেবতা-রূপে পরিমিত ভাবে ভার্জন। করিভেন। তাঁহার। ক-বিত্রবে রুশ্যিত ক্দরে অগ্নিবার্, আদিত্যে উপরের জীবন্ত মঞ্চল-মূর্ত্তি আরোপ করিয়া স-म्हाद्य माधुकारम छोज्ञातरमञ्ज श्रेका कविरक्रम । श्र-তের নিমিত্তে, পশুর নিমিত্তে শক্তিদিপের, উপুরে अप लाटकत निर्मिदक जैसदात निकटि जीवांत्रमा ত্রামা ভিল। সংসারের সত্তে সতে উভিরেদিনোর এজা ভড়ি প্রবাহিত হইড, সংসারের অভীত অমৃত পানে ভাঁহাদের আশা তথন্ত উল্ভাইর नहि।

যেনন জানেতে ঈশবের সভা রূপ প্রকাশ

नीय, क्सिन स्पप्त स्टेब्स्क साह जानक केपिक हरा। कारमरण ब्योजिएक निकास करेंगा जागा-इत्पत्र निकटके ने चारक उक्का कतिया व्यक्तान करते। জান ও তার প্রশার প্রশারকে সংখ্যার করে: জ্ঞান অধিক হইলে ভাবকে পরিভুদ্ধ করে, জ্ঞান अधिक इटेटल स्वानंदक नगुष्क्र करहे। शृथियोत चानिम व्यवसाय कार्टमत ठका अधिक स्थित मा, ছাদয়ই বাছবা রূপে কার্য্য করিত। ভারত বর্মের পূর্বতন কৰিরা আবার প্রীক্তি-ছার দিখাই ইশ্ব-রের মঙ্গলা ভাবা দেখিতেন । ভাঁছারদের সর্জ ক্ৰমে সকলি জীবন ভাবে অকাশিত হৈছে। आंगता व्यमम अर्थातक आटक्कम मिथ, छ। हाता **डाहा**क त्म करण पिथ**डम ना**। न्द्रशी त्यम की व छ शुक्रम, निनि भीग्र इक्काटल किन्न मान क-রিয়া জগতের মঙ্গল সাধন করিভেছেন। " আমরা যেনন মেঘকে বাম্প্রাশি বলিয়া ভাহাতে ঈশ্রের कोशन डिलन्ति कति, छै।शता म्परक म श्रकादत দেখিতেন না; ভাঁগারা গন্ধীর বজু বিস্থাতের মধ্যে छिक्ति श्रेगा वाशू-ठालिख स्मरच कीवन कार्याश করিডেন, মেঘ যেন জানিয়া শুনিয়া জল বর্ষণে व्यक्तिमोदक भी जल कतिरखटछ। देविषक अधिका ভত্ত-জ্ঞান অভাবে কেবল ক্দয়ের ভাবে এই প্র-কারে কম্পিত দেবতার পূজা করিতেম। ভাঁহার। সেই সকল দেবভাদিগের ভুটির জনা ঋণেদ रहेट७ त्यांक भारे यज्ञातिम अभी च गांभ बद्धत অনুষ্ঠান এবং গাম বেদের মঙ্গীত দ্বারা ভাঁছারদের পুজা করিভেন। পরে বধন তাঁহার। বাহিরের ৰিবয় হইতে ইভিনয়দিগকে **ক্ষিত্বত করিয়া** স্বীয় आञारक प्रविष्ठ भाहेलन, उपन महे आञात সঙ্গে পর্যাত্মার যোগ বুঝিতে পারিলেন—সেই व्यविभ विमास-विकादन ब्राट्माहना बाह्य हरेन। व्यक्तिक जाजा भेक व्यम विव्रत, उपनियम তেমনি আখ্যাত্মিক বিদ্যাতে পরিপূর্ণ। বাহিরের विषय रवमन थे थे थे थे, अस्टरवत आया रखमनि अर्थ छ । वाहिएतत विषय देविषय मा मा मा किया निविके हिन, यक मिन काँशांता आधारक दम्बदक পান নাই; ডত দিন সুৰ্য্য অগ্নি বায়ু আছুছি मुखे वञ्चाल नेश्रद्वत महन लादित वार्कना कर्त्रित्लम । যথন তাঁহারা আয়াকে অন্তদুষ্ঠি ছারা দেখিতে भाहेरनन, उपन डाहारक अवहे स्मिर्सन। छै।-হারা আমি বলিয়া যাছাকে জানিলেন, ভাছা ক-थनरे हरे नाक; जामि अकरे। तारे जासात जलद जातात गर्थन शहमाचारक कि बिट्रममे, कर्यन मकरनत व्यक्ष्यांनी मेचद्रक अकरे विश्व विश्वन क्यानिटलन। ज्यान कविनिटलक कार्यन हरिए वर्षे गरावाका जिल्लाहिक स्टूबन के नवस्तिकर । शुक्र व व का जावाबिट्डा म श्रवद " (देखा क्योर्स -

পদিরং) সেই এই বিনি গুরুবে, এই বেই বিনি আরিতো, ডিনি এক। এই প্রকারে কালে কালে বেদ হইতে উপনিবদের। পরিনিভ দেবতা হইতে অনম্ভ পুরুবের জান এই ভারত বর্বে প্রচারিত হইন।

े अछि पुत्रों काटन छात्रज कर्य रैकेंगिक धरमीत जारनाहमा जात्र इहेब्रा त्महे खळ व्हेटल उनि-यरपत नमस्य क्षिक् कत्र कतियारक, जारा এই बादका बुका बाहे एउट । के मबन्दावः शुक्रदव वन्दा-• সাবাদিত্তা স 'একঃ।'^৪" সেই এই যিনি পুরুষে এই দেই বিনি আদিতে ভিনি এক ৷ বিনি আমার এই আন্মাতে আছেন, তিনি মেই সূর্ণেতে আ-ছেন, ভিনি এক। স্বর্গোর অধিদেবতা ভিন্ন আর আত্মার অধিদেবতা ভিষ, এমত নহে; কিন্তু বিনি সেই সুর্যোর অন্তর্যামী, ও ধিনি এই আহাার অন্তর্যামী, ভিনি একই। 'একো বশী দর্ম ভতা-ন্তরাস্থা'' ডিনি এক, সকলের বদী এবং সর্বা ভূতের অন্তরাত্মা। ভারত ভ্মির ধর্ম বীজ এই দেশের লোকের যড়েই প্রাক্ত টিভ হইয়াছিল, অন্য দেশের জল সিঞ্ন ছারা হয় নাই। ঈশ্রকে স্বীয় আড়াতে দেখ, ইহা উপনিদদের আদেশ। "এক্ষেৰাপ্ৰভীয়ং" উপনিষ্দেই প্ৰকাশিত হই-য়াছিল; এক্ষের যে অনস্ত মঙ্গল ভাব, সে উপনি-यरमञ्जू जात। ''मजार छानमनखर धेरे मंद्र मर्ख छ। न करें दें के के करन त्य महानाटम নকলের কর্ণে প্রবেশ করিতেছে, ইহা অন্য কোন ক্ষাভিত্র আশ্রেয়ে উৎপন্ন হয় নাই। যে পর্দের্য ভাব ভারত ভ্মিতে নিহিত ছিল, ভাহাই আলো-চনা ভার। প্রাক্টিভ হইয়াছে। যথন ঋষিরা व्याख-काम रुदेश " এक्टमवाश्वीय: " এই वाका উচ্চারণ করিলেন,তথন এই ভারত বর্ষের সোভাগ্য ৰলিতে হইবে। ভাঁহারা পরব্রহ্মকে অখণ্ড-স-किमानण-क्रांभ खाख स्टेश कान-वृक्ष श्रेतन। '' तर श्वादेशामप्रदर्शकानकृषाः कृषाचारनावी-ভরাগাঃ,প্রশাস্তাঃ।⁹⁹়কিন্তু তথনকার ভয়স্কর जळान-जनगड्ड लाक-नगरकत जनका मिथ्या ভাঁহার। দাধারণের মধ্যে দে জ্ঞান প্রচার করিতে उरमाही इहेरलन ना । .. डीहाता अहे मामझमा छ।-প্ৰ করিলেন। যাহার। গুহী থাকিবে ভাষার। বাগ যজ্ঞ ফিয়া-কলালে পরিষিত দেবভার উপাসনা चांत्रा नमग्र बालन क्रिट्टक । क्रिक्टक्टक्टक्टक्ट मानि किकीविटक्षक तमाह। अवर पनि माना-त्त्रदकांचि न कर्मा निलाहक नद्या। (बाक्रमदन्य-मर्विट्डाशनितम्) हेर त्वाटक वांत वस्ताति कर्य-तकत अपूर्वात कहा अंछ तकत जीविड शान्त्व देखा नहित्तक। अ अवाह सक्कार पूरि कोनाएउ राजाटक सक्क र कर्य निकास सम्मानार्थ

জার ক্রকারান্তর নাই। ক্রীহারা ব্রহ্ম-জ্ঞান লাভ ক্রিবেন, ভাঁহারা সংসার পরিভাগে ক্রিয়া অরণ্যে তৈ কাচ্চ্যা অবলুমন পূর্বাক ভাঁহার উপা-সনাতে রভ থাকিবেন। ''ভে হ স্ম পুকেষণাঘাশ্চ কিত্তিবর্ণাঘাল্চ লোকেষণাঘাশ্চ বাুখায ভিন্ফাচ্যাত্ত চরন্তি,।' (রহদারগাকোপনিষদ) ঘাঁহারা ব্রহ্মকে জানিয়াছেন, ভাঁহারা পুত্ত-কামনা, বিভ্-কামনা ও লোক-কামনা হইডে নির্ভ হইয়া ভিন্ফাচ্যা অব-লয়ন করেন।

व्य काटन जेशनियदमत्र ताना जात्र इहेन, ঈশবের্ণজান আবিষ্ঠ চইল, সে কালে অপ लाटक है जाश कानिवात जैशयुक छित्वम । माधा-त्रावित मान विकास कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य কভিপয় উন্নত-ভাৰ-বিশিট লোকেই উপনিষদের বর্মা এহণ করিলেন। খাঁহার। সমুদায় সমাজের **एका-यक्रण, कैश्वांद्रापद्ध मर्गा कार्य नन्द्र द**िल। জন-সমাজের সেই নিবিড় অদ্ধকার ভেদ করিয়া জ্ঞান-সূর্য্য প্রবেশ করিছে পারিল না। वानी मन्नामाताङ উপন্যদের অধিকারী হটলেন। मांशांद्रशिद मध्या समन यात्र यक श्रीठिक हिन, তাহাই থাকিল। সুত্রাৎ উপনিষদের ছারা সাধারণের যে উপকার হওয়া, ভাঁছা হইল না। যাঁহারা উপনিষদের অধিকারী হইলেন, উ:হার। বরং বিবাদ ভঞ্জনের নিমিক সামপ্রস্য স্থাপান ক-রিলেন। ধাহারা একমেবাদিভীয়ং ব্রহ্মকে না জানিবে, তাহার। যাগ বন্ধ করুক। হারা সভা জানিতেছে, ভাহারা যেমন ভাহা কি প্রকারে প্রচার করিবে, ভাবিয়া আকুল হয় : 👸-হারদের সে উৎসাহ ছিল না। তাঁহারা সভা লাভ করিয়া আপনারাই তৃপ্ত হইছেন, আপনারাই ঈশবের পাান ধারণায় নিযুক্ত থাকিতেন। এই क्रमा উপনিষ্টের নাম আর্ণাক। ইহা অর্ণোর ফল, গৃহী বাজির ইহাতে অধিকার নাই। আ-মরা যে সকল মতা দেখিয়া আশ্চর্যা হইভেছি, সেইটি উাহারা অভি যত্নে সাধারণ লোকের নিকট হইতে রক্ষা করিতেন। উপানিষদ কেবল ভারণো ব্দিয়াই পড়িতে হটবে, গৃহত্তের অরে ভাষা প-ড়িতে নাই। ''সরণো তদধীধীত'' (সামনাচার্য্য ধৃত) অরণো ভাষা পড়িবেজ। জনশুনা हि-মালয়ের চ্ড়াভে রত্বর্জি নিহিত থাকিলে, **যে** क्रश रुष, मनामीपिरणत रुटक छेलियरपद स्मा व्यकात कार किल। अक् नमद्य अभिता बाह्य विव-য়ের শোভা সৌন্দর্যো অভিভূত ছিলেন, অগ্নি আদিতাকেই পূজা করিতেন, বাহ্যিক আড়ুত্ব দার। ঈশবের প্রতি ভক্তি প্রদ্ধা থকাশ করিছেন। क्रदम क्रदम छै। हात्रा वाहा विवय हहेटल अलितित्र हरेया अवह कि बाबा बीय आसारक नहा वक्क পরনামানে নেথিকেন; কিছু বঁহারা নেই কভা জানিনেন, ভাষা তাঁহারদেরই মধ্যে আইন র-ফিল। আনরা এখন সেই ব্রেক্স জান ছারা সমু-দায় সংসারকে তেন করিয়া ব্রেক্সের পভাষা উ-ভূতীন করিতে চেটা করিতেছি।

मिर जामिय कान करेंद्र व कान शर्याह देव-पिक धर्मा करम **उन्न**छ इहेगा जाकार्य करने था-কাশিত হইয়াছে। পূর্ব পুরুষদিগের অধিকারে व्यामहा व्यथिकाती, এই व्यामात्रस्य त्मीकां। ভারত কর্ষে পর্যের কাঠা-ভাষ। এখানকার প্র-थम अह रहम ; काहा भरमात कमा, हेश्वरतत कमा, অরুণ-কিরণের ন্যায় উথিত হইয়াছিল; ভাহ। হইতেই ক্রমে ক্রমে জ্ঞান রূপ সূর্বোর প্রভা জা-মারদের স্মাত্মান্তে প্রকাশিত হইতেছে। সেই ध्वा कारणत श्वर्म शुक्रयिमात्रत त्वरमत मधा इहेर्ड যে সকল সভা পাইভেছি, ভাহা অতীব আদ্রণীয়। পূর্ব্ব পুরুবদিগের পরিশ্রম আমরা বার্ধ করিতে চাহি না : ভাঁহারদিংগর পরিস্রামের ফলের আ-মরা অধিকারী, ভাহ। আমরা এহণ করিব। আ। মরা কিছু হতন ধর্ম প্রচার করিতেছি না। চির কাল হইতে যে ধর্ম উলভ হইয়। চলিয়া আ সিতেতে, তাহাই ব্রাহ্ম ধর্ম। ক্ল্যোভিকিন্যা কি আজি প্রকাশিত হইল গুনা চিকিংসা-বিদা ष्यांच्य रहिष्ठ दहेन ? हिंद कानहे या विमान हिन्सी আসিভেছে, ভাহাই উন্নত ভাবে অদ্য দ্পায়্মান হইয়াছে। ভেমনি ভারত ভ্রিভে যে ধর্মা চির কাল চলিয়া আসিতেচে, ভাহাই আজ উন্নত হইয়া ত্রাক্ষপর্ম নামে পরিণত হইয়াছে। আ-মরা কি পূর্মকার আচার্গাদিগকে পরিকার ক-রিরা আপনারদের জয় হোষণা করিতেচি ? আ-মরা আরো নত হইরা বলিতেছি যে বদি উপনি-यरमञ्ज मरथा अमन वर्गीत महावाका मकल ना ला-ইতাম, তাহা হইলে ত্রাক্ষধন্মের এ অকার আ-প্রাত্মিক উন্নত ভাব হইতে পারিতন।। এক मगरः जैसत में । ध्वकां से कित्राह्म, खात धक नगरप करत्रन नाहे, अमन ला नरह। अहे পুপিবীর অবস্থানুসারে ভিনি চির কাল সভা প্র-কাশ করিয়া আসিভেছেন। প্রথবীর উন্নতির महा महा शर्मात् अ छेमछि इहेटछ इ। त्कवन त्वन হইতে যে ব্রাহ্মধর্মের সাহায়া পাইতেছি, এমনো भटर . नक्ल जान हटेटकरे मोद्या शाहेटकि। यक धर्म आहर, गक्न धर्मा इहेटक माहाबा शाहिया कांशहरमत छेशदत आक्रममा ऋशिक इहेबादछ। বেদেতে সরিমিত দেবভার উপাসনা ছিলা উপা-नियम धकरमवाचित्रीग्रस्य उभागमा स्वयम घ-ताना अतरना रहेल, धर्मन (महे क्रिनामना नेबादात প্রসাদে প্রতি গৃহে প্রতিষ্ঠিত করা হইতেছে।

: 1

त्यमन यनि मध्या कार्य हरेटा सपूरक उद्योत করিতে হয়, ব্রমনি বেদ বৈদান মহাভারত শু-ताग रहेरा प्राप्त वास्त्रिया नहेरा हेरेरा। सकता বে গ্রহণ করিজে হইবে ভাষাত সহয়; সকলি বে পরিভাগ করিছে হইবে, ভাষাত নকে। বেল विमास मराजातजानि भूकंडण नाष्ट्र-मकन जात्ना-চনা করিলে দেখিতে পাই, থর্মের সকল ভর্ই ভাহাতে ইতস্তঃ বিকিপ্ত হইয়া বাহ্যাছে। স্থা-বার যেমন ভারত ভ্মিতে সকল প্রকার পুস্তক অপেকা ধর্মের পুস্তক অধিক, তেম্বি প্রতি জনের ভাব আলোচন। করিয়। দেখিলে খর্মের ভাব অধিক দেশিতে পাই। আমরা যদি দেশীয় ধর্মা ভাষ রক্ষা করিয়া দেশের উন্নতি সাধন করি. **डाहा ब्हेटलहे प्रामंत्र मकल हहेरत: यान प्रमा एक्-**শের আমুরিক ভাব এ দেশে আরোপ করিতে ঘাই. তাহ। হইলে দিন দিন আরে। ইচার অধোণভিত্ত হইবে। ভদ্রভাবিনয় প্রীতি দয়া প্রভৃতি হৃদ-বের ভাব যত আমারদের মধ্যে নিহিত আছে, এমত আর কোন দেলেই নাই। আমারদের যে সকল সভাভার ভাব, পৰিত্রভার ভাব, ভাহা রক্ষা করিয়া যদি আপনার্মিগকে উন্নত্ত করিবার অভি-লাব করি, ভাগা হইলেই আমরা ক্রভকার্যা হইব। जना त्मरणेत छात । त्मरणे आद्रांभणे ना कतिया व्याशमात्रसब्दे क्रमरयत्र महज ভाव हेहारक छ-मक कब्र, नर्स ध्यक्टित रम्हान महल ब्हेर्टर। शु-থিনীর মধ্যে বল ভূমির প্রতি নকলেরই অনাদর, हेशदक देकरहे आंगत करत मा। यमि में गाउँ। भर्मा ইছাকে উম্ভ করিতে পারি, যদি ঈশ্বর-প্রামানে ব্রাক্ষাণর্যা এখানে সুপ্রভিত্তিত হয়, ভবে এই বঙ্গ ভূমি আবার দকলেরই আদরণীয় হইবে, ি আছ-क्र व्ह छड विषक्त वक्रामीता। दछामता बह द्धानांगर्गार व्यवस्था कविछ ना, बहे शक्ति द्धाना धर्माक कावरहमा कडिएं ना।

DISCOURSE

AGAINST'

10° ...

PERO-MAKING IN RELIGION.

For more than twenty years we have been made familiar with the phrase Hero-Worship. been applied not only in the regions of politics and literature, but in religion, as the phrase itself strictly claims. We have been told, from very opposite quarters that the excellence, as well as the characteristic that the excellence, as well as the characteristic that the excellence as the characteristic that the exc cristic, of the Christian religion turns on its venorating & personal here in Jesus of Nazareth. Many who egard Jesus as a mere man, yet insist upon inscribing themselves his servants and followers, and on so wedding their honour for him with their adoration to God most high, as systematically to incorporate the two. Nay, some who utterly disown allegiance to Jesus-who think him to have taught many things erroneously, and to have had nothing supernatural in his character, in his powers, in his knowledge, in his virtue, in his birth, or in his com-rounications with God-still maintain that he is fitly called the Regenerator of mankind, and ought to receive-I know not what, acknowledgement-us our Saviour. It appears then not superfluous to hestow a little space on the treatment of this question.

I need hardly observe that personal qualities alone in no case constitute a hero. Action and success must be added; and action cannot succeed until the times are upe. No one knows this better than the True hero. True genius is modest in self-appreciation and is fally aware how many other men could have achieved the same results if the same vare conjuncture of circumstances had presented itself to them Men of genius are fewer than common men, but they are no accident. God has provided for their regular and continuous recurrence; their birth is ordinary and certain in every nation which is counted by millions. The same is true in every form of mental pre-eminence, whether capacity for leadership, or genius for science, or religious and moral susceptibility. Religion, separate from morals, is, of course, only fanaticism. We venerate religion only when built upon pure morals. Moral religion is notoriously a historic growth. and has depended on traditional culture at least as much as what is specially called science; and its progress is not more wayward and arbitrary than that of science, if the whole of human history be surveyed. The present is ever growing out of the past, with a vigour and a certainty which never allow the fortunes of the race to be seriously dependent on any individual. Each of us is, morally as well as physically, a hirth out of antecedents. From childhood we are tutored in right and wrong, not only by professed beachers, but by all elder persons who are around us. Improper decis or words of a child are reproved by a servant, or by an elder brother, or even by a stranger, as well as by a parent or a priest. We imbibe moral sentiment, as parent or a priest. We impuse moral sensument, as it were, at every pore of our moral nature; nor do we often know from whem we learned to abhor this course of ogradues and to love that. Hence no wise man will stain originality for his moral judgments or religious sentiments. A toolish dogma, a fanciful tenet, may easily be original; but a pure sound truth is more likely to have been old. To prove its morally is moralish and certainly could not recomnovelty is impossible, and certainly could not recomto have been the contrary the older we can proce to have been the greater its ostensible authority. For these reasons, in the theory of morals and religion, a claim of originality can seldom or never be sistemed; in this whole field the question is less what a trun has taught, than what he has persuaded others. Hundreds of us may have said, truly, and wisely: "It is a great pity that Mahomedans, Jews, and Christians of every seet will not unlearn their dissensions, and thend into one religious community." The sentiment must once have been even new; yet its atterance could never have earned praise and distinction. But if any one devoted his life to bring about such union, and succeeded in it, we should undoubtedly regard him as a moral hero; though (as just said) no one could succeed, until the fulness of time arrived and the crisis was seized judiciously.

Thus, in discussing the claims put forth for special and indeed exclusive honour to the name of Jesus we have to consider, not so much what he said, or is said to have said, as what he effected, what impression he actually produced by his life and touching; what great, noble, abiding a sults his energies originated and bequeathed. The moment we ask, What are the facts? we seem to be plunged into waves of most uncertain controversy; info discussions of literature unsuitable for short oral treatment. Yet, before the present audience, I may with full propriety claim as admitted that which greatly clears our way I presume you to know familiarly, that the picture of Jesus in the fourth gospel is essentially irreconcilable with that in the three which precede, and is neither trustworthy nor credible. The three first gospels, taken by themselves, do present a character, a moral picture, sufficiently colf-consistent and in telligible to reason about. But our present question (allow me carefully to maist) is nor. Do we see in Josus a remarkable man, a gifted peasant, a dogmetist by whom we may profit, whose noble sentiments we may admire or applaud? but rather, Do we find one who dwarfs all others before and after bind? one to whose high superiority sages and prophets must bow; before whom it is reacoughle and healthful for those who have a hundredfold of his knowledge and broadth of thought to take the place of little children ? Or, at least, Mas Europe and the world (as a fact) learned from him what it was not likely to learn without him? Is that TRUE which is dinned into our ears, that Christendom has no bibed from him a pure spiritual, large-hearted, uni-versal religion, adapted to man as man, cementing mankind as a family and empobling the individual by a new and living Spirit, maknown to the philosophies, unknown to the priesthoods, untaught by the prophets, before him?

Even if we had no mought as to the comparative value of the several grounds, one broad certainty affords solid ground to plant the foot upon. The positive institutions and active spirit of the first Christian church are notorious and indubitable. On learning what the Apostles established in their Master's name within a few weeks of his death, we know with full certainty what they had understood him to teach, what impression he actually produced, what was the real net result of his life and preaching and this, in fact, is our main question. Now, it is true beyond disputes it is conceded by every sect of Christians—that in the first Christian church the Levitical ceremonies were maintained with zealous rigour, and that its only visible relations peculiarity consisted in community of goods. The candidate for baptism professed no other creed but

that Jesus was dessiah; and the obedience of the discrete to the Master was practically manifested in the sudden renunciation of private property. This ordinance was not, in theory, computer to but, while the fervour of faith was new it was enforced by the public opinion of the church so sharply, as to tempt the richer disciples to hypocrise. The story of Ananias and Sapphira is full of instruction. They did not wish to aliquate all their goods though the did not wish to alienate all their goods, though they were willing to be very liberal. In deference to the prevailing sentiment, they sold property and gave largely to the church; yet were guilty of keeping back a part for themselves secretly. For this fraud (according to the legend) they were both struck dead at the voice of Peter! Such a legend could not have arisen, except in a church which regarded absolute Communism as the characteristic Christian virtue. Higher proof is not needed that Jesus established this duty as the touchstone of discipleship; but, in that, the account in the three gospels tallies herewith perfectly. Jesus there mourns over a rich young man, as refusing the law of PER-FECTION because he hesitates to cell all his goods, give them; to the poor, and become a mendicant friar. When his des thes, commenting on the young man's failure to fulfil the test, say: "Lot we have left all and followed three what shall we have therefore?" dosus in reply promises, that, in reward to having sacrificed to him the gains of their industry and abandoning their relatives, they shall sit upon thrones, and judge the twelve tribes of Israel (In passing I remark, that the idea of such a reward for such a deed is shocking to a Paulm Christian)

The Jerusalest church was, alone of all churches, founded by the chosen representatives of Jesus on the doctrine of Jesus himself, while the respecial community, not unlike a 'religious order' of modern Europe; and could not be discriminated, by Jews any more than by Romans, from a Jewish sect. In the next century, those who seem to have been its direct successors were called Ebionite heretics by the Gentile Christians When Paul, who estentiatiously refused to learn anything from the actual heavers of Jerus, had put forth what he calls "his own" gospul namely, "the mystery that Gentiles were to be fellow-heirs" without Levitical purity - he brought on himself animosity and violent opposition from the Christians of forusalem, who were the historical fruit of Jesus' own planting. When Paul was in Jerusalem, one of the leaders called his attention to the fact that while many thousands of Jews were believers, they were " all zealous of the law;" he therefore advised hum to pacify their misgivings and suspicions of him, by performing publicly certain Judaical ceremonies. Paul obeyed him: nevertheless, no such conformities could atone for his offence in teaching that Centiles, white free from the law, were equal to the lows before God; and Paul to his last day uxperienced enmity from the zealous members of that church. His relations to the other Apostles we know by his own account to have been certainly cold: the serms to be personally pointed at in the Epistle of James, as "s vain man," who preaches faith without works; while he himself (as he tells us) publicly attacked Peter at Antioch as a dissembler and weak truckler to Jerusalem bigotry. When, from first to last, the doctrino of the church at Jornsalem was sternly Levitical, it is quite in-credible that Jesus ever taught his disciples the religious mullity of Levitical ceremonies and the equality of Goutiles with Jews before God, But

why need I wow about this when it is distinctly clear on the 1000 of the narrative? In the book of Acts the idea that "bod is no respective of Acts the idea that "bod is no respective persons"—or of national breaks upon the wind of Peter as a new relation, and is said to be about here imparted by a special vision. It is not present that Jesus had taught it; nor does Paul, in any of his controversice against Judaism, dare to appeal to the authority and doctrine of the earthly Jesus as on his side. In fact, in the Sermon on the Mount, as also in a passage of Luke (xvr. 17), Jesus declares that he is not come to destroy the law; and that "Rather shall heaven and earth has away, than shall one tittle of the law, fail." I am, of course, aware that Christian theologians would have us believe that luke is here defective, and that the words in Matthew, "Until all be fulfilled," mesn "Until my death shall fulfil all the types." But this would make Jesus purposely to deceive his disciples by a riddle. This is indeed worse than trifling, and a gratuitous imputation on the teacher's truthfulness. He must have known how he was understood. They supposed him to mean that Levitism was eternal; and he did not correct the inspression. It was then the very impression which he designed to make simply and truthfully; and the disciples, one and all, rightly understood him, and knew it well.

The verse which follows in Matthew clenches the argument, although (I see I must in candour add) I do not believe that Jesus spoke it in maetly this form. Nevertheless, it emphatically shows how the writer interpreted the verse preceding For he makes Jesus to add. "Wherefore, who soever shall break one of these least commandments. and shall teach me so, he shall be called the least in the kingdom of heaven but whosoever shall do and teach them, the same shall be called great in the kingdom of heaven." I find myself unable to doubt that these words were written to mean : "Wherefore, one like Lual, who breaks the Levitical ceremonies, and teaches the Gentiles to break then, is least in my kingdom; but James, and the Apostles in Jerusalem, who do and teach them, are great in my kingdom." The intensity of feeling on this subject was such, that the Jewish Christians easily believed Jesus to have prophetically warned them against Paul's error. Be this as it may, the formula, " break one of these least commandmenta, and teach men to break it." is in contrast 'to "fulfilling the law," and distinctly shows that " fulfilling the law" refers to doing and enforcing even the least commandments

The Jerusalem church was the product (and, as in as we know, the only direct product) of the teachings of Jerus. Of its sentiment we have an interesting exhibition in the epistle of James; in whom we see a high and severe moralist, pure and exacting, full of righteous indignation against the oppression of the poor by the rich, and against all haughtiness of wealth. He does not treat all private property as unchristian that only large property. Evidently no rich man could have seemed venerable to the chief saints in that Church. He assumes the goalt of all rich men, and announces missey about one on thom, as does Jesus in the parable of Lazarus; nevertheless, in him all the hardest parts of Jesus' precepts have been softened by the trial of practical life. In fact, this epistle is much in the tone of the very noblest of the Hebrew prophets. As with them, so in him, the moral element is wholly predominant, and nothing care monial obtrades itself. New what is really re-

marketle, he calls his doctrine the perfect law of liberty;" so little did those exercionies oppress him, to which from childhood he had been accustomed. Let due honour be given to this specimen of the first and only genuine Christianity; yet it is difficult to find anything that morally distinguishes it from the teachings of an Isaiah of a Joel. There is certainly a diversity for the political elements of thought have disappeared, which under the Hebrew monarchy were prominent. The great day of the Lord was no longer expected to glorify the royalty of Jerusalem and its national laws; and in this diversity lay the germ of great changes.

It would be absurd to censure an epistle because it is had a ritual, or to demand in it the fervours of spirituality found in thus or that psalm. Nevertheless, in the present connection, I must claim attention to the fact that neither the three Gospels nor the epistic of James have ever been in high favour with that Colvinistic or Augustinian school which most nearly represents Paul to the moderns. To oring out the argument in hand more clearly, allow me to make a short digression. Morality requires both action and sentiment. No reasonable teacher can undervalue either: yet some moral teachers ress more on action, and are said to preach duty and rock, and even make a duty of sentiment, laying town as a command that we shall love God, love our reighbours, love not ease, love not self. Other eachers endeavour to exerte, foster, and develop just entiment, and trust that it will generate just acion, possibly they even run into the error of shaning definite instruction as to what action is good. limbe and one-sided as we are, two schools naturally row up among teachers, who may be classed as the reachers of duty and the preachers or sentiment: nt perhaps, if the question be distinctly proposed the ablest men of either school, "Do we learn etion from sentiment, or sentiment from action?" hey would alike reply (as in substance does Arisotle) that both processes necessarily co-exist. From allthood apward, right action promotes right feelig, and right feeling generates or heightens right tion. There is no real or just collision of the two hools. Nevertheless, as a fact of human history silv explained, the preaching of duty and of outard action gains everywhere an early and undue seendency, perhaps especially where morals and region are taught by law, which deals in command id threat. The rule man and the child are substed to rule more or less arbitrary; and it is only nen intellect rises in a nation or in an individual at the spiritual side of morals receives its propormate attention. In Greek history, we know the t in the philosophy of Socrates and Plato. nong the Hebrews, a secular increase of spiritual r in the highest teachers will probably be conted by critics of every school to have gone on in the time of the judge Samuel to the writer m whom came the last twenty-soven chapters of iah. The characteristic difference of the Greek i the Hebrew is this: that, however spiritual the eek morality might be, it seldom blended with igion; and (with exceptions perhaps only to be and under Hebrew influences, as at Alexandria) moral affections found no place in religion at all, w it has been recently asserted by a Theist, that s to I neve that we own that regeneration of relip, which makes it begin and grow from within is not (it is said) "a mere teacher of pure its;" but his work has been in the heart. He transformed the Law into the Gospel. He has nged the bondage of the alien for the liberty of The state of the s

the sons of God. He was glorified virtue into holiness, religion into piety, and duty into love." Hence it is inforred that "his confing was to the life of humanity what regeneration is to the life of the individual."

Deep as is my sympathy with the writer from whom I quote, I am constrained to say that every part of the statement appears to me historically incorrect. It does, in the first place, violent injustice to the Hebrews who preceded Jesus. Did he first "glorify virtue into holiness"? Nay, from the very beginning of Hebraism this was dong set least as early as Samuel. Did he first "clarify rolling gion into piety"? Is there then no piety in the 22nd Psalm? in the 63rd? in the 27th? in the 23rd? Nay, I might ask; from what utterance of Jesus can piety be learned by the man who cannot learn it from the Psalms? Holiness and piety appear to me to have been taught since. Surely in the religion of the psalmists riety dominated, as much as in Fencion on in the poet Cowper. But finally I have to ask, "Did Jesus glorify duty into love"? And, in order to reply, I turn to the three gospels, as containing our best account of what he taught.

A phenomenon there very remarkable is the save. rity with which Jesus enforces as duty the most painful renunciations; and the contempt with which he rejects anything short of numediate obedience to his arbitrary domands. I know not whether the narrators have overcoloured him; but they give us, on the one side, examples of prompt obedience to the command, "Follow me." in t. in Andrew and Peter; next, in James and John; who "connediately left the ship and their father, and followed him " This is afterwards praised as highly meritorious On the other side when Jesus says to a man, "Follow me," and receives the reply, "Lord suffer me first to go and burn my father," Jesus reterts. "Let the dead bury their dead, but go thou and preach the kingdom of tind. Another also said, Lord, I will follow thee, but let me first go and but then furewell which are at home in my house. And Jesus said unto hum, No man, having put his hand to the prough and looking lack, is fit for the kingdom of God " The peremptory command to abundon their parents, not bury a dead father and not even say a word of farewell to the living is perhaps a credulous exargeration of the writer; yet it is in close barrious with the whole account, and with the declaration, "He that hateth not his father and mother, and wife and children, cannot be my disciple:" for evidently the following of Jesus, as interpreted and enforced by himself, involved an aban-donment (perhaps to starvation) of these near relatives. It is not my purpose to dwell now on the right or wrong of such precepts but on the imperious tone in which they are unposed from mithout, not the slightest attempt being made to recommend them to the heart or vuderstanding, Again, in perfect harmony with the same is the reply, already adduced, of Jesus to the rich young man, who comes to ask. What shall I do that I may inherit eternal life?" The opportunity was excellent to set forth that no autward actions could

^{*}I quote from the striking treatise of my friend Miss-Cobbe, called "Broken Lights." The whole protest against M. Remm, of which the words above are the summary, should be read to understand their relation. I am authorized to say that she has not even the remotest wish to make honour to Jesus part of religion:

She intended to write as a historian only.

bring eternal life, but that such life was an interior and divine state, to be sought by love and faithful-ness. Instead of spiritual instruction, Jesus gives a crushing arbitrary command: If then wilt be perfect, go, sell that thou hast, and give to the poor and thou shalt have treasure in heaven; and come and follow me." Hoes such a teacher build from within by implanting Love? Does he act upon hove at all, or rather on selfish ambition. He deals in hard duty and fierce threat; commands too high, and motives too low; thoughts of reward; promises of power; salvation by work; investment of money for returns beyond the grave; prudential adoption of virtue, which may soften judgment, we promotion, deliver from prospective prison and hell fire topics which at best are elements of Law, as opposed to Gospel. In the opinion of an increasing fraction of the most enbehtened Christians, the most normus element in the popular creed is the internal Hell: stronghold of this doctrine is in the discourses of Jesus. But what of Fuith? If Fuith be a purely spiritual inovement, which cleaves to Goodness and Truth for its own sake, and without regard to solfish interest, it is hard to say in what part of the three gospels it is found. In the mind of Jesus all actions seem to stand in the closest relation to the thoughts of punishment or reward on a great future day. To . lose one's soul means, to be sentenced when that day shall come, cutting off a sin means, escaping mutilated from a future bell. In a religion practically monided on these discourses, cale lation of what we shall be easter get by present chedience inheres as a primary essence. The only thich which Jesus extols, is, faith to work innucles, and faith that he is Messiah and can work them Inquiry is frowned down and sighed over as unbehef. Power to torgive sin is claimed by him; and, when this is reproved as impieus in a human teacher, the claim is marvellously justified by identifying torgiveness with cure of bodily disease. And to this the grant of initiaculous powers to the Seventy, and a deligation of power to lorgive is made out at which Protestants may well studder In another place (Lake vii 4,5) Jesus declares forgiveness of sm to be earned by personal affection to hin,self; but I am bound to add that, on special* grounds. I do not believe the account.

The narrative in Luke vii 37—50 seems to be an innasurate duplicate of that in Matt. xxvi. 6. Mark xiv. 3, John xii. 3; which nearly agree as to time and place—viz., it was in Berhany, a little before the last Passover. Multhew and Mark say, it was in the house of Smon the leper: Luke says, of Smon the Pharisco. John calls the woman Mary of Bethany, sister of Lazzwas and of Martha: loke says, a woman notorious tor sin. I will here remark, that discussion on the behaviour of Jesus to woman of ill fame, which is called "deligne" beautiful," "characteristic," &c., uppears to me wholly without basis of fact. Those whe allow no bistorical character to the discourses in John will not queue John iv 16—19, nor John viii. 1—11, against this remark: "and nothing remains but Luke vii. 37—50, the fair fame of Mary Magnatene has been the offenne her with the woman.

i will aid that many who must know seem to forget, thet to fired philosopher—neither an Anaxagorss nor Zene, to say nothing of Sourages, Pletto, Aristotle, Chorn, open—would ever have thit works or unjust everity towards a woman's faults. If highish sentiment anothnics appear barshagainst woman who have made a trade of themselves, is, it not because the which are gainful tothe sincer are more integerate, and more contagious than since which impoverish him.

Lake ass fragme parts killed shafter bouches to Josus, and gives us two fire gentline which it is as tomaking that Matthew and Mark treet, while they retail so many that are flancouncing get even take. I seek in vain for anything estealeded to implant in the heart a sense of freedom; to exist willing service; or to chemish spiritual desire, gratismly and tranquil love, careless of other revened think-love vice; or to chemistic spiritual desire, graticulated tranquil love, careless of other reward than love itself. In fact, Luke is sometimes harder than Matthew. Thus, in it 26; Blessed is a resident than Matthew. Thus, in it 26; Blessed is a resident for yours is the kingdom of God. Blessed its as that hunger now, for yo shall be filled. But was unto you that are ready for your consolution. Woe unto you that are fully for you shall hunger. Woe unto you that lough nour for ye shall mourn and weep. Be indiscriminate and thoughtless are divotees, that such doctrine meets with the rame theorytic viorification as the essential. with the came theoretic glorification as the essentially different version of Mattheway Blessed are the poin in spirit. Blessed are ye who hunger and thirst after righteousness." If Matthew be correct and Luke wrong, Luke has foisted upon Jesus curses against rich and mirthful men in contrast to the blessings on poverty and weeping: But if the curses came from the lips of Jesus; Luke gives the opposite clauses justly; in which case Matthew has improved monkish into spiritual sentiment. It would be a hard task to prove laskes version out of harmony with the constant doctrines of To borrow Calvinistic phraseology, and (if my memory serves me) the very words of a Pauline spiritualist." The three gospels may be read in the churches till doomsday, without converting a single soul." The spiritual side of Christianity, inherited from the Hebiew psalmists, not from derus was diffused beyond Judas first by the Jewish synanogues, next by the school of Paul to home the school of Jesus was in fixed opposition, preaching works and the law, while Paul preaches the Spirit and faith "Trough I give all my good to feed the poor," says Paul, "and give my body to be burnt, and have not charity, I am nothing." How vast the contrast hear to the doctrine of Jesus: Every one that bath forsæken houses, or brethren, or sisters, or father, or mother, or wife, or children, or lands for my name's sake, shall receive a hundredfold, and shall inherit eternal life" To make ascetie sacrifice for the honor of Josus was indeed a surpassing merit in his eyes, unless the most important discourses, even in these three gospels extravagantly belie hun. I amounable to discover on what just ground the opinion stands that the character of Jesus is less harsh, and his procepts less sourly anstere than those of John the Baptist Little as we are told of the latter (all of which is honourable), the two must have had close similarities. Let it be remembered that Apollos is spoken of in the Acts of the Apostles, as 'instructed in the way of the Lord, and torvent in spirit, and teaching diligently the things of the Lord," while he "know only the haptime of John." So also Paul falls in with "certain disciples", at Ephesos, who pass as Christians, yet he presently discovers that they also know only Johns haptism. It seems therefore evident, that the conscious sengels. had nothing essential to divide them; and were sharp opposition of the Bauline dectains to that of James and the church of Jesus of James lor is duly estimated, soine may think that correspond to put into the mouth of John the Bajuss will become less untrue if changed as follows: I hidded and Jene baptize you with water make repetitions of the pure ty , but Raal shall baptize you with the Hills.

Spirit and with fire." Be that as it may—give as little weight as you please to Paul's strong points press as heavily as you will on his weak side, out of which came the worst part of Calvinism—the fact remains, that Jesus did not teach Christianity to the Gentiles, or declare them admissible to his church without observing Mosaism; and that to the Jews themselves he preached merely severe precepts, ethical or monkish, with a minimum of what can be called Gospel;—precepts, on which a religious order might be founded, but totally un-

suitable for a world-wide religion.

When people calmly tell me that Jesus first established the brotherhood of man, the equality of races, the nullity of ceremonies; that he overthrew the narrowness of Judaism; that he found a national, but left a universal religion; found a narrow-minded ceremonial, and originated a spiritual principle ;- I can do nothing but reply that every one of these statements is groundless and contrary to fact. What his disciples never understood him to teach, he certainly did not teach effectually. It is childish to reply that the fault lay in the stupidity of the twelve Apostles. What ! could not Jesus speak as plainly as Paul did? Surely, the more stupid the hearer, the more plainly the teacher is bound to speak. If Jesus had so spoken, never could want of spirituality in the hearer have made the words unintelligible. Did only the spiritual understand Paul when he pro-claimed the overthrow of ceremonies? Could the most stupid of mortals have failed to understand Jesus also, if he had avowed that the Levitical oridnances were a nullity and Gentiles the religious equals of Jews? I may seem to insult men's intellect by pressing these questions; but do not they rather insult our intellect? For they would have us believe Jesus to have originated doctrines which are the very opposite of all that his actual hearers and authorized expounders established as his, before there was time for his teaching to fade from their memory and to be modified by novelties supervening.

I have called the primitive church of Jerusalem the only direct product of Jesus. Do I deny that Jesus bore any part at all in setting up the creed known in Europe as Christianism? I wish I could wholly deny it. Gladly would I relieve his memory of all responsibility for dogmas, whence proceed far more darkness and weakness of mind, confusion. bitterness, and untractable enmities, than his moral teaching can ever dispel; dogmas which as effectually break up good men into hostile sects, with fixed walls of partition between them, as ever did the ceremonialism which he is falsely imagined to have destroyed. But, hard as it is to know how much of the gospels is historical, I suppose that no one for three centuries at least has doubted that Josus avowed himself to be MESSIAH, at first privately, at last ostentatiously; and was put to death for the avowal. If so much be historical, we are on firm ground. There is then no room for trans-cendental philosophies and imaginative theories, as to what authority and honour Jesus was claim-The Jews of that day familiarly understood that Mesnah was to be a Prince from Heaven, who should rule and judge on earth. As to the great oddings of his character and power, manifestly store was no dispute. If the popular notions on this subject were wrong, the first business with best much have been to set them right. But he never discourses agained them, nor shows alway has he be thought to claim supernatural digwity and logistips nor could his riding trium phantly

on the ass, amid shouts of " Hosanna to the Sonof David!" have been intended to discourage the belief that he was to exercise temporal as well as spiritual royalty. The learned and the vulgar were in full agreement that Messiah was to be a supreme Prince and Teacher to Israel, Judge and Lord of all nations: but the rulers regarded it asimpious, criminal, and treasonable to aspire to this dignity while unable to exhibit some mira-culous credentials. The fixed belief concerning Messiah was guthered, not only from our canonical prophets but also from the book called. Wisdom of Solomon" (which was in the Greek Bible of Paul and other Hollenist Jews), and still more vividly from the book of Enoch, which Jude and Peter quote reverentially, and Jude ascribes to the prophet Enoch, the seventh from Adam. With the discovery of that book early in this century a new era for the criticism of Christianity ought to have begun; for it is evidently the most direct fountain of the Messianic creed. The book of Mormon does not stand alone: as a manifest fiction which had power to generate a new religion: the book of Enoch is a like marvellous exhibition of human credulity A recent German critic has given the following summary of its principal contents:-"It not only comprizes the scattered allusions of the Old Testament in one grand picture of unspeakable bliss, unalloyed virtue, and unlimited knowledge: it represents the Messiah has both King and Judge of the world, who has the decision over everything on earth and in heaven. He is the Son of Man who possesses righteousness; since the God of all spirits has elected him and since he has conquered all by right eousness in eternity. He is also the Son of God, the Elected one, the Prince of Righteousness. He is gifted with that wisdom which knows all secret things. The Spirit in all its tulness is poured out upon him. His glory lasts to all eternity. He shares the throne of God's majesty: kings and princes will worship him, and will invoke his mercy."* So much from the book of Enoch: which undoubtedly was widely believed among the contemporaries of Je us. How much of the self-glorifying language put into the mouth of Josus was actually intered by him it is impossible to know. There is always room for the opinion that only later credultry useribed this and that to him .- that (for instance) he did not really speak the parable about the sheep and goats, representing himself as the Supreme Judge who awards heaven or hell to every human soul. But it remains, that this parable distinctly shows the nature of the dignity which Josus was supposed to claim in calling himself Son of Man; and, even if we arbitrarily pare away from his dis-courses this and other details in deference to Unitarian surmise, we still cannot get rid of what pervades the whole narrative, rhat Jesus from the beginning adopted a tone of superhuman authority and obtrusion of his own personal greatness, with the title "Son of man," allusive both to Daniel and to the book of Enoch According to Daniel, one like unto a Son of Man will come in the. clouds of heaven to receive eternal dominion over all nations. It is impossible to doubt, that, in. the mind of those to whom Jesus spoke, the character of Messiah implied an overshadowing supremacy, a high leadership over Israel, and hereby

^{*} I quote from a summary of the book of Enoch by the German theologian Kalisch, given in Bishop' Colenso's Appendix to his 4th volume on the Penta-

over the gentile, who were to come and sit at Israel's feat: a religious and, as it word, princely pro-craineace, which only one mortal bould receipe who by it was raised immeasurably above all others. If he did not intend to claim this, it was obvious-ly his first duty to disclaim it, and to warn all against false, dangerous, or foolish conceptions of Messiah; to protest that Messiah was only a teacher, not a prince, not a divine lawgiver, not a supreme judge sitting on the thorne of God and disposing of men's enternal destinies. Nay, why claim the title Messiah at all, if it could only suggest falsehopd? Since he sedulously fostered the belief that he was Messiah, without attempting to define the term. or guide the public mind, he could only be understood, and must have wished to be understood, to present himself as Messiah in the popular, notorious souse. If he was really this, honour him as such. If his claim was delusive, he cannot be held guiltless

Every high post has its own besettings in, which soust be conquered by him who is to earn any admiration A finance minister, who pilfers the treasury, can never be honoured as a hero, whatever the merits of his public measures. A statesman or prince, entrusted with the supreme executive power, rains his claims to veneration if he use that power violently to overthrow the laws. Such as is the crime of a statesman who usurps a despotism, such is the guilt of a religious teacher who usurps lordship over the taught and aggrandizes himself. It is a bottomless gulf of demerit, swallowing up all possible merit, and making silence concerning him our kindest course, if only his panegyrists allow us to be silent. A teacher who exalts himself into our Lord and Saviour and Judge, leaves to his liearers no reasonable choice between two extremes of conduct. Whose is not with him is against him. For we must either submit frankly to his claims, and acknowledge ourselves little children—abhor the id-a of criticizing him or his precepts, and in short become morally annihilated in his presence -or, on the opposite, we cannot help seeing him to

have fallen into scoutthing worse thun ignominy.

I digress to remark, that a teacher supposed by us to be the infallible arbiter of our eternity would, detain our minds for ever in a puerile state if he taught doguatically, not to say imperiously. he aimed to elicit our own powers of judgment, and not to crush us into submissive imbecility, the method which Socrates carried to an extreme appears alone suited to the object; namely, to refrain toom expressing his own decisions, but lay before, the hearers the material of thought half-prepared: and claim of them to ecombine it into some conclusion themselves. In fact, this is fundamentally the it in in which the Supremely Wise, who inhabits one mimite world, trains our minds and souls. His greatures does not oppress our faculties, because it is ever silent from without. Displaying before us abundantly the materials of juligments be blights our powers; never commanding us to become little children, but always inviting our minds to grow up into manhood. But, if there were also an opmaite side of teaching healthful to us will it were well to start from dogmes guaranteed to us from heaven, which, it is implety, to caupes making the matter of first necessity would be that the use tured decrees to which we are to submit should be free from all enigma, all extravagance of hyperbule, all parable, dark allusion, and hard metaphor all apparent self-contrariety; and, moreover that re should have no undertunity what musiche tracher's precise world, do more musicated reports and inconsistent duplicates, but a reliable genuine.

copy of every usternament of which there is to be no criticism. To sum up I will say. Nothing say be less suited to minister the Spirit and will this powers of the human roul, than to be subject the a superhuman dictation of troth, and nothing could be more unlike a draine law of the letter, than the incoherent; hyperbolic, enginetic, in consistent fragment of discourses, given to us un authoritatively as teachings of Johns.

authoritatively as teachings of Jesus. I have sho what conclusions seem inevitable, as soon as cease to believe that Jusus is the colestial Prince Messish of the book of Euoch, popularly expected in his day. To lay stress on his possession of this or that gentle and beautiful virtue is quite away. from the purpose. Let it be allowed that Luke has rightly added this and that soft touch to the pioture in Matthew and Mark. Let it be granted that the nobler as well as the baser side of the Jerusalem. church came direct from Jesus himself, any of the actual virtues of European Christians hage, been kindled from tires which really burnt in Jesus. it appears to me impossible to know. The heart of Paul gushed with the tenderest and warmest love. and he believed Christ to be its source. But the Christ whom he loved to glorify was not the Christ of our books, which did not yet exist; nor a Christ reported to bim by the Apostles, to whom he studiously refused to listen; but the Christ whom he made out in the Mossianio Psalms, in parts of Isaiah, in the apocryphal book called Wisdom, and perhaps also in the book of Enoch. With such sources of meditation and information, open, the personal and bodily existence of Jeans. was thought superfluous by a number of Christians considerable enough to earn denunciations in the opisties of John. A great and good man, Theodore Parker, tells me that it would take a Jesus to invent a Jesus I reply, that, though to invent a Jesus was undoubtedly difficult, to edour a Jesus was very easy. The colouring drawn from a suffering Messiah was superimposed on Jesus by the pespetual meditation of the churches, which, after he had disappeared, sought the Scriptures diligently, NOT to discover whether Jesus was Messiah, which was already an axiom, nor to discover what, and what sort of a person, Messiah was According an the inquirem studied more in one, or in another, books, the conception of Messiah came out different; and here we have an obvious explanation of the varieties of portrait in different gospels. The first disciplent who thus by prophetical* studies supplemented the dry outlines which alone could be communicated be the actual hearers of Jesus, would naturally affine. to him many traits not strictly human, nor laudicable except on the theory of his superhuman character. Nevertheless, in a church exalted by moral enthusia-m and self-sacrified in which the highest spirits were truly devoted to graction holiness, in is to be expected that whatever in most beautiful and tender, pure and good, in the traits of character which is Ismish on classed were believed to belong to Messiah, would eagerly appropriated to Jesus, as they exident were by Paul. Some of these would be likely tinge often-repeated narratives; no, that attitude

To my personal bury ledge, rate is the straight matin reactive of Pauline Christian in the matter day. Thus, each of leave in the following in the phete, in the types of Leaveston in the Supran, in the Protection of the Supran in the Supran i

রাজ-তরজিনী।

২৫৫ সংখ্যা পত্তিকার ১০১ পৃষ্ঠার পর। এই अलादित शांति है हो डिक हरे-য়াছে যে রাজভর্কিনীর রুভান্ত সম্পূর্ণৰূপে থকুত ও অকাম্পনিক, ভাহাতে কাশ্মীরের প্রাচীন অবস্থা ও ইতিরুত্ত যথা বিভ্তি প্রক টিত হইয়াছে, সুত্রাং ভাষা জানিতে পা-**রিলে ভারতব**র্ষের **অ**পরাপর *অ*াদশেরও অবস্থার আভাস গ্রাপ্ত হওয়া যাইতে পারে। কারণ যদিও কাশ্মীর দেশ ভারতবর্ষের এক কোণে অব্প স্থান ব্যাপিয়া আছে, তথাপি তাহার প্রচলিত আচার ব্যবহার ও ধর্ম হিন্দুধর্মানুষায়ী এবং তাহার রাজগণও হিন্দু ছিলেন, অতএব তাহার অবস্থা যে অপরাপর দেশের অবস্থা হইতে ভিন্ন হই-व এমত বেশব एस न।। এই ছেতু ইতি-হানে কাশ্বীরের যে একার অবস্থা আমরা मिशिएक পाई जोग व्यानकाश्यम जात जनसीय हिन्छू ताक्षरकृत जामर्भ स्वन्धः। এक्षर्यः এই सुध्यनानानक स्नीय ट्रिवड इट्ट विन्यू ताका विषया आमता कि कि छेशरमन প্রাপ্ত হইতে পারি, তাহারই আলোচনা করা যাইতেছে।

শথমতঃ ইহা দৃষ্ট হইতেছে যে সমুদায় ভারতবর্ষ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র দেশে বিভক্ত
ছিল। এক এক দেশ এক এক নরপতির শাসনাধীন ছিল এবং এই সকল
নরপতি আপনাদের বল বিক্রম অনুসারে কথন স্থাধীন কথন বা অপর রাজার
অধীন হইয়া থাকিতেন, কিন্তু সকলেই
স্থ ব রাজা মধ্যে একাধিপত্য করিতেন।
দিছিজয়ের ইছা ইহাঁদিগের মধ্যে অভ্যন্ত
অবল ছিল; যাহাতে আপনার নাম ও কীর্ত্তি
ভারতবিখ্যাত হর এবং অপরাপর নরপতি
করপ্রদ হইয়া পদানত থাকে এইরপ আকাজনা তাঁহাদিগের মধ্যে অভিশ্য প্রবল

ছিল। কিন্ত বিজয়ী হইয়া অপর রাজার রাজত্ব অধিকার করিয়া লওয়ার এথা ছিল না, ভূপতিগণ প্রায় আপন আপন রাজ্যের দীমা বিস্তার করিতে ইচ্ছা করিতেন না। व्राका मटका मञ्चलांत्र निव्रम ७ वावन्त्रा श्राहीन শাস্ত ডির প্রচলিত প্রথারই অনুষায়ী ছিল; তাহার পরিবর্জন ছিল নাও তাহা নরপ্তিগণ নিভান্ত চুশ্চরিত্র নাহটলে প্রায়লজ্বন করি-তেন না, কিন্তু ভাহা লজ্মন করিলে থাজা-দিগের তল্পিবারণের কোন প্রতীকার ছিল না। নগর স্থাপন ও দেবমন্দির প্রতিষ্ঠা করা এবং ত্রাহ্মণনিগকে ভূমি দান করা এই দকল রাজাদিগের অতি পিয় কার্যা ছিল এবং শব্রজ্ঞ ও বছদশী প গুতুগণকে প্রতি পালন করাও ভাঁহারা একটি কর্ত্বা বলিয়া জানিতেন। কিন্তু রাজ্যের কোন নুতন ব্যবস্থা করা অথবা ভাহার উন্নতির জন। কোন বিশেষ চিন্তা ও উপায় অবলয়ন কর! তদ্বিষয়ে হিন্তু নরপতিগণ বিশেষ নিপুণ ছिলেন না। अत्नरकरे ट्रांशसूचामङ ছিলেন এবং সকলেই বভসংশ্যক পুৰাঞ্চনা রাখিতেন। প্রজাগন নিডান্ত পীড়িত না হইলে প্রায় স্ব স্থা সাম্য থাকিত. এবং রান্ধার নিষ্ঠুর ও গনায়ে শানন হেতু প্রজ্ব। কর্ক। কান বিদ্যেত্য বটনা হ ওয়। क्षि मृखे इर्ड।

.... Eug-...

टेपया ।

65

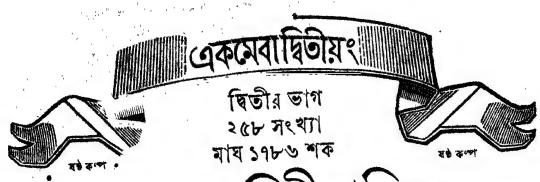
रेमनई इंडेक अथना मनुषाकृत्त है हेंके, त्व नकत नियन अखिकात कतियात खेलांग ख्रथना मिकि नाहे डाहाट खरित ना हहेगा डाहा शात्रभ कतिया भाकाहे ग्रथार्थ रेपगा। शृथिनी एड अमन अकती खान उनाहे, त्रथारन विद्वानिन निर्विद्ध छ नि-वाशिरम खन्दान कता गांग । छूमि युड मानशान हुछ नो रकन, क्थन अमन महन कति वा त्

कान काटल कान विशेष शिष्ठि इहेरव मा। मेश्रत छागादक अगन भंकि निशादहर व छुपि (छचे: कतिरम प्रत्य विशेष प्राचिम कतिरक পার। কিন্তু এমন সকল ঘটনাভ আছে, বে ভুমি স্মুদায় শক্তি একক করিলেও ভাহার প্রতিকার कहिरक शाहिरव ना। शृथिबीरक कक अमाना য়োগ, কড নিদারণ শোক, কত রাক্ষস ভুলা মনুষ্য বাস করিভেচেছ; কথন ভে মাকে কাছার হচ্ছে পড়িতে হইবে, এখন তুনি ডালার কিছুই জানি-८म्छ स् । आज्ञाव देशवीं छ । अस्ति कहिएक वजु-শীল হও,যদি কোন অপ্রিভিষিধেয় বিপদে প্রভিভ হও, ধৈষ্টি ভোমার বর্ষা-সরুপ হইয়া ভোমাকে भोख-हिल द्रांचिटद । गक्ष्य-यद्ग्भ भन्द्रमध् अरे छुत्-বগাহ মঙ্গল আভিপ্রায়ে হোগা-পৌক-বিপাত্তি-ল-মাকীৰ প্ৰাপৰীলে আমার্লিগকে সংস্থাপন করি-য়াছেন যে, আমহা ভাঁহার উপর নিভর ও গৈন-তণ অকাাস করিয়া আয়াকে অটল করিতে পা-বিব: আ্লা অটল লা হইলে অনম্ভ উন্নজির পথে অন্বসর ছইলে পারিবে না। বাঁহরো দাঘ কাল পিডা মাজ। প্রভৃতি অন্যের উপর নিভর করিয়। নিশিচ্ছ হ'ইয়া লালিভ পালিভ হ্টয়াছেন, ভাঁছাদিগের স্বাধীনভাব ও কর্মানকভা প্রায়ই थाटक न्।; खिंछ मामाना कार्यानमक छै छिल-পিত ভইলেই কীহারা হত বৃদ্ধি হতাশ ওনি ভাস্ত বিষয় হইয়। উঠেন। আনে ভাদুশ বিপাদ উপস্থিত হইলে জায়ে ও বিযাদে চির কালের জন্য অকর্মণা অগরা মৃত্যু-গ্রাদে পভিত হটয়া वारकम्। काम (जोक जार्थ-स्थादक द। शुक्क म्योदक डिमाक अहेश जिलादान । किन्ह याँशाहा अण्य নয়দ অধনি নালা অবস্থায় পভিত ইইয়া স্বুদ্ধি-প্রভাবে বিপদ হইন্ডে উর্ভার্ণ হইয়াছেন, অথবা টেখাল প্রথক ভংগমুদায় সম্ভ করিয়াছেন: ভাঁহারা मर्स्वादशका कार्याकम ७ ठकुत रहेमा भनाशास्त मर्गात निकार अधानकीयन भाकि काश कतिया-८६न । अध्यक विष्कुण लिखा माखा महासमिश्रक कुठ्डत प्राधीनद्राष्ट्र ଓ कार्यक्रम कतिवात निमिष्ठ सामानिध व्यवद्यात्र मिटकश कविया थाटकम व्यवद আপনারা অলক্ষা-রূপে ভাঁছাদের ভদ্মারধান ক-त्वम । वथम काम छक्रफद्र घरेना छश्राष्ट्रिक रह,

তথন ভাহারদিগকে উদ্ধার করিবার নিমিত আপা नाता उँशारमञ्ज महकाती हत। अहे प्रकीश्व एमः থিয়া পর্ম-পিতা প্রমেশ্বের মঞ্চল অভিপ্রায় অবণারণ কর। সেই পর্ম পিতা তাঁহার প্রত্যেক স্থানকে অটল স্থাধীনভায় উপীপিত ও চির-শান্তিতে নিষয় করিবার নিমিত নানা-ঘটনা-गः कुल এই शृधिबीटा मः द्वालक कतिशाट्य जंदर जनका-क्राम उदावधान कतिराज्यन । आंगना প্রতি-বিধেয়, অঞ্জি-বিধেয় ও অসহ এই ত্রিবিধ বিপাদে পরিব্রক ইইয়া আছি। কথন কোন বিপদের সহিত সাক্ষাৎ করিতে হইবে, আমরা জা-हांत्र किছू है जानि ना। किन्नु अथम ध्वकांत्र विश्रम উপস্থিত হইলে আমাদিগকে সমুৎ ভাহার প্রতি-বিধান করিতে হইলে: দ্বিভীয় বিপদে ধৈৰ্যোৱ প্রয়োজন ; জভীয় বিপদ আদিলে ঈশ্বর শ্বয়ং আ-মানের আত্মাকে গ্রহণ করিয়া উদ্ধার করেন।

গৈথা-গুণে আমন্ত্র কেবল বিপদ্ সহ্ করিছে লাবি, এমন নুহে; তদ্বারা উপস্থিত বিপদ্ হইছে পরিরাণ পাইবার নিমিত মুক্তন ভূতুন উপায়ও উদ্যাবন করিছে সমর্থ হই। নিপদ্ পাড়লে যদি আমরা এক নারে অধৈর্য হই, তাহা হইলে বিপদ্ প্রতীকারের প্রকৃত উপায় সঙ্গ্রেও ভাষা উদ্যাবন ও অবলদন করিছে আমারদের সংম্পা হয় না। যে সকল বিপদ্ বাস্তবিক প্রতি-বিপেয়, গৈথোর অভাবে ভাষাও অপ্রতি বিপেয় হইয়। উঠে; তথ্ন অনুষ্ঠিক জ্ঞানিত ক্রেম্বিভাগ করিছে হয়।

বিপলের অপ্রতিবিধেয়তা ততই ক্লাম হইছে পাকে। যে সকল কানা প্রথমে নিভান্ত চুক্ষর বলিয়া বোধ হয়, গীরতা সহকারে ভাষার অনুষ্ঠান করিতে করিছে ক্রমে ভাষাও সহক ইইয়া পছে। এবং অধীর লোকের নিকট বৈ সকল বিপদ্ নিভান্ত অপ্রতিবিধেয় বলিয়া প্রতীতি হয়, গৈর্নালী পুরুষদিশের নিকটে ভাষার প্রভীতি হয়, গৈর্নালী পুরুষদিশের নিকটে ভাষার প্রভাগর হয় ত অন্যাদ-লাখ্য হইয়া উঠে। অভ্যাব ব্যাহাতে ধৈর্য্য-গুণ ক্রমে ক্রমে ব্যাহাতে ধর্য্য-গুণ ক্রমে ক্রমে ব্যাহাত ব্যাহার ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে ব্যাহার ব্যাহার ব্যাহার ক্রমে অভ্যাব করা সকলের ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে অভ্যাব করা সকলের ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে অভ্যাব করা সকলের ক্রমে ক্রমে ক্রমে আবশ্যক।



তঞ্জাধিনীপ্রতিকা

রশ্বরাএকমিদমপ্রশাসীয়ান্যৎ কিঞ্চনাদীন্তদিদং সর্ব্যমৃক্তৎ। তদেব নিত্যং জ্ঞানমনন্তং শিবং স্তন্ধ্রিরবয়বদেক মেণাধিতীয়ং সর্ব্বব্যাপি সর্কানিয়ন্ত্ সর্বাশ্রমসর্কবিৎসর্কানিকমন্ধ্রমপূর্ণমপ্রতিমমিতি। একস্য উল্পোচনময় পার্ তিকটমহিত্বক শুক্তন্তি। তিম্মন্ প্রীতিত্তস্য প্রিয়কার্যসোধনক তদুপাসনমেব।

বিজ্ঞাপন

কলিকাত। বান্সসমাজ।

আগানা ১১ নাঘ সোন বার সন্ধ্যা ৭ ঘন্টার সনরে পঞ্চতিংশ সায়ৎসরিক ব্রাহ্মসনাজ হইবেক। ব্রাহ্মগণ প্রধান আচার্য্য শ্রীযুক্ত দেবেজনাথ ঠাকুর মহাশয়ের ভবনে আগমন করিয়া ব্রহ্মোপা-সনা করিবেন।

ৰী দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর সম্পাদক।

কলিকাত। ব্ৰাক্ষসমাজ।
আচাৰ্য্যের উপদেশ।
৭ ফান্তন ১৭৮৪ শক।
কুমবার।

ব্রাজ্বর্দ্ধ গ্রহণ করিবার সময় আমরা প্রতিজ্ঞা করিয়াছি বে, "রোগ বা বিপদ দারা সক্ষম না হইলে শ্রুতি দিবস প্রক্রা ও

প্রীতি পূর্বক পরব্রংক্ষ আত্মা সমাধান ক-রিব।'' প্রত্যহ নিজ্জলি ঈশ্বরের উপাদনা করা মনুষ্য মাত্রেরই কর্ত্রা। উপাদনাতেই आमारनत मञ्जू, आमारनत मनुवाद : इंश হইতেই আমাদের জ্ঞান, পবিত্রতা, বল ও উৎসাহ। ইহাই ধর্মের জীবন; আত্মাতে যাহ। কিছু ধর্মের ভাব আছে, তাহা কেবল উপাদনাকে অবলম্ন করিয়া জীবিত থাকে। উপাদনা স্বর্গের দার-স্বরূপ; ব্রহ্মকে লাভ করিবার, ত্রন্ধনিকেতনে প্রবেশ করিবার, এক মাত্র উপাধ। আমর। চলু কণানি ই-ক্রিবারা যে কাপ বাফ্ বিষয়ের সহিত आमात्रदम्द मयम निवन्न कति, छेशामना खादा দেই ৰূপ অতীন্ত্ৰিয় মহান্পণাৰ্থের সহিত নিত্য কালের যোগ স্থাপন করি। আত্মার উন্নতির প্রধান কারণ উপাসনা; ইহা হ-ইতে বঞ্চিত হটলে কোন প্রকারেই আমরা সংসারের পাপ-তাপ হইতে মৃক্ত হইয়া ঈশ্বরের পথে চলিতে পারি না। প্রতিদিন নির্মিত-বপে পরব্রমে আত্ম সমাধান করিয়া তাঁহার উপাসনা করা ক-র্ত্তবা। যদিও ইং। আমাদের প্রাত্তিক कार्या, ज्थांति हें हा कठिन वांतित मत्नह

নাই। উপাসনার স্থান জিহ্বাতে নয় চ-कूटल सय, इंहा माजीजिक कार्या असत। तकवन কভকগুলি শব্দ উচ্চারণ করিলে উপাসনা হয় না; সকলে মিলিত হইয়া সমস্বরে মধুর দামগানেও দামাজিক উপাদনা হয় না। এ সকল অবলয়ন ইহার উপায় মাত্র। ध्वकु उपामन। प्रशुद्ध, बाबाद महिल পরমান্তার দক্ষিলনের নাম উপাসনা। যে-थानि मनुरवात हक्कु कर्न व्यवन कर्तरङ পাবে না, দেখানেই উপাদনা; ইহার ভাব মনুষ্য দেখিতে পার না, ইাগর স্তুতি প্রা-র্থনা মনুষা শুনিতে পার না , কেবল সেই गर्कागांको मर्कान्डयांची शुक्रवरे रेश कानिएड পারেন, যিনি ইহার এক মাত্র ফল-দাতা, যাঁহার চক্ষু সর্বতে। অভেএব হাহাতে আ मार्फ्त উপामना (मो। थक छ विकल ना कहेग्रा चार्यातक ও कन-मातक म्य. छ। मात क्रमा চেফা কর' কর্তবা, নতুবা কেবল কভক-**अनि निर्मिष्ठे भार्क डेक्टाइन क**(तटन कर्ना ভাবে ঈশ্বরের পূজা কব। হয। সাবধান। হে ব্রাহ্মগণ! যেন তোমাদের প্রাভাঙিক छेशांगना आंध-शृना क्राया-शृना काया इहेगां ना श्रद्ध। याश्रद्ध चात्राद्ध चेत्रवरक দেবিয়া হৃদয়ের সহিত ভাঁচার পূজা করিছে পার, তাহাই ভোমাদের নিতা কর্ম। थः ক্লুত উপাদনা হইতেছে কি না, ফল দাবা ভাষার পরিচয় পাওয়া যায়। প্রত্যন্ত্রিয়-মিত ৰূপে ত্ৰকোপাসনাতে নিযুক্ত হউ-তেছি, অথচ প.প হইতে নিষ্তি পাই-তেছি না, পুর্বের নায় রাশি রাশি পাপ অশ্বরে দঞ্চিত রহিয়াছে, আত্ম-প্রদাদ অনু-ভব করিতে পারিতেছি না, নিরুষ্ট প্রবৃত্তি সকল অপরাজিত বিক্রমে হৃদয়কে শাসন করিতেছে এবং সমুদা**র জীবনকে মোহ**-সৃষ্টলে বন্ধ করিয়া রাখিয়াছে;, **ইহাকে** क्यंन अकृष्ठ छेशामना दला यात्र नहां एक

উপাসনাতে আত্মার উন্নতি হর না, তাহা
প্রকৃত উপাসনা নয়। যে সাধু ঈশরের
যথার্থ উপাসক হন, তাঁহার অন্তরে বাহিরে,
তাঁহার সমুদায় জীবনে উন্নতি অকাশ পাইবে। মঙ্গল-স্বরূপ পরমেশ্বর আমাদিগকে
তাঁহার উপাসক করিয়া পরম সৌভাগাবান
করিয়াছেন; সাবধান। যেনুকেহ এই মহৎ
অধিকার লাভ করিয়া ইহাকে বিক্রত না
করেন। প্রভাহ নির্দ্দিত প্রকৃতি অনুসারে
উপাসনা করিলে ব্রাহ্মবর্দের প্রতিজ্ঞা পালন হয় না; প্রকৃত আশুরিক উপাসনাই
নিতায় আবশ্যক।

উপাদনা করিবার পূর্ফো অননামনা হট্যা সত্য-স্বৰূপ প্রনেশ্বরে আয়া সমাধান করিবেক। সংমারের পাপ ভাপ প্রশ্লাভন হইতে দূরে গিয়া পরিশুদ্ধ মহাম প্রমেশ্ব-রের সলিধানে উপস্থিত হইযাছি, ইং৷ স্মরণ রাখিবে। যেখানে বাছ আকর্ষণে মন আ-কুষ্ট হয়, দেখানে অপবিত্র কামনা মনে **छेन्य इय. मिथारन छे**लामना कहा विद्यस নর; যেহেতু বিক্ষিপ্ত চিত্ত হইলে তাঁহার मर्गन পां ७३१ या स्त्रा। मर्का अथरम छीहातक প্রত্যক্ষ দেখা যায় এ প্রকার চেটা করিবে, প্রীতি নয়নে তাঁহার প্রীতি ভাব দর্শন ক-রিবে, বিশুদ্ধ হৃদয়ে তাঁহার পবিত নিদ্ধলক স্বৰপের প্রতি নিরীক্ষণ কারবে। ভাঁহাকে না দেখিলে তাঁহার পূজাতে প্রবৃত্ত হওয়া সম্ভাবিত নহে। কৃতজ্ঞতা-উপদার কাহার নিকটে অর্পন করিষে? আত্মার সভাব মে'চন করিবার জন্য কাহার নিকটে প্রার্থনা कतिदव ? योंशांत शूका कतिद्व मानन क-রিয়াছ, ভাঁহার দর্শন না পাইলে কেবল শূন্য হৃদয় হইতে কভকগুলি বাকা নি:হত इटेश आकारन निषीत इहेटवा अफबत ব্রফোপাসনার পারতে বস্বু বর্ণন আক **州** 本 1'

শান্ত নমাহিত ইইয়া একাঞ চিত্তে পর-जारकात चर्नान हिन्दा कतिरंतक, यिनि गर्क-वाशी मंदी हरीमी, विनि " विश्व कर्म যিনি প্রকাশবান, যিনি ভোত্তের ভোত্ত, क्रक्त क्रक्तू, मरनत मन, প्राराज श्रीप इंहेता আমাদের মধ্যে গুড়ুবোড রহিয়াছেন, যিনি मकुल नक्तित भून निक्ति, याँशांक व्यवसन कतियां आमता कीविक तकिशाहि, विनि সুাধকের সলিধানে স্বরং উপস্থিত হইরা হৃদয়ের পূজা-উপহার গ্রহণ করেন; তিনি আমাদের সন্মুখে, তিনি আমাদের অন্তরে রিরাজ করিতেছেন। ব্রহ্মনিষ্ঠ ইইয়া এই প্রকারে তাঁহার খ্যান করিতে করিতে তাঁহার व्याविकांव रहेल, ऋग्याकार्त्य (गरे मका-म्प्रायात छेनत इहेल, এবং বিমল বিশুদ্ধ জ্যোতিঃ বিকীর্ণ হইল। সংসারের অহ্মকার जित्ताहिक इहेन, व्यमाधु कामना, विषय यञ्जना, লোক ভয়, তুর্বলন্তা, নিরুষ্ট ভাব-দকল অন্তরিত হইল; দেই নিস্কলক পবিত্র পুরু-বের দর্শন মাত্র শ্রন্ধা ও ভক্তি, জাহার মঙ্গল-মুর্ত্তি দেখিবা মাত্র প্রীতেও ক্লত-জ্ঞতা **আ**পনা হইতেই উচ্চৃদিত হ ইল; স্থাতি, ধন্যবাদ, প্রার্থনা, স্রোতের ন্যায় षथि इंड (तर्भ धराहिक इंड्रेंट माभिने, ঈশ্বরের মহিমা-কামে আত্মা পূর্ণ ইইল এবং भागतम् त्र खेदम खेदमातिक इरेटक ला-भिन। यथन এই बटण उन्न छ।न, उन्न-ধানি, ত্রহ্ম দর্শন সহকারে ত্রহক্ষাপাসনা হয়, ডখনই আমরা এই পৃথিবীতে ৰাকিয়াও বর্গের পবিত্রতা ও আনন্দ অমুভব করি। ८४ जाकाण । ८७ विश्व विश्वविद्यानिक অবলয়ন কর, অবশ্যই ইছার কল এভিনিন नाष्ठ कतिरव। विकिश-विरुष्ठ, अभविक मतम टीराज निवर्गत छेननीय रहेल मा क्नमानंदन जनदक्षत्रदक पानीत क्षतिहा केशिक पूजारक बाह्य स्टेटना बर्क अक्टिक

कैश्वाद छेशामनः कतित्व, धरे ध्वकारंत छै। शंद्र छेशामना कदित्व।

হে পরমান্ত্রন্থ আমরা ভোমারই উপাই
সক্, যাহাতে প্রতি দিবদ নিজেনে প্রকার
সহিত ভোমার পূজা করিছে পারি, যাহাতে
ভোমার পবিত্র সহবাদে থাকিরা দিন দিন
উমত হইতে পারি, এ প্রকার ক্রপা বিতর্
কর। সংগার কোলাইলে যেন ভোনাকে
বিশ্ত না হই; হোমার প্রসাদে প্রতি দিন
ভোমার উপাদন। করিবার মহৎ অধিকার
প্রাপ্ত হইয়াছি, ইহাতে যেন আমরা কথন
প্রহেলা না করি। পর্মেশ। কি প্রকারে
ভোমার উপাদনা করিব, তুমি ভাহা আমার
দিগকে শিক্ষা দেও; আমাদের হস্ত ধারণ
করিয়া ভোমার প্রতি আমারদিগকে উমত
কর।

ওঁ একমেবান্ধিতীয়ং

জীবনের প্রকৃত ব্যবহার।

ह्म मानवभव! विभी छ छ। दव रम हे विश्व-নিরস্তার পথসকল অনুসন্ধান কর, এবং কউস্টে খদি এক বার ভাঁচার নিদিট পথ অবেষণ করিয়া প্রাপ্ত কও, তাহা হইলে আর সে পথের বাহিরে গমন করিও না। ষধন ভোমরা এক বার তাঁহার পথ জানিলে, আণ পর্যান্ত পণ করিয়াও সেই পথের প-থিক ছইবে। পৃথিবীর প্রতে ক বস্তু জাঁ-হার জ্ঞাৰ ও মহিমার পরিচয় দিভেচ্ছে এবং চতুর্দিকেই তাঁহার অভিপ্রেড কার্যা-मकन क्लानियात खेशीत तकियाटकः, टिकी क्त्र, कश्रे हे विकल इड्रेटर मा। यशास्त्र চন্দ্র স্বর্থা বায়ু প্রভৃতির গমনাগমন আছে बदः रयशाम मर्वावयविभिक्ते वृक्ति मंख्य मन्नास कीत व्याष्ट, महे श्रीतिह हैन রের আজা এবং নিয়ম জাত্মলারূপে এ-

কাশমান রাহ্য়াছে। তিনি শক্তিতে অ-নন্ত, জ্ঞানেতে অনন্ত:—তিনি অনন্ত শক্তি গ্রন্থ তার অবস্থ ব্রহ্মাণ্ড রচনা করিয়া পৃথিবীর সমস্ত বস্তুকে यथा ছানে রক্ষা করি-তেছেন এবং অসীম আকাশ-দিংহাসন इरेटड अनम् कान अजारव अन्ति की छोत्त মৃত্যু প্র্যান্ত ভাঁছার গোচরে বহিয়াছে। হে মানবগণ! ভোমতা ই হারই রাজ্যে বাস করিতেছ, ইঁহা কর্ত্তক স্থাট হইয়াছ; দাবধান যেন ভাঁহার আজ্ঞাধীন ভূত্য হইয়া তাঁচারই আজা লঞ্সন না করিতে হয়। তাঁহার বিশ্ব-নিঃস্ত গভীর নাদ ভাবণ कत, अवन करिया जनग्रवाशी कार्या कत. মঙ্গলই দেখিতে পাইবে। আন্থানূতন মুতন বেশ ধারণ করিবে; হে মামবগণ! বিবেচনা করিষা দেখ তোমার দিগকে কি নিমিত্ত ঈশ্বর প্রেরণ করিয়াছেন। তোম'-দিগের অভাব, মংস্থান, উদ্দেশ্য ক্ষতা ও অপরাপর সমন্ত্র পর্যাবেশ্চনা করিয়া দেখ। এখনি ক্লানিতে পারিবে ভোমাদি-। ণের কর্ত্তব্য কি. এবং ইমাও জ্ঞানিতে পারিবে ভোমাদিগকে কোন পথ দেয়। য।ইতে হইবে।

যে প্রান্ত ভোদার ক্ষমতা, এবং যে
কার্য্য প্রবৃত্ত হইতে ঘাইতেছ তাহাতে
ভোদার কি ৰূপ অভিকৃতি, ইহা বিলক্ষণ
কাপে প্রীক্ষা করিয়ানা দেগ,দে প্রান্ত দেই
কান্যো হস্তক্ষেপ করিবে না; তাহা হইলে
ভোমার নিকট হইতে লজ্জা, অপমান ও
অনুহাপ দূরে অবস্থিতি করিবে। অবি-বেচক ব্যক্তিরাই ব্যর্থ বাক্য সকল উচ্চারণ
দারা আপনাদিগের নির্বোধতা প্রকাশ
করে। যিনি কল চিন্তা না করিয়া কোন
কার্য্য প্রতুত্ত হন, তিনি প্রাচীরের অপর
পালে কি আছে না দেখিয়াই উল্লেজন করিতে গিয়া কুপে প্রিত হন। অভএব বিবে- চনাকে সর্বাদা অন্তরে জাগৰক রাখ, তিনি যাহা উপদেশ দেন তাহা করিতে সাধ্যামু-সারে চেন্টা কর, তাহা হইলে তিনি তো-মাদিগকে সভ্য এবং মুক্তির পথে লইয়া যাইবেন।

হে মনুষা! তুমি কে, যে আপনার ভানের এবং বিদ্যা বুদ্ধির গর্বাক করিতেছ ? যদি জ্ঞানী হইতে চাও; তাহা হইলে শ্ৰথমে জান যে তুমি সম্পূর্ণ ৰূপে অজ্ঞ; আর যদিং ভোমাকে লোকে বাতুল বলিয়া না জানে তাহা হইলে তুমি আপনাকে জ্ঞানী জানিয়া জনসমাজে বাতুলভা প্রকাশ করিও নাঃ रयमन अভाव-स्नादत मामाना প्रिष्ट्य-ও শোভার কারণ হয়, তেমনি জ্ঞান নম্তা মহকারে বিশুণ শোভা পায় ৷ छानी वाङ्कित मूथ इरेटड (र मकल দতা নিংস্ত হয় তাহার জ্যোতি অধিক উজ্জুল হহৰা প্রকাশ পায়। আর যদিও ঠা-হার নিকট কোন কোন সময়ে ভ্রম আসিয়া উপস্থিত হয়,তাহা হ্ইলে ভাঁহার নম্ প্রকৃতি তাঁহার ভ্রমকে আচ্ছাদন করিয়া কেলে। তিনি কখন আপনার বৃদ্ধিনে অভ্রান্ত ভা-বিয়া কাষ্য কবেন না। যদিও কোন সময়ে এমত কোন বিষয় উপাস্থত হয়, যাহা তিনি বুঝিয়া উঠিতে পারেন না, তখন তিনি পাৰ্শস্থিত বন্ধুৰ সাংখ্যা প্ৰাৰ্থনায় কথনই লজ্জ। বোধ বরেন না, স্বতরাং তিনি কোন कारल हे शक्तिक मिरशत नाति मूर्यका थ-কাশ করেন না। তিনি যদি শুনিতে পান যে তাঁখার কেহ প্রশংসা করিতেছে; তিনি সে দিকে কর্ণাতও করেন না; এবং যদিও তাঁহার কর্ণকুহরে বৈবাৎ ভাঁহার প্রশংসা প্রবিষ্ট হয়, তিনি তাহা বিশ্বাস করেন না; বরং তিনি আপনার দোষনমূহের প্রতি वका तार्थन। যেমন অবশুঠন কলের অধিক দৌলার্য্য সম্পাদন করে, বাই সাপ

ভীহার গুণসভূত নমুডা ৰণ অবভাচনে আ-চ্ছাদিত থাকাতে আরো শোভা পাইয়া থাকে। কিন্তু এক্ষণে এক বার গর্বিতের অতি দৃষ্টিপাত কর, যিনি স্থাদর পরিচ্ছদ ধারণ করিয়া প্রকাশ্য পথে প্রমন করিতে-ह्न, अवर अहे मानटम एजू फिटक पृष्टि नि-কেপ করিতেছেন, যে তাছাকে যেন সকলে দেখিতে পায়। তিনি মস্তক উন্নত করিয়া এৰপ ভাবে চলিতেচেন বোধ হয় যেন তিনি তাঁহার নিম-পদ্বীম্ব লোকদিগকে প্রাহাই কবিতেছেন না; কিন্তু ভিনি যেমন ভাঁছার নিম্পদবীস্থ লোকদিগের প্রতি অবজ্ঞা প্রকাশ করেন, আবার তাঁহার উচ্চ পদস্ব লোকেরা তাঁহাকেও সেইৰূপ অবজ্ঞা করিতে পারেন তৎকালে ইচা অমুধারন করা তাঁহার কর্ত্ব্য। তিনি কাছারো বিচা-রকে বিচার জ্ঞান করেন না; আপনি যাহা সিদ্ধান্ত করেন ভাষাই অভান্ত, স্থভরাং অবশেষে তাঁহার সকল কার্যাই বিশৃত্বল ছইয়া উঠে। তিনি আপনার মনোমধ্যে इशा शर्रक कोड इहेट्ड शास्त्रन, এবং সর্বাদা আপনার বিষয় লহয়। আন্দোলন করিয়াই প্রীভি লাভ করেন। তিনি যেমন আপনাব প্রশংসা আপনি গ্রাস করিতে চান ভেমনি আবার চাটুকারেরা ভাঁহাকে সম্পূর্ণ প্রাস করিয়া বদিয়া থাকে।

ইহা স্পাটই প্রতীত হইতেছে যে এক বার সময় গত হইলে আর প্রত্যাগত হইবে না, এবং যে সময় আসিতেছে ভাহার উপর সম্পূর্ণ কলে নির্ভর করা যা-ইতে পারে না, 'কোহি আমাতি ক্যাদ্য মূর্টুকালো ভবিষ্যতি। ' তক্তন্য সাব্ধানে ভবিষ্যুক কালের প্রতি আশা না রাখিরা এবং গত কালের প্রমা শোচনা না ক্রিয়া অক্যান সমস্ত্র উত্তম ব্যবহার ক্রিয়ে ব্যক্ত্রনা মুহুর্ভ ভোষানিক্ষেক ক্রিয়ে ব্যক্তনা

শ্ববিষাতের গর্ডে স্থিতি করিতেছে. কি আকৃতিতে তোমার সম্মুথে আসিয়া উপ-স্থিত হইবে, তালার তুমি কিছুই জান মা। যাছা কিছু করিবে বলিয়া তির করিয়া রাখি-য়াছ, শীঘ্র তাহা নিষ্পন্ন করিয়া ফেল, যদি প্রাতঃকাল মধ্যে কার্য্য সমাধা করিতে পার তাহা হইলে আর সন্ধার প্রতীকা করিও না। আলস্য দরিদ্রতা ও ক্লেশের শিডা স্থাপ ; এবং পরিশ্রম সুখ সচ্ছন্তা ও ধর্মের আকব ভূমি। পরিশ্রমীদিরের মি-কট হইতে অভার দরিদ্রতা দূরে পলায়ন কবিয়াছে, এবং স্থা দৌভাগ্য ইহাদিগের मरकत नको इहेग्राट्ट। धिनि बालगारक खरमञ निकरि जामिटड ना एनन এवः ইহাকে শত্ৰ বলিয়া জানেন, তিনিই ধর্ম, অম্বর্থা, বীর্থা, মান, সন্তুম, মন প্রকৃতি লাভ করেন। তাঁহাকেই বহুজনাকীর রাজ-म जात म द्या प श्रामान इटेट एक या यात्र। তিনি যেমন প্রত্যুবে গাত্যোথান করেন, আবার তেমনি বিলয়ে বিশ্রাম-শ্যায় গমন কবেন। তিনি নিয়মিত শবীর সঞ্চালন षाता यमम महीतरक मछहन्म त्रकः। करतन, তেমনি আবার নিয়মিত বপে মনোর্ত্তি সমুদ্র চালনা ছ(রা মনকে স্তুত্র রাখেন। কিন্তু, আবার দেখ, ধাহারা অলম তাহা-দিপের জীবন কেবল ভার স্বৰূপ। তাহার অতি মুহূর্ত কেপণ যন্ত্রণ স্বরণ। তিনি কত প্রকার মনেতে উপস্থিত করেন, কিন্তু কোন বিষয়েই কুভকার্যা হইতে পারেন না। তাঁহার সমস্ত জীবন কেবল ছায়ার ন্যায় চলিয়া যায়: পৃথিবীতে এমন কিছুই রাখিয়া যান না,যাহা দ্বারা তাঁহাকে মৃত্যুর পর স্মরণ করা ধাইতে পারে। তাঁহার শ্রীরের অঞ্ व्यठाक यथाविधि मभानम जाजाद कड़-পায় হইয়া যায়। ভাহার কর্ম করিতে বিল-कर्ग रेव्हा जादह, किन्ह नहीएतत जमात्रधा

নিবজন তিনি অপারক। তাঁহার মন চির অক্ষকারে মথ আছে। তাঁহার চিস্তান্থান যথাক্ৰমে সঞ্জিতনা হওয়াতে এৰপ এক প্রকার বিশৃত্বল হইন। রহিয়াছে, যে যদিও किनि क्षारनाशाक रन रेका करतन, किन्द भरनत देख्या व्यज्ञादय किङ्करे कतिया উঠিতে পারেন না। আলসা থেমন তী-ছাকে সংসারের কার্যা হইতে বহিষ্ঠৃত. করিয়া দিয়াছে, ভেমনি আবার ভাঁহার মূহ হইতে শান্তিকেও বহিন্ধৃত করিয়াছে। তাঁহার ভূতাবর্গ তাঁহার বশে থাকেনা; থাকিবেই বা কেন? ভালদিগের প্রভু ষ্থন আপনার কর্ত্তা করিতে পারিলেন না তথন অপরের উপর কর্ত্ত্ব করিতে পারি-বেন, কথনই সম্ভব হয় না। স্কৃতরাং তাহারা অবাধ্যতা ও শনিতাচার তাহাদি-পের প্রভুরই নিকট হইতে শিক্ষা পায। এ সমস্ত বিশৃষ্থন, তিনি সকলি দেখিতে এবং শুনিতে পাইতেছেন, তিনি মনে মনে প্রতিভা করেন এই বার সকলি করিব; किन्न कतिदवन कि, जानमा जामिश्र छाँ इंटिक একে বারে আস করিয়া ফেলে। যে জী-বনে মসুব্য বাহা আর্থন। করিবেন তাহাই প্ৰাপ্ত হইবেন, তিনি এই ৰূপে সেই ময়ুখা জীবনকে, তুর্বহ ভার স্বৰূপ জ্ঞান করিয়া পরিশেযে শোকে মলিন, রোগে কাতর ও বিনাদে জজ্জ রীভুক্ত হইরা কালের করাল-বদনে লঘুতন পিঞাকারে প্রবিষ্ট হন।

> থিরোডোর পার্করের পত্র। ২০৭ এংখ্যক পত্রিকার ১৩১ পৃঠার পর।

অনন্তর সাধারণকে যাহা উপদেশ প্রদান করিতে হইবে,তছিয়ারে অতি অশ্পাই শিক্ষা লাভ করিয়াছি এই বলিয়া এবং বছকার ধর্ম চিন্তা ও ধর্মানুসন্ধান করিছে স্থিকে

ইহার নিমিত্ত অনিকা প্রাক্ত ধর্ম বিষয়ান লয় পরিতাপ করিলান। আর্মি নর্বা এখনে যে সমস্ত উপদেশ দিয়াছিলাস, ভদ্মিবন্ধে আমাকে অব্যের সক্ষূর্ণ অমুকরণ করিতে হইয়াছিল। উপদেশ কালে যদিও মুভন নুত্র ভাব সঙ্কলন করিয়া দিতাম কিন্ত পূর্বতন আচার্যাদিগের চিরপরিচিত প্রণা-লীর হস্ত হইতে কিছুতেই পরিজ্ঞাণ প্রাপ্ত হইতে পারি নাই। আমি যখন ধর্মোণ-দেশ প্রদান করিভাম, তৎকালে অভিশয় ভীত ও কম্পিচ হইতাম। আমি তরুণ-বরক্ষ যুবা; যদিও বর্মাবিজ্ঞান অনুশীলন ও ধর্মা বিষয়ক বিস্তর চিন্তা করিয়া ছিলাম, তথার বছ দিবস জনসমাজের সহিত সমাক সংস্রব রাথিয়া অভিজ্ঞতা লাভ করিতে পারি নাই; স্কুতরাং যাঁহার৷ বয়দের আধিক্য নিবন্ধন বিজ্ঞ বলিয়া পরিগণিত হইয়াছেন. তাঁহারা আমার উপদেশ বাক্য ভাবণ করি-বেন এই জনা দাতিশয় বিশায়াপয় হইভাম। **छे शरमम कारल बाहारक मगांत्र वांका** নিঃস্ত না হয়, আমি তবিষয়ে সভত সতৰ্ক থাকিতাম এবং ধর্মবিষয়ক যে সহজ জ্ঞান বিদ্যমান রহিয়াছে,ভাহাতে সকলকে উদ্বো-ধিত করিবার নিমিত্ত সবিশেষ চেন্টা করি-जान, এবং मनुगा एग পরিমাণে आहाकिक नियरमत अभीन, आमि मर्साएध मस ममरक ভাহাই অভিব্যক্ত করিতাম। এই ৰূপে कर्राक बाम व्यानकारमक श्राटम बङ्खा এবং মনুষোর অন্তর্ভিতে প্রবিষ্ট হইতে इहेरव **এই क्ल प्यवधांत्र कतिया**ं बाह्य एक সমাক অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছি সেই ৰূপ धर्यात छेश्रीतमा धारात व्यक्षासमाह स्टेन আমার যুক্তি-সঙ্গত ও মর্মানুসক केशरमम माजीत मागरमक मृत्राम वर्षण छेत्र क रहेश निष्णाञ्चल नगरे जातिक क क्रिक मानिका अनुसा

পরেশক আয়াকেউপদেশের সভাতা প্রকিপালনার্থ দবিশেষ সভক করিয়া দিয়াছিলেন,
এই নিনিম্ব আনি তাঁহার নিকট কুডজভাপালেশ নংঘত হইয়া আছি। এক্ষণে আমারও সম্পূর্ণ বিশাস কইভেছে বে আর্থিও
তাঁহার বাকা প্রভিপালনে পরাধা থ হই
নাই। আনি ইংল্ডীয় ভাষার ব্যবহারনির্ণর এবং ভ্রিষয়ক স্থাীর্ঘ বক্তৃতার

কৈ তক বিতৰ্ক অনুশীলন করিয়া বাক্য যোকনার পরিপাটী ও পদ বাব-হারের চাতুরী অভ্যাস করিয়া ছিলাম। গ্রীক ও লাটিন ভাষার বক্তৃতা পর্যালো-চনা করত বাক্যের অলকার সম্পাদনেও সমর্থ হইলাম।

অনম্ভর আমি ১৮৩৭ থাটাকে ইউ-निट्टें त्रियोन मच्छामाट्यत अवर व्योच्टिनत সলিহিত পশ্চিম রক্ষবরি নামক ক্ষুদ্র এক জনপদের কংগ্রিদেশন নামক এক দা-মান্য সভার ধর্মঘাজকত। পদে অভিবিক্ত হইলাম। তথাকার স্ত্রী ও পুরুষ্দিশের সহিত আমার বিলক্ষণ সৌহৃদ্য অনিয়া-ছিল। তাঁহাদিগের যহিত সৌহ্দা আ**মা**র मन्त्र्रं वीक्सिनक ७ कटनाश्याप्रक रहेग्ना উत्हे। आमि यथन धर्म विषयक हिस्रो कहिन তাম, তপ্তমন বিজ্ঞান বিশেষ আমার স্বাধী-নতা পরিহার করিতে সমর্থ হইক লা এবং वारा निकाल कतिकाम, काराहे आधीनकात মহিত উপ্ৰেশ দিকাম। স্থামার ক্ষিকারে কেই কথন আপুতি উপাপন করেন নাই। भर्म-तिवार्गनदृष्ट्व सर्गार्भाटकहोः त्कदल सर्म-বিষয়ত শিক্ষা প্রমান করিছেল। জালানা ক ्रमक निक्रम सामग्रदर्शन भक्तासूत्राज साम साम-१७ हरेता । केरिकिश्त केरिक निनी केर PARTY ALL PROPERTY OF THE PROP धर्म प्रशासकात विवास अभिवासकात क विवास TITLE AND SITE OF AND SHAPE

केश्रेत्र थ अस्तृष्टित व्यविद्याद्य भगामक छ স্বাধীন ভাব উন্নত করিছে चारु (या प्रम रेकेनिए तित्रांन श्रुक्तितात्रां क शिष्टम। শান্ধার স্বাধীনতা, চিন্তার স্বাধীনতা ও व अपृष्ठांत्र श्राधीनकाटक स्थ महिद्रगय मधामन করিতেম এবং ভাঁহাদিগকে যে পরীক্ষক ও পোপের পরতন্ত্রতায় নিপীড়িত হইতে হইত ना, उৎकारन इंहा थे क्कून मन्श्र नारमञ्ज অম্প অফ্লাদের বিষয় নছে। ইউনিটেরিয়াম ধর্মোপদেশক ও সভাদিগের মধ্যে বিস্তর মত-देवसमा लक्कि उक्हें कि सुधर्म-विक्का-নের পরিবর্তে ধর্মের একতা সম্পাদনে गक (लत्र हे यद्भ हिला। यथन (क्नि वा-ক্তিকে ধর্মোপদেশক পদে অভিষিক্ত কর हरेक, विচারক मভা ভাঁছাব ধর্ম-সংক্রাস্ত বিশেষ অভিপ্রায় কিছুমাত্র অমুমস্কান ক-तिष् ना : माध्यमाशिक लाटकताई छै। होत অভিশায় স্থাট অবগত হইয়া যদি তাঁহারে ধর্মোপদেশকের পদে শতিষ্ঠিত করা সঙ্গত বোধ করিত, বিচারক সভার গোচর করিছেল। জাছাদিগের মধ্যে এ-रेक्श धर्मालीत्र गितिटम्य ममापत हिल। ইউনিটেরিয়ান সম্প্রদায় এক ঈশ্বের অ-खिएक में नियान कहिया बाटकन তাঁহারা খৃফিরানদিগের জিনী,তব মতে किष्टूट इरे धन्न्द्रमामन कटतम ना। शृष्टिशादनता कटहन, युक्ते म!धात्रत्वत नेश्वतः, किन्तु हेन्द्र-নিটেরিয়নেরা এই বাকোর প্রতিবাদ করিয়া कामि यथन संस्थानिक नद অভিষক্ত হই,তৎকালে বিচারক সভা আ-মাকে আমার ধর্মবিষয়ক অভিঞায় কিছুমাত্র जिल्लामा करतम बाई। আমার সহিত मञ्जानिदर्शत भण-टेक्समा आहर कि मा अदः कान् धर्माविकानः चामातः चरतः विक अधिकत्त्रकः वाका अकृष्टि मा कविता **द्यवण कामक्ष नोजि के इन्हें शहातगढ़िह**

বিষয় স্বিশেষ প্রীক্ষা করিয়াছিলেন।
আমার ধর্ণোপদেশক পদে অভিবিক্ত
ইইবার কালে এক মহাত্মা আমার মন্তব্দে
ইস্ত প্রদান পূর্বেক প্রার্থনা করিলেন ' কাবা
বা দর্শন শাস্তে অনুরাগ এবং কোন প্রকার
প্রীতিকর বিষরের অনুশীলন এই তরুণ
বয়স্ক বাজিকে প্রকৃত ধর্মের শিক্ষা লাভ
ও নানব জাতির মুক্তি সম্পাদনার্থ ধর্মের
উপদেশ প্রদান ইইতে যেন কদাচ বিরত
না করে। আমিও তথাস্ত বলিয়া অন্তরের
সহিত ভাঁহার বাকে। অভিনন্দন করিলাম।

আমার ধর্মোপদেশকের পদ এইণ ক-রিবার এক বা চুই বৎদর পরে সভ্য সংখ্য থায় সত্তর জন হইয়াছিল। কএকটি বা-লকও ইহার অন্তর্গতি ছিল। আমি অন-জিকাল মধ্যে সভাব ফুদ্দ ফুদ্দ সভাদিগের দহিতও নস্ণ ৰূপ প্রিচিত হইলাম। তমবো দেখিলাম কৃতগুলি নিতান্ত অসভা এবা কভগুলি অভিশয় উদারস্থভাব ও যথার্থ ভার। আমি সাধারণের চরিত্র ও অক্রির ভাব সমুদায় সমাক্ অবগত হই-श्राहिलांम। मञ्जानिश्रदक एय ममन्द्र উপদেশ व्यम्भि कतिए इहेरु, ७९मभूमांस तहना कित-বার নিমিত সমাধক বত্ন ও পরিশ্রম স্বীকার করিতাম। অদ্যাপি সেই সকল উপদেশ আমার চিত্ত ২ইতে তিরোহিত হয় নাই। উপদেশ রচনা ও উপদেশ প্রদানে জ্যামার गमधिक उँ९माह ७ जात्मान इहेज। जामि प्रशः निकः वाष्ठ ७ अगारक छेपरम প্রদান উভয় বিষয়েই **স্থপটু ছিলান।** আপনার উন্নতি সাধন ও অন্যের উন্নতি সম্পাদন করা আমার একমাত্র কার্য্য ছিল। কোন সম্প্রদায় বা ইভিছা**স বিশেষের শাসন খারা এতিহত না হইয়া আফুভিক নিয়ম** गशुमारत्रत छेलरमन अमारन अबुंख इंहेराम। च मक मगर्थन ७ निवर्णन व्यवन्ति कवियातं

मिमिखरे मञ्जनात्रनिष्ठ मेठ ७ से विकारमत অ: প্রায় অবলয়ন করিতাম। ' ইভিছাস-ঘটিত विषद्यत निमिष्ठ थेडिशांगक अभाग छेक्छ করিতাম এবং ধর্মতত্ত্বের নিমিক্ত আন্ধার সহজ জান ও ধর্ম-পরায়ণ ব্যক্তিদিশের দুড় বিশ্বাসই অমাণ বলিয়া অঞ্চীকার করিতাম। ক্রমকদিগের নিস্তব্ধ ও শাস্ত অবস্থা স্কবি রচিত কাবোর নাায় স্ফ্রীয়-मान रुरेष এবং উপদেশ প্রদান করিবরি দমর দমাজ গৃহৈর দলিহিত রক্ষ দমূহ যেমন গ্রাক্ষ বিবর ছারা লক্ষিত হয় দেই ৰূপ উহা আমার অন্তরে স্থপ্ট অকিত হইত। সূচতুর মনুবাদিগের সহিত সংস্রব রাখিয়া যালা পরিবর্দ্ধিত হইয়াছে मिहे वसुर्वि धिजारित यि विषया जिल-জ্ঞতা লাভ করিয়াছি আমি ভাছারই উপ-দেশ প্রদান করিভাম এবং যাহাতে সকলে সময়ের প্রকৃত বাবহার এবং নিনীত সভা সকল কার্য্যে পরিণত করে তদ্বিত্যেও যত্ন-বান ছিলাম।

অনন্তর আমি গদার্থ বিদ্যার আলোচনা এবং যাহাতে প্রকৃত জ্ঞানোপাজ্জন হয় এই ৰূপ নাম। প্ৰকার শাস্ত্র স্বতন্ত্র অনুশী-লন করিবার বিশুর অবকাশ প্রাপ্ত ফইলাম। একদা ধর্মাবিদ্যালয়ের এক অধ্যাপক আ-মাকে কহিলেন "তুনি একটি সামান্য সভার थरमाश्रीतमक । जेक्श महीर्ग छाटन व्यवहान কর। তোমার কর্ত্তব্য **হইতেছে না। ভূমি** জাতি সাধারণ সকলকেই ধর্মোপদেশ অদান কর এবং বক্তৃতা দারা যে বিষয় সংসাধনে অসমর্থ হ্ইবে রচনা করিয়া তৎ সম্পাদনে যত্ৰবান হও।" আমি অবকাশ কলি কঠিন। পরিপ্রমের সহিত পুস্তক পাঠ করিয়া অভি-বাহিত করিতাম। স্বামি যে কেবল স্বভাগ वर्णकरे निवरंगत सर्वा नेन वी श्रक्तन घका भाजादशाक्ता अतिकाम काली तटर ;

ঐ ৰূপ গাঢ়তর পরিঅম দার। প্রভুত আন-म् । अमू उद कति जान । अम दुद्र यामि धर्म-বিজ্ঞানের স্থকটিন বিষয় নিৰূপণ করিতে खन, यञ्ज ७ ज्यारमारमत गरिष्ठ भूनतात्र मी-व्यामात व्यवस्। श्राधीन किंछ इहेलाम। ভাব সংস্থাপন ও অধ্যয়ন উভয় বিষয়েই একান্ত 'অনুকূল হইয়া উঠিন। धटर्माभटम-শল্পের পদ গ্রহণ পূর্বক ধর্ম বিজ্ঞান অনু-শ্রীলন আরম্ভ করিলে একটি স্থনহৎ পরিবর্ত্ত লক্ষিত হইতে লাগিল, কিন্তু উচা এই ৰূপ নিস্তদ্ধ ভাবে প্রবর্তিত হইল যে উহা কোন্ স্থান হইতে প্ৰবৰ্তিত ও কোন্স্থানে প্ৰ্যা-বলিত চইবে, তংকালে কেছ কিছুই নিৰূপণ কবিতে সমর্থ হন নাই। ফলত এই পরি-বর্তের সময়টি আমেরিকার ধর্ম সংক্রান্ত ই जिह्। रगत व्या छ। स क दला प्रयासक इहेय -हिल, गटमह नाहै।

ইজিপ্টীর মত।

ইঞ্জিন্টীবাদণের পূৰার্ত্ত এৰপ কণ্পিত উপাথ্যানে পরিপূর্ণ, যে কোন বিজ্ঞাতম পণ্ডিতও তাহা হইতে কে:ন বাস্তবিক র-ভাস্ত নিঃসংশয়ে নিৰূপণ করিতে পারেন क्ट क्ट बटनम, टेजिकी दस्ता পরলোকগত প্রধান প্রধান বীর, কবি, শি-প্ৰস্তুত্ত পদাৰ্থ বিদ্যাবিৎ পণ্ডিতদিগকেই দেৰতা বলিয়া উপাসনা করিত। পৃতিয়ান্ যাছকগণ তর্ক ছারা অনায়ানে পরাজয় করিবার স্থাবিধা হইত বলিয়া এই পক্ষই আছ করিয়াছিলেন। গ্রীন দেশীয় উপুरागत्रिक श्रञ्जादतः। रेजिकीयमिशदक পশু পকীর উপাদক বলিয়া নামা প্রকার উপহাস করিয়া शिशाद्यम, किन्न धीम् व्यटमात व्यव वित काल मक्न है जिल्ही स भूबाइख स्टेटकरे त्य नगुरू क स्रेशाहिक, देश

छ। हात्रा कानिट्डम मा। (कह (कह बटनम, ইজিপ্টীয়েরা সূর্যা চন্দ্র নক্ষত্র অভূতি ক্যো-ভিক্ষদিগকেই ঈশ্বর জ্ঞানে উপাদন' করিত। मकन कां जित भूर्य भूक्ष खता है अथरम सूर्या अञ्चि कड़ भगार्थत्र উপामना कति ह, धरे নিমিত্ত কোন সম্প্রদায়ই তাহ। লইয়। ইজি-कीयमिशतक उभाराम करत्रन नाहे। हेकि-প্টীয় যাজকগণের লিখিভ যে সকল এন্থ প্রাপ্ত হওয়া যায়, তদ্মার। অনেকে স্থির করি-য়াছেন,ইঞ্চিক্টীয়দিগের চক্ত সূর্য্য প্রভৃতিকে উপাদনা করিবার নিগুত অর্থ ছেল। দে যাহা হউক ইজিপটীয়ের। চন্দ্র সূর্য্য প্রভৃতি ছড়,পশু পঞ্চী প্রস্তুত হয়,ও পরলোকগত প্রধান প্রধান মনুয্যদিগকেও দেবত। ভটানে উপাসনা করিত, ভাষার মন্দেহ নাই। তা-হারা পুকাতন রাজাদিগকে দেবভার পুত্র বলিয়া বিশ্বাদ করিত,এই ভন্য অনেক রাজা তাহাদের দেবভার মধ্যে পরিগাণত আছেন। रेकिन्छे एटन रेकिन्छीय एनवरामिटनत जिन भूकृत्यत लौना श्राप्त इउरा यात्र। श्रयम দেবতাগুলি আদে পুরুষ বলিয়া পরিবলিত আছেন; এই শ্রেণতে দেব ও দেবীকে आछिक्र फिर्निस् ६३ आएँ हिन्द्रेड দিতীয় পুৰুবে আর বারটা দেবতা ভংপন্ন হইয়া ছলেন। এই বিভায় পুরুষ হইতে থার কতক্ষালি দেবভা উংপয় ₹म। व्यांगक उमरिम प्रव ७ पार्रिम (क्वी এই তৃতীয় সন্ত করের শ্রেণীতে পরিগণিত ছिলেন। ইয়া দারা ज्ञान हो হইতে ড যে, ওাঁদরিম ও আইদিদের পু-र्स रेबिको पर्ण विश्मिकि प्रविका हि-লেন। কিন্তু আদি দেবতাদিগের মধ্যে भिष्य वा शान नामक एव ७ तृत्हे। वा নাটোনা নামক দেবী এবং দিঙীয় সন্ততির মথে হকুলিস দেব এই ভিন নাম ব্যক্তি-রেকে বিংশতি দেবতার মধ্যে আর ,কোন নাম প্রাপ্ত হওয়া যায় না। এবং ভাঁহাদিগের বিশেষ কোন প্রতিমূর্ত্তিও নাই। এই
দেবতাদিগের মধ্যে যে জন্তু যে পেবতার
প্রিয়, প্রায়ই ভাঁচাকে দেই জন্তর আরুতিতে
প্রা করা হইত। এক্ষণে যত দূর প্রাপ্ত
হওয়া যায়, ইজিপ্টীয়দিগের দেবতা ও ধর্মা
বিষয়ক মত প্রকটন করা যাইতেছে।

আমন। গ্রীস দেশীয় ইতিহাস লে-शंक हिर्द्धाटणाचेम् वटनन, हेजिल्छीयपि-গ্রের অনেন ও এীক দিগের জোভ একই দে-বভা ছিলেন। আকিকার অন্তর্মন্তী থিবস্ প্রেদেশে ভায়স্পলিস্নানক নগরে আমন **(मरवंद मस्मित अधिकिंड छिल। याहे छाटा** ভীহোর উপাসনা হইত। ইপিওপিয়া এ-দেশে অতি বংসৰ একটি মহোৎসৰ হইত। দেই সময়ে আমন দেবের প্রতিমা নীল নদার ভীর দিয়া তথায় লইয়া যাওয়া হইত. এবং ইথিওপিয় লেকেবা অতান্ত আড়য়রের দাহত প্রত্যালামন পূব্যক ভি:হাকে এহণ कति । मार्श्यमव (अस इन्ट्रेल श्रुनर्सात মেই প্রিমা স্থান সংস্থাপত চইত। ইন্দিপ্ট দেশীয়দিলের এই ৰূপ বিশ্বাস ছিল বে, আফন দেব স্বভাৰত সমুদায় ই-क्रिट्सद व्यदणाहत. किन्छ मञ्ज পाठे ও यांत्र যত প্রভৃতি প্রক্রিয়া বারা বশীভূত হইলে ইন্দ্রনোচর কোন মূর্ত্তি পরিগ্রহ করিয়া ভক্তমণের নান পথে আবিভুতি হন। रे कर्लीश पर्यनकारतका य शाहितक हुए বুলিয়া নিৰ্দেশ কৰিতেন, আমন ভ্ৰমধ্যে ११४१ में है है। पार्वा में भीत करह भटनत की दन भारत इहें हैं।

হকু লিস। ইজিপ্টী য় দিগের মতে
ইনি নীল নদীর পুল, ইনি হিন্দু দেবগণের
নায় সূর্য্যানভলে অবস্থান পূর্বাক সূর্যার নহিত পূর্বিধী পার বেইন করেন। ভারতী বর্ষায়েরা যেনন সূর্যান প্রান্থী নায়নি য়ণকে বিভূত চতুৰু অভৃতি সানাবিধ व्याकारत भूका कृतिहा थारकम, देकिन्छीरत्रहा त्महें क्रश की बादिक नीमा छाटव खोत्रधिना করিত। ইজিক্টার্দিগের এই রূপ বিশ্বাস हिल त्य, जल ममुना भनात्थीत जाहि कात्वः जल एक इरेश (शत्न मृजिका उँ९ भन्न इस । **এই कल ও मृखिका इहेटक निर्देश्व नाम्न** মুখ ও দর্পের ন্যায় শরীর একটি কন্তু টুৎ-পন হইয়াছিল। এই জন্তুর মধ্য স্থানে। নাম হকুলিস ও কাল। হকুলিস হইতে একটি প্রকাও ভিন্ন বহির্গত হয়। হকুনিস্ वे जिन्नत्क जैनेयुक्त नमदेश दिन कि क-রেন। তাহার উর্দ্ধ ভাগ স্বর্গ ও অধ্যে ভাগ जुम खन इरेन " अनस्त इक् लिम् পঞ ভুতকে যথাবহ বিভাগ করিয়া রক্ষা করিচেত नाशिदनन । व्यापन स्थमन कीविनदगत नि-য়ন্তা, হকু বিলম্সেই ৰূপ জড় জগতের নি মন্তা ছিলেন।

মেণ্ডিদ্। ইজিন্টীয়দিনের যে আটটি আ,দি দেবতং ছিলেন, ইনি তাঁহাদেরই অ-নাতম। ছাগের আক্তির নাার ইহাঁর প্রতিমূর্ত্তি। যে নগরে ইহাঁর মন্দির সংস্থাপিত ছিল, সে নগরের নামও মেণ্ডিদ

তিনি চিতা করিয়া ব শরীর হটাবে বিবিধ আনা সৃষ্টি করিবার ইচ্ছাব এগেনে জল সৃষ্টি করিবেল ও তা-হাতে বীল নিকেপ করিলেন। সেই ধীল প্রবর্গন ও হর্ম্যের ন্যাব প্রভাসস্থার অভ বইয়া উঠিল। জ্বল বান ব্রহা সেই অতে সম্বন্দর বাস করিয়া বহুংই আপিনার ব্যান প্রভাবে তাভা বিধা বিভক্ত করিবেলন, এবা ক্রিনি বেলি কৃষ্ট বাত বারা সুব্রোক ও স্কুব্রাক্তিন ক্রিনিট্র

এই মতের সহিত মনুর মতের অসংনক্তাংশে দানশ্য আছিল, যথা

সোভিধ্যাথ শরীরাং সাথ সিদ্ কু বিবিধাঃ প্রাক্তাঃ।
অপথন দসর্জাদৌ ভাস্ত বীজ্মনাদ্ জব।। ৮।।
তদশুমন্তবলৈ সংস্রাংশু সমপ্রান্তং।
তদ্মিন্ত ক্রেজ ব্যংশু কুলা দর্জালোক পিতামহঃ।। ৯।।
তদ্মিন্ত সভগনানু দিন্তা গরিব ংসরং।
ব্যাহ্যানা দিনাভাগি দিনং ভূমিক মির্মানে।
মধ্যে ব্যোম দিশশাকী বিপাংশ্যান্ধ শাশ্বং। ১৬ ।

विनिष्ठा श्रीमक्ष इत्र। हेहाँ विविद्य आत स्थिक अवश्र हुउत्रा बांग्र मा, क्वरण এहे माळ क्रानिट्ड शाजा बांग्र (य এ क्टिंग वडी एनदीत छेलद्द (य (य कार्ट्यात कांत्र आट्ड, मिछिन उ (महेबल कार्ट्यात अधाक हिटलन।

পাঞ্চিমিন। নিন্ধুখোটকের আরুতিতে
পাঞ্চিমিন নগরে ইংশার পূজা করা হইত।
অনেকে অনুমান করেন, নিন্ধুখোটক এই
ক্রেবিভার বাহন। ইজিপট দেশীরেরা ইহাকে প্রালয়কারী দেবভার অবভার বলিয়া
বিশ্বাস করিত।

ভবানীপুর ওন্ধ-বিদ্যালয়।

প্রথান আচে,যোর উপদেশ।

চতুথ সংখ্যা।

১০শাবে ১৭৮০ নক।

আন্র। অপার গড়ার ক্রান-সাগ্র হইটে যে সভাকে লাভ করিবার জন্য এখানে যত্ন করিছেছি, দেই সভাকে ভাবিতে গেলে স্থায়ত হটভে হন। त्महे मेखा चर्मले आभारतत क्षरत खा॰ आश्रेनारक অকাশনা করিবে আমনা কথনট ভাঁহাকে পা-ইতে পারি ন।। জিনি পরিষিত বিষয় নহেন ফে আমরা কেবল আপানা। বুদ্ধি-বলে ভাঁহাকে বুবিতে পারিব। তিনি মহান্, অন'দানস্ত; তীহার সাহায্য ব্যতাত তাঁহাকে লাভ করা যায় না। অভএব নভ হইয়া ভাঁহার নিকটে আপনাকে সমর্পণ করিতেছি, তিনি আমার জ্ঞানকে উজ্জুল : করিয়া ভাঁহার সভা প্রেরণ করুন। সেই সভা অভি গুড় বলিয়া আমর। ভাহার উপার্কনে নিরস্ত পাকিতে পারি না। তাঁহাকে না জানিবে নয়. छै। होटक ना शाहरण है नह ; त्म हैं गर्छ। द्वें मछाटक चपूरकान कविया कानिटल्डे इडेटर। जन्म-कान বর্ত্ব-দাধা বলিয়া আনত্রা যত্তীন চইতে পারি না, किन्छं चाद्रा वज-महकाद्र जाशदक स्निद्धं हरेदा। त विकारक नाच कहित्त धार, भाग, भाक रहेट उ উত্তীৰ্ণ হওয়া ৰাষ্ট্ৰ; সংসাৱ-সমুদ্ৰ পাই ইইয়া क्रमुक् भार्ति उन्निविध क्षेत्रा व के व व्यक्ति नाजाटक यक्-माधा बनिया कि अवट्टना कहिन्छ । आयहा मण्ड केत्रिया केश्वत व्यवसाहि माधाबा क्रांतिवक्त, व्याबा-तर्पत्र कान-पार देश वर्गीत अंदर्क नाहि विकन

করিখা ক্রমে ভাষাকে পুষ্ট ও বাজিত করিবেন।
আমরা কুল হইয়া মহানের দাস হইয়াছি, অপপ
হইয়া ভূমার উপাসক হইয়াছি, নত হইয়াই
ভাষার জান-অর্জনে চেটা করিভেছি।

বেদ-স-ছিতার মন্ত্র-সকল বদিও কেবল অস্থি সূর্যা মিত্র বরুণ পরিমিত্ত দৈবভার স্তুতিতে পরি-शूर्व, खवालि मर्या मर्या खाहार्डि धमरखह আভাদ ক্তিভ হইরাছে। " বো জাগার ভাষ্টঃ কাময়তে যো জাগার ভমু সামার্নি বস্তি যো জাগার ভমরং সোম আছ।" (ঋণুেদ-সংহিতা) বিনি कार्शिया चार्टिन, श्रक-नकल डाँशिक कामना कति-ভেচে: যিনি জাগিয়া আছেন, সাম-সকল ভাঁছা-কেই প্রাপ্ত হটভেছে; যিনি জ'গিয়া আছেন, এই त्नाम-यान कैं। शदक कहिटल्डा (वम-मटक **अह** माळ चारछ ; किन्ह शिनि काशिया चार्छन, जिनि যে কে, ভাহার নিকপণ কোপায় ? মত্রাকুং ক্ষরা এক এক বার পুরের বিচে বা জের নায়ে জিলাসা ক্রিয় ছিলেন ''কবিম দেবায় হবিধা বিদেম।'' (अत्मृत-म॰ शिष्ठा) कीन् (प्रवच । दक आमत्र। शिव দান করি? কিন্দু উঁথোর। এই মাত্র উত্তর পাই-ग्र' हिलास त्य गें शतक हिन सम करि, जिनिहे সকল দেবভা। "এমউ কেব সংস্থা দেবাঃ" (বাজ-त्रत्य आक्रान ' डेल्ट मिक्ट तक्नमधिमास्टवरथा-দিৰতে সমুপৰে(গক হান্। একং সহি প্ৰাৰছ্ৱা বদন্তি অগ্নিং যদ ব'ত র্থান্মাছং ।" (মঞ্জ-বর্ণ) উচ্চাকে ইন্স, মিত্র, লগ্নি করিয়া বলেব, ভিনি মুন্দর পক্ষ-সুক্ত চিবা পক্ষী, বিচেপ্ররা এক সংক্রে বছ প্রকার বলেন, উছিতে তার, হন, মাত্রিধা कांत्रया बदलन्। धार्ठीन द्यम-भाष्ट्रत्र गारा अ केन्न-থের অনুস্ত ভাষ্ট প্রাক্তি পাবে নাই, এক धक राज लाहा हहें हैं कि कि हि हि । व्यक्ति সং হিত্ত প্রত্তির ক নম্ভ জ,য সেন প্রাক্তঃক।লের ঞ্কাৰেৰ নাম প্ৰকাশল ইইম্ভিল। কভ काल अक्तिनान असिकारीय निकार राष्ट्रियान छ পুক্ষ প্রজন্ম থানিডে পারেন। কডকাল আর ৰ্বাহার এমন প্ৰত্ন অসীয় আকাশে সমুত্র ভীবস্থ বাল্-রাশি সদৃশ অস্থ্য নক্ষ্ম থা েবল পার-মিভ দেবভাকেট মানিতে পাবেন**৷ তাঁহারা** দেখিতে পাইলেন যে একই দেবতা সূর্যা চক্র खन्नित्क, मानाभृषिवाखरीटक, नाम कविरूप्तकन ; <u>ভাঁহারই নিঃধানে বিশ্ব সংখাব নিঃখ্যিত হই-</u> CECS। उपार्वा स्वान-श्रे गांदमंत्र माम मटम्हे-অনও আকাশে অনম্ভ দৈবের হক্ত অধ্যেতে উদ্লেজ ध्यमात्रित मिथियान । वास् विषयात्र काम व्याक्त्रम হেদ করিয়াও সেই অনভের জ্যোতিঃ প্রকাশিস্ত इरेम ! उँ। इ'द्रा धरे न मन कफ व खंद्र मटला, वाह्नि-त्वत्र वरे व्यमातिष्ठ जीकाम् मर्गाल, जानक सुत्रकार

দেখিতে পাইলেন। ভখনো তাহারা শীয় উব্দুল ভোষ্ঠ কোৰ আত্মার মধ্যে পর্যাম্মাকে দেখিতে शान नाह, खबाना छांदापत्र तमना दहेटल "अक-त्मदाविजीवर" এই महा बाका विनिर्शत इस नाहै। हे सिया प्रिंग के वाश विषय हरेए श्राप्ति इस के বিয়া একমেবাদ্বিতীয়ং সভা পুরুষকে স্বীয় আত্মাতে मिल्येवां से खेलाम्य केलियाम के आखे इंद्रेश यात्र । 'প্রাঞ্ ধানি বাতৃণং স্বয়ন্ত্রমাৎ পরাঙ্পশাতি नाखद्राञ्चन । कन्छिद्धीदः अछ। श्रामाने रेमकनाइ छ ह-কুর্মুজ হ্মিচ্ছন্''। (কঠোপনিষ্ৎ) বাছরিভ্রিয়দি-ণকে ঈশ্বর অপ্পাবলই দিয়াছেন,এই হেডু ভাহাবা বছিরিষ্যাই দেখিতে পায, অন্তরাত্মাকে দেখিতে शाम्र न।। এक कहे। एक यह ठक्क करार मिटब, ভাষারও বল অস্প, বে হেডু সে অন্তর সাকে দে-কোন কোন ধীর আর্থ চকু খিতে পায় না। হুইয়া, বৃহিধিনয় হুইতে ইব্রিয়দিগকে প্রতিনির্ভ করিয়া, এব ৷ অমৃতত্তকে ইচ্ছা কবিয়া,দকল আয়াব অন্তরাত্মা যে অধিতীয় প্রভাগাত্ম। উংহাকে দে-থেন। যাঁচার বাচাবিষ্য চইতে উ অয়দিগকে প্রতি-নিব্লুত করিয়া আমাকে দেখিতে অভাস করেন নাই, ভাঁহরে। বলেন যে নিরাকার পার্নে-ध्वरण मि अकारत जावित। जागामत अजि जा নিবাকার ভাবিব'র উপদেশ নয়; উচির। সাঁয় আয়াকে ভারুন, জানিবেন থে সেনিরাকার। আন্মার অব্যব নাই, বে নিজে নির্নয়ৰ চইয়া মাবয়ৰ সমুদয় বস্তু প্রকাশ করিভেছে। পর্বছে, প্রতি স্থান আকাশকৈ আত্রয় করিয়া আচে, ভিল ভিল সম'ন আকাশকৈ অবলধন করিয়া ष्ट्राटक। यमि अहे जिल्लाक मर्ग जाल कर्त, भारे দশম ভাগেরও আধার ভক্ত টুকু আকাশ চাই। কিন্দু আত্মার সহিত কিছু মাত্র আকাশের সম্বন্ধ बांहे: त्म अनुबट्ह, त्म अन्य बट्ह त्म में प्य बट्ह। এই বলিয়া আছা। কি বস্তু নয় ? আছা। জড় বিষয় হটতে মহানুর ৰস ৷ আত্মা চেতন ৰস্তু, ভাছার भाष्यात এই सांघ मंदीत महस्त्रत श्हेग्राइ। यथन শরীরের অন্তরে শরীর হটতে ভিন্ন করিয়া আমা-কে ভাবেতে পারিলে, তথনট নিরাকার ভাবিতে ला बार । विष्युतिकृष्यत भाता वाश्वित नित्राकात ल विटल कारण मुना कि शिद्य। योशीती वीविद्रत्र বিষয়েতেই আসন্ত পাকে, ভাহারা আকাশবিত वश्चरक है वस्तु व लगा कारत: य वश्च कार्काण नाहे, ভাছাকে দ'রও শরিতে পারে না। यদি নিরবয়ব স্ইল, ভাষাবদের নিকটে তবেই ভাষা অবস্থ হইল। ধারণ দের সংক্ষার অন্তেশনে, ভারারা অন্তে-হণ করিছে পারে; कन्दक्हे प्राथ क्षष्ट(कडे কিন্তু ব্ছার চেতন আছে, ১৮৪ চেডনকৈ জানিতে भीत्व । एख ६ त. वस्त्र भावन वत्र। यात्र, मृन् क्रांत्री

মনকে মনন হয় বায়, জ্ঞান হার। জ্ঞানকৈ জানা বায়, জ্ঞানা হারাই জাত্মাকে জনুতন হয় বায়। বি, হল্প হাঁরা জাত্মাকে জার্ল জনুতন হয় বে চকু হারা আত্মাকে দেখিতে হাঁয়; জ্ঞান্থা ইতে আর নির্বোধ কে জাছে? এক বার জ্ঞারে দ্বীয় আত্মাকে দেখ, দেখিবে যে দে বিজ্ঞানমন্থা। ভাহার আকার নাই, ভাহার জ্ঞার বাই, ভাহার রূপ নাই; ভবে আছে কি? ভার জ্ঞান আছে, ভার প্রীতি আছে, ভার ধর্মা আছে। এই আত্মাত্তে আরোহণ করিয়া আরো ভাহার অর্থ্যরে প্রবিত্ত আরোহণ করিয়া আরো ভাহার অর্থ্যরে প্রবিত্ত করে দেখিতে পাইবে এবং জাল্করেণ জনস্ক ব্রহ্মকে দেখিতে পাইবে এবং জাল্করেণ উব্দল্ল হইয়া-প্রেমাঞ্রাক বিস্ক্রেন করিবে। শ্বীয় আমাই পরমাত্মাকে দর্শন করিবার সোপান-ভূমি। এই আ্যাই ব্রহ্মধাম।

the second second

কঠোপনিষদেব আখায়িকাতে আছে যে বাল্য**ি** কালে শ্রন্ধারিট নচিকেতার আায়-ক্রিক্সাম। উপ-ন্থিত হইথাছিল। মৃত্যুর পরে কি হয়, জিনি ভাষা সয়ৎ মৃত্যুকেই জিজাস। কবিবার অবসর পাইয়াছি-লেন। শ্রন্মচিকেদা পিতার সভা-পালনের কলে। তিন রাজি অনাহাবে শ্ম-ভবনে ছিলেন। সেই ভিন রাত্রি পারে ঘম প্রবাস কইতে গতে আসিয়া দেখিলেন যে নম্যা অভিথি তিন বাতি ভাঁহার ভবনে উপবাসী র্চিয়াছেন। ভিনি আপনার এই দোষ অপন্যনের নি.মন্তে ভাঁচাকে তাঁর ভুটি-সাধন জিনটি বর দিবার প্রাথনা করিলেন। নটি কেতা প্রথম বব এই চাহিলেন যে এই ভয়ক্ষর ষম-ভবনে আসাতে আন র পিত' যে শোকাবিউ ও ব্যাকুলিত ভইয়াছেন, ভাঁছার সেই শোক ও বাকুণভার উপখন চটক—ভিনি শাস্ত ও প্রেসল-ন্ন। হউন্। তিনি জিডীয় বরে অর্গ সাপন যাগ-যক্ত-সমুষ্ঠানের প্রকরণ জানি বার অভিলাষ করি-लम्। कृष्टीप्र वटत जिल्ला शार्थना कतिलम "विष्रः প্রেতে বিচিকিৎস। মনুষো অন্তীতোকে নায়**মন্তীতি** रेচকে। এভবিদ্যান্তুশিত প্রাহ° বরাণামেষবর-ন্ত ভীয়ঃ।" "প্রেভে মনুষো ধা ইয়ং বিচিকিৎনা"। মনুষা এ লোক ছইতে মৃত চইয়া অবস্ত হইলে य এই जर नाग्न दशा कि जर नाग्न ? ना, " फार्खी-ভোকে নায়মস্তীতি চৈকে" কেছ বলেন আয়া थारकनः रकर वटनन थारकन ना । "उक्तविमाननू-শিউস্বায়াহং '' আমি ভোষা কর্ত্ত্ব অনুপিউ इहेजा हेकां क्रिकांक कानिएक हाई । " वर्गाद्भय-वब्रक्ष जीवः " बद्धव गरंधा जामात वह कृष्णीय वद। ষম বালকের মুখে এমত কটিন প্রশান্ত কিয়া চমৎকৃত হইলেন। এ জিজাদা কত ভুর জীয়ার ক্দরের। ভাৰ, তাহার গঢ় আৰু জান আনিবাৰ নতাৰ देखां व अधिकात हरेतारह कि जा, हैश रही के

क्रिवात निर्मिष्ठ यम छाहारक विश्वासम । " दनदेव-রত্রাপি বিচিকিৎসিতৎ পুরা ন'ছ সুবিচ্ছয়ং।" ইহাজে দেবভারাও পূর্বে সংশগ্ন করিগাড়িলেন, हैश कृषि छत्। भन्न । ''व्यनार वतः निहत्न छ। इनीके" रह महिटकछः! जुनि अना वत श्रार्थना कत्र। এ বরের জনা আরু অংশকে অধিক উপরোধ করিও না। নচিকেতা বলিলেন। দেবভারাও ইহাতে সংশয়যুক ভিলেন এবং ভূমিও বলিভেচ हैश द्विरक्षत्र नत्र; राजात् नाग्न धर् नर्भाग्न দি'বান্ত-ক'ৰ্বা এমন আচাগাই বা কোৰায় পাইব, অধাত্ম-বিদ্যার সমান আর বিদ্যাই বা কি আছে; অভএব আমাকে এই বর দিভেই হইবে। যদ পু-নৰ্কার বলিবেন, " শভাগুনঃ পুরপৌতান হুণীয় " শভাযুকিশিক পুত্র-পৌত্র-সকল প্রার্থনা কর। বহুন্ পশূন্ হতিহির্ণামখান্ " বছ পশু, হল্টী, চির্ণা, অশ্ব সকল অর্থনা কর। "ভূমেম হদায়তনং इगीय ' मरमायुजन ज्ञित आशी रु। " व्यवक कौर भंतरम। शायमिक्ट्म" यच नः म्य शृथियो उ জীবিত থাকিতে ইচ্ছা কর,তত কাল জীবিত থাক। আমি যনের পদে থাকিতে তোনার মৃত্যু হইবে না। হে নচিকেডঃ। মরণের পর আত্মার যে কি হয়, এ প্রস্না ভ্যাপ কর। নচিকেছা এ সকল প্রালো-ভন-বাজে মুগ্র না হইযা অকুর মহাত্রদেব নাায় ন্দির হইয়া উত্তর করিলেন, ''ন বিত্তেন ভর্গনীয়ে। মনুষাঃ।' হস্তীহিরণ অশ প্রভৃতি বিত ছার। মনুবা তৃপ্ত হয় না; প্রভুাত যত বিস্ত লাভ হয়, ভতই লালসা ক্লিভিয় । অভএব এ সকল আমি চাইনা। বখন ভেখেরে শহিত আখার বন্ধুত। হইয়াছে, তপন কোন্ল জায তুমি আর আমাকে মারিতে পারিবে; অর হিরণা অশ্ব হস্তি-সকল তো ভোমার অনু গ্রহে পাইব ; কিন্তু এ সকল আ-মার প্রাথনার বিবয় নহে। মৃত্যুর পরে নলুবোর ষ্ণাত্ম। থাকে কি না, ইহাই আমি ভোমার নিকট হইতে শিক্ষিত হইতে চাই। অভএৰ হে বন। আমাকে এই ভৃতীয় বর প্রদান কর, ও তোমার অলীকার পালন কর। এই প্রকারে নচিকেত। बनटंक प्रतिया विगटनन, आणा-विमा विनटिक है स्टेटन। खयन वंग जीक हरेश। बलिदन । "हस्र।-**छत्रनाटक रहर रक्टन्ट्यनाटक रहर। छैटले (छ**ी न विकामीरकामाप्र रखि म श्नाटक।" रखा माम ছয়ন করিবার নিষিত্তে মনে করে, এবং হত বাজি ৰদি আপনাকে হত বলিয়া মনে করে ভবে ভাহারা उक्तारे जोवादक कारम नाः ना वह आया रनन फर्ड, ना धरे जाना इंड इस । निस्केश्वर दसन व्यक्त, नामह रचमनि उक्त- "न हमाटक हमामादन भंदीतां' भंदीत नक इंहरतं आवा नक इस ना। चनवन्गी छाटछ ३ दशत अख्यित चाटक । अदननः

ছिन्हिं लेखाँनि रेमनः त्रष्टि शायकः। न रेहनर ক্লেদয়স্তাবেপান শোষৰতি মাকতঃ।" ইছাকে অক্স छिमन कतिए शास्त्र ना, देशास्त्र खश्चिष्टन क-রিতে পারে না, ইহাকে জল নটিড করিতে পারে না, এবং ইছাকে ৰায়ুও শুক্ষ করিতে পালে ना। এই आदा। अध्यन, अमारा, अध्यना, অশোষ্য: শরীরের বিনাশে ইহার বিনাশ হয় ন।। নিঃশাস বাযু যথন বাহিরের অনিল হইয়া যায়, এই শারীর ধবন ভাগের সহিত ভাষাক হয়, তথ্ন আমা 'যথাকর্ম ঘণাঞ্জং'' পর-लाटकत मत्रन क्यांन धर्म नहेवा এই পृथिती हहेएड প্রস্থান করে; ইগরে উপরে মৃত্রুর অধিকার নাই। এই অকটো গদ্ভীর মার মিদ্ধান্ত পূব্ব কালের উপ-नियम् इष्टेट श्राख इड्या ग्राय । प्रण, व निष्कांच কেমন সভা। যথন নত্ত, রান'লণ মহাভা-स्ड, भूदान, किंदुई डिल न: उथन अहे उपिनयम् ছিল। যদি বলা যায় যে উপনিষদ ভিন সকল বংসরের পুর্মে প্রকাশিত হটয়াছিল, তাহাতেও পুবিক শাস্ত্রত পাওতেরা কোন মাণতি আ-নিতে পারেন ন।। এত পুরাতন কালে আত্ম-বিষয়ক এমন সার সিদ্ধান্ত এই মুবিস্তীণ ভারত বর্ষে आहित हिन। हैशेट कि आर्कियों ह**ेट ह**न्न न। ; ইহাতে कि आमात्रप्ति भूथ উচ্ছ न रग न। १ এমত পুরাতন কালে জ্ঞান-ধর্মের এমন মহং कीर्छि कात काशा अना है।

উপনিষদে যেমন শবিংব হইতে পৃথক্করিয়া ष्याचात-मक्तभ क्रानान इन्ग्राष्ट्र, धनन चात त्वरम्ब क्लान अथरण नाहै। किन्दु आन्ध्या अहे स शब्द-लारकत काश्वित, ७ श्रां लाएकर माधन, त्रापत প্রথম হইতে সংক্রিনাতেই প্রাপ্ত হওয়া বাষ। रवम-विश्वि याथ यटकत ও हेणे। पूर्वत अवः मन-नुष्ठीन ७ भूग करणेत कल य वर्ग ब्लाक खालि, ইহাতে হতন পুরাজন সকল ক্ষেদিণোবই বিশাস ছিল। বেদেব ক্ষিরা পর লোকের প্রতি কোন সংশয় আনেন নাই। তাঁহার। হৃদয়ের সহজ ধর্ম-ভাবে প্রভায় করিভেন যে ইহ লোকে পুণাানুষ্ঠা-बार कन পর নেকে আপু হইবেই হইবে। **উপ**-নিষদের সময়ে জ্ঞানের অ'লোচনা আরম্ভ ইয়া এই স্বাভাবিক আত্ম-প্রভাবের উপর সংশয় উপ-ন্তিত হইল। তথন উপনিষদের ঋষিরা সহজ জ্ঞানের আলোকে নিঃসংখ্য হইরা এই আছা-প্রভারকে আরে। ভূড়তর করিলেন। " পুলোন পুণাং লোকং নয়তি পাপেন পাপুং।" (প্রয়ো-পনিষদ্) পুণা ছারা পুণা লোকে গতি হয়, পাপ षांत्रा भाग काटक ।

যথন অনাঝা হইতে আগ্লাতক, দেহ হইতে দেহীকে; পূথক করিয়া জানা যায়; তথন আগ্ল

কি জানা যায় ? ডখন আর এই জানা বায়, বে भंदीरतत विनारण आधात विनाण दश ना; त्य त्हरु डेउर शुथक दल्ल। आह कि काना यात्र ? ना, মূব্য চল্লে গ্ৰহ নক্ষত গমুদয় বাহা বস্তু হইতে জাতা। উৎকৃষ্ট, যে হেডু আত্মার দ্বারাই সমুদয় বাহা জগৎ প্রকাশ পায়। আর কি জানা যায় ? না, আন্ধা অমৃতের নিকেতন, অমৃত পুরুষ ঈশ্বের আবাস স্থান; জাবাভার অন্তরেই পর্মান্তা রহিয়াডেন, ভাহা হইতে কীৰাজা অভি অপ দুৱেও নাই; ে হেতু উাহারদের মধে*।* আকাশেরও ব্যবপান নাই। আব কি জানা যায় ' না, আল্লা ঈশবকে অবল্বন ক্রিয়াই স্থিতি ক্রিভেছে। ''এয়হি দ্রেউ। ম্পু-উ' প্রাভারস্থিত। মস্তা বোদ্ধা কর্তা বিজ্ঞানাত্রা পুরুষঃ। সপার অকরে আতান সম্পতি ঠভে।" (প্রশোপনিষদ্) এই বিজ্ঞানার। পুরুষ এটা স্পৃতী প্রান্ডা রস্থিত। মন্তা বোদ্ধা ও কর্ত্তা, ইনি অক্ষয় প্রমাত্মান্তে সম্প্রিষ্ঠিত হইয়া আছেন। আই। দ্রুটা, চকু দেখেন।; তালা চকুর ছারা *দ*ন্ন करता आधारे त्यांचा, जाराहि खांचा, याचाहे तुरमव (छोड़ा। योश्वावह मिक्कि मन पाबादहे শক্তি বৃদ্ধি, আখাই মনোবৃদ্ধি দ্বাধা বিদয়ের আ-লোচন। করে। এই পরিমিত বিজ্ঞানীয়া কোথায প্রভিত্তিত আছে? "দপবে অকরে আছনি म॰ उप्तरंक ग्रेट्रक ্নেট অক্ষয় প্রম ৯,তে সং-लिशिय कारका मिथ, अथारन अरकरारत छहे আ থাব কথ। এক নিশাসে দল। ইইসাডে। থে সভোৱ জনো এল শক্তি অংশোলিভ ২ণযাড়ে ভাহে, এক কথায় ব্লাছে ৷ ৩৭৩ গদ্ধীর সভাকে সংক্রিপ্ত ক'ব্য সংগ্র মধ্যে আন। উপনিন্দেই দোখতে পাই। এই লোকে আমার বিশেষণে ক । শব্দ আছে। অ,আকে কৰ্ত্তা বহিম। না ক। নলে মহাএমে পাকিড হুইছে হয়। চলুসুৰ্ব্য ন্তেপ্ত ন্যায় খ্ৰিচেন্ড, পাশু পান্ধী, লোভে ভয়ে সাথ স্থায় প্ৰাব্ধ ৱব বৰে চলিভেছে। মনুখাই কেৰ্ম ' '॰ कद्द-रक्ष कथरन। পर्माभरण हेक्कारक निरमान कात्रमा छम्रक कहेरल्टा, कथाना व्यवस्त्री ানে , নিয়া বিশহে পড়িকেছে। আত্মার কর্ম্ব र कारपूर्व कार्वात कर्जना कर्या भर्या दहेगारह। মান্দ্রটা পশ্ব পশীর নায় প্রকৃতির নিয়নে दक र नाहे: तम धर्मात नियश्य बनीयान बहै-१८४, व्याप इधेश छेदकुके स्वत्वादक माहेबात अभिनात शहिए: एक, खबर मुक्कित **मार्गाटन मिन** ান ৷ প্রের্জেণ ক রাজ্যন্ত। প্রক্রান্তকে, পারুদ্ভিকে, পণানলে 'অ'জ্জন করিতে পারে বলিয়াই জাবাড়া पुरुष महरू लेक करेगाएक। धार्मिक निश्वार्थ सी-ীন পুরুষের আত্মা সাক্ষাৎ পরমারার একটি কুন্ত প্রতিকৃতি।

যাহারা অনন্ত ঈশবে মগ্ল ছইয়া আপনার কর্ত্বকে জ্বেতাহার সহিত আপনাকে হারাইয়া क्लान, ভाँशता कर्डवा धर्माटक छुलिया निया व-লিভে থাকেন, " কিনিছন ক্লা কামায় শরীরমমু-गरक्दत्र।" (द्रश्मात्रभादकाशनियम) कि इक्षा করিয়া আরু কাহার নিমিত্তে শরীরকে দক্ষা করি। তাঁহারা সংসারের কুশলের জন্য পরিপ্রম ক্রিডে ঢাহেন না। ভাঁহার। কর্তব্য কর্মের অনুষ্ঠানে বিরত থাকেন, ভাঁহার। ঈশবের প্রিয় কার্য। সাধনে উংশাহী হন ন।। তাঁহারদের জীবন নীর্দ शुक्र তকর নায়ে কোন ফল প্রদান করে না। ভাঁছারী ইহা অবগত নহেন্ধে ঈশ্বর আপনার **অন্ত** মঙ্গল ভাব আমারদিগকে যে দেখিতে দেন সে ইহারই জন্যে যে আমবা ভাঁহার দেই পরিত্র নঙ্গল ভারতে আদেশ করি, ও শংসাবের শভ কার্য্যে ভাহার অনুক্ষণ কবি। যদি উঁহাব সুন্দ্ৰ মঞ্জ ভাব দেখিয়াও সামারদের কার্গো ভাচরে অলুকরণ না করিলান, ভবে ভাষা দেখিবার ফল কি ? ব্রাহ্মপর্যা বলেন, আন্মার পর্যা-ছার কদ্ধ করিলে কথনো ভাহাৰ উথলি হলবৈ না , "মভানি প্ৰসদ্দ-ভবাং ধর্মান প্রমদি এবাং কুশলাল গ্রেমাদভবাং।" সভা হইতে বিক্লিল্ল কইবেক না, ধন্ম হল্ছ বিক্লি हरेदिक मा, ए छ कर्या वर्गेट विक्रिश वरेदिक मा। ফান-আলোকে আয়াকে উদ্ধান করিয়া সেই मना-त्रकारक जानस-त्रकारक भाग, की कि-जाद ভাগকে আন্ত করিয়। মেই মম্বল সকপকে পুকা कद ब्रवः धर्म वल नागाक बनीग्न'न् कहिया स्म हे ধার্মাবহ পাবত প্রপ্রে অনুকরণ কর প্রতিক্ষণেই ব্রহ্মানন্দ পুরস্কার হইবে। এক্ষপর্নোর এই आरमभ ।

DEFENCE OF BRAHMOISM, AND THE BRAHMO SOMAL

Gentieves. For me aware that a warm controvers, has been tagging for some years past between some Christian Missionards, and the leaders of the Calcutta Brahma Samaj about the truth of Brahmoism. The battle is growing thicker day by day, and, it amano, income speak aught, nightier combatants than those that have already appeared on the field, are grading their loins for the light, evidently than he Brah cosm to be no ordinary one. The foreign surewing darker and darker and greater fulum alreas in diffunctionings are expected to take place but without however, it may be safely guessed, the useful complement of showers refreshing to those who thus after truth.

According to one view of the controversy, Gentlemen it cannot but give us, Brahmes, believers in catholic religion, as we are, to mark the bitterness of feeling that has been created by it between the Christian and the Brahme, who both believe that the essence of religion is love, "love to God

^{*} Being a lecture delivered at the Midnapore Brahme Bomaj.

and love to man," and who are sons of the common Father with whom "verily there is no regard of persons, but in every nation he that worketh righteousness and feareth him is accepted" But in another view we cannot but be glad at the present discussion, for it is certain that our religion will come out brighter and stronger from the fiery ordeal, convincing men of its internal strength, and leading them to a clear recognition of "the light that lighteth every man that cometh into the world," but which is obstructed to our view by the mist of prejudice and passion.

It is my intention to offer, this evening, with reference to this controversy, some remarks on Intuiton, and the guiding principles of the Brahmo maj, in vindication of our religion and its principal followers, avoiding as much as possible the

odium theologicum.

It shall be my endeavour in this lecture to keep always prominently in my view the principle, that among all religious denominations, the meck followers of the catholic religion, for Brahmoism is the cannot religion, should exhibit in their own persons conspicuous examples of no-ligious toleration and love, never indulging in surcasm instead of argument, and in vitaperation in-stead of fair reasonage, invertiseing condor tor the sake of mere bychness. My unarks will not a lave reference to the arguments contained in at single lecture of a such Christian Misdonary bot to the arguments, advinced by Christian Missionsaries in general in this constrict against Brahmo sic-

The Christian Missionaries who attack the Brahano Somaji say that Intuition is resufficient to tive as a clear idea of god. I would aerooch these reverend gootles on to consider that resolution always presupposes a being that reveals the good risk of that being, his miallibility and holious, or else what he says cannot be b hered in Non the infalliplay and the perfect between of God necessarily noply his other perfertions. A restlation is not at all possible unless a Perfect Bons;

Now if we are able to knew so much clearly and distinctly I say, without a volution what i the necessity of it? Cannot all the other form, of religion, the most important for our salvation be deduced from the above? Has God male a natural provision for the gratification of every one of our natural wants and not for that of the greatest necessity of human nature, thirst after religion

knowledge?

Is not belief in God hunself, our Creator, Comforter, and Rodeomer, whose sweetness should perfune our whole life, and the beauty of wares holiness should ever be present before the eve of the mind, as light that clasps heaven and earth in its lovely embrace is before that of the body-1 ask, is not a belief in Ifim only quite sufficient for salvation without a belief in a Mediator i Is the assistance of a third party required for a son to go to his father? Is every man who loves tied with all his heart and strength and who loves his neighbour as himself, but who, from conscientions scruples, cannot believe in Christianity to be reasted in eternal bell fire? If that be not the case why then insist so much on the acceptance of a book revelation as necessary for salvation? Granted that a book revelation exists, what is its test? It cannot be any other thing than Intuition. Its test can neither be the miracles, which the apostles of Christ themselves said every false prophet coming in the name of Christ could work, not prophecies conched in the most enigmatical language, and

admitting of a thousand different interpretations, but the heart of man on whose fleshly tablets God has written the only true revelation. Suppose if a voice from the heavens cry out: "Oh man! lie! steal! bear false-witness! for lying, stealing, and bearing false-witness we the true road to salvation", could we believe in such a voice? Certainly not. Why could we not believe in it? Because its utterances would not agree with those of our own hearts,

It is plain therefore that "Intuition is our revelation and likewise the evidence of that revelation" The Biahmos cannot believe in any other revelation than what is contained in "The elder Scripture with God's own hand Scripture anthentic, uncorrupt by man"

Christian Missippines assert that it is evident that Intantion does not give us a clear idea of Gad because digrading notions of him are found to prevail among the nations of the earth. It cannot but be admitted that such degrating notions exist among manknal, but what is the cause? The municing about God is that there is a Perfect Mind in whom we entirely depend but them different nations have get different ideas of perfeetion. Rule nation believe true of a noise to consect in power only. As they are not chick by the sight of coll phase that of good they consuler if a greater man festation of power to do evil than good. Hence some nations believe the Dorty to be of an exit nature, as did the agreent dews, who thought God to be a realous and revengetur god. Rude nations consider such inless as and s'on ray cruel, as greater than those who are not so but as their ideas of perfective improve with then palgment they believe true greatures to he in power regulated by pisture and name.

The law of mogres, oppose to religion as to once things Is not process to be perceived in the source writings of the those times dor Was it not a great transition from the Flohina I Mosos to the God or the New I stament . " A change place no, the dealsh religion from less to love. home power to or our, from the potro a chod to the miny of Gol, man the satism of a material deal from this word to another from the contation critic sine of the latter up of the checken, to been, to been, soil shall been its non-dagmy from the and the corbodic and the sound, to the istill

analt voice

0 exceed thents cand on that it was three who has regal begind actions of religion to manhand a direct they did not possess them been his one across New this is a statement

marsh tothe all history

I would be samend, Gentlemen to your attention percent the 'Intellectual Sestem of the Universal' by off D. Colworth, whose hourd Christianity i care goutlemen in question would do well to mut to. This book contains minimerable proces of the existence of correct norms of the gotto of prevaling among the accient Greeks and

The Apostles and the Fathers of the early Christian Church w ro more liberal in their acknowledgement of the ments of the so-called heathens in this respect than our present Christians. Every one who has read the New Testament must recoiled the oft-quoted celebrated saying of St. Paul "The wrath of God is revealed from beaven against all ungodhness and unrighteousness of men who hold the truth in unrighteousness; because tha which may be known of God, manifested in them for God hath showed it unto _m. For the invis

the things of him from the creation of the world are clarly seen, being understood by the things that are made, even his eternal power and godherd, so that they are without excuse; because that when they knew God they gloritied has not as God neither were thankful; *but because vain in their imagination and their foolish hearts were darkened."

Now from the expressions "Ged hath showed it unt them", "clearly seen", and especially "they are without excuse", it is plain that the apostle behaved that the light of nature was quite sufficient to give man a correct knowledge of God Instead of flunking with our modern Christians that the to others did not possess correct knowledge of send, the said apostle did not think it beneath him to borrow a line from the Greek just Aratus " in him we live and move and have our being and another from the Dramatist Menander, " cvil communications compt good manners One of the leithers of the early church called Sociates St. Sperials on account of his noble life and still nobler death. Another was so struck with the beautiful religion and moral sayings found in Greek authors that he said that a man might judge either the ones of Christians were philosophers or the old purto, others me Christians

Turning from the one branch of the Arya manufestation of the religious sentiment the Rell eme to the other the Indian, others have been bar two great manifestations of the religious sentiment in the world, that is the Arvar and the Sheneta, I would recommend to the religious inquirer the perusat of the compilation named Brahmo Dharma published by the Calentra Samay many verifago. It ontains religious sayings selected from the Show on an treety snaple art so replete with so one to and beauty as to justify the assertion of Worker Schlegel of It cannot be defined that the early Indians possessed knowledge of the true field All the a writings are replete with scatiments and expositions mode clear, severely grand, as deeply emerived and reverentially expressed as 19 any human language in which men have spoken of their The Brahmo Dharioa also contains beauuful moral precepts rivaling in excellence any found in the Scriptures of other nations

Our reverend friends lay great stress on the point dor it was the Bible that brought life and immor tale's to light. If that be the case. Why is the Lone' is a future existence, and the distribution of the rewards and punishments so prevalent among mered non-Christian nations? Why are there such be entiful descriptions of the destination of the manan out found in their religious Scriptures? This hads us to believe that the immortality of the beman soul is as much an intuitive belief as or a revictions of the distinctness of the principle outlande which we call "I", from the body and or manufacturable superiority to the latter. This behil re future existence afterwards gains ample considered on from the moral attributes of God which require a just distribution of rewards and prints and its not witnessed in this life. Now believce as an intuitive truth is one thing, and giving at monstration of it to others, another. People may after fail in the latter, the they cannot ignore the belief, as was the case with the Grecian philose vie · Plato.

horsest demonostrations of the immortality of the soul arren in modern times are more satisfactary than those given in uncient times because the Source of theology improves with time just as other sciences, while the primary intuitions upon

which the science of theology is based are the same in all ages and countries. Some of our reverend friends account for the

Some of our reverend friends account for the noble and beautiful sentiments met with in the so-called heathen writers about God, immortality of the soul and the moral daties of man by the theory that they are derived from a primeral revelation. Now this theory rests only on the authority of the Bible. As the Lectures of our reverend friends against Brahmoism are intended to edify the educated natives, most of whom do not believe in any revelation at all to kazard an assertion on the authority of the Bible is as absurd as for an orthodox Hindon to attempt to convince a Christian of the correctness of his opinious by eiting in corroboration of them the thority of the Bhagavat Poorana, or Chontanya Chontanyatan tha.

Our Christian friends maintain that the Gespel has revealed the true plan of redemption for our sins. It will be going beyond my limits it I discuss the question how far the opinions entertained by modern Christians on the subject agree with the Christiant's of Christion even apostolical Christrainty, but suffice it to say that two e extertained or if by those whom our chirteen friends call heathers, (I beg to be pardoned as them for stating the simple truth) are superior to their The idea entertained of God by our Christian friend is that of an oriental despot who while panishing a criminal, look, more to his outraged hor or than to the good of the state or the amendnent of that eriminal. The opinica that God parishes exactly in the same way as a human goveraor dies who is not satisfied with only the repentimes of a cranmal or that punishment in the sense in which it is taken by mea's as much necessary in the divine actions of government as in the binnian is authropomorolatic. Air not the pings of remorses afficient punishment for our sins? If remore do not take place in the heart of a baidened sinner in this world, is it improbable that it may be awakened as his mind in a future state when his religious and moral susceptibilities along with his other faculties would be more improved than now? Will not then his own heart hea hell to him realizing the following description of Satan by the great author of Paradise Lost

For within him beil He brings and round about him, nor from hell One step, no more than from himself, can the By change of place."

Our reverend friend, if they impartially consider the subject will find it more consonant to the infinite goodness of God to believe that he punishes the sinner is a father door his child in order. to amend his conduct and not as a ecalous revengeful eastern treant to vindicate his own outraged honor. Our reverend friends maintain that not a single rel grous or moral truth has been discovered since the tome of Christ. Why since the Christ? We may say since the creation of man, for religious and moral truths are as old as the human race, although their purification, which may be compared to that of a valuable metal from its state of rude ore and the discovery of the several modes of demoustrating them are more recent as they are the work of twee. If no new religious of moral truth has been discovered since the time of Christ, another sort of discovery less been made that is that of the erroneousness of some of the beliefs of Christ, such as those in the propriety of sections in the existence of donils, and the efficacy of exerrism and in the occurrence of the universal discolution in his own generalism.

Among those beliefs, I desire to dwell a little on the first of them, that is his belief in the propriety of leading an ascetical mode of life. Christ, though perhaps the greatest religious genius the world has ever seen, was still an accetic. The those commonly met with in Asiatic countries. His not recognizing his mother when others pointed her out to him and his enjoining his disapples not to care for tomorrow's food or raiment; it short the gener I mode of life which he led, followed afterwards by his disciples proves that he was an ascetic. Now this asceticusm has been relaxed in Protestant countries although it exists in its integrity in Homan Catholic countries which after in this respect more christian than the former.

former.

Christian missionaries remark the diversity of opinions prevailing among the Frahmos. The same ruight be remarked of Christians by Brahmos 'the Brahmos, however have this superiority over the followers of exclusive religious that although an individual may have difference of opinion with the Somaj on minor points, he is reckoned a Brahmo if the agrees ressentials "Unity in essentials, variety in nonessessitials and toleration in all" might be predicated with greater correctness of the Brahmos.

than of Christians

After attempting to refute the arguments generally advanced by Christian massionane, against Brahmosan, I now proceed to vindicate the Samaj from the charge of vicellation which our reverend friends have brought against it. They say that the Samaj has passed through three different stages of religious opinion, namely those of Vedantism Rationalism, and Interionalism. This statement is not correct.

It must be frankly admitted that minor changes have taken place in the religious opinions of the Samaj but not in essentials. A belief independently of an external revelation in the One True God, One only without a Second' the creator and the preserver of all, in the immortality of the soul and the existence of the noral law, in the distribution of future rewards and punishments and in the paramo in necessity of worshipping God with love and learning a pure and blaineless life has been the distinguishing characteristic of the Somaj from the time of Rain Mohun Roy to the present. It has never believed in a written revelation except so far as it is consonant to reason.

Ram Mohun Roy cited the authority of the Vedas while writing against popular Hinduism, that of the Bible while disproving the doctrine of the Trinity and that of the Koran while attacking the absurdate: of Mahommedanism as in the Persian work "Towfatal Mohaediu" but ne was neither a Hindu nor a Mahommedan nor a Christian in his religious opinions. His biographer in the "Calcutta Review" says on the authority of his immediate disciples that before he departed to Europe he told them that after his death the Hindoos will contend that he was a Vedantist, the Christians that he was a Unitarian Christian and the Mahommedans that he was a Mahommedan but he really belonged to no existing religious denomination in othe world. The Cathelicity of Ram Mohan Boy wore a triple aspect; that of Vedantism towards the Hindoos, that of Unitarianism towards Trivitarian Christians and a still pures form towards the Mahommedans in whose case he had not to contest with the doctrines of Multiplicity or Trinity. In the case of the Hindon and Trinitarian Christians he thought it more proper to attempt to remove first from their minds the belief to many gods or three gods by attacking it with their own weapons than to presch pure theirn so them.

The essential catholicity of the religious opinions of Ram Mohun Roy plainly manifested itself in a theoretical form in the Towfatal Mohaedin" which by-the-bye was his earliest work and a very small pamphlet published by him in English, hearing the remarkable title of "Universal Religion" and in a practical form in the primitive constitution of the Calcutta Somaj In the Trust Deed of the Somaj building it is stated that it is to be used as a place of public meeting of all sorts and descriptions of people without distinction for the worship of the Author of the Universe but not "under or by any other name peculiarly applied to any particular being or boings by any men or set of men whatever". The sermons to be preached and the hymns to be sung therein " should have a tendency to the strengthening the bond of union between men of It is said that, all religious persuasions or creeds" in accordance to this principle, in the very infancy of the Sanaj Euravan boys used to sing Psalus of David in English and Hindu musicians religious songs composed by Ram Mohun Ray and his friends in Bengah

But Ram Mohin Roy was soon after obliged to give a more Hindu aspect to the Somaj for the propagation of the doctrine of the unity of Gal among his countrymen and that to such a degree that the Vedas which were now pronounced by him to be the chief guide of his followers in matters of religion were read in an adjoining room accessible only to Brahimias before public worship was held in the Samaj Hall and gifts were distributed to them on two or three successive Samaj anniversaries

It is however plain that Rain Mohan Roy did not consider the Vedus to be inspired compositions because while he acknowledged the Vodos to be inspired he in the same breath admitted the Christian Scriptures also to be inspired. His idea of inspiration was not that of a mic realous process confined to any single ago or nation but a gift coextensive with the human race. In the sense in which he acknowledged the Volles and Ciristian Scriptures to be prepared, he adoutted even cortain portions of the Poorans and the tant as to be inspired. In his preface to his Bengali framilation of the Ishopanishut, he says "Are not the Poorans and the Tintias Sha trus? They at. Shaskras because they also proclain the units of God? his opinion then, those portions only of the Poorans and the Tantras p -sessed Sansern authority which proclaimed the unity of God It is still more carries to relate that he held the works of the celebrated Persian part Jelaloeddeen Roomee, called by way of emisence the Moulana, to be inspired in the same some as the Vedanta His biographer in the Calcutta Review says that he once expressed his intention to retire in his old ago from worldly life and devote him elf to the study of the Vedanta and Mesnevi, the great work of the said Moulana It is evident therefore that Ram Mohun Roy's idea of inspiration was that of a process of spiritual illumnation and cestasy shared by all the members of the human race in more or less degree.

The intelligent portion of the immediate disciples of Ram Mohun Roy did not mistake the sense in which he called the Vedas a revelation. They partook of his eclectic spirit, quoted with almost as much enthusiasm a precept from the Tantras as one from the Vedas—a robase from a Soofee poet on the agreement between all religions as a sloke from the Bhagavat Greta, and spoke with rapture (I state from personal observation) of the religion of themselves and their great teacher as being that

of the wise of all ages and countries, as being in fact the universal religion

After the death of Ram Mohun Roy, the catholic character of the Somaj was not destroyed. Even while its leaders admitted the Vedas to be a revelation, they did so solely on account of the "reasonall bress and cogency of their doctrines" as compared with the other Shaster- of the Hindus and the religious Scriptures of other nations. They rejected the idea of a revolation appoint d by external cuidence. "The only ground," they said, "on which the truth of any system of behef can be maintained is that founded on the nature of the doctrines inculcated by it " "He doetrne of theology and the principles of morality thight in the swied volumes referred to appear to be consonant to the dictates of sound reason at 4 visilom -if these tenets and pleopts cury the name pea habit character of truth in them - the man who has recoved them e of continues to place his crust in their will have o classon to fear the vilupo alive sammes of un-godliness in respect to his i ligion?" (Vide Vedan-tie Doctimes Violacabed) The letter of Balai Debundro Nath Time published in the Englishman in October 1846 species of his religion as one who e-principle are educated by the dictates of that of nature and of brunan reas in and human hear, and by the ense of the misest of all ages and countries." The Previous M. Mullens, in his Essay on Vedantien Bedinnen and Constantly says "Though the Berham's claim the Velis as a nevelation of driver to the they look price ity spon the works of Vater as non-reasons teacher. From nature to Vitarial in the and because the Vita-(as they assert agree with nature therefore they regard voem as espired. He quetes in support of the chove assert on the t dlowing passage from the Vedonts Doct n - Visites 4 " I'm knowled re dit. The wall some son propulation deals with ctered teat's which require no other proof than what the whole creation and the rund of man by perverted by tallers a measurings all aid in about "mee" It is there me evident that the herbis of the Samaj at the corn considered the Vedas to be s verifed solely as a count of the reasonableness and cancy of the continues. Their error lay in behoving that wherever they contained was reasonable and cogent. As soon as they perceived then mistake affer a wider study or the Vedas, they shook it off BI or e Now why did they do so so easly? The resen , that a higher standard of belief had always predominated in their minds as shown by the ab constracts from their publications over that of sentime terriate in that is the standard of reason and in the rate is men they could not continue protessn bact be a revelation which was found to ed as grove

It soon still holds that only those doctrines and a son of a crous book that are reasonable in a consorth at the belief as revealed by God so a trountain of all truth. The present member of the outside of all truth. The present member of the district of the district of reason in its intuitive and district of the district of reason in its intuitive and district of the district of the groundwork, and reasonable of the superstructure of religion. As all structure is besid on intuitive belief and as the Sunature of multiple of the district of the industries of reasoning in the district of the industries the reckoned as an organication of multiple but as rather a development of the processive entertained.

Yea see then, Gentlemen that a belief in the most truths of religion independently of an external

revelation and on the principle that the reasonableness of sespectrine is the only test of its truth has been the chief characteristic of the religious opinions of the Samaj from the time of Ram Mohun Roy to the present. There . also another feature of the Samay which it has not rest from its first establishment to the present time I mean its Hindoo aspect as far as such aspect can be maintained in conformity with the principles of true religion. The service of the Samaj contains extracts from the Sha-tras, books held in veneration by the people of India trom ancient times In discussion with orthodox Hindoos, Slokas are cited from them by the Brahmos in corrobination of their opinions. practice has been adopted by some Christian missionaries also, giving a greater right to the Brahmos to its observance. The Brahmo Dharma Grantha or the manual of Riahmic faith consists of selections from the Shastras The same process of selection and retormation but not of extirpation is nowadays lang also applied by the Brahmos to the ritual and custom of Bengal Wnatever in them. is not opposed to the true religion and to right read son is being kept and whatever is so is being rejected The Brainnor cannot be blamed for displaying a certain degree of conservation in the work of reformation. For in tance what would an Euglish Theist have done in a similar case? Would be have at once rejected the whole. Bude and the whole of the old cerema all and customs. Certainly not "The natural result of the right of private judgment a principle of racem a pheable to all religious to paidy and to sportualize, by which the Jew ap, plying it to his Bills, the Hindoo to his Shastarthe Greek to his Place, the modern European of the New Jestsment the Millionamedan to the Kerao and so to the markind neight gradually become score uncod in a brotherly celectic feeling of piety and remotinee, to qually allowing variety of customs, and ensenting out of former creeds to beject the weeds and kep the flowers" Although Brahmore, is the purest form of Hinduisin and althor the burry has a Hindu aspect which it would be a amount step to destroy, its members, as becomes the

more indebted than to any other of those religious. The essential features of the Samaj have remained unaltered from the time of Ram Mohan Roy to the present but it has not however remained still since his death without making progress. The catholic religrou is essentially of an expansive character. One of its leading doctrines is that religion like other things is subject to the law of progress and that the religious ideas of man develop, expand and purify themselves with time The Sama, therefore profeslied its character had it remained stereotyped on the Vedantic plate of Ram Mohan Roy and not made any progress since his time when its religious opimons adoutted of progress The progress which the Samaj has made since the time of that reformer has been both of a negative and positive character. The negative progress lies in its abandoning its behef that whatever is contained in the Vedas, is reaonable. The positive progress consists in the clear-er and fuller recognition than before of intuition as the foundation of natural religion. I use the expression "clearer and fuller recognition, than before"! because such recognition is not of a very recent date us has been asserted to be. The Brahmo Dharma published about fearteen war.

followers of universal religion, are not backward to

acknowledge then obligations to other religious than

Hinduism, especially Christianity to which they are

has the expression ant a set after taken from the Mandookya Oopanishad of the Athana Veda, meaning that the proof of the existence of God is intuition only If any one to a over the file of the Tattwabedhiroe Patrika for Sakabda 1776, he will find an article headed the two first in which it is distinctly stated that our belief in the fundamental truths of religions is of an intuitive character. In some other articles published about that period, intuition was stated to be the primary basis of re-

The progress of Brahmotsm will ever keep pace with the ign. The latter can never outgrow our When a new science springs up, the memreligion . ner of A Same, do not require to take the infinite pain which the follows of other religions take with this is not with the creed the profess. "Por and that mestered of there being a natural much between religion on the one hand and we said second on the other, the latter exercises . . I the unifornee upon the former in refining and witing it With regard to the relation between science and religion, the Samai echoes the following sentiment of an English writer 'True seience and true religion are twin-sisters and the separation of either from the other soure to prove the death of both. Someopto pers exactly in proportion, as it is religious and religion flourishes in exact proportion to the scientific lepth in thirmness of its bass'. With regard to the relation between philosophy and religion, the members of the Samaj is an ody a factor the plid so head world and serves to respire us with the boso that sale by side morphism and than egent that vidosofully visits after this that natural religion and natural psechology, will friminghantly rise in harmony from the emilies of contending sects." In condomity with such views, the Samaj has always gladly admitted secentific and philosophical articles into the column of the Tattwabodhinee Pattrika. In short the opinicas of the Samajon this point can be thus summed up that there is no disagreement between Common Souse and Philosophy, between Reason And Revelation, between Theology and Science but that each his its own prescribed functions which must be preceted by those of the other in the building up of the grand editice of Theism.

Brahmo brethren who are present in this Hall, I have a word to tell you before I conclude. Con troversy with the followers of other religious we cannot avoid both for purposes of self vindication as of conversion but let us set an example to them in what spirit religious controversy is to be conducted Appealing to those sentiments which every religion has in common with Brahmoism for Brahmoism is the universal religion, we should try to wean the followers of other religious from their errors and prejudices in the spirit of charity and love, for we are children of the one common father. Let us recollect the remarkable words of the great founder of our religion "strengthening the bonds of union between men of all religious per-ussion and oreeds." Let us not lose our temper at the time of discussion. Let us not indulge in sarcasm instead of fair argumentation for sareasm but ill befits the most momentous of all subjects, religion. Let us not sacrifice candour at the alter of liveliness. Let us not for the sake of appearing amount loss sight of the duty of behaving fairly towarde the followers of other religious for

I see some of us are very fond of religious controversy but let us not give way to an over-fundness a religious being. Let us pay more attention to our own religious and moral improvement and that of our country than to how we will best acquit ourselves in religious controversy. Let us always cherish in our minds a lively consciousness of the Divine presence Let us in all our actions keep Him before our minds' eye as "an abiding presence not to be put by." While we are engaged in the duties of a worldly life, let us remember were in the presence of a Task-master whom we cannot deceive though we can deceive our earthly task-When we indulge in harmless pleasures and amisements, let us think of Him as a father who is observing the mirth of his children wa are holding a great religious festival let us consider Him as at once its spectator and object. When we hold a meeting for any other purpose conneeded wish religion than wordup, let us consider Him as its givat president. When reworship Him in the Samaj He'll blous adore Hen as the living deny of the temple. Let us in all our thoughts words and deed keep Him before us

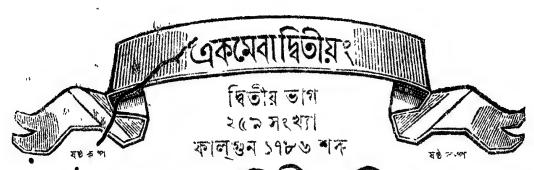
Let us be pure and body in our lives. show to the dolater that are religion is a dividend religion, a religion only to a taised or industry acted up to . The his make sher hees, for our religion and thereby show our earnitry men that we love it with all our minds, all our heart, and all our strength, then will they think that Brahmorsm is something and that it is not to be made light of Let us think more of our country's than of our own inferests. Let us direct our chief attention to the education and social in proveniers, it our women for it one half of our population by a duliness how can the other I all prosper that us he always up and denne for our count you mand the or transition and the duties

of those and he at such a period are not light. I ad God's our Fu're's our Savior's our Lessawilly critical time. To The velocity up one such country we are water Abea surrout the fight of the counter and for that slover an only consider tion and the darkness of dangers of our sit stion From The alme come strongth on (ort a ditass Forsake as not but infoso per se, himnes and fortitude into our soil so that we may strind as withnesses of Thy glory to generations to come

পুস্তক বিক্ৰব।

					यूना
ব্ৰাহ্মপৰ্যোৱ অনুষ্ঠ'ন-পদ্ধতি					No.
बर्शकिशिर (छि हर्षाम होतु	্র প্র	(* * **)		110
শিশুপালন		• •		• •	10
à	২য় ভাগ		• •	••	100
विदम भी	ोग्र आहक्ति	গের	নি কট	নগদ	भूगा
ৰাজীত পুস্ত	ক প্রেরিত ই	हेद व	A11 *		
		0			

ফ্লিকাতা ব্রাক্ষ্মমাজের ১৭৮৩ শকের পৌষ মাদের আয় বায় বিবরণ।	" शीकावत वरकाशिकाषात्र > " वतरशाधिक सम			
हम्मान व्यक्तिय अस्य नाम स्वयंत	" পার্বভীচরণ হিন্দাপাধ্যায় >			
আয়				
ভব্ৰোধিনী পৰিকা ১৭১৴•	2840			
वश्रीलय >8৮15व	द्वांषधर्म आठात क्रम्भान ।			
पृष्ठक विकास ৫১५०	জীবুক্ত প্রসরকুমার সেন শুপ্ত ১০,			
हिन्द्रभाष्ट्रल	" রাজারাম মুখোপাখ্যার ১			
पुनास्त्र हेरे विक्रम राजे २०	"দিননাথ মজুমদার ১ ৷৷ ০			
मिक्क १॥४३०	" (ग्रांनाच्या मिक 5			
to the constraint of the const				
೨ ৯8i∂∫⊅¢	2.0110			
ব্যয়	.of4c			
যাসিক বেছন ৮৭॥০	नाग्र ।			
श्रीयुष्क विकारकृषा भाषामी श्रामी श्रामक , . 💛	ঞীযুক্ত বিজয়কৃক গোশ্বামীর ঢাকা গমনের			
পজিকা যুক্তান্তন ৩০	পাংখেয় ১•			
शक्तांवर ५१२√३	भान्की खाडा ।०			
भूखक रूमक्षित ⁹⁵	বিল দর্কারের হাওড়া পারে ঘাইবার বায় ১১০			
স্বকারের ক্মিশ্ন ১০০০ ১০ ১১ ৮৮১০	1			
ण्ड क्ष्र राष्ट्र	20170			
が破事 、	জায় ১৮০			
урбардыйдын пересение го. Б	वाम्र ১०१১०			
9971/24	5.00 10.00			
and the second s	হিভ			
আয় ৩৯৮৮৮/১৫ প্রক্রিয়ে হৈছে	জী প্রভাপ চন্দ্র মঞ্মদার।			
প্রকার হৈছ : ৫১:১/১০	কলিকাতা ব্ৰাক্সমাজের দান সংগ্রাহক			
8844/c	নিঘুণ্ট পত্ৰ।			
»¿/// PPC ETS	প্ৰতা			
	श्चाहार्रमात्र डिश्नंदम् ।			
Fg™	क्षीवरनंत्र श्रवकुष्ठ वावहांत्र २०%			
क्षी दिस्कल्पनाथ ठाकुत।	बिरमारजात शार्करतत शक ५७८			
ज्या विषयनाय अपूर्ण				
	छवानी পুत्र उक्तविमानदग्र छेश्रदम् ५००			
	हर्द्रांक)कर			
ব্ৰেক্সিলের এইতি জাত সাস্থ্যবিক দান।	আয় ব্যৱের বিবরণ			
नी कार्यशास्त्र करा ८ अधाक नाम के नामिन्द्र नाम र	אין			
শীযুক্ বিহারীলাল ভটাচার্য ৫				
श्रीयुक्त विश्वतीनांन अग्रीकार्या	তত্ত্বোধিনী পত্তিকার মূল্য নিরূপণ।			
শীবুজ বিহারীলাল ভটাচার্য ৫ ব্যাহমাণ্ডন দে ৪ অভাশিচন চটোপোখায় ২4°	তত্ত্বোধিনী পত্রিকার মূল্য নিরূপণ। ভাগিয় মলা (কলিকাড়ার জনা) ৩৩)			
শীবুজ বিহারীলাল ভটাচার্ব্য	অগ্রিম মুবা (কলিকাভার জনা) ০৩)			
শীবুজ বিহারীলাল ভটাচার্য	অগ্রিম মুবা (কলিকাডার জনা) ০৩) ল (মফঃখ্লের জনা) ৩৭০			
শীবুজ বিহারীলাল ভটাচার্য	অগ্রিম মুবা (কলিকাতার জনা) ০৩) ও (মকঃস্লের জনা) ৩৭০ মাসিক মূলা			
শীবুজ বিহারীলাল ভটাচার্য	অগ্রিন মুবা (কলিকাভার জনা) ০৩) ও (মফংখ্লের জনা) ৩৭০ মাসিক মূলা ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷			
श्रीवृष्ण विश्वतीनांन छ प्रोहार्या	অগ্রিম মুবা (কলিকাভার জনা) ০৩) ও (মফংখলের জনা) ৩৭০ মাসিক মুলা ৷ এক থণ্ড ৷ এই ভদ্ধবোধিনী পরিকা কলিকাণ্ডা সপতে সোধ			
শীবুজ বিহারীলাল ভটাচার্ব্য	অগ্রিম মুবা (কলিকাতার জনা) ০৩) ও (মফঃখলের জনা) ৩৭০ মাসিক মুলা			



তত্তারোধিনীপ্রতিকা

প্রশাগ্রকমিলমগ্রকাদীশ্বান্ত কিংল্পাসীকৃদিদেশ সর্কাদসক্ষণ ও দ্বানি গ্রাণ স্কানপ্রকাদিক স্টেগ্রিক শেষাক ১০ কিউছিং স্কার্যাপি স্কানিক্স দ্বাশিলস্কানিত বক্ষাক্রিক দ্বাস্থাবিক নিজি ক্রিক নিজি ক্রেক ১০ টি প্রকাশি বন্ধ বিশ্ব ক্রিক ইম্ভিক শ্রম্ভাবি । ত্রিম ক্রেটি এবসং ক্রিকে ম্যান্ত ক্রেটিক নিজি ক্রেটিক

পঞ্চতিংশ সামৎসরিক ব্রাফা-মনাজ।

१५ माच ५१० ४ मान ।

जेश्वह धनिष्ठ > मिर्यन स्टब्र्सन অতি সমারোহ পুর্মক স্থান কলে সংগ্রা হইস। গিয়াছে। এ বংগরে আনাধ্যনে প্রধান আচার্যা মহাশ্যের **इ**ब्रुच अध মলেখনবের কেত হইরাভিল। ন্যান ধিক সহস্র লোক সমাগত এইয়াজ-লেন; অন্যান্য বৎসর স্থানভোবে অনিক: তেও অনেকে পরাধার হইয়া বহিগত হইতেন, এ বৎসর এই রুহ্দায়তন কেনে সমাজ ভঙ্গ পর্যান্ত সকলেই স্তব্যিত হইয়া নিবিদে ভক্তিভরে মনের সাধে উপাদনা করিয়া ছিলেন। উৎসব ভূমির অন্তর বাহির নবপলব ও স্বদৃশ্য কুস্থম মালায় স্থােভিড হইয়াছিল। সন্ধা ৭ ঘটিকার गमदा क कृष्टिक् भौताक माना स्मा अविकास इहेल, উৎসব ভূমি মনোহর বেশ ধারণ করিল, এবং আচার্যোরা বেদীতে উপবে-गम कतितल शत प्रकृषिक भिष्ठक रहेन, उ '' आक्रि णामात्रदेशका मदराष्ट्राय " वह छ९.

মাধ্যর উলাস্কর ব্রহ্মনান্দীত সংক্ষাত তালোগাসনা আবিস্থানীক ব্রহ্মনাত শেষ হ্বী। মান বু ১ছন, কলার আবি ওলালপ স্মাজের স্বোল বিকাশ নাম্যার প্রক্রা পদ শ্রীয়ু তা কিম্যান্ত ব্রহ্মন্ত ব্রহ্মন্ত ভাবে দ গুলিমান ধ্যাতি উবি হাতি ক্রাব্রেন।

"নতেলে কি আ গুলা নাহল । যে নান জির হৃদ্যো মতেটে প্রতিটা ধর্মিন এই मर्खा भारति भारिताल । एवं श्राप्तात । । ३ গৌরবারিত হন, যে দেলে সংগ্রাং । मण्डालिह इ. (म (भन एका एका राष्ट्रा कारान अभीत बांबल उ माडित बिक्टन स्थ। মত্যা কাল্বিয়া নিজস্থ ধন নতে, অগচ শূলকৈ मक्रान्त आहरात। गरः घरधः नाम नत्म, मम्। छेद्र७ असुभठ नत्म। हेडांद्र निक्ट न जान-थामान थ म। कृषीत छ उस् मभार। भगवाम ७ निर्वन मनरवार है कना ইন্র লেড নিরপেশ ভ'বে প্রদারিত রহিরতে বুল লোক-বিশেষে প্রথবা मस्यायः विद्यारम् पार्थयो स्वाजिः विस्थारम् विक्ती करण गारे। इंडा प्रत्म ७ वस नटर. সময়ে ইহার আধিপত্য। সভা মহৎ ও

उमार । इंश आवाद जीवस ७ वलीयांन्। ইহার আধার নিজীব জ্ঞানও নহে, তরল ভাবও নহে ; জীবনই ইহার আবাদ ভূমি, জীবনেতেই উহাত যথার্থ প্রকাশ। নমুদায় জীবন স্বর্গীং বলে সংযারকে পরাস্ত করিয়া, পাপ, তাপ ও মৃত্যুকে পদানত ব-রিয়া, ঈশ্বরাভিমুখে উন্নত হয়; তথনই স-ভোব প্রকৃত মহিম: প্রতীয়দান হয়। বাস্ত-বিব সভাই খামালিগের জীবন, এবং বে পরিমাণে আমরা সহা হইতে বিজ্ঞা হই, নেই পরিমাণে আমরা জাবন-বিহান ও জড় ভাষাপন্ন ইই। সভোৱ ৩ ৰূপ জীবন্ত বল যে উল্র ক্রামাত্র ক্রিলে অমা-মিশার অংভণ তমেজাল ছিল ভিলাহয়, ইল্ব गः स्थान संदित भण्डामायक दर्भ मक्षिण हुन-লায়তন হা প্রাণি চল এইফ মায়: নিরাশ মুখুৰ্ব বিভিনৰ জীৱন ও নৰ উদাম প্ৰাপ্ত **५॥ : व्यां ५ फुरत न जीत दान्ति समा वीदतद** गा। वीमावान हर, धनः अधि मामाना कुछ टांडि ६ मगारें प्र. जिंड खड़ार्प मं≉ख मे-হস্তালে ক্ষেত্র সমলে বনীকুত ফারয়। ভাগার re हाता श्राम्यान् लका मरमारम कवियो लम। गढ्डाब वटचढ़ मिक्टिंगे उड़ान-वल धन-दल (मर्-तन मक्तर भता एक रम्-- (क्रत भता-ভুত হয় এমত নছে, কিন্তু আবার অনুগ্র नारमत ग्रीय विश्वत भारतियाँ करता। वह প্রমাণ স্বারা ইভা সিদ্ধান্ত করা যাইতে পারে যে ঘালারা ভ্রন্তর বিকট মূর্ত্তি ধারণ পূর্বক ৰজ-পার কর ও থড়্খ-হস্ত হইয়াসত্য-পরায়ণ য়া তিব অনিষ্ঠ মাধনে **প্রবন্ত হয়, ভা**হারাই আর্থর সম্ভিবিলয়ে সেই ব্যক্তির **দেবা করে** া হানুপ্রি' হইয়া ভাহ'র আদেশানুসারে ८८ ा महिमा कीर्डन कतिरु शांदक। কি অভিযা সত্যের মহিমা ।

এই উলার ও জীবস্থ সত্তার উপরে

 অন্তরেশের পবিত্র তান্ধর্মন সংস্থাপিত;

ফলতঃ সভাই ব্ৰাহ্মধৰ্ম। এই জনাই ব্ৰাহ্ম-অধিকার। ইহা थर्णा गकन् मञ्जूरमात यमन ভারতবৈধ্ব, জেমনি ইংলত্তেরও ধর্ম; ইহা যেমন পূৰ্বকীলেব, তেমনি বৰ্তমান मभटखत्र अर्था। देश (यमोश स्थमन×ी नाना-বিদ্যা-বিশারদ পণ্ডিতদিগেরী, তেমনি সরল-চিড রুশকদিগেরও ধর্ম। অন্যান্য ধর্মের न्याय रेश क्रांकि-दक्ष वा मख्यमाय्य-वक्ष नदह। ইহাতে জাভির গৌরৰ নাই, দেশের গৌরব गार्छ। मकल मसुधारे श्राडावटः खान्ना यिन যে পরিমাণে স্বঃভাবিক নিশ্মল জ্ঞানের অনু-সরণ করেন, তিনি সেই পরিমাণে ব্রাহ্ম। ম-নুযাজার দহিত বাধাবর্গ দনব্যাপী; আত্মার স্বৰণমই ব্ৰাহ্মবৰ্ষ। দেশ কাল ও অবস্থা নি-বিশেষে দকলেরই ইচাতে অধিকার। জগৎ আমারদের দেব-মন্দির, প্রমেশ্ব আমা-দের উপাশা দেবতা, স্বাভাবিক জ্ঞান আম:-দের ধর্মাশান্ত,উপাসনা আমাদের মোক্ষ পথ थांज्रश्रक्त ग्रारपत थांत्रिक छ, मांत्र वर्षक मार्वाई आमारनद ७क ७ त्नल। कई डे দার ব্রাহ্মপর্ক্ষে সাম্প্রদায়িক লক্ষণ কিছু নাই, ইফাতে বিরোধের কারণ নাই। ইহা স্থারণ সক্ষাত্ত। স্ক্রাং ব্রাক্ষমাঞ্জ স স্প্রদায়িক সমাজ নহে; ধাঁহারা এক মাত্র অ-দ্বিতীয় গরব্রন্ধের উপাসক হইয়া **ভাঁ**হাকে প্রীতি ও তাহার প্রিয়কার্য্য সাধন করিছে रेका करतन, कीशिंगरिशत है अहे गर्भाक।

পঞ্জিংশ বর্ষ পূর্কে এই ১১ মাঘ দিবনে অসাধারণ-ধীশক্তি-সম্পন্ধ, অত্যুদ্ধতপ্রশাস-ক্রদয়-বিশিক্ত মহাদ্ধা রামমোহন
রার এই ব্রাক্ষাসমাজের স্থ্রপাত করেন।
সেই দিবসে প্রীতি-বিক্ষারিক স্থানে তিনি
সকল দেশীয় সকল জাতীয় লোকদিগকে
এক সাধারণ উপাসনা-গৃহে সত্য-স্থাপ
অন্ধিতীয় সম্বরের উপাসনায় জনা আহ্বান
করিবেন; এবং ব্রক্ষোপাসনা-রূপ অমূল্য

ধনে সকলেরই যে অধিকার আছে এ গৃত প্রতিষ্ঠা ছারা জগতে এই স্থান্চার ঘোষণা করিলেন। সেই দিন অব্ধি ক্ত শত লোকে এই खान्नगगाब्बदु अभीउन बाजर नाड कतिसा बाक्यर मैत गाशस्या मरणात थ-मारम, क्रमंत्रक ध्यमंख कतिशास्त्रम, मनरक উন্নত ক্রিয়াছেন এবং আত্মাকে পবিত্র করিয়াছেন। দেখ কেমন আশ্চর্য-ৰূপে অংশে অংশে ব্রাক্ষমমাজের বিস্তৃতির সঙ্গে मत्क भावित ताका, थीं जित ताका, धर्मातिर হ্ইতেছে! কত শত লোক সাম্প্রদায়িক भवन अकाव मुख्या ছেनन भूकीक धमरा হৃদয়ে সচ্চার সাধারণ ভূমিতে সকলের ন্হিত উচ্চতম বিমল্ডম সমুদ্ধে আৰিছ इटेट्ड्रह्म; विद्युष, ख्या, विवाप, विभागान ३३८७ युक्त इहेश नितृ त्थक मत्न गक्ल क्षांति ७ वर्षा-मच्छानाग्न इन्ट्रेट वर्षा ब्रह्म मक-লন কবিতেছেন, সকলের সহিত মিলিত হুহয়া বিবিধ হিছকৰ কাহা সাধন ক্রিভেছেন, এবং উন্নত প্রীতি-যোগে দকলকে ভাত। বলিয়া আলিক্ষন করিতেছেন। দেখ, জগৎ যে পরিবারের গৃহ, ঈশ্বর যে পরিবারের পিতা মাতা, সেই পরিবার ক্রনে চতুর্দিকে शाश्च इहेटज्रहः वहे मत्नाइत मृणा मः শ্ৰন্থিৰ কাহার চিত্ত ৰা মহেলাগে অদা উ॰कुल रहेरण्टर, जांकाधर्मात महिमात शित-চর পাইরা কাহার শরীর না রোমাঞ্চিত क्ष्रेटलट्ड ?

রাজ্বর্পের উদার ভাব দেখিয়া অদ্য বেষন মন প্রশৃষ্ট ইইতেছে, তেমনি ইহার লাভর্যা অগাঁর পরাক্রম দেখিরা আমারণের আজা উৎসাহে প্রজ্ব লিভ হইতেছে। এই পঞ্চকিংশ বৎসর মধ্যে ইহার অগ্নি এ দে-শতে কেমন উজ্জ্বল ক্রিয়াছে; কভ কত প্রবিভাকার বিশ্ব বিপত্তি, কভ ভয়কর ক্-সংস্থার ঐ অলিভি ভাষীত্ত ইইয়াছে।

শত সহস্র বর্ষে যে সকল কুদংস্কার এদেশে বন্ধমূল হইয়াছিল, তাহা ব্রাহ্মধর্মের বলে मभूत्व छेश्यां हिंड करेट ब्रह्स, मभूषत्र ভाরত-वर्स रा मकन जरमद्र आञ्चन जाहा करम চূর্ণ হইতেছে। এই ভারতভূমি পৌতালক-তার ছুর্গ স্বরূপ, ইহা কঠিন অভেদ্য কুসংস্কার প্রস্তরে নির্দ্দিত,অগণ্য পরাক্রমশালী বিরোধী বিপক্ষের সভ্য-পরায়ণ ব্যক্তির প্রাণ পর্যান্ত বিনাশে প্রতিজ্ঞান্ত হইয়৷ নিঞ্চাশিত খড় গ্ৰ ধারণ পূথাক প্রহরীর ন্যায় নিয়ত ঐ তুর্গকে রক্ষা করিতেভে; মেই ছর্গের মধ্যে রোক্ষ ধর্মের জরপতার। উক্তীবদান, এবং দেই বিরোধী দলের কত কত গোক একংগে মন্তা ধম্মের পদাবলু ি ১ত হইতেছে। এপু বা ক্ষের মতের প্রভাবে আপনানিগতে ৬ পরিবরি এবং স্বলেশকে । । । । । । । । । इंडेटर अगुङ कतिया श्रीनक् मदन र-११% করত সমুদয় ভারতভূমিকে নিনাদিও 🗥 🌣 তেছেন। সক্ষাজনান্ ঈশ্র বাঁহা দের महात्र, এবং की वच ख्राच भाषा धाइति। रुत्य, खेशिराय निकड़ि त्य विक्रीय कीर অম নিচয় আপনা হইতে বিনাশ খ:৪ হইবে, ইলাকে অর আশ্হয় কি : রক্ষা বলের মন্মুথে কি পার্থিব কেনে বল জি-তিতে পাটাও বেং, ক্রমে কেমন পথ পরি-ष्ठ हरेगाटा। भरिवात बदया शिका गाँचा, পুত্র করা, ভাষ্ঠ ভারনী সন্ধারে মিলিভ হট্যা নিসিশে অচিতীয় ঈশ্বন্ধে উপংসমা করিজেনের, চাল্রা গ্রাইব লাবে জ্ঞানের সহিত লাভাগতে আলিজন করিতেছেন, যুদ্দেরা সংখ্যাতে উদ্দিও শ্রেয়া ইহার সভা मकल अलुप्टीटर राति। च कविट्डट्छन, रका-मल-ऋषत महिनाड़ा निश्वक धौिक-भूटका ব্রহ্ম পূক। ক্রিভেছেন। এ মহ্ৎ ক্ষয় কেবল মতোরই বলে, এমন রম্ণীয় শোভা কেবল जाकाधर्मात्रहे मोमन्या।

आम्बर्ग अमार्कात डेलगटर अभिष एक. छिल्लेन अचि १ **कुछ** स तल **म**माक् याल कार प्राथम कड़ अवर विश्व अस्य जिल्ल ্ত লোচনা করিয়া ঈশ্বরকে ধনাবাদ কর ्र भारताकी पर्दात्त कवा छन्न विका कन्न ०८६ क मरस्यमत्वत एथार्थ स् ५५१म। গত ব্রু হান্ত্র প্রসালে নারভত্মির দক্ষিণ ল পশ্চিম জেপান তালিকা প্রচারিত চট-२ १५ वर्ष अभितिक नाडलेन छएमधि र का भगरक नहेंगा। तालामगाध मासामग द्विश्वीष्ट्रमा वस्तुमालाहान मामा विद्या প্রচায়ক, দক্ষের পারিক্সনে ত্রাক্ষধর্ণের উ উন্নতি হল্মাচে: প্রাক্তমা গেচাচ পরি प्राप्ति बहुद्धि गुल्म , तकु कृत्व कृतिक ०३ र १५ इक्षा । सुरूष म अमृति महिना संस्-大王(1) 对 海军有 指确则 1、河南蜀黍 (4) 屬的 राम अवस्य दक्षेत्राचर । इति तर्वक्षा उत्तरिक पर्य रिट्रंड कर । अह स्वित्य प्रदेश स्त त ७२ हा। याति भक्ति छुट लक्ष्य हुन्हें eইবৰ ে ুপুৰ্বৰ প্ৰেল্ডিৰ প্ৰেছি কে ,बर्धक के वे वे वेब ६ ४ किया है। अहार स्टब्स ब्राह्मक के कि करें हैं। इस के कार्य के निर्माण গক্ষাবলকীয়া ভালিজিকার আহি অবেশক্ষাক্র হ भुताल ए बाका ध्वेकाम बहिएडाएग। ८६ दालिक्ट ५३ ५४ और , नजासुनान ्रिमप नभाग अस्तरत मञ्जो इर्शिट्डन এবং শাহার ক্ষেব্যে, বিশ্বাস করেন না জ্ববৈতি তিল্ল বৈশিক্তবিদের মহ**জ্ব দে**-, शेशा तक, एक (के १५) व्यवस्थ न निष्ण्डित। গে চন মাল আছে লিডে গ্রন্থ অধ্যবসায় १६२ असे १६५ कर स**ंशा अहांदा**त ८० विकास अप - स्टे**ट्ड्स् मभूत्र** তিল এই ত্রাজধন্য পরিবা**ও হইবার প্রবা** েলে। তেওঁ, বি । • বি । তে বিশ-পরায়ণ भागाता । ८११ राजालकार्यात् वीक करेश। ্র নেকাৰ উবলো ভারত-ভূমিতে রৌপণ

কর। গে অমূলাধন লাভ করিয়াছ, তা-্তে কেবল আপনাদিগের অভাব মোচন ি করিয়া শ্যাতে বয়ান থাকিও না, কেবল শাপনাদিগের আত্মন্তক চরিতার্থ করিয়া ফশ্তে থাকিও না। দেশস্থা দাতা ভগিনী দিলের আহার রোদন-ধনিতে বোধ হইতেছে যেন গগন বিদীর্ণ হ**ইতে**ছে , ইন্ফারা রেন চতুর্দিব হই তে ব্রাহ্মসমাজের আশ্রর প্রার্থন কারতেছেন, ইহার উদার অদাত্তে অংশী < नेदांत कमा উटेक न्यदः विलाः : कतिराहर हमः ज्यागतः कि ध नगरत भय' भूगा-अपरय छ পেনা ফরিব ৷ না গাবিকত ভাবে আর নাণিবের তাপে মুখ এদশন পুরুষ ধর্ম निषाञ्च आङ्गिनगरक धनाम्ब क्रिक्ट भाग दिनीर छोत्र आचम कतार र् ধর্মা হয়। তারী ছাত। ও জুনিটো ক্রিনী ।পথকে আ,শ্রম্পিবার জন্য চাতুক্তিকে ধারিত হল, মধ্য দ্বারা হা বিত আহোকে পারভূত रहा, अधि वाहि जाता । अधान कामाक 制度制 巴沙丁

তে পরমাধান । কুমি আমার্থের পির ও প্রাভু , গালতে দুচ্বেত , ইয়া চির দিন ভোষার প্র নের। বরিতে গোরি, ও কোন একাপ্রতা ও ধ্যাবল বিধান কলা আমার দের বন নাম্পান্ত, আমার্রদের শ্রীর মন, আমাদের লান ম্যানি।, সকলই ভৌমাকে অর্থণ করিতেছি, ভূমি আমার্রদিগকে স-স্পূর্ণকাগে ভোমার মঞ্জা কার্যো নিয়োগ কর, যেন ভোমার মঞ্জা কার্যা নিয়োগ কর, যেন ভোমার আজ্ঞা পালন করিয়া, ভৌমার ব্যক্ত নার্থক করিয়া এই স্কৃত্ত জীবনকে সার্থক করিতে পারি।

'ই একমেবা**দ্বিভীয**ং

অনশ্র শ্রীযুক্ত অযোধানাথ পাকড়াশী মহাশর তা উল্লেখন এই উদ্বোধন ছারা সকলের মনকে জাগ্রহ ক্রিলেন বি

এই সম্বংসর মার করুণা অবলক্ষ্ম ক-রিয়া অবাকার উৎসব-ক্ষেত্রে সকলে সন্মি-লিত হইলাম, সম্বংগর যার অ ভর-ক্রোড়ে অবস্থা করিয়া রোগ-শোক ভয় বিপত্তি क्टंट खेडीर्न इक्ट्राहि, याँकांत्र ध्यानिक्रन আমারদের জনা নির্দ্তর প্রসারিত আছে. য়ুনি মণ্যে মণ্যে আমাদের আত্মাতে আবি-ভূতি হুকুরা আমাদিগকে পাপ তাপ হুইতে নিস্তার কবিয়াছেন, অদ্য সমস্ত দিন ঘঁছোর পবিত্র সন্মিকর্ষ অন্তভব করিয়াছি, এখনই वाहात (अपनुनं हक्कू आमारमत कना अकः শৃত দেখিতেছি; তাঁখাকে জ্ঞান-নেত্রে প্রতাক্ষ কর, জাঁহার নিকটে ক্লন্য দ্বার উ-প্লাটন কর, তাঁহাকে কৃতজ্ঞতা উপহার দাও, তাঁহার চরণে প্রীতিপুষ্প বিকীণ কর, ভালার নিকটে শুভ বৃদ্ধি ও ধর্ম বল প্রা-র্থনা করু, ঠাছার উপাদনা করিয়া এই ক্ষুদ্র জীবন চরিতার্থ কর।

অন্তর আদি অত্যে ব্রক্ষ-সঞ্চীত সত কৃত স্বাধাবিত ব্রক্ষোপাসনা পরিসমাপ তইলে. পূজনীয় শ্রীযুক্ত আনন্দচন্দ্র বেদ্ধি-বালীশ মহাশয় উৎসাহস্কর্পরে ব্রাহ্মবন্ধের অধ্য প্রতের চতুর্ক্ষ অধ্যায়ের এই তিন্দী শ্রুতি ভাৎপর্যোর সহিত্ব্যাধ্যা করিলেন—

বোবৈ ভূমা তং মুখং নাপ্পে মুখমস্থি।
ভূমৈৰ মুখং ভূমা ত্বেৰ বিজিজাসিভবাই। ১।
যিনি ভূমা, যিনি সহান্, তিনি মুখস্বৰণ; ক্ষুদ্ৰ পদাৰ্থে সুখ নাই। ভূমা ঈশ্বরই সুখ স্বৰণ; অতএব ভাঁছাকেই জানিতে
ইচ্ছা করিবেক।

मञ्रुरगत मन পরিমিত ক্র পদার্থে কথনই স্থা ইইছে পারে না। সেই ভূ-নাতেই আমারদের স্থা, অপ্প বিষয়ে স্থ নাই। বিষয়-সুখে আমারদের আত্মা ভূগু ইয় না। বিষয়-সুখ সক্লই কণ্-ভলুর, অতীব ক্র-কথনো বা ধর্মের অনুকুল,

কথনো বা শতিকুল; কথনো বা দেব। কথনো আল্লা। সেই ভূমা ঈশ্বরই আ মারদের ভৃপ্তির স্থল, আমারদের পনিত্র শান্তি-নিকেজন। অভ্ এব ভাঁচাকেই অ-থেষণ করিবেক, ভাঁহাকেই জানিতে ইচ্ছা করিবেক॥ ১॥

সভগরঃ কন্মন প্রতিষ্ঠিতইতি বে মহিনি। ১।

শিষা জিজ্ঞাস। করিলেন, ফে ভগবন্। তিনি কোথায় প্রতিষ্ঠিত আছেন। আচার্য্য উত্তর করিলেন, তিনি আপনার মহিমাতেই প্রতিষ্ঠিত আছেন॥ ২॥

প্রমেশ্বর নিরালয়, স্বচন্ত্র ও মুক্ত স্থ-ভাব। অনা সকল বস্তু যেমন তাঁলাকে অবলম্বন কবিষা স্থিতি করিতেছে, জাঁহারই উপর নিছর করিতেছে, তিনি ওজার ক। হাকেও অবলম্বন করিয়া স্থিতি করেন ন।। এই বিশ্ব-ৰূপ শৃখাল ভাঁচাতে আৰ্দ্ধ থ'-কিয়া লয়মান রহিয়াছে, তিনি এক মাজ শঙ্গুনু ৰূপ ইটয়া সমূদ্যি ধারণ কবিয়া আন ছেন, কিন্তু তিনি কিছুতেই আবদ্ধ নহেন, ভূঁ।হাকে কেছ ধারণ করিয়া বছে নাই। দেই নিরবলয় পূর্ণ ব্রহ্ম স্বীষ্ম নহিন্তেই অবস্থিত কবিতেছেন, আপনাতে অংণনিই নিভা রহিয়াছেন: ভাছবি কেছ ধনকও নাই ৫বং তাঁছার কেছ আত্রয়ও নাছ ।। ১॥ महराष्ट्रसार भनेपदिलीए मन्नार मनुत्रसार मन्भिष्काः नर्देख्तकः। श्रेभाटनापुत्र छतात्रा मध-नामा मडे माः। १।

তিনি অংগতে, তিনি উর্কেতে; তিনি পশ্চাতে, তিনি সম্মুখে, তিনি দক্ষিণে তিনি উত্তরে। তিনি ভূত ভবিষাতের নিয়ক। তিনি অদাও আছেন, পরেও থাকিবেন। ৩।

কি উদ্ধে, কি অধোতে, কি পশ্চাতে; কি শশ্বুথে; কি দক্ষিণে, কি উত্তরে; আ-মারদিগের চতুর্দিকে সকল স্থানেই তিনি দাপামান রহিয়াছেন। আমরা যদি প্রতশিথরে আরোহণ করি, দেখানেও তিনি
বিনালমান, যদি গভীর সমুদ্র-গতে প্রবেশ
শরি, দেখানেও তিনি ওইমান। দিবাকরের
মান্তে কালের কিরণে যেমন তিনি অপ্রকাশ হিষাছেন, তজেপ তামদী বিভাবরীর
অপ্র-ম তিনি ইটার রাজা, দকল আনেই
তাহার দ্বি। যেমন তিনি দর্জ-দেশ ব্যাপী,
তেমনি তিনি সর্জ-কালে কিন্তান। তিনি
যেমন ইহ কানের নির্পা, তমনি প্র কান্
প্রেও নির্পা: তান জদাও আছেন, প্রেও
থাকিবেন । ৩।

ওঁ শান্তি কান্তিঃ কান্তিঃ হরি ওঁ পরে শীন্তুক্ত বেচারাম চট্টোগানার মহা-শরমার গাড়াব স্থারে এই মহোৎসাধের পরিত্র বংসাচ বাকা ভাবা সকলকে সিদ্ধ করিলেন

रा. ५ । ३१६६ । ७७ । ५% । प्रतम, जाङ বলভূৰি নামুদাৰ ভারণভূমের একনাৰ संदम्ब निग । व्यागन (१४८५: इन्हें इन्हेंट--हुकु। भुद्य इन्हेटक दिभुष्ट क्लेटल (भूमर (सह भिष्ठी सन दल्का (एन कार्त्तोश क्रेश शास्त्र মেই ৰূপ এই মান্যৰ একাদশ দিবস্থী श्रामनामुवाभी जन्धर-(अभी दाक्ति मार्जक्रे অবন পথে চির মুদ্রিত থাক। নিতামুই কর্ত্তবাং কেন না এই দিনে এই অবহায় ুত্ত পে বজ ভূমিৰ প্ৰকৃত প্ৰাণ সঞ্চাৰ হয়---এদেশের সকল তৃথ সৌভাগ্যের স্থাতপাত रहा. वक्रद्रम्दम् त्य गक्न कडोडि **क्र**हाहात धार (पर स्काविशवा कहिएका **अहे मिन** ২৬ ছে এনন একটা কাংখার অনু ঠান হইতে অ'বত সংগ্ৰাহার কাৰে। ক্ৰমে ক্ৰমে এ । महाराज अकृत अज्ञान विदृति इंट्रेटफ्ट्, ৫⁴51ৰ ক্রন্তে প্রেছর---প্রতি আত্মার ংশন অন্তন বিলোচন হইর। আনার্দিরের লাম ভুনির বিষয় মুখ প্রসূত ইইতোছ।

চির ছংবিনী বঙ্গ নাতার স্বাধীনভাকপ অমূল্য হার পরিধানের সময় লক্ষ্য করি-বারও কাল উপস্থিত হইয়াছে। যখন ব্রাহ্মপর্ম এ দেশের সকল বাধা বিশ্ব অতি-क्तम कित्रा मगाक् बद्ध छेषिक रूद्यम गारे, তখন বে কথনও বঙ্গভূমির ছঃখের নিশা অবসান হইবে ইখা ভাৰিয়া স্থির করাও ক্রিন হইড। এখন তো আমারী গণনার কাল প্রাপ্ত হইয়াছি—এখন তো উন্নতির দোপান লাভ করিয়াছি। এখন আমরা বৰ গণনাৰ সজে সজে গণনা করি, মে एमरमाव कठमूत औड़िक इडेन,—**क्**षस कि. পরিমানে গাগ মলিনতা হটতে বিমুক্ত হইল.— অ'ঝা কত দুর উন্নত হইল। কেন নদাশয় নহাতা কর্ত্তক আমারদিলের কোন न। रक्षान এनটी अचंद निवाक्त अवेटन. চ্ছিরে নিকটে বাত ক্রতজ্ঞ হই, বিনয় বচনে উলোদে কন্ত সাপুনাদ প্রদান করি, কিন্তু যিনি ধর্মের প্রভিন্নকর মঞ্চলর একমাত্র षास्टन, भार ब्टेट एम्ट्य बर्काद अहि গুত-প্রতি পরিবার-প্রতি শাঝার গঞ্জী-उठम अভाব विषु विष एकेशाएक, (भने ब्रिष्ट-বনের রাজার নিকট ক্তজতা একাশ করা कि यञ्ज अ व्याहाम माता ? है झिटक आदन क्तिएक कि बाक छे त्वाभरमत व्यद्शास्त्रम ? আজ মাহের একাদশ দিবস আজ ব্রাক্ষ-সমাজ দংলাপানের প্রথম দিন। ইছা উচ্চারণ ক'বল মাত্রই শরীর লোমাঞ্চিত হইয়। উঠে, নদন যুগল প্রেমাফ্রতে পরি**পূ**র্ণ হয়, ক্র্দেবে অভান্তর হইতে যুগপুৎ প্রীতি অন্ধা ও কৃতজভার ভাব ঈশবের প্রতি উচ্ছদিত ২ ইয়া কণ্ঠ নিরোধ করিয়া কেলে। ঢারিদিকে ঈশ্বরের মহিমা জাজ্লামীন সম্পর্ন করিয়া, এই শোক্তা সৌন্দর্যোর অভ্যন্তরে, এই সাধকদলের মুধ্যমণ্ডলে জাঁ-হার সভা জ্যোতি বিকীর্ণ দেখিয়া বিন্মারবে 🧋

হৃদর প্লাবিত হইতেছে। অনত্তের মহিমা ব্যক্ত করিতে গিয়া রসনা অসাড় হইয়া যাইতেছে—জাঁহার গুরু ভার ধারণ করিতে গিয়া শৃদর অবসম হইয়া পাড়তেছে।

मण्डू एथ कि मत्मां इत मृणा । भाक महत्य वाक्ति भाष मश्य हिला हहेगा । महे प्रव प्रावत शृक्षां के निमल এक जिल्ल हहेगा हिन, व्यानत्माणी । जिल्ल निमालिल मग्नत्म मकत्त व्यामाति । जामा शिला, भूता हम शिला । अस्त भामा वात । जामा । जामा

ঈশ্ব-সক্ষয় প্রশাস্থান্ন, গৃহগ্রিব এই मम्भाग खा(८१५६ ।--- मम्नाय खाम द्वव त्यवन ঈশ্বেরই জনা। তিন ঈশ্র হুইকে আ-धनाव मञ्जल, श्रीतवादनत मञ्जल, मञ्चलात বস্ত্মির মঙ্গল লাভ করিয়া আনন্দে উত্ত-ক্রিত হইয়া চারিদিকে এই সকল মঞ্চলাচরণ করিতেছেন। আজ তিভুবনের রাজার পদধূলি ভাঁহার আশ্রমে পতিত হইবে, আজ সেই ভুবনেশ্বরের পূজ। জীহার গৃতে স্থাপন হইবে, এই জন্য তো দুপরিবারে হ্লনয়-থাল প্রীভি-কুস্কুমে পূর্ণ কবিষা ভাঁছার খারে উপস্থিত হইয়াছেন—তাঁহার উৎসব আনন্দ জনিত পবিত্রতর স্থারে ভাগী করিবার জন্য আমার্দিগকেও করিরাছেন, আমরা তাঁহার নিমন্ত্রণে — ঈশ্ব-রের সম্বেহ আহ্বানে নানা স্থান হইতে অক্টিত প্রীতিকুম্ম লইয়া এগানে উপ্-िष्ठ रहेन्नाहि, रमहे रनव रमरवत शुक्रांत উপচার লাইয়া সকলো একত্রিত হইয়াছি।

আইস সকলে নিলে ঈশরের পূজা করিয়। কৃতার্থ হই, হৃদয়ের পরিশুদ্ধ রুড্জতা উপহার তাঁহাকে দিরা জীবন সাথক করি। আপনার উন্নতি, দেশের উন্নতি, প্রাণসম বাক্ষধর্মের উন্নতির জন্য সকলে মিলে তাঁহার মহদ্যশ যোষণা করি।

হে অথিল-মাত। বিশ্ব-বিধাত। প্রমে শ্র! আমরা ভোমার পূজার জনা এখানে উপস্থিত হুইয়াছি, ভোমাকে লইয়াই আমা-तमिद्रत्व डिश्मव अ: नम युश (म) नामा मक-লট ৷ আমবং ভোমার চিবা্শ্রেত চিরানুগত দাস—অফাবদের প্রতি তোমার এড করুণ ' আমারদিগকে নিতে, ব নিরাজ্ঞা এক। মু গ্ নহার দেখিরা জোমার ব্যাক্ষধক্ষের শীতল ছারায় আনয়ন ক্রিয়ডে,ডুমি আমারালগবে নিৰ্বন লৈৱণ দেখিয়া কপা কাৰ্যা দেব ছুব্ ভ ত্রাক্ষধর্মের অবিকারা করিয়াছ। তু ম দীমহীন মলিন বৃহ্ন দেশের অভন্তের হইতে অমূচ হ'নি क्षेत्राक कार्या (म्या हेट(ट्राक क्षीत्र स्थीत) প্ৰকৃথিত ক্রিতেড লগা ধন্য নথে ৷ ধন্য তে।মার করণে। তে।মার প্রদাদ গঠা তুর্ব ल ७ तल को ७ करत. जोक ७ माहरी ० ने मा छ ८ १।

হে তুর্বলের বৃহত্য গ্রাহ্ম হানির গ্রাহ্ম বৃহত্য গ্রাহ্ম বৃহত্য সন্থান মহল কর। তুম ইত্য সন্থান মহাছিলগরে তোমার জান করে। নাম করে নাম করে নাম করে পর্বত লাম ত্রাহার করে মধ্যে তোমার অভ্য পদ তাজার করিল। ব্য মারস্থ গণ করভ যেমন ইনি নির্বিলে শাভি উপাতৃলে উপনীত হুইয়া স্থান নির্বাহান প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন, তেমনি যেন চির কাল অবাবে এখানে তোমার পূজা সম্পন্ন হয়। তোমার প্রিত্র নাম যেমন এখানে বাহিরে স্থাক্ষরে মুদ্রিত রহিয়াছে, তেমনি যেন বাহিরে স্থাক্ষরে মুদ্রিত রহিয়াছে, তেমনি যেন ই হার ক্ষণে পরস্পারা ক্রমে সন্

কলের হৃদয় পটে তোমার পবিত্র ধর্মের মঞ্চল ভাব সকল চির মুদ্রিত থাকে।

যাঁণার গৃহে আজ সমুদার বঙ্গভূমির

— ভারত ভূমির শাস্তি স্বস্তায়ন হইতেছে,

গাংশার ভাহ্বানে আমরা সকলে এখানে

উপস্থিত হইয়া ভোমাকে লাভ করিতেছি
ভাগর মঞ্চল প্রাথনা না করিয়া কি ক্র্নয়

প্রস্থিত হইতে পারে ?

ে ঈশ্বন তামার নাম সক্তে ঘোষিত ইউক, ভোমার মহিনা মহীরান্ ইউক, তো-মার ধর্মা সমুদান পুন্থবী মধ ব্যাপ্ত হউক, এই আমার্লিগের আন্তরিক প্রার্থন।

लं जकरमवर्षक छीत्रर

অনন্তর এবুকে অযোগ্যানাথ পাকড়ানী মহাশ্য সকলের জালা পথ। এই হিতকর অন্তর্ভনী উপদেশ গ্রাদান কবিলেন—

বাহিতে বাজাবগণের আলন্দকর সমাগম, অস্তরে দেই চির জীবন-সংগ্র মধুময় আবি ভাব, অদাকার এক মহোন্দবের মধুরতা ও আ্মানের জীবনের চরিভার্যতা সম্পাদন করিল। যে প্রকার প্রত। শা করিয়া এই মহোৎসবের প্রত্তীক্ষা করিতেছিলাম, তাহা পরিপূর্ণ হইল। স্নিক্ষমূর্ত্তি স্কলাণের শ্রীতি বিকশিত সুখম ওল দর্শন করিবার মঙ্গে সঙ্গে ্মই চির-সুক্ষেত্র আতি ভাব অরুভূত হটল। আয়। তেজধী ধ্ইল, মন বিনীত হইল, লেণ্য কোমল হইল, জ্ঞান পরিতৃপ্ত হইল, নীতি চরিতার্থ চটল, ইচ্চা পবিত্র হইল, প্রাণ শীতস হইল। কি শ্রভ ক্ষণে ব্রাক্ষধর্ম পাবিভূতি ইইয়াছিল। কি আশ্চর্যা <u>গ</u>ৃতিতে इंश अमातिक इंशेटिए ! कि मधुत्र औरव ক্র সমাজের শুভ সাধন করিতেছে! ভবি-ষাতে কি মনোহর দৃশ্য প্রদর্শন করিবে !

বথন বিজানের তীক্ষ্তর আলোক প্রতি আত্মার স্বাধীনতা আবিজ্ত করিল, মনুষোর অন্তান্তা বিলুপ্ত করিল, সমুদায়

धर्मगाट्य सम अमान अमर्भन कतिए ना-গিল, সেই উপযুক্ত সময়ে ব্ৰাক্ষধৰ্ম আৰি-ভুতি হইয়া দেই প্রত্যাগারার দহিত প্রতি আত্মার সাক্ষাৎ যোগ প্রকাশিত করিল; স্বাধীনতার মধুর ভাব, কর্তব্যের সরল পাথ, প্রীতির প্রকৃষ্ট রীতি শিক্ষা দিতে লাগিল। এক দিকে চির-দেবিত অন্ধ্রকারে এক্সচ-বন্ধন-বশত বিদার বিগকে, বিজ্ঞানের বিপক্ষে, স্বাধীনতার বিপক্ষে, সভ্যের রি-পকে কোলাহল; অন্য দিকে অস্ত্রকার দহতে মহস। আলোকে গমন করিয়া नुष्पर्वादय अञ्चला, এक पिटक कट्युत गांत्र-रराञ्चत नाच कर्जुनकीन रहेश व्यानमाटक ঈশ্বরের প্রতি নিজর ভাবিয়া কাপুরুষতা, यना फिर्फ केश्रत हरेटच विक्रिश हरेगा আপনাতে শতন্ত্র ভাবিয়া পৌরুত্যর পরি-বর্ত্তের স্বেছ্যাচারের আফুগতা; এক দিকে অকুতির অতীত স্বতন্ত্র পুরুষকে আপনার সমান নীচ ভূমিতে প্রকৃতির শৃত্থলার মধ্যে অ নিবার নিমিত প্রয়াম, অন্য দিকে এক তিকেই প্রকৃতির অগীত গুণে অলঙ্ত করিবার জন্য আগ্রহ: এক দিকে ঈশ্বরের কর্মাক্ষেত্র হইতে পলায়ন ক্রিয়া উত্থারের পরিবর্ত্তে শুনোর উপর জীতি বস্থানের टिकी, अना नित्क क्रेश्रदेत कार्या अहर হইতে গিয়া ঈশ্বরেক্ই বিশ্বৃত হওয়া; वाकारका वह डेड्स नित्कत मधा ऋत्न দ্ভায়মান হট্যা নিতান্ত অসকত প্রস্পার বিরুদ্ধ এই উভয় প্রেকর সামঞ্জা বিধান করিবার নিমিত্ত অবতীর্ণ হইল।

সাধীনতা অপহরণ করিয়াকোন আত্মার অবদাননা করা ব্রাত্মধর্মের উদ্দেশ্য নয়; কিন্তু সকল আত্মাকেই বথার্থ স্বাধীনতার উপাপিত করা ইহার অভিসন্ধি। জ্ঞানের আলোক নির্বাণ করিয়া অন্ধকার উৎপ্রম করা ব্রাত্মধর্মের উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু জ্ঞানের যথার্থ পতি নিরপণ করাই ইহার অভিসাল। अकरी मश्कोर्ग मस्अमाग्र निर्माण कविशा शृथि-ৰীর সমস্ত সমাজ হইতে তাহাকে বিভিন করা ব্রাক্ষধর্মের উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু সকল **সমাজের পরস্পর বিসম্বাদিতা উৎসল করি**য়া ' मकलरक এक औं जिन्ह्र व वस्त्र भू खेक (मर्जे সাধারণ শান্তি-নিকেডনে প্রবেশিও করাই **ব্রাক্ষধর্মের অভিম্ঞি। কোন গভো**র বিন্দুমাত্রও বিলুপ্ত করা ব্রাহ্মধর্ণোর উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু সকল স্থানেব সকল সভা সংগ্ৰহ করিরা দেই মতা স্বরূপের মহিমাকে মহী-ग्रान् कहारे लाक्षशर्भन अভिनक्षि। अन्त्री-নের জাতি, ছুর্বলের অভি, পাপীর অভ খুণ। প্রদর্শন ক্রিমা আপনার অনুদারতা প্রদর্শন করা ব্রাহ্মগরেন্টাকেশ্য নয়, কিন্ত সকলের আত্মাকে সংশোধন করিয়া ঈশ্ব-বেব দ্ব্য প্রস্তু কংটি ব্রাক্ষরেম্বর অভি माञ्च। এই मदान लेक्ट्रिस डे(फ्रमा मश्मा ধনের নিসিত্ত ত্রাহ্মবর্টোর আবিভাব।

আমরা ত্রাহ্মবর্মের একার পক্ষপাতী। ব্রাক্ষাপর্ক আমাদিগকে বে আনন্দ—যে উৎ-मव व्यानिशा (मय, ७: हा व्यागारने इन्यरक সম্পূৰ্ণৰূপে আকৰ্মণ করে। ব্ৰ ক্ষধন্ম व्यामानिशदक एव छे अटमन एम ग्र. व्यामादमत জ্ঞান,ভাব,ইচ্ছা একত হুইয়া ভাষা অস্পীকার क्टब्र। दिश्रांटन खाकान्दर्भाव आदिनांचना হয়, সহত্রে কর্ম পরিত্যাগ করিয়াও সেথানে ষাইবার নিমিত হন্দর বাাকুল হয়। ত্রাক ধর্মের এতি ঘাঁখার বিন্তুমাত্রও স্নেহদৃষ্টি দেখিতে পাই, মনের সহিত ভাঁছাকে আ-লিক্সন করিতে যাই। অধিক কি, স্বদেশের কোন র্ভান্ত শুনিলে চির প্রবাসীর ক্রময়ের ष्णांव त्ये व्यक्तंत्र इत्, जान्त्रपटकात्र नात्मारलय শুনিলে আমাদের মন সেই ৰূপ হইয়া ब्यानत्म नृष्ण कतिए श्रांटक।

क्न डाक्न पर्म भागानिशक व बकात

করিল ? কেন আমরা ব্রাকাধর্মের এমন পক্ষপাতী ছইলাম ? কেন ব্রাকাধর্ম আমা-দিগকে চির কালের জনা আকর্ষণ করিয়া রাখিল ?

·এই জনা যে—ব্ৰাহ্মণৰ্ম আমাদিগকে সেই আবাম খান ব্ৰহ্মনিকেতনে লইয়া যায়, मिहे व्यागिषिक वक्कुटक व्यामीतम् इन्हिस আনিয়া আনাদের তাপিত প্রাণ শীতল ক রিয়া দেয়, যথনি চ।ই তথনি দেই সর্বা সন্তাপ भारती मूर्डि आमः एम्ड मन्युर्ग आमिन्ना দেয়: পাপে প্রিত হঠনে নেট প্রিত পাবনকে ধারণ করিয়া দেব , সকল কার্য্যে भिष्ठे मञ्ज्ञल इन्द्र अपर्यान कविया कें। हाइ প্রতি স্বামানের প্রীতিকে থিতুণিত করিয়া (मञ्, भाक ष्ठत्य आंकृत ४३८न (मई খেম চকুর সমাুগে লইয়া সংস্কা প্রদান करत, अन्य अस्टानय आभू मराव नेपायन हाई। भा खाबाहक खनार कतियात सेंद्रम्मान क বিলে দেই শান্ত স্বৰূপের পাণ গান ক্ৰিণা শা,ন্ত শিক্ষা দেয়। মক্তুমি সদশ দংমার ক্ষেত্রে যে এক নাত্র ছায়, অ সালের বিশ্রাম স্তান, রোক্সপর্মা সহি সহকে অহি নিকটে তাহ আনাদিগকে আনম্য দেয়। আমাৰ-(फ्राइ ६९म खाम श्रमाधा निष्ठ मिरहा अ. (इस किया जिल्हा नर्ण कि गुंधी, अ अनसीत নাগির কে।মল, ব্রাজাধলের ই এই মধুমর ভাবে। किनि क्वरण ध्वर्ष मस्गानिशाव मिष मर्गन কবিবার নামত্তই বিশ্বতাচক্ষ মতেন, কিন্তু ভক্ত জনের বাঞ্জা কম্পতক্ক : ব্রাক্ষণশোরই এই আশাকর উপদেশ। তিনি উদাদীন ও মুক সাক্ষী নহেন, কিন্তু আমাদের চির-জাবন-সহায় ও চিরন্তন উপদেফী; ব্রাহ্মধ-শ্যেরই এই নিগৃত মত। তিনি কেবল পা-পের দগুদাতা নহেন, কিন্তু পাপী সনের পরিক্রাতা, ত্রাহ্মধর্মেরই এই শীতলকর সা স্ত না। বে তাঁহার একান্ত সাজ্ঞাকারী, ভিনি কেবল যে ভাষাকেই পরিতাপ করি-বেন এমন নতে, চির জীবন যে তাঁছার বি-কন্ধারেণ করিয়াছে, তি'ন তাহাকেও পরি-নাণ করিবেন; ত্রাক্রপ্রেরই এই অসাধারণ স্বর্গ-ধানে অবেশ করিবার । নদারতা। নমিস্ত মৃত্যুর ঝালিক্ষন অপেকা করিছে হত্বে না, স্বাধীন ভাবে একটি কর্তবে।র ष्यसुर्छ। स कत् सिक इत्तरवत म (४३३) (स ह प्रग (मश्वि.ज भारेदव ; जान्नस्टर्मावरे करे प्रभा रे अरम्म। जाशनात छेपत कर्ज्य कत् स्वीग्न इटेटवः जिलाटव ध्यम वस्त्र कत्, পরিকৃপ্তহ্বে; ইচ্ছাকে মাধুকর, কর (वात श्रापत्न करेटव : खाध्वरकात्रे अहे ভৃত্তিকৰ আন্দেশ। ঈশবের মঙ্গল-স্বরূপে নির্ভর কর, আপনাব পৌরুষ অবলয়ন কর, পাপের উপর জগ লাভ কর, অকুতোলিয়ে চলিয়া যাও, বোদা/**নে**বই এই তেজ্ঞা ব্বি। ব্ৰাক্ষধশ্যেরই এই সকল মহত্তম संगटनना धरे कता खाक्यरपंत धर গোৰন ও এত আকৰ্ষণ।

এই गर्वाञ्च-सूकत अ। जावर्षा हे पाना कात উৎসৰ ভূমি নিলাণ করিল, উৎসৰসার উন্থা-টিত কারল, সকলকে আহ্বান পূর্ব্বক এ থানে দমবেত কাবল, স্বর্গের আনন্দ পৃথি-दीरक व्यवशीर्व कतिल, व्यामारभत मुक्तिक **इ.स. १८ के विद्या मरनाइत मुना ध्वनर्मन** করিল। অভতব আজি ব্রাহ্মধর্মেরই জয় ঘোষণা কর, ব্রাহ্মধর্মের গুণগরিমা গান ব ! : আর মহোৎসবের আনন্দ, যত পার, खेপভোগ कर। किवन **लाभाम्ब क**ना नश्, (कवन वरक्त कना नश्, (कवन जांतर्डत क्रमा नय, मञ्चाय भांचवीत सनारे এই উৎ-দব দার উদাটিত আছে। मकदलब मन শমভাবে আকর্ষণ করিছে পারে, এমন नाश भोन्मर्या ७ डेप्परत किंडूरे नारे; उदर এখানকাৰ এই সামান্য दश्च সৌষ্ঠব

यि कान मीन ही तात नहन मन आकृषे करत. क्क़क, किन्रु हेशत (य श्वान हहेट आकर्ष) শক্তি বিনিগ্ত হইতেছে, ভাহা ভোমা-দের সকল ইন্ডিন্ডের অংগাচর। ধন চান, রত্নগর্জা পুথিবীকে খনন করুন, মান সভান চান, রাজ প্রাসাদে গমন কর্ম, কেবল প্রায় ড সকলকে চারভার্থ করিতে ঢান, স্বেক্তাচারের সহস্র দ্বার**্টান্যাটিভ** আচে, তথায় প্রস্তান করুন, প্রভুত্ব চান, कार्यनात मान मागीव निकटिं अवशान क-सन, यान वदावल हान, ध्यायतल हान, व्यायाम ठान, बाह्य हार, अधारक हान, वहे छ .-मरनत च न न न हों। इसेन। बनारन भरनत অনুরোধ নাই, মন্তনের অনুবোধ নাই, শ্রুরের অস্বোধ নাই, পদের অনুরোধ नारं, धर्यादन नेश्दतंत्र समूद्याध, त्थरमत অনুযোগ, ধর্মেন অনুরোধ, করিবার अनुरम्पः। मर्भारत याकः लहेशा (खर्छन् ক্ৰিড়তের বিচার হব্ এখানে ভাহা নাই, এখানে যিনি ঈশ্বরের যত নিকটবভী তিনি তত শ্রেষ্ঠ। এখানে সকলই বিপরীত; যিনি এখানে আপনার শ্রেষ্ঠত্ব কিছুই চান না, তিনিই এখানকার স্বাপেকা ভ্রেষ্ঠ। যিনি এখানকার কোন কাম্যের প্রভুত্ব ক-तिएक हान ना , जि.नहे मकल कार्यात अजु। যিনি যশের বিল্যুমাত্রও চান না, তিনিই এখানকার প্রধান যশস্বী। যিনি এখানে মান সম্ভন চান না. এখানে ভারই মান স-ভ্রম আধ্র। বিনি আপনার সর্বস্থ পরি-ভাগে করিরাছেন, তিনি এথানকার দর্জা-ণেকা ধনবান্। যিনি আপনার জন্য कि छूरे उर्दिशन ना, अधीनकांत्र मशस्त्र छै।त क्रमा शादक। अधिक कि, मश्मादब देशन রাজি, এখানে তথন দিবা, সংসারে যথন मिन, এখানে তথ্ন রাত্রি, সংসারে বিনি নিরস্তর জাগিয়া আছেন, এখানে তিনি

ঘোর নিজায় অভিভূত; সংগারে যিনি নিদ্রিত, এথানে তিনি ভাত্রং। অনোদেব उदमद्वत এहे व्यवसा, बहे नहि, बहे छात. **धरे** डकी; हेक्का हम, छेश्मव (कर्ज क्ष-বেশ কর: আনাদিগকে আপাধিত কর, षाश्नोता वाशाविक हर। शांकिया पर्भन कंतरन डेशत चा नेश नाहे. অন্তও নাঠ, হয় ত সকলত বিশৃত্বসা—সক-नष्टे थाहिता (निविद्या अस स्टा धा-বেশ কৰ ইছাৰ অৰ্থ বুৰৈতে পাৱিবে। " खन्दा । क भन्म श्रे वामी स्माना दिनश्र-নাদাং , ভবিদং সংবাদস্কং। । শপুৰে কে-ৰল এক প্ৰবৃদ্ধ মাত্ৰ ভিলানে, আনা আবি १०इट फिल म: ; जिलि अब मनुनात **रु**चि कतिदान।" अहे हेक् अहे कहा व बाला রের ভিভিড়াম। 'তদেব । নতঃং জ্ঞান मन्यः कि ४९ अ छक्तः चित्रवेशवरमकरमवासिः कीयः गर्वसार्वतं भव्य नगर् मञ्जाञ्च प्रवतः दिए मध्ते गांक यमभाव भूकि अधियशिका" "ডিনি জান স্বৰূপ, অনক স্কুপ, মক্সল স্থাপ, নিডা, নিয়ন্ত্ৰ, ন্যান্ত্ৰ, ন্যাপ্ৰী, স্কাশ্রন, নির্বয়ন, নির্কালার, একমাত্র, অবিতীয়, মঠাণজিলান্, সংগ্র পরিপূর্ণ; কাহারও সহিত ভোঁচার উপনা হয় না।" हेशव कीवन। " अकता टरेगारवाशामनथा পারতিক মৈ চিকঞ্চ শুভন্তবন্তি '' " এক মাত্র ভাঁচার উপাদনা দ্বারা ঐচিক ও পারত্রিক ম-कत इया" अहेति हेहात कता "उचिन् और्ड-**छ**मा श्रिश कार्यः माधनशः उन्न्यामनदम् ।" " তাঁহাকে প্রতি নর। এবং ঠাহার পিয় কার্যা সাধন করাই তাঁহার উপাশনা।" **बरेटि यागांतर**मत छेशमव ।

ব্রাজ্যণ। প্রকার আস্পদ্ শ্রেমর আস্পান্ স্নেছের আস্পান্ আত্যাপ। আজি বেন তোমাদিগকে বহু দিনের পর দেখি। জেছি. কুশন প্রিজ্ঞানা করি, উত্তর দাও।

योगाएत (महे कक्षां-भूगं भिष्ठा, स्त्रह-भूगं মাত্র সংবাদ কি ১ এই এক বৎসর ভিনি कि ভোমাদের ऋषत्र-मन्मित विश्राक्रमान चार्डिन । गल्भु खात यह मृत डेहिंछ, सिर् পরিমানে এই এক বংগর কি উছার দেবা কবিতে পারিয়াছ > ভাঁহার প্রদন্ধতা কত টুকু উপাজ্জন করিয়াছ ? তিনি যথন যাহা বালয়াছেন, প্রীতির সহিত ভাষা 🖍 পালন ক্রিতে পারিয়াছ ১ এলানে দিছ विপश्चि वात्मक, उभुमानि इरेशाटण ? এशास 🥊 লিধিত ব্ৰতেব ড 📌 भरम श्राम भावाः ३ ६। এখানে দ্বা প্রবন্ধ সংগ্রুক, ১৮ ধুর্ব প্রভারক অনেক, ক্রপা পাত্র মণে ফ. দ্যাব ও ব্যাঘাত হয় নাই? এখানে ১,০০ ৫ ज्ञादी इहेवान यर्थके महावना, धर গুণ ত ব্যক্তি হইয়াছে ? এখানে সংক্ষে থা,ভবস্থাক অনেক, ভোমরা ত নিরুৎসার কও নাই ০ এগানে ক্ষুদ্র কুদ্র বিষয় এলন্য मछ (उद्देश्य भट्टश्ये म झात्रमा, उद्भाग ७ । व-ছেন ভাব উপত্তিভ হয় নৃষ্ঠ এলানে मकरन स्थान भूगा खेला छन । करिएक लाइत না, তজ্জনাতে ৮ কের উদার ভাব ও বাছাত रश मारी १ (यशाहम केश्वतंत्र कांग्र :शाहनः কবা উচিত, সেধানে ত আপনার জন ঘো-यना कति एक गाँउ गाँके। त्या (स अन्य द्रञ्ज महिमारक मधीकान कहा छ, 53. तमशासन অপেনবে মহিমাকে ভক্ষাত করিতে যাও নাই > ব্রাফাগণ আমরা কি জ্ঞান ধর্মো এত দূর উন্নত হইরাছি, আমাদের আর खाविट इटेटव मां ? देश कथनके मा। यामहा (महे मर्जनाकोत मगरक (य कड অপরাধ করিয়ালি, ভাঁহার আক্রাকারী দাস হইয়া কত বার যে তাঁহার আক্রা লজ্জন ক-রিরাহি তাহার সংখ্যা নাই। অতএব আজি

দকতে মিলিয়া তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিব। এই সমৎসর কাল তিনি যে অন্তর্পম করুণার সহিত আমাদিগকে প্রতিপালন করিয়াছেন, রোগ শোক, ভয় বিপত্তি, পাপ ভাপ হইতে যে রক্ষা করিয়াছেন, সহত্তে কর বিশুদ্ধ স্থপ— আনন্দ আমাদেন জনা প্রেরণ করিয়াছেন, ভজ্জনা তাঁহাকে আজি ক্রভ্ততে উপহার প্রদান করিব। ভবিষাতে ভাগর আজে লাজন করিয়া ভ্যানক পাপে প্রতিত হইতে না হয়, এবং যাহাতে তাঁহার কর্যো অনাযালে সম্পন্ন করিতে পারি, তরিনিত্ত ভাহার নিকট শুভ বুদ্ধি ও ধর্মা নল প্রার্থনা করিব।

ছে নিম্নপি । অধিল মাতা প্রনেধ্ব ।
তেনে বই শক্ষম প্রতি উপ্তোগ করিছে
করিছে আন্না নির্নিয়ে সম্থানর অভিবাহিত্ত
করিলাম। ডেনেরেই স্তকেনিল অঙ্কে শধি
কচ হইয়া এক বছদনের পথ অভিকান কবিশাম। এই সংখ্যা কচ স্থা-ন ভ আনন্দ ভূমি স্লেকের সহিত প্রদান
করিয়াছ, ভাহার সংখ্যা করিছে পারি না।
আমাদের সংশোধনের নিনিত্তে ভূমি যে
সকল শোক, তুল্ল বিপদ্পোরণ করিয়াছিলে
ভাহাতে ভোমারই সন্ধান ভাব অনুভব করিযাছে, এক্ষণে কোটি কোটি নমন্ধার পুকাক
ভোমার চরণে ক্তজ্তা উপহার দিভেছি,
ভূমি গ্রহণ করিয়া আমাদিগকে ক্রভার্থ কর।

হে মজল দাভা মুক্তি দাতা প্রমেশ্বর!
তুমি সকলের অন্তর্যামী ও সকল হৃদ্যের
অধীশ্বর! আমাদের পাপ পুণা, ধর্মাধর্ম,
উন্নতি অবনতি সকলি কামিতেছ। তোমাকে আর কি বলিব: আমাদের আল্লাকে
গ্রহণ কর. এবং এই মলিন আল্লা জারা শাহাতে ভোমার কার্যা দিল্ল হয়,ভোমার মঙ্গল
ইচ্ছা সম্পন হয়, ভাহাই কর। হও পুরকার ভোমারই হস্তে।

হে মজলস্বরণ পরমেশর। ভোমার
মঙ্গল রাজা বিস্তার কর, ভোমার প্রেম শিক্ষা
দাও, আমাদিগকে ভোমার ইচ্ছার অনুগত
কর। পৃথিবীর সর্বত্র ভোমার জয় ঘোষণা
ঘোষিত হউক, ভোমার নাম কীর্ত্তি হউক,
নর নারী সকলে মিলিয়া ভোমার মঙ্গল ভাব
বিস্তার করিতে থ কুক।

e openaifa श्रेश · •

অনস্বর ব্রহ্ম-সঙ্গীত হইয়া সমাজ ভঞ্চ হইল এবং সকলের মুখে সন্থানীত প্রি-ব্রতাব চিক্ন লাক্ষত হইতে লাগিল।

ইজিপ্টীয় নত।

১৫৮ দ থাক পতিকার ১৫৭ প্রত'র পর।

আনুবিদ্ধ ইজিপট নেশের মধ্যে আয়ু
নিগ অভাত বিথাতে দেবক । চলেন। চলুদার ইজিপটাবেনা বিশেষত নাইনাপে । দে দেশীরের ই হাকে অভিশয় ভক্তি কবিত। কুরুরের ন্যায় ই ধার মন্তক চিল। কুরুরই ইহার বাহন। তনি ওাদাবস্দেবের বিশেষত আহিলা দেবার সহচর চিলেন। ইনি দেবভাদিধের গমুদার কার্যাব আরম্ভত দুতের ন্যার ছিলেন। এবং হ'নি মৃত লোক দিগকে যুগোপযুক্ত তানে লইয়া ঘাইতেন।

থং। বিশ্বকর্মা দেমন এ দেশীর শিশ্প করাদনের দেবতা, খংও অনেক অংশে ইজিপ্টীয় দিগের দেই ৰূপ দেবতা ছিলেন। গ্রীক ও লাটিন গ্রন্থকারের। ইহাকে মা-করি দেব বলিয়া গিরাছেন। ইনি ইজি-প্টীয়দিগকে সমুদ্য নিয়ম এবং অক্ষরবি-নাাস, জোতিষ, জামিতি, আয়ুক্ষেদ ও অন্যান্য বিদ্যায় শিক্ষা প্রদান করিয়াছি-• লেন। আইবিস্নামক পক্ষী ইহার বাহন ছিল এবং ইহার এই ৰূপ ইক্ষা যে সমু-যোরা আইবিস্ পক্ষীর ন্যায় প্রতিমূর্তিতে আমার পূজা করে। টাইফন • যখন দেবতাগণকে আক্রমণ করিয়াছিলেন, তথন ইনি আইবিদ্ পক্ষীর ৰূপ ধারণ ক্রিয়া প্লায়ন করেন।

अमितिम्। जि॰म् पित्ममाग धतित्व जिन भ र यापि फिरन वर्गत इस, इंशास्त्र সৌর বুংসরের আর পাঁচ দিন অবশিষ্ট थादक। तियां (हुवी अर्ट शाँव नित्य सूर्या, হকুলেম ও শনি (সাটারণ) হইতে यथाक्रम किनिए भूल उ छाँर कमा। श्रमव कृद्रन । सूर्य। इन्ट्रेंट अमितिम् अ आकृ-यातिम् बरे छुट भूछ, भनि घरेट इ चार्रीमग कना अनुश्रक्त लिम् इहेट छ। इकन भूछ ওনেপণিষ্কন। উৎপন্ন ইন্যাছিল। অত্যে পুত্র ভিনটি, পরে কন | ভুটি, ক্ষম গ্রহণ करत । स्नत ए प्रवोटिक अने शाहि जिल्ल ভিন্ন পিতা চটতে এক মাত্র ই গর্ভে জন্ম ध्यक्ष करतम, सु इत ॰ बेस्ट्रिन्त श्रतम्भन म- । (रापित ও मरहाम्बः मध्य व्यात्छ। किन्न কেবল এই সম্বন্ধ তির কাস বর্ত্তমান ছিল म। ওদিবিষ্নিজ সভোদরা আইদিষ্ দেবীকে ও টাইফন্ নিজ ভগিনী নেপ্থিস मिवीटक विवाह करतम। हेडिको जिल्हा এই পাঁচটির বিশেষত তিনটি দেবের পুঞাই অধিকতর অচলিত হইয়া,ছল। উহঁদের मस्या चांक्रयातिरमत चिर्यक त्रुखांच आश्र इ ७ त्रा यात्र ना। अत्मरक अनुमान करतन, रेकिकी राजा स्थारक अमित्रिम ७ हन्द्रक আইনিস্ বলিয়া পূজা করিও। উভয়ে সূর্যা ও চজের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা ছिলেन।

ওিসরিসের জ্বের সময়ে এই দৈব বাণী
 হইয়াছিল বে, সমুদায় পৃথিবীর রাজা জ্বয়
 এছণ করিলেন। ইনি সমুদায় পৃথিবীর রাজা

হুইয়াছিলেন। ইান সহস্ত লোচন, তে জোনময় ও মঙ্গলদাভা ছিলেন বলিয়া ইহার অন্দিন এই নাম হুইয়াছিল। ইনি ষে সমুয়ে টাইফনের রাজ্যে গমন করিবছিলেন, সেই সন্থে তাঁহাকে স্নার্থাপিস নামে আহ্বান করা ছুইত। যেনন প্রাক্রিক দেবতা অন্দের সহিত আহি মানের এবং ভিন্তু দেবত। ইলের নাহত আহি মানের এবং ভার হুইছালে, সেই ক্রপ ওসাবিনের স্কিত টাইফনের নির্ভুর বিবাদ বিসম্কাদ হুইত।

এकमा अमितिम (मत, (मनन्। ममस्ति । হারে পৃথিবী পরিভ্রমণে নির্গত হইয়ালি লেন৷ সেই সময়ে ভিনি পুথিবীস্থ লোক-मिन्नातक मञा छ। विषय । अत्यक्ति भिका প্রদান কবিলেন ', ওসিবিষ্ পৃথিবা পরি सम् कर्न्या अराज्य करता श्रव होहे ফন একটি ভোকের দাবে ভাছাকে সিন্দু (क्त भरत) श्रृतिया क्रम क्तिया (म.सि.स.स. এবং লৌহদীনকে এ দিন্দুক বন্ধ করিয়া नील नगोटड निरमाल वरिहासन। निम्कुक ए गिर्ड श्रीमदर माल समीत है। (कि व मामक মুখ দিয়া সাগ্রে পিয়া নিপ্তিত চইল। के जन्मे दिश्य अहे कि मिंच है। कि के मुर्चेत নামেট্লেথ ক বলে অভান শক্ষিত হইত। এই সমধ্যে ওগািবদের আটাাবংশতি বৎসর ব্যন্তইবাছিল। ফোম্ম দেশের কন্মু ও मार्डिम् कार्रिका अथरम के मिन्धुक (मिश्राट পাইরাছিল। ওসিরিম দেবের পরা আ-हित्रम् (पर्वी अहे छुद्द जिनोत मण्याम अनिया-মাত্র মস্তকের এক গুচ্ছ কেশ কাটিয়া কে-

 পাতঞ্জল দর্শনে অশর্বাবা ঈশ্বতক নির্মাণ-কাষ বলিবা গাকে ভাষার অর্থ এই —নিরাভার ঈশব কুল্কার ও কৃষক প্রভাত তির শরীর ধারণ করিবা ঘট নির্মাণ ও কৃষি প্রভাত ভিব দৃষ্টান্ত কার্শন কবিবা ছিলেন। এই মতের সহিত্ত আহিশিক সাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া যায়।

[•] हैनि कोन कोन विश्वास यम ७ कोन कोन विश्वास अन्यद्वत नाम हिल्लम।

লিলেন এবং শেকস্তুচক পরিচ্ছদ পরিধান করিলেন ৷ অন্তর অতিমতি বাক্র হ-राप्ता वेख्यु त (सर्व निम्कुक व्यव्ययन कविट्ड লাগিলেন, গ্ৰে যাহাকে দেখেন, ভাছাকেই । में भिन्छ कि मरवान जिल्हा गां तरहन । असन মন্দ্ৰে কৃষ্ঠ ও ব বালিক ভালোকে বাখল ८२. मिन्छू ० बीन समीर ले। विके भूश । प्रश মনুক্তে পাঁতত হট্যাক্ত। অনন্ধ আই-। लिन देन्द्र वाली भारत अपराज इंडेटबन त्य, रमही मिल्कुक माप्तम श्रीबाच इनेटल घाराखा. জুফান বিপারিত হয়, ভাতাতে চুমাই মান্দ্রক मद्राञ्चन छोतः । जो वाङ्गुम् गामकः मर्ग फेल-विक्र हो। एथान गर्ककु'ल जगल छ-लहुम्रव दक्ति । जिल्हा विश्व कि । विश्व कि फेश्टर द्यान महन्य इस सम्बन (मह जून গুলি প্রক্ষার মণ্ডির রখনা একটি এক। ও व्या ह ए। ५०० । मिन्छु एषि ८ नई खन, ए নক্ষেত্র চলত্ত্ব ৮ কট ইউক গ্রেক্টা ভ্রন কার ১০খা এলে। তুর্নমতির রুম্ম ভার । व्यक्ति भागाः व्याप्त व्याप्तकति (अस्त পুরক ধাভবনের একটি স্থায় নিশাণি কর नाइक्स । पार्शनम् । भी देननवादा हा । এন ন°ৰাদ ভাষ্ণত ছইয়। বাইবাৰ ৮ে, গ धरम न रिज़म कार धका कभी करि मिन कारतंत्र भाराम् छे० राजभाग कतिया *स्त्रामन क-*ब्रिक्त । बर्गन्य । এই भगर्य विश्व**उटन**व कारक छाल मध्यो । सक शहन डेश्डिंड इथ। দ্দোৱা আইনিদ্ দেবীৰ সমিহিত হইকো ক্রিত্রে গাল ক্টতে স্তুম্ আশ্রেষ্ট **সৌরভ** শ্হণ ৰ হৰণত লাগিল, লাদীরা এই সংবাদ वाक्रमं इंगीएक अमान करता রাজমহিধী এने मध्दान अप्तान किया त्वाक **कांता आहे-**নিদ দেবীকে স্ব ভব**নে আনয়ন করিয়**। আগনার শিশু পুত্রের ধার্ত্রী করিয়া রাবেশন। আ্থাসিম্দেবী সেই শিশুটীকে স্থনা না ^{দিয়} অস্থানি পান করাইয়া রাখিতেন। এবং

অতি রাভিতে, ভাষাকে অমর করিবার মি-মিত অংগ মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া স্বয়ং সেই স্তম্ভটির চতুর্দিকে বিলাপ করিয়া বেড়াই-তেন। কোন কারণে রাজমহিলীর অভঃ-করণে সন্দেহ উপান্তত হওয়াতে তিনি এ-নল জাগরিত থাকিয়া আইনিস্ দেবার এই নকন আপার প্রভাক্ষ কণিলেন এখং পুত্টিকে অথব মধ্যে নি,ক্ষপ্ত দেখিয়া **७१४ हो १ कार्य कार्य वर्षा १८०० ।** ८ ः के हाः कूमान वागतः वारक विशिष्ठ करता जनम वार्गिम (मेरी निकामार्फ भावनं कदिया (मधे एउँ हैं। धार्थना क वृद्धन । धनगुत (गई उन्न ७३ किन्य क्या पा (गई শিল্পুকটি দর্শন করিবা এখন উল্লেখনে রে দেন কবিছে লাগিলেন যে ভাগে আইব করিয়া সেই শেশুটি অনুস্থা করিল: তগন ডিনি রাজার জোঠ পুর ও গোল সি-म्हूक गर्मा ७८) (भारत वहेता के किली (मणा-निमुद्य शरम कहिरलम । आङ्क 'रल गांध मस्या मी एम् नामक भने एक कुकान छे शक्ति হুট্যা তাঁহার গমনের ব্যাঘাত করে, ডা হাতে তিনি ক্ৰান্ত হট্যা নদীকে শৃষ্ণ কৰিয়া मित्राम । व्यस्यक्ष এक घत्रामात्र भाषा ध विके कहेंगा मिटे निस्तु क एक्या हैन श्रुद्धक ওমিরিম প্রেব মৃত দেও লছয়। রোদ্ন করেতে প্রবেশন। তাঁহার মম্ভিব্যাহারী রাজপুত্র রোদনের কারণ অনুসন্ধান করিছে ভাষার দালিকিছ কলবা মাত্র দেবী ভাকার প্রতি কঠোর কট।ক্ষপতি করিলেম, রাজ-পুত্রটি অমনি প্রাণত্যাগ করিল। খনস্তম্ম আইনিদ দেবী স্বামীর মৃত দেহ সজে । हेशा हे कि की स्मार्था का श्रीमन क्रि**रण में**।

দিন পরে তিনি স্বামীর মৃত দেহকে অতি গুপ্ত স্থানে লুকারিত রাথিয়া রুটস্ নগরে নিজ পুজ্ত হোরস (আপেট্লো) দেবকে দেখিতে গেলেন। এ দিকে টাইক্ষন শুক্ত পক্ষের রাত্রিতে ইউস্কে অয়েষণ করিতে করিতে ওনিরিম্ দেবের মৃত দেহ বাহির করিয়া ফেলিলেন, এবং তাহা চতুদিশ ভাগে ছেদন করিয়া দেশের চত্মাদিকে विकिश्व करिया पिटलन। आहे मिन् पियौ अहे मध्यान खादनगण्ड अक श्रांन कुछ नोकः। স্থাবোহণ পূর্ব্বক দেশের চত্র্নিকে অস্থেয়ণ कति एक करवाण उत्पापन शत व्याश्व वर्षे त्नन। अनः शङ्भीत नजीत स्रत्न भिक्तिश्र इहेम्डिन : नि.च फारेंग. क्यांग् ७ छ-क्निकिश्निम अने जितिथ जा जीत मण्डमा ভাষে ভক্ষণ কৰিল কেলে। এই জনা के किली देवन। अर्थ किन श्रीकर्षत म्हरमान দিপৰ অভিশাৰ দুবা করিত। আহিসিন্ দেৱী আৰু কি কবেন স্থামীয় যে অজ একে নাবে বিস্থাধ এইবাজিল কেলম নামক **জন্ম**া থেট অঞ্জারা ভালা পূর্ণ করিলেন। এছ দিনেৰ প্ৰ- ও'মবিণ্ দ্ৰ মৃত্যু ভবন **৯ই**তে প্রত্যাকৃত্র হইণা নিজ পুজ্র ছোবদের निक्षे छिपछि इट्रैलन, हास्म श्रां পুর্বের পিছার ভিত্ত-বিবোলী টাণ্টামনতে যুক্ষে পরাস্ত ও রুদ্ধা করিয়ালিলেন। 🦝 🖫 আই।মগ্দেরী ভাষাকে মুক্ত কৰিবা দেন। শের দ্দেই কোধে জননীর মস্তকের মুক্ট কাড়বা লন। ভাহাতে ধৎ রুধমস্ততের नाम এकটि मूक्टे व्यक्तिम अहिमिग्रक धार्मान करतन। अनम्बत धार्रेमिटमत গर्ड ওসিরিদের একটি ক্লশাঙ্গ পুত্র উৎপন্ন হন. তাহার নাম হার্পে:ক্রেটিস্।

ক্রীলোকের রচিত প্রার্থনা।

বেথানে কোম মন্ত্রোর বাত্রতা নাই. কোন প্রচারকের যত্ন নাই, কেবল ঈশ্বরের হস্ত নিজ্ত ভাবে কার্য্য করিতেছে, আমা-দের ব্রাশ্বধর্ম দেখানে কি মধুর বেশ ধারণ করিষাছে, পাঠ দর্য অবগত হইয়া ঈশ্ব রকে ধনাবাদ করেন। কলেক তা নিবাদী কোন পরিবার হইতে একটি রচনা প্রপ্তে ইইয়াছি। তাহাতে নিপুণ লেখকের নাাদ কোন আড়ার বা অলক্ষার নাই, কিন্তু কেবল পরিত্র কদযের সরল ভাবে তাহা আরক্ত হইয়া আছে। যদিও তাহার কোন কোন স্থানে রচনাগত কিছু কিছু দোষ লাগত হল, কিন্তু আমরা ভাহার কোন পরিবর্গ না করিশা অবিকল নিম্নে প্রকাশ করিভেছি।

ম্বোৰ্গনা ;

হে প্ৰদালন্ ভোষাৰ নিকট আগে এই কাঠনা কৰিছেছি, যেন সংসাবের ম্যানে মুক্ষ হুইয়া জোয়াকে না ভূ'লগ' প'কি ও যুহ'ণে। হত থেকি পাৰত চুবেশৰ অধিকানী দ্বীসং নিজ, মুখ १५०० केविट्ड निर्देश करें। अरे असे वाधीव नकटन লাদিএ হ(সিষ্) এছামাধ্য জিলাসানা ক্রিকে শারি : হে ৮ বেশব। কোমার সম্পেকত ভগন্প ক রিয়াহি ভাষাবন্ন কাংকে অক্ষন, এই নিনিচেট ক্ষা প্রহোষ করিছেছি, আমারাদ্যাক পাপ ছ-ইতে মুক্ত কর, এবং সংক্রের্মে নিম্ন্তে কর। ভূমিই रक्त कराहरार संकर एउ.स. क पुलिय, आशहा द्यावन यालन कान्यकान । च नवा (क प्रकाश छ ুক্তু, হ'লা হইছে আমবা এক মন পুণ সম্পদ भगुष्य आश्च रण्या कीत्म याद निकार विदिक्त কিন্ধ উত্তাধ্যাস পূর্ণনামা স্থানিয়াছি, আভারণ আমার-দেৰ সকলেও বিচিত যে পশুৰুৎ মুদ্ধ লা হইয়া দোষাৰ আবিপেনায নিস্তুত থাতি। হে ককণা भग आभात कहे चु र आर्थना धरून कता।

তে পারনেশ্বর পার কর এই সংসার পারাবার।
চালিয়া দাসীয় প্রতি, হর মম এ ছুর্গতি,
আমি অভি মূচনতি, নাহিক পর্যোতে মভি,
কি হইবে পরে গভি, ভাবি ভাই নিরস্তর।
কুপা চুন্টে কুপাসিমু, পার কর ভবসিমু,
এ অধীন জনের বন্ধু, ভূমি বিনা নাহি ভার।

মূহন খুস্তক

় - ভাত্তিত-শুপ্ত। শান্তি-রুম পূর্ণ চম্পুকাংর। জী নরদা এমান বার প্রকীত।

২ । ক্ষাজি ভিত্ত বিদ্যালয়ানের উচি গোনীচিড্য থিচার বিষ্যুক প্রাক্তার । শেল হাটি দেশহিতিখিলী সভাতে গঠিও। ছিল্পালেলীশ লোল বিবচিত।

থে দুই খানি পুন্তক চাবা চইতে জিবালিও কইমাছে।
ক্ষিত্র বর্ণাজ্ঞান দ্বাগে নহান্য আগন নামনু কাৰ্ডিটিএ

কাল নাজ ক্রিনাডেন। প্রেলি ছিন্তক চার্চি মুক্তিই

কাল ক্রিনাডেন। প্রেলি ছিন্তক চার্চি মুক্তিই

কাল ক্রিনাল কর্তা আদি কিন্তিই নামনি ক্রিনাল ক্রিনাল

দ্বিতাৰ পুষ্টৰ পথৰ আধিক কাৰ্যস্থাৰ সেন মহাক্ষ भीका क्षिति। लिखा व विषया स खाखान लिखिलाक भागा के जिस्सा । पर्व किस्सु कि स्थि । रहन में मुख्याल कादाल তাৰে জাল ক্ষত। জানৰ সানিবাম ন, যে জনালি ভাল পাশিব লোক । বা ফালিব পিন। শিক্ষাৰ আনশ্ৰেণ। জার্মান নার্ম र मिश्रा ५ मा इस्स अ ही का कि भारतम 望り、12日で、19日 うまかな、 山路で fin (空ので)でき 本* umtran शिक्ष १८ - फिटिश, डालोब क्रियानन नवाही कवि মন্ত্ৰালৰ অভিষয়ে একশানি ৰ # 3 8 M G चिल्कम भुड्ड के के वह रहे हैं है है है है है है है F' 不确 \$\$ ** 6 5 50 17 · 随情哪很 新面化出于 第一 कर १ (च अभ्यान ५०१न शेपकेट्य खाबि का सिन विस्कृत मे-दक्त र रहा । अवहाल खान्नदा देश राजिक खोना लीत करततर ক্রিচেই শাস্ত আ হা ्रिक देश्याद्राप्त अभागा केड ৫৪'পান জাভিত দালিক প্রালালা লে প্রিভন্ধ ও উ-কৃষ্ট ৯০৯ ভাষা হিচ্তুৰ কাষ্ট্ৰেক নামক প্ৰাৰ্থিক শেক 1889 7 👺 6 FATO (15 A) की निका किवल राजा ७ ५ ४ व ७/ ४१ क'र र नह नरक. य कि इक्, व्यवसीर इ उद्धान अध स्पार डेफीलन व वर्गना वर लाजारन कथन है १ कुड अवदर्श्वीरक वाक्षेत्रक श्रादान, । इक्षात्व ऋति सम्बद्धाः के क्षा क्य- 'ली १७८। ५६० छ। । ल'हेक्टन विट्वहम, स्विट्टम।

দ্মতিক নাল্ড কাৰ্যা তেওঁ মাসিক পানিকা দুই ন কা জেকাতি কৰ্মা হৈ ইকাৰ উদ্দেশ্য ও ভদ্ধাৰাখিনী দ্বিকাৰ উল্লেখ্য স্থানি এই জন্য এ পত্ৰিকা খানিক আহি আমৰ ভাড়ভাবে দুউপাত কৰি। এ পত্ৰিকাৰ স্ব হিড আমৰি চিনেৰ লাকপ সম্মা ভাষাতে আমৰা ইচাৰ বিষয়ে অধিন কৰিছে উপৰাধা হ'বা চিনুস্থায়ী হউক।

গ। এগি ডিন্ট পীড়ান ি নিবসার উপায়। এই পুস্তক ।
গানি ইংবাজি ভাষার লিখিও। ডাঙ্কারেরা ইহার দেগি
নাগ বিচার বা বন। জানরা এই পার্যান্ত বলিতে পাবি।
বিহার ডিনিৎসার উপায় আকাশ করা যেমন আবিশ্যক,
ইও বা কারণ আবিস্থার করা তাহা অপেকা অধিকঙর।
আবিশ্যক।

বিজ্ঞাপন

শ্রীযুক্ত প্রভাপচন্দ্র মন্ত্রমণার কলিকাতঃ ব্রাহ্মসমাজের দানসংগ্রাহক পদ পরিভাগে করিয়াছেন, অতএব দাত রা প্রভিত্তাত সা-মংসাবক দান, শুভ কর্মের দান ও দক্ষিণা প্রভৃতি সমুদান দান কলিকাতা ব্রাহ্মসমা-ক্ষেব সম্পাদ চ শ্রীযুক্ত দ্বিভেন্দ্রনার্থ ঠাকুরের নিকট প্রেরণ করিবেন। দাতাদিনের অধি কাশ্যের অভিমতে এই দানের টাকা ব্রাহ্ম-বন্ম প্রচাবের কার্য্যে নিয়োজিত হইবে।

জ্ঞী দেবেন্দ্র থ ঠাকুর : কলিকাডা রাজসমক্ষের টু জী

ট্টালিবের অনুমতান্সারে প্রীযুক্ত অন্যোধানাথ প্রেড়ালী মহাশ্য তত্ত্বো দিনী কতিকার সম্পাদক হললেন, এবং প্রাযুক্ত আনন্দচন্দ্র বেদান্তবালীশ মহাশ্য কালকাতা তাল্লামাজের সহকারী সম্পাদক হইনেন।

> बी विद्वासम्भाष ठेक्टि । विकास विकास विकास मार्थिक संस्थापन

অনুষ্ঠান পদ্ধতিঃ।

জাতকর্মনামকরণোপনয়নদীক্ষা বিবাহাস্থোফিশ্রাদ্যেতি-সপ্তবিধসংস্কারাজ্যিক। 1

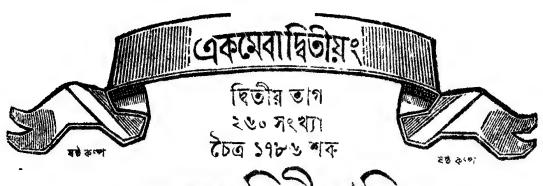
এই পুস্তক প্রস্তুত চইরাছে,মুলা ॥০ আটি
আনা। যে ৰূপে ব্রাক্ষিদেরের গৃহধর্ম সকল
অনুষ্ঠিত হণ, ইহাতে ভাহার আদর্শ বির্ত্ত আছে। ঘাঁহারা এই পুস্তক প্রার্থনা করেন, কলিকাদ। ব্রাক্ষিণমাজে মূলা প্রেরণ করিবেন।
শ্রী আদনদচন্দ্র বেদান্তবালীশ।

क्षिताक वाक्रमादश्य महस्त्री मन्त्राहरू।

নিঘণ্ট পত্ত।

প্রতি শ সাদ্ধ্যরিক ব্রাহ্মসমার . ১৬৯ ইজিপট্টীয় নত . . ১৮০ স্থীলোকের রচিত প্রার্থনা . ১৮৩ এই তত্ত্বোধিনী পরিকা কলিকাতা ব্রাহ্মসমার হইতে

এই ওত্রোধনা পাত্রকা কলিছাতা ব্রাক্তনমান্ত ইইতে ফোডিমানে থাকালিত হয় ৷ ৪ ফাল্ডান মঙ্গল হার সত্ত ১৯২১ কলিপতাক ৪৯৬৮ ৷



ত্রঅরোধিনীপ্রতিকা

রশবাএকমিন্নপ্রকাদীয়ানাথ বিক্ষনাদীভূদিদ সর্ব্যস্ক্র। তদেব নিতাং জ্ঞাননত্ত নিতং স্তত্ত্বান্ধ্বব্যব্যম্ক নিবারিটীয়ং সর্বারোপি সর্বানিয়ন্ত সর্বাভ্যমর্ববিৎসর্বশক্তিমন্ত্র স্পূর্ণমঞ্জিনিয়া নিক্ষান্ত স্থানিয়া সোধন বিশ্বস্থা জিলাল ত্রিক্টমন্তিক শুভক্তবৃতি। তুলিন্ প্রীরিজসা প্রিয়েকাগ্রাধনক ওপুপানন্দের

নেদিনীপুরে গোপগিরিতে বসম্ভ কালে ত্রন্ধোপাসনা।

ध्यमः धामात्रमिदशत थामन्त्रीय छेरमद्यत ালবস উপস্থিত। অদ্য আমারদিগকে তিন अकात तो क्या এई श्रांत जांकर्षण कति-प्राटह; दगटखत मोम्मया, नथा ভাবের भोक्त्यां धवः केश्रद्धत भोक्या। কালে জগতে নব জীবন ও নব বদের আর্বি-জাব হয়; বন ও উপবন সকল নব পল্লব ও মুকুলকুলে পরিশোভিত হইয়া চিত্ত হরণ করে; পক্ষিগণ ভূতন ক্ষুর্ত্তি প্রাপ্তি পূর্ব্বক व्यरक्ष कर्थ गक्त श्रिपुक्त कतिशा गञ्जी छ-स्था वर्षण करत ; ज्यान्य मनात्र मभीत्रण मनत मन्द्र श्रवाहिज इरेश महीत मत्या जान्हरी स्टर्धत मक्षात्र करत्। किन्छ वमरस्त्र तमो-मर्था व्यापकां गथा खाद्वत तोस्था कि (अर्थ । यथन ऋषत्र ऋषत्र व्यक्ति करत् यथन এक महान महा-निष्ठं जे बन-भरायन मन जना महल गडा-निर्छ मेश्वत-श्वाह्म म-व्यत त्रीमार्था त्राहिक इहेशा व्यवह-शाटन वक रुप्त, म जांद्य मोम्मदर्यात निक्रे वन-তের দৌন্দর্যা কোধায়? কিন্তু যিনি বসতের

भोन्मस्यात शृक्षि कर्डा अभया जात्वत (भी ন্দর্গ্যের জনয়িতা, ভাঁছার দৌন্দর্যোর বি দীম। আছে ১ তিনি দৌক্তর্যার প্রত্রবণ ठाहा करेटा मकन स्थार्डि, नकन (भारा ७ मकन भोन्मर्गा विनिव्ह इड्रेट्ट्र न्ति शुर्वत व्याकत् हिन् देशीन्तरयात्र मा भत्। केश्वरत्न असुभ्य छान्छे छ। हात् भी-न्या। तम ओन्मदर्यात महिन्न हत्यात म-म्कर्त गाँहे, स्म स्मोन्मरमान महिल भनात নখন্ধ নাই। যে সোনতা যে থাকি নিবাকৰ ক্রিভেছে, ভাষার আর চক্ষ ক্রিরাইবার নাধ্য इहेटहरू ना! याकूल जी-माखिकन कियत् অংছেন,কিন্তু অামাদের ব্যক্তিত।কোথার ১ প্রেমী কে ছউল যে প্রেমাস্পদ উল্হার প্রতি প্রীতি দুটি না করিলেন সংযে ব্যক্তি ঈশ্বরের সৌক্ষা নিরাক্ষণ করিবার নিমিত ব্যাকুল হয় ও তাঁহার নিকট প্রার্থনা করে, তিনি ভাহার মহাপে আত্মস্বপ এক শক্তরেন। श्रेश्वर (य का क्रिक श्रीत भोन्मर्र्धात श्रेश्वर উপায়ক দেখেন, ভিনি তাহার মনশ্চস্কুর স-শ্ববে আপনার নৌক্ষী ক্রমশঃ অধিকতর প্রকাশিত করিছে খাকেন। এ অবস্থাতে माधक " डेप्पवाद डेप्पवर याचि स्त्रीद

चर्तः स्थार स्थाः "'डिरमव स्ट्रेट डेरम**र**र, স্বৰ্গ চইতে স্থাে, সুখ চইতে স্থাে উপ-নীত হযেন। এই ৰূপে তাঁহার পবিত্র বৌবন বিগত হইয়া যথন তাঁহার বার্দ্ধকা উপস্থিত হয়, তখন কি ভাঁছার আনন্দের माम इस / कथनरे नस। वत्रः लाइ। पाछ-कालीन स्टर्गात क्यांजित नाम बादता गाए ও পরিপক্ হয়। বাহে বার্দ্ধক্যের চিষ্ণ কিন্ত प्य उद्ध हित-योवम ७ हित-वमन्। বাহ্য বসন্ত সেই আধাজিক বসন্তকে সারং করিয়া দিতেছে। যিলি বসম্ভের সৌন্দ্রো, मथा ভাবের দৌ ऋযো ও স্বীয় দৌনদুর্য্য বিরাজ করিতেছেন, আইস অদা আনরা নকলে মিলিড হইয়া তাঁছার গুণ গান করত आभा तुरमत कीवनरक मार्थक कति।

७ এक स्मवाधि शेर

জাবনের প্রকৃত ব্যবহার।

৫৮ সংখ্যক পত্তিকার ১৫৮ পৃষ্ঠ র পরঃ

क्रिशोषां।—यपि जुदि शोहदामिण ३-ইতে ইচ্ছা কর এবং যদি ভোগার কর্ণকুছর প্রশংসা-ধ্রি ভৃপ্তিত্র বেশ্ব করে, ভাষ। হইলে জড়তঃ পরিত্যাগ পূর্ঝিক কোন মহৎ বস্তুর প্রতি লক্ষ্য হৈর রাখ। যথন কোন মহৎ কাষ্য সম্পন্ন করিতে প্রবৃত্ত হইবে, তথ্য সর্বদা মনে করিবে যে, কোন কাযাই একে বারে নিজ্পন্ন করা যাইতে পারে ন।। ए वर्षे-अक लक्ष वाक राक्तिक हांश अमान ক্রিতেছে, ইল এক কালে কণামাত্র বীজে निश्चि किल। यथन (य कार्या ध्यूड হইবে, মনোমধ্যে প্রতিজ্ঞা করিবে, যাহাতে ভোগাকে কোন প্রতিবাসীর অমঙ্গল চিন্তা করিছা উল্ভির পথে গমন করিতে না হয়। কোন প্রতিবাদীর উন্নতির সহিত তুলনা করিয়া আপনার উন্নতি পরিমাণ করিতে ঘাইও না . প্রতি দিন িশ উন্নতির সহিতই

নিজ উন্নতির তুলনা করিবে। অথতিহত অধ্যবসায় অবলয়ন করিয়া অহরহ আপ-নাকে অতিক্রম করিতে যাওয়াই যথার্থ किशीयांत्र लक्ष्य। घटनात्र अन्न लाटक ঈর্ষান্তিত হইয়া জিগীবা রুভি চরিতার্থ করিতে ব্যাকুল হইও না। তুমি এই রূপ প্রতিজ্ঞা করিবে, বৈ অদ্য মন বেকুপ অএবর্তী হইয়াছে, কল্য আফি যত্ন সংকারে দৃঢ়ত্রত হইয়া আরও অত্যে গমন করিব। এই ৰূপ প্রতিজ্ঞা প্রতিপালন করিতে পারিলেই অচিরাৎ মহান্ লক্ষ্যে উপস্থিত হইতে পারিবে; এবং তোমার জিগীযা র্ভিও যৎপরোনান্তি চরিতার্থ হইবে। এই ৰূপ জিগীযু বাক্তিই অনন্ত উন্নতিকে লক্ষ্য করিয়া শ্রেষ্ঠ হইতে শ্রেষ্ঠতর লোকে গমন कटरना

नमनावनात्रीटक अनात्र कात्र। नीव-११६-বীস্থ করিতে চেম্টা না করিয়া স্বয়ং দুট ব্রত ও কমিন পরিশ্রম দ্বারা অধিকওর শ্রেষ্ঠ হ লাভ করিতে যতুবান্ হইবে : তাহা হহলেই যশের সহিত সফলতা লাভ कतिरव। कीशीयु वृक्तिमान् वाकि राष्ट्र महर कार्यात व्यक्ति नका तार्थन, जानुन मन्दक महर कहिशा चक्रांचा माध्दन उरुभत হন। তিনি পৃথিবীয়া সকল বিশ্ব বিপত্তিকে व्यवस्था कतिशे देश्या ७ माहम क्रम भक चत्र महकः (त উछ छम लक्षा शास्त्र উष्णीत-মান হন। তিনি সর্বাক্ষণ সাধু লোকদিগের দৃষ্টান্ত অধুরে জাগৰক রাখেন, এবং দেই সকল দুষ্টান্ত আপনার কার্য্যে পরিণত করিতে সর্ব্ব প্রকারে যত্ন পান। তিনি উচ্চ কার্যো লক্ষ্য রাখিয়া শরীর মন সকলি, সেই कार्र्यात क्रमा छेश्मर्भ करत्रम अवश्रान

কর্ত্ব সেই কার্যা স্থানপাল না হয়, নে পর্যান্ত কথনই বিশ্রাম করেন না; কিন্ত যখন তিনি আপনার উদ্দেশ্য বিশ্বা করেন,

ভখন তাঁহার অন্তঃকরণে কি এক অনি-र्सातीय वानत्मत उदम उदमातिक इ-ইতে থাকে, তাহা অন্য লোকের স্বপ্নেরও অগোচর। কেবলই যে তিনি আনন্দ উপভোগ করেন এমত নহে কিন্তু তাঁহার অত্তে পৃথিবী চিরকাল তাঁলার নাম পৃষ্ঠ-एम्टम अविश कतिया थाकित्व। পরবশদিগের সমস্তই বিপরীত। তাহাদি-গের অস্তঃকরণ গরলে পরিপূর্ণ। তাহারা যাহা কিছু করিতে যায়, তাহাতে তত দিন আপনাদিগকে উন্নত বোধ করিতে পারে না, যত দিন আশীবিষের ন্যায় অন্তর্গরল বাহির করিয়া প্রতিবাসীদিগকে বিবণ ও धकर्मना করিতে না পারে। मर्ट्यक्रवरे वियारिक পরিপূর্ণ দেখা যায়; বিশেষতঃ যখন ভাহার কর্ণ কুহরে ভাহার প্রতিবাদীর উন্নতির সংবাদ প্রবিষ্ট হয়, তখন তাহার মস্তকে যেন বজুাঘাত পড়ে এবং পাছে প্রতিবাসীরা তাহ। অপেকা অধিক উন্নতি লাভ করে এই আশকায় ভাগার অন্তর্ণাহ উপস্থিত হয়। ঘূণা তা-হার অন্তঃকরণে সর্বাক্ষণ রাজত্ব করি-তেছে, এক মুহূর্ত কাল যে তিনি মনের আরামে কাল মাপন করিবেন, ভাহার কিছু মাত্র সম্ভাবনা নাই। পরোপকার কাছাকে वरल, बलिए लांक मूट्थ धवर दावहाद জানিতে পারে, তথাপি তাহাকে তাহার অনুষ্ঠানে কখন দেখা যায় না। স্থতরাং ' আত্মবৎ মন্যতে জগৎ " আপনার ন্যায় সকলকে দেখিয়া এমন স্থন্দর সংসার তাঁহার পকে বিষবৎ হইয়া উঠে। তিনি যদি উহার সমব্যবসায়ীকে তাহা অপেকা অধিক উন্নত দেখেন; তাহা হইলে ভাঁহার সমব্যবসায়ী বে যে কার্য্য করিয়া উন্নতি লাভ করিরাছেন,সেই দেই কার্য্যের দোষারু-দক্ষানে রত হইয়া কি উপায়ে তাঁহার আর

উন্নতি না হয়, স্বতঃপরতঃ তাহার চেত্রা পান। কিন্তু দেখ এতাদৃশ অন্যায়াচারী আহিতকারীর মঙ্গল কখনই সন্তবে না; সে যাদৃশ লোক সকলের উন্নতির কণ্টক স্বরূপ, তাদৃশ আপনি আপনার উন্নতির কণ্টক স্বরূপ। অবশেষে, সে এতাদৃশ স্বাধীন মনুষ্য হইয়া তন্তকীটের ন্যায় আপনার ঈর্ষা জালে আপনিই যত বন্ধ হইয়া পড়েন, প্রতিবাদীর মঙ্গল ঘটনা কালসপা হইয়া সময়ে সময়ে তাঁহকে তত্ই দংশন করিতে থাকে, সে মূর্য আর এক পদও পলায়ন করিতে পারে না।

স্থবুদ্ধি।-সর্বা ক্ষণ স্থবুদ্ধিকে ভোমা **पिटशत अम्डःकत्र शन कित्र, (मश्र स्यम धक** বারো স্ববৃদ্ধির কথা অবহেলা না কর। স্থ-वृक्षि धर्मात श्रवर्षक अवः ইहारक जवनश्न করিয়াই শাণিত ক্ষুরধারের ম্যায় ধর্ম পধ पिशा **हिना वां**थशा यात्र । किञ्जादक मन्द्र-ক্ষণ বশে রাখিবে,নভুবা ইহা ভোমাদিগের এতাদুশ উপকারী বস্তু হইরাও উদ্বেগেব কারণ হইবে। কাণ, খ্রা ও কুক্তকে দেখিয়া কথন উপহাস কবিবে না। যাঁহারা লোক দিগের কিঞ্জিংমাত্র ত্র্বলতা দেখিয়া উ-প্রথম করিয়া থাকেন, ভাঁহার। নিশ্চয়ই **डिशहाम|म्माम हम। অধিক বাক্য বারে সম**য় ক্ষেপ্ৰ করা নীচ অন্তঃকরণের কার্যা, যাঁহাবা অধিক বাকা বাষ করিতে প্রিয়, তাঁহারা মতার অতান্ত অহিতকারী। তাঁহার বাকা শুনিতে শুনিতে কর্ণ ক্লান্ত হইয়া পড়ে এবং অপরাপর বক্তাগণের বাকা, যাহা অবণ করা অতি আবশাক, তাহা তাঁহারি বাক। জ্বালে জড়িত হইয়া বক্তার অন্তরেই নিহিত থাকে। আপনার গুণের কদাচই গরিমা করিবে না; যে হেতু স্বীয় গুণ প্রকাশের নকে নঙ্গে সাধুদিগের তাচ্চ্ন্য উপস্থিত হয়। কাহাকে তুক্ত জ্ঞান করিবে না,

রেণ ইহাতে অনেক আপদ্ উপন্থিত হই-ান সম্ভাবনা। অধিক কৌভুকে বন্ধু-বিজেদ হইবার যথেষ্ট সম্ভাবনা, ঘাঁহারা किर्ताटक माग्रत ना त्रांशिटक शांदबर, টাহারা সময়ে সময়ে বিলক্ষণ ক্লেশ পাইয়া থাকেন। ছোমার যে ৰূপ অবস্থা, তুমি भिष्ट बार्ग कीवरनत छेशरमांशी खता मक्स নঞ্য করিবে। অবিক আয়াদ পাইয়া আক-क्षिटकः। रश्च मक्ष्य व्यक्तिमाक् नत्ह, त्य त्ह्रू व ऋरथेत উদ্দেশে তুমি मেই एवा मध्य কারতেছ, তোমার সংগ্র করিবার দুংখের স্কিত ভোমার ভবিষাং স্কুখের ভুলনা করিলে সুখের অংশ অতি অৎপই থাকিবে। দক্ষয় করিলে তুকাবিস্থায় স্থাখের কারণ **ब्हेटव, विट्युम्मा भूद्धक छ**ालात मञ्जूष করিবে। দেখা যেন কোনার আ্রানাদ २० ४क वाश-माथा न। ६४, छ। ह। इङ्केटल **शट**त পশাস্তাপ আসিয়া উপন্তিত হইবে। তো-ম: নীভাগা যেন তোমার বিচক্ষ, ১:কে এবং পরি মিতাচারকে নাট না ব্রেয়া ফেলে। যিনি অধিক আভ্রম্ব ভাল বাদেন, উত্থকে পরে আবশাক মত দ্রামা পাইয়া খেদ ক রিতে হয়। অনাকে বিপক্ষে পড়িতে দেখিয়া আপনি সভর্ক হইবে , এই স্থানেই লোকের বিপদ্ভোষার সম্পতির কারণ **হইবে।** 🗝 প্ররের দোষ কেথিয়া আপন দোষ সংশো-४म कतिदव। यमनिष ना क्लाम वाङ्गिरक উত্যৰণে প্রীকা করা হয়,ভদবধি ভাছাকে वियोग कतित्व ना ; এই जनात्व जूमि মহন লোককে কোন কারণ বাতীত অবি-খাল করিবে, ভাগাল নহে, বে হেছু এতা-দৃৰকামে। কদবাভা প্ৰ**কাশ পায়।** প্রথন কোন উপাবে কোন ব্যক্তির **অন্ত**র বংহা বিশেষ ৰূপে জ্ঞাত হইয়া তাঁহাকে স্থ বলিয়া বিবেচন। হয়, ভাহা ংট্ডল সেই াজিকে তোমার অন্তর হুইছে দ্বীকৃত

করিও না; এতাদৃশ বাক্তি অমুলা নিধি খৰপ বলিলেও অত্যুক্তি হয় না। অৰ্থা-शरमत मटक मृदक याँश्विशतक आश्व रुखरा यांत्र, कैंहिमिटगत कुना व्यार्थनीत কথনই হইবে না; ভাঁহারা ভোমার কাঁদ স্বৰূপ নিশ্চয় জানিবে। যাহা কল্য আৰ খক হইবে, ভাহা অদাই সমস্ত বাৰহাস করা কোন মতে বিধেয় নয়; আর যে বস্তু क्तिन विभटनत कात् विनया विष इहेटव, তাহা কথনই সঞ্জ করিবে না। নির্ফোধেরা गक्त गगरः। कठि मध् करत न। এবং ञ्जू कित्रां ७ मकल मगरत मकल विषया कत লাভ করিতে পারেন না, তক্ষনা যে নি-স্থবোরো ডু'বেথ কাল যাপন করিবেন,ইছা कान करिल महान छ।न एन अशा छिहिन नहर ।

ভিভিন্দ।।--বিশ্বপতি মনুদাবৰ্গকে এই ৰূপে পৃথিবীত্ব করিয়াছেন যে তাঁহাদিগকে বিপদ্ দুঘটনা, অভাব, ক্লেশ এবং ক্ষতি गश् क्षिट्ड इहेर्दरे इहेर्द। उड्डना, इ মন্ত্রাগণ। ভোমরা পূর্বেই দৃদ্ভা, ধৈর্যা এবং তিতিকা শিক্ষা কন, যাহাতে ডো-मानिश्वत जीवत्वत व्यवभाषाती व्यापन् रुरेट अनाशास्य উद्धात शाहेरव। उँके যেমন বালুকাষয় প্রান্তরে পতিত হইয়া কুধা ভূঞা এবং প্রচণ্ড স্থ্যাকিরণ অনা-য়ানে নহ করে, ভাদৃশ ভিডিকু ব্যক্তি অবলীলার দংগারের সমস্ত বিশ্ব বিপত্তি অবিচলিত চিত্তে সহা করেন। করণ মনুষাগণ স্থা ছঃখে হর্ম বা কাভরতা धकां करतम ना। **डाँशत्र मिट गत्र सहद** অভঃকরণ জঃখের কথাখাতে সম্বস্ত হইরী **वितरमित्र धर्म अर्थन वरिष्ट्र क इम्र ना।** তিতক্র হব হংথ যদি সৌভাগ্য হভার্গ্যের উপর নির্জর থাকিত, তাহা হইলে ভিনি ছ্ঃখের সময় কাতর হইতেন, এবং সুখের

সময় আহলাদে হততেত্ব হইতেন: কিন্তু তাঁহার মন তিতিকাৰপ রজ্জু দারা ধর্ম-ৰূপ পৰ্বত মধ্যে ধৈৰ্য্য ৰূপ কীলকে আৰদ্ধ রহিয়াছে. স্কুতরাং বায়ু-স্বৰূপ সংসারেব দামানা স্থা তৃংখে ইহা বিচলিত হইবার বিষয় কি। যথার্থ তিতিফু ব্যক্তি কেবল সাধ্য ও দুঢ়ভার উপর নির্ভর করিরা খনা-ষাদে বিপারি-দাগর পান হইয়া যান। তিনি वीरतत नाग्राचालरम्ब मच्युशीन इन, खल्वाः বিপদ ভাঁহাকে পরাস্ত করিতে পারে না। गश्कारन निश्रम-ममूक क्ष्युर्फिक क्षेट्र छैं।-ভার মনকে আফ্রমণ করিব। বিধাদ-গমুদ্রে নিপাতিত কবিতে যায়, তথ্য তাঁহার দৈয়া র্হাহাকে অক্ষয় কবচে আরুত করিয়া রাবেখ। কিন্তু ক্রীণমন। ভাঁত ব্যক্তির প্রতি লক্ষ্য কর, তিনি চিরক। ব লজ্ঞার দান হুইয়া কাল যাপন কবিতেছেন, তিনি পরিছভার 'करम कम्लामांन इक्ता भीठ करमा श्रद्ध करूं-८७८७म, जबर माञ्म ७ वीर्गा मा वाकांत्र অপমান সহা করিতে গিয়া নানা আপদে প্ৰিত চুইতেছেন। তাঁহাৰ মন সামান। তৃণ অপেকাভলগু, তিনি বিপ্দ সমনে ष्यकृत इःशंगभूटा भन्न इट्रेंट श्रीटकन, ५८-দুক্টের সময় হৃতচেতনপ্রা হ্ন এবং নৈব-শেরে সময়ে তাঁহার আত্মা একে বারে অভিত্ত ও নিরুপার হইয়া পড়ে।

-

থিয়োডোর পার্করের পত্র।

২৫৮ সংখ্যক পত্রিকাব ১৫৭ পৃষ্ঠার পর।
ইউনিটেরিয়ানেরা কুসংক্ষার-মূলক ত্রিনীকুর মত সম্পূর্ণ অস্বীকার করিয়া থাকেন,
ভারিমিন্ত গোঢ়াদিগের সহিত উহাঁদের
ঘোরতর বিত্তা উপস্থিত হইত। ঐ সমস্ত
গূত্বাদীরা মত-ভেদ নিবন্ধন নির্মাক্ত তার
সহিত উহাঁদিগের প্রতি অতি কদর্যা ব্যবহার করিতেন। কিন্তু পরিশেষে ইউনি-

টেরিযানেরা উহাদিগকে পরাস্ত করিয়া ত্রি-নীতির মতে অবিশ্বান বন্ধমূল করিয়াছি-উহার। মেনেচুদেটদিনেরও ধর্ম-বিষয়ুক বিশ্বর অসম্ভ মত থ ওন কবেন। অন্তর উচারা কতকগুলি ভলনাগার নি-ৰ্মাণ ও বহুসংখাক পূৰ্ব হন বিদ্যালয় আ-পনাদিলের আধকাবভুক্ত করিয়া তৎ সমু-मारात यरथछ श्रीवृद्धि ग्रांधन कतिरत्नन। এই সমস্ত কারণে আমোবকাবে ইতব সাধা-त्रा मक्राच्ये कें।भाष्ट्रां यर्थके ममानत করিতে লাগিল। খাদিও উ.হাদিগের মত মম্পূর্ণ স্বতম্ন তথাত ভাঙারা আপেনা,দগকে **স্তুত্র সম্প্র**দার বলিষ্য বিবেচনা ক্রেডন না এবং মাধানদের ধর্মানংক্রান্ত স্থান ভাব म**म**ान क्रिया भाडिमाय भाष्ट्रको *च*ेर इत । তৎকালে ইউনিভাসালতেরা বিকাশ বিমল আবেশকে আপনানিগতেক উজ্জ্ব কারতে পারেন নাই, তথাত যাহা ব্যাবিজ্ঞান मञ्ज विविधागतक এक कार्या पुनिव के त-खर्छ, (मर्थे 'भग्छ न', वक्षा भवि**स्त्र** मर उव বিরুদ্ধে গৌরৰ সহকারে গে'রছৰ বিভেন্ডা করিতেন। জীগারা নক্ষ্ণাসনিও অধিকার অব্যাহত ও নিষ্ধার,ল হঠতে দেখাবহ নিয়ম গুলি পবিব্রিত ক্রিয়াছিলেন এবং क्रमानेश्वर या मार्ग्डरन्ट था । भूगा बन লী ত্রিসার চরিতেছেন—শ্রীতি দান যে ভাঁশার মধা প্রধান দান, এই সভাটি নিস্কা खनान कार्य व्यवस्य कांबर ध्या शृक्षियान मन्भूनाय मद्या क्वल डेर तिहि অনন্তনরকের মতে মুক্তকণে প্রতিবাদ করিয়া খাকেন। কিন্তু যদিও তাঁছারা খিটীর ধ-र्क्ट्र थ ममन्त्र मात्रांप्तन व्यविश्वाम करत्न, उथाठ कि इंडेनिजामिलके कि इंडेनिटिं-রিয়ান উভয় সম্পুদারই বাইবলের অ-লৌকিকভা বিষয়ে সম্পূর্ণ বিশ্বাস করিয়া शांदकन এবং কছেন यनि जालोकिक ও বিষয় কাইবলে তিনীতি ও অনন্ত নরকের বিষয় ক্লাটাক্ষরে নির্দেশ করিয়া থাকে. ভাষা ফটলে আমরা ইহাতে অবশাই আন্তা প্রকর্মন করিব সন্দেহনাই।

মাউরে গারিমন আপনার বন্ধুবর্গের স-্হত আমেরিক বি পিউলিটান সম্প্রদায়দিগের संस्कृषे छेर्क्क मत्उत এक छ अक्रभां जी हरेशां इतलन अदः श्राहाश थटकाँ विभिन्ध ळाल विमञ्चन कतित्त्व अञ्चल आएमन, ্ষই সমস্ত কৃষ্টৰেছ্যাবলয়া মহালাও হিক্ত-পিলোর ভবিষাস্বজ্ঞাব ন্যায় সাতিশয় উৎ-দাহ ও যত্র সহকারে, দেই সকল মত প্রচার কারতে লাগিলেন। কিন্ত তিনি পিউ-রিটান স্প্রাদার, হিব্জাতীয় প্রিয়াদ্বতা ও भन्म थ की तम अधिकारण लेका व श्रीत ব্যান্যকগণ, অপেক। এনেকাংশে আপনার মনুষ্যান প্রদর্শন করিঃগ্রেলন ৷ যুৎকারে ভিলি জ সমস্থ মত পালার কবিতে পারিট कर्रम, उदान खरे का वा उपन स्ना करेशा-চিলেম যে নোউনের রাজপুরুষেরা বিস্তর অন্ত্রমন্ত্রার প্র দেখিলেন একটি धरे कर्द्या महाग्रहा

বরিতেতে। তদ্দানে উইাদিপের মনে গ্রিতেতে। তদ্দানে উইাদিপের মানি গ্রিক ক্লিত অশৈকা বাহল না। ডালের চানিড সম্পূর্ণ ক্ষমতা, ক্লিয়েডেনা বজুতো ও সম্বিক মনুযান্তের নহিত সন্ত্রের এবং ধর্ম শুরুরির প্রেরুত জাবন স্বৰূপ এই ছুইটি বিশ্বে সকলকে উরোধিত করিয়া আপনার নিয়েত ধর্মানত প্রত্যেক বাজি, রাজাও শুরুতি ধর্মানত প্রত্যেক বাজি, রাজাও শুরুতি ইইলেন। ঐ মহাল্লা কহিয়া থাকেন শুরীয় ধর্মা প্রভাবে স্থানার কির্য়েশ প্রিক করিছে সচেটিড ইইলেন। ঐ মহাল্লা কহিয়া থাকেন শুরীয় ধর্মা প্রভাবে স্থানারীর পান-দোষ নির্য়েশ, নির্বানর অবস্থার উন্তি সম্পান্তর ও অনভিজ্যের শিক্ষা সমাধা হয়, এবং এই ধর্মাই আনেতিকার ক্রীত দাস-

দিগের স্বাধীনতা প্রদানে প্রকৃত উদারতা थनर्भन करत । थे ख्रविशांच महत्रा युवक-দিগের সহিত গাঢ়তর সংস্তব রাখিয়া এবং উহাদিগের সহিত বিবিধ বিষয়ে তর্ক বিতক করিয়া বয়দের উন্নতি অনুসারে জ্ঞানেরও সমধিক শীরুদ্ধি করিয়াছিলেন। মান ও তাঁহার কএকটি সহযোগী সাধাস্ত্রের বিদ্যার উন্নতি সাধনের নিমিত্ত সাভিশয় যত্র ও পরিশ্রম স্বীকার করেন। পিয়ারপণ্ট অসহায় হইয়াও স্কুরা পান নিবারণ, ধর্ম যাজকের ন্যায়-পরতার দৃটি স্থাপন, ধর্মা বিষ্থক ভাস্কর অসম্পতি নিরাকরণ এবং সাধারণের প্রীতিকর বা অপ্রীতিকসই ह উক প্রকৃত নিষ্ঠ্যতার প্রতিবিধানার্থ ধর্মা-ষাজকের অধিকার স্থাপন বিষয়ে সমধিক অমিাস অবলম্বন করিয়াছিলেন। শেষে ইমার্মনের উজ্জ্ব ধীশক্তি বেক্টিনে স্থকাশিত ভ্রমাছিল। উহা স্থাতুর ব্যক্তি বর্গের মন আকর্ষণ করিণ: ভূতন প্থ ও ভূতন প্রত্যাশা প্রদর্শন করে। ফলভ আমেরিশায় এই ৰূপ বিশ্বপাৰহ ব্যাপার আবি কথন প্রতাক হয় নাই এবং এখনও *देश जन्म विचा*रतत विषय नदह।

ক্রজ্ব বিশারদ 'পজেন ও কুম মন্ত্রাপ জড় দেহ পূর্বাপেক্ষা সমধিক অভিনিবেশ সহকাবে পর্যালোচনা করিতে সাধারণকে প্রবর্তিত করিয়া প্রাচীন অপ্রাক্তবাদীদি-গোর ক্ষমতা সক্ষু চিত করিয়াছিলেন। ওয়া-ভিন্যার্থের বচনা প্রকৃতি-প্রিয় গুঢ়ানুসন্ধান-পর ব্যক্তিদিগোর অভিশয় আদর্গীয় হইয়া উঠে এবং উহা সাধারণকে প্রাকৃতিক ধর্মো আকৃষ্ট করে। কার্লেলির প্রস্থ বেশ্রুনে পুনরায় নুদ্রিত হইয়া কি মুবা কি রক্ষ সক-লেরই চিত্ত আকর্ষণ করিয়াছিল। কোন্রি-জের রচনা সকল আমেরিকায় পুনমুদ্রিত হইয়া সাধারণকে নিশৃত ভারে অমুসন্ধান

ক্রিবার প্রচুর সাহায্য প্রদান ক্রিয়াছিল। ঐ সমস্ত রচনায় প্রগাঢ় বুদ্ধিজ্যোতি সর্বত विखोर्ग बाह्य। अं ब्रह्माधनि ब्राट्स्कर, বিশেষত দেবতায়বাদী ধর্মধাজকদিগের চিন্তা শক্তি একান্ত উড়েজিত করে। যদিও ভংগ-মুদায়ে ইতিহাস ও পদার্থ বিদার অসঞ্জ ও বিশুদ্ধ প্রণানীর অসদ্ভাব প্রাছে এবং ঘদিও গর্বং, কুদংক্ষার, রুখা ভক্, বিশৃত্থলতা ুও ভ্র'বির চিহ্ন স্কুম্পাই নির্নাক্ষিত হয়, তথাচ ঐ সমস্প রচনা নিভান্ত পরাধীন চিত্তকে স্থা-বীনভা প্রদানে সাহায়া করিয়া আমেরিকার 🖜 ন ট উপকার সাধন। করিয়াছিল। .सर ८ इ इ वनानौ जन्दम विद्रिष्ठि, शबीह ভার পরিপুণ ও সাধারণের জীতিখন, তিনি হায় এও মধ্যে দেৱপ আহ্নত ব্যক্ত করি-गार्ट्स, को शह अध्य मस्तामि मन्द्र । या। (भविकात गालिक तन्छामण उँ । त मविद्याय व्यारमाहरू कर्वन। थ. टक्ट । य स्थारन भूज-ভাষার এন্ত নিভান্ত ডু:আধ ক্টত, তথার नकट्य डेबात अनुवाम अनुभोधन कांत्रह ! 'यमामा तमार्थ हिमा खाउ। मानाहरूव ए কুমংস্কার প্রাক্ষভূতি হয়, কুলিনের প্রস্ত প্রা-াবিত হইয়া ভাষা এক কালে নিবাস করে।

ইজিপ্-টীয় নত।

২১৯ মংখ্যাত পত্রিকার ১৮৩ পৃষ্ঠার পর।

আইদিস্ দেবী। ইজিন্টীনদিগের প্রদান প্রধান দেবভার রক্তান্ত সংক্ষেপে উ লিখিত হইয়াছে; এক্ষণে ভালাদিগের ক-তকগুলি দেবীর রক্তান্ত বর্ণিত হইভেছে। পুরী আনেক গ্রন্তকার ইজিন্টীয়দিগের ভূরিভূরি দেবীর কথা উল্লেখ করিয়া গিয়া-ছেন, কিন্তু নিপুণ ৰূপে আলোচনা করিলে জানিতে পারা যায় যে, দেই সমস্ত দেবীর প্রিধি

ए भाव हिला। ज पिर्म यमन जक ছুৰ্গা কালী, জগন্ধান্তী, চণ্ডা প্ৰভৃতি নানা विथ আकृष्टिए পূজিত इहेग्न शाटकन, मिहे क्ष रेकिको प्रत्म এक बारेमिम् (परी जिन्न ভিন্ন ক:র্যোর ভত্তাবশ্রিকা ব্রপে ভিন্ন ভিন্ন মূর্ত্তিতে আরাধিত হটতেন। ই হার কোন শ্রেভিফুত্তি শৃঙ্গবিশিষ্টও দেখিতে পাও্যা যায়। পরস্পর অনুরাগার্থী নায়ক নায়িকারা मिन्ति ल ट अत शिंग छ विस्थय बार्श आहे-ामम् (भवीर अप्तापना करिक। क्ष**ट**के। आहे मिम् प्राचीटक धाला बिलवा अनुमा कर्ति তেন। আইনিদ দ্বীর দশ প্রতান চিল, এই নিমিত্ত ভাঁদার আর একটি নাম भित्रयतिमम्। आहेमिन् द्वीव अन्तानः इंडाइ अगन्न करम अगितिर फरवंत विवयः मत्भा मधितांग्य क्षेत्रात्छ।

িউং দিন্। ওমিরিমের উন্নে আইসিল দেনীৰ গভে বিউবদ্ধীন, দ্বীৰ জন্ম হণ।
প্রাক্ দেনী ভাগনার মহিত উইলার অনেক
বিষয়ে প্রীলাল্য আছে। ইনি ভাগনার
নামে অভাগ গতিরভা বলিয়া প্রানিজি প্রাপ্ত
না। বিউবাদ্ধীন নগরে ই লার একটি ম্নল।
ছিল। বিভালেও মাম ভূমি নির্মাণে করিয়া
ভিলা প্রান্তি, তংশনুলার লবাজি করিয়া
বিউব ক্ষিণ্যালে প্রোপ্ত করিয়া

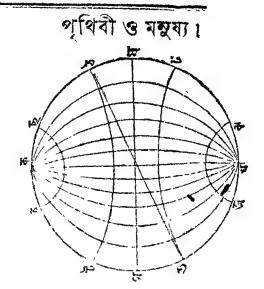
বৈশিখা: শক্নির নামে আকৃতি, এই
পাথে ছুই পক্ষ বিস্তুত, সব্বাপ্ত হীন্দ ধারা
বাচিত, একটি প্রতিমুর্ত্তি ছিল: ওাহারই নাম
ইলিখিয়া। ইনি স্বতন্ত্র দেবতা নহেন,
আইনিম্বা নিউবাউদেন মূর্ত্তি ভেদ মাত্র।
যে দিনে দিনীয়া তিথি পাডত, দেই দিবদ
হুইবে পুলা হইত।

নেশ্লিম্ : ওমিরিসের র্জান্তে উলি বিত ২২য়াছে থে. হকুলিসের ঔবনে রিয়া দেবীর গর্ভে টাইফন পুত্র ও নেপ্থিস কনা জন্ম গ্রহণ করেন। এই নেপ্থিস্ দেবী
নিজ সহোদর টাইফন দেবেব পত্নী কইয়া
চিলেন। গ্রীস্দেশায়েরা এই দেবীকেই
অংশ্ডেইট্ বলিত। শ্বেত্রণা ধেন্তব নাায়
ই হার মূর্ত্তি। ইনি রাতি ও অন্ধর্কারের
অ্রেডারী দেবতা। ক্লিড্রান্তের অক্ষরাগ্রহীক দিগের বিন্দ্র ও ইজিন্টাইদিগের
ক্রেণ্ড্রিক জ্লা কাপ চলিত কইয়াই মনুষাগণের মনে আবির্ভিক কইয়া ডিলেন।

नुरको ना लारके. मा । नीत मनीव पुरक ार्का (नर्ग प्रकुष्ण त्य गमाम ८ कि मिम्मत्त नुरके। स्पर्ग जनकाम कर्त्रहरून। अहे स्परम तेनवानी अहेक। महिस्सल मध्यक प्रकी होंदात बादमा। अने स्वास्तर मिक्शिरम् रक्ष्म सिम मामक जक्षि घोट्य श्रमित्मत श्रम (हात्रम् स्पर्दत अक्षि भाष्य श्रमित्मत श्रम किल। होक्यिकिसिंग्स अहे निर्मा विश्वास कारक स्पृक्ष प्रदेश क्ष्मे निर्मा कर्षा विश्वास स्मान क्ष्रेस्टक्ष । — क्ष्मा निर्मा क्ष्मे सिना मिक श्रम्भ हात्मरक द्वेम महाद्व ला। होनाव निक्रके गम्मे क्षिर्ण स्वास्त्रम

গমন কাৰ্যাছিলেন, সেই সময়ে লগতেনি হৈ কাৰ্যাছিলেন, সেই সময়ে লগতেনি হৈ কাৰ্যাছিলেন ক্ষিণ রাখিলা নীপতি ভাষাইয়া কেন এবা ধ্যাই চাইফনের হস্ত হই ১ পাইছাও পাইবাৰ নিমিত্ত মাইজেল গ্ৰীর মূর্তি ধারণ কবিষা প্লায়ন করেন।

ইজিপটীয় দেব দেবীর সহিত ভারত
থানি দেব দেবীর অভ্যন্ত সাদৃশ্য দেখিতে
থানিয়া যায়। কেবল দেব দেবী বলিয়া
নয়, অন্যান্য মত বিষয়েও বিলক্ষণ মৌশাদৃশ্য আছে। ইজিপটীয়দিগের অন্যান্য
ধ্রত্তান্ত বিবৃদ্দ হইবান সময়ে তাহ্য ক্রেমে
ক্রেমে অভিব্যক্ত হইবে।



পুলিবীতে যে সমস্ম ঘটনা উপস্থিত ভটাতেছে, ভাতার কারণ নিকাপণ বাতিরেকে কেবল দেশ গ্রাম নগরাদির বিভাগ নির্দেশ এব- ভত্ততা আণিণণের স্বভাব ও চবিভাদিব বিষয় বণন কভিলে ভুগোল কুছান্ত শামের সাংগকতা সম্পাদন কর। হয় না। ছতিরুত্ত সংক্রান্ত বিজ্ঞান ব্যতিয়েকে যদি কেবল यहिमा छ। नत छेटलय कत्री इस, छोड़ा इटटल দে বেমন শুদ্ধ ও নীৱন হুইমা স্বায়, মেই ৰাপ ভূগোল ৰুভান্ত বৰ্ণন কলিছে থিয়া যদি গত কারণ সমস্থ উদ্মাবন না করিয়া क्तिनल भुक्ते बख्त अक्ष भाग किएमा कत्। यहि, डाइ। इडेटल फेंबेल मांधायत्वत कमाह প্রীতিকর হয় ন.। বস্তু মাত্রের বণুনা কর। जुर्गान दृष्टारात अकुछ छेरममा नरह। পার্থিব গ্রার্থ সমুদায়ের পরস্পার বিভিন্নতা व्यक्तभंन, कांगा कात्र । वह छिखादन, मरह छन अ অচেতন পদার্থ সমূহের পরস্পর সম্বন্ধ ও • কাষানিৰূপণ এবং মানব সমাজের কি ৰূপে ক্রমণ উল্লভি হইয়াছে, ইহা নির্দারণ করাই रेशंत्र मृथा উष्प्रमा। এर ममस्य व्रितः तत्रे । উল্লেখ না করিয়া কেবল যদি বস্তু মাতের বর্ণনা করা যায়, তাহা হইলে ভুগোল রক্তান্ত নিচান্ত অসার ও অকিঞ্চিৎকর হইয়া উঠে। ए ममल विषयात कारनाशाक न कतिएन

মন যথার্থ পুষ্টি ও প্রকৃত উন্নতি লাভ ক-विट्ड शादत, उৎममुनारमत जमस्रात इहेटन পদার্থ বিদ্যা সহজেই নীর্ম হুইয়া গাকে। সুত্রাং যাহাতে জড় ও চেতন পদার্থ পরস্পার কি কাপ সম্বাহ্ম নিবন্ধ শৃইয়া মেই করণাময় বিশ্বস্রুষ্টার মন্থল অভিপ্রায় স্থ-দিন্ধ ক্য়িতেছে, ইলা স্থাপট উপলব্ধি করা যায়; যে সদক্ষারণে পার্থব পদার্থ সমূ-লায় ক্রমণ উন্নতি না ও করিলা বিশ্বপতির खनम् ७ मार्चमा कोन्द्रत्तन अन्ति य व्यन्ति ►शतुर्क्टाकृष्ण वा (गई समन्न कांत्र केंच वन प्रता गाण; (न े हाका प्रताक सक्ताक स ममन नियुद्धतः अवीन कनियां अहे अङ् ज গ্রহকে নির্দ্ধ উচ্চান্ত করিছেচেন,যাহাতে ख्दमभूमीद्वार कियाचात्राचा ४ खाउल्पातका অভিনাত কৰা যায়; খাহাতে এই সমস্ত অচিন্তুনার অভকলার আশ্চয় লাপার सुन्भके क्रनाएम क्रिया अरु निश्रभिज। व्यविक्षमा छ। ? व्यक्ति व्योक्ति अ अक्ति छेकी পিচ হয়; এই ভুগোল গুতান্তের তালাই উদ্দোষ্ঠা। "यामहा এই উদ্দেশ্য मिश्व कवि বার নিমিত্ত পৃথিবী ও মনুষ, সংক্রান্ত রম্ভান্ত বৰ্ণন প্রবৃত্ত হউতেছি।

কোন কোন অবিচক্ষণ গদার্থ-বিদ্যাবিং
পণ্ডিতেরা কহিনা থাকেন যে,পান্ত পাফ্যানি
জীব জন্ত এবং তরু গুলাদি উদ্ভিদ্ পদার্থের
ন্যায় পাষাণ প্রভৃতি অচেতন পদার্থের
কাবন আছে। কিন্তু এই মত নিতান্ত
অলীক ও অমূলক। চেতন ও অচেতন
এই উভরবিধ পদার্থ পরস্পর বিভিন্ন।
বাত্র ও রক্ষা, রক্ষ ও পশু পক্ষী এবং
পশু পক্ষী ও মনুষ্য যে পরস্পর কত
অন্তর তাহা অমুভবশীল ব্যক্তি মাত্রেই
সহক্ষে স্কুস্পন্ট হৃদয়ঙ্গম করিতে পারেন।
আচেতন পদার্থকে মৃত ও সচেতন পদার্থকে
জীবিত বলিয়া নির্দেশ করা যায়; কার্

পশু পক্ষাবির নাার পাষাণ এভৃতি অচেতন পদার্থে জীবনের কোন নিদর্শনই প্রাপ্ত হওয়া यात्र मा। তবে जे मकत जड़ भूमार्थ কেবণ জীবনের প্রতিভা মাত্র প্রতিভাত হইরা থাকে। সলিনস্থাত তরঙ্গ জাল বিস্তার পূর্বাক ফেনায় আকুলিও চইমা वारवात भक्त गर्कादत ध्यतन व्यदन ध्यवा-হিত ১ইতেদে, সমীৰণ ভাগন্ধৰ **অপ্ৰতিহত** থতি ঘৰলগন পূজ্ঞ গাদপদণ উন্মৃতিত ও ভূতনে নিগাভিত করিভেচে ; অন্তরীকো াই নক্ষত্র প্রভূতি ভোগতিঃ পদার্থ সকর গ্ৰহণ্য আন্তৰ্যৰ শক্তি দ্বাৰা আৰুষ্ট কৰিয়া य क निकार छ। हम व्यवस्था किंग्स्टर ह पूरक तिन्छुमाञ लोक पश्चिकके गर्देशन বেচলিত ও নিরম্ব উত্তরাভিমুখীর কনিন গতেও; সুইটি পদাথ উপয়ু,পরি নাডালিছ ग॰ दात्रे स्थानिद्धात श्रद्धात् अदेशका यात्रा ९ दरभाव अवस्थावत्क प्यांकर्सन कटर , नव स्व भारत अवस्रुधिक भवार्थ मञ्जारसन धन्तादन आचार्ड क्रिटल एको अन्तनानी बहेगा थे'एक . हमायम तिमा। थास्ट्र हेक् क अंदाक अरेगात हा, क्छ अन्तर्धत करनाक लट्टान्टर मध्यन प्राप्त विवासियत ग्रंबर्ग व ७५ . करे मन क लिखा सिन्सा অনেকে অনুনান ক'রা৷ থাকেন বে পশু शक्त । भन स्थादमत कीतम थाएक, किन्धु केरा जीवन नटन, कोवटनत धा-ভিভা নাম! থামরা কএকটি প্লাগে এই অদুত কাষ্য দেখিয়া কিমায় দাগেরে নিমায় इहें कि इ अबे धिकां ध उच्चां ध घरता रव এই ৰূপ অত্যাশ্চৰ্যা ও অচিন্তনীয় কভ শত ঘটন। উপস্থিত চইতেছে তাহার इंग्रेख नाई।

আমর অচেতন পদার্থের নায় চেতন পদার্থেও এই ৰূপ কার্যা দেখিতে পাই কিন্তু এই ৰূপ ক্রিয়াকে ইহার জীবন ব্রিয়া কথনট স্বীকার করা যাহতে পারেনা।

তাল স্থালের প্রস্পর বিনিময়কে সামানা
কার জীবন বলিয়া নির্দেশ করা যায়,

াহা হটলে পরস্পরের আকর্মণে সমান্ত্রই

জড়-দেহের উপর এই রূপ জীবন আরোপ
করা অসঙ্গল ও অযৌজিক নহে। কিন্তু

কেই রূপ জীবন নিজ্ঞ জীবন বলিয়া নি
ক্রেন্ড হটতে প্রধ্রেণ

নেই আরু,তিক ও রামায়নিক জীবন সকল জড় দেহেই বিদ্যান রহিয়,ছে, কিন্তু এই রূপ আরু,তক ও রামায়ন চ কার্য কে চেতন পদার্থের জীবন বা জীবনের মুগ্র কারণ বলিয়া কণ্ড প্রেপিনেন কবা যায়ন।। জীব যে জীবন উপত্রগ্র করিতেতে, ইহা ভাত ব জানতর কা গ্র প্রেক্তিক ও বা-গ্রেনিক জীবন রুফ্র ও পশু প্রফা মনুষা শার্মেন জীবন রুফ্র ও পশু প্রফা মনুষা শার্মেন জীবন রুফ্র ও পশু প্রফা মনুষা শার্মেন জীবন রুফ্র ও গশু প্রফা মনুষা শার্মেন জীবন রুফ্র ও গশু প্রফা মনুষা শার্মেন জীবন রুফ্র ও গশু প্রফা মনুষা

উদ্ভ।

ভবানীপুর রোজ (বদ) (লয়। ৫ ধান অ চালের উপদেশ। ১ ধুম মাধ্যা।

এখানে বাচ্য ১০০ ৬খনত অস্তরে প্রবেশ ক-'त बाक्षा ... र्भावगा छि : अबीदत्व सामा १ ३ ''व । पान । । यक्ति श्राह्म । धारम মান পদের মহাবের শাবীর দেখিছেছি, ভেমনি ক্ষেত্রলের প্রতেভকর আগতেকও অনুভব করি-- आधात करें जिंता हमान्द्रम्य भग**्या** গ'ক'ল কবিত ব লেমিল মত্ত করিভেছে, १ % ५८ सार १५ ७ इन गरनशनरवर्ष पूर्वक ' ' "'त्र'व ६ मा २५को कित्रहरू । अहे छा<mark>-</mark>) १ में स्ता 'र का बाल का निवाड , **एका** क हो। काष्ट्रकार अदलदम्भ मृहिम, मकदलात अधिकी ০ - লতা প্রকার তারনা প্রকাশকে প্রভাক করিতে 医乳头 化二氯甲基二 पक्ति । विषयः । विश्वित समादक ন' 'কং ৬ছঃ। যদ্মি',স্থিতোন ছঃখেন গুরুণাপি

বিচালাতে। '' যাঁহাকে লাভ করিয়া অপর লাভকে তদপেকা অধিক বোধ হয় না এবং যাহাতে অবস্থান করিলেওক ছংখেও বিচালিভ হয় না।

বেদের মন্ত্র ও ব্রাহ্মণ ভাগ সমাপ্ত হইলে পর উপনিষদ্ বেকোর অনুসন্ধানে প্রবৃত হইলেন। अमार्कि ने ना धिन मकल इडेट्ड दूहर, मकल হউতে মহৎ, যাঁচা হউতে শেষ্ঠ আর কেইই ূাই; यिनि शब्द-फर्च-वाशी, यिनि गकल कात्ने विमानान। উপনিষদ্ইহার অনুসন্ধানে প্রাক্ত হইয়া জানি-লেন যে, ঝক যক্ঃ সাম বেদেব ইন্দ বায়ু ভাগ্নি প্রভৃতিদে সকল উপাস। দেবতা, ভাহারা কথনো अका नटह । " (न पर योगनगू शामदङ । " (क लव-कारवार्शिवरू) रेब मिरकदा य अकल अदिभिक्त দেবতার উপাদন। করে, ভাহার। কথনো ত্রন न १० । देव । या जान मुल्याय मा महन् स्वर्ध छ कवा, ६ म (४६म इन व! मत वा नियक नियुक्त वहि-মাগে। ভিৰেই ব্ৰহ্মা। "ভাধানাখভো প্ৰতে अपन्यादनीय स्टब्स अन्यास्त्र । अन्यास्त्र निक्रा ४। व डिलाक्स (१^{९)} (रिकाल दीरियाल स्वम) इके.व ভাগে ব'বু গ্ৰমান ইইভেচে, ইহার ভাষে সুল টিশ্য ইউডেডে, ইছার ভয়ে আগ্নি ও ইন্দু ও মূট্রা স্থায় কর্মে পারেত হইতেছে। উপ-নিষ্দেৰ ঝায়ৰ। কানি মঞ্ছে আনেবাইণ ক্ষিণ এই प्रारंद्रम्भ इन्द्रान दर, अ.धेराश्च छेन् अक्रुं ७ रेतानक प्तरकार्या गंकर नहीं भारतीयाह, सक्टलहे छा अ अक प्रिक्त । इंडाया व्यक्त भर्क, इंडारा 'अर्थानाटक শাপ্ৰি এ গ্ৰাপ কৰে নাই; ইন্ত্ৰ, সুমন্ত্ৰ নৱে, ইছারা আপন রাও আপেনার নিবস্তা নচের ইছারা य (२) क पूक कर महभारद तथ , इ. इसेशाटक, बीसा , इहेट्ड वें म नीम भोड़ि लांड कविश्वादक, मंहिनत শ'সনে নিমত প্রবর্তিত গংগতে, ভিনিই ব্রহ্ম, चितिहें काता, लेक कराउ (अर्थ ७ श्वनीय बाद (कश्री माहे। अबे जात खनवकात खेशीमधरमञ्ज আখাগিকাৰে অভি ১ নর-কলে প্রকাশিত রহি-म[15] भारे चाथ, दिका खड़े। " उन्न इ स्नुद्ध-टकाति एएणा। अया एवकामिशक क्या विशास করিলেন ৷ ইন্দ্রায়ু প্রভৃতি **দেবভার। ঈশ্বরের** अह । (१ ১৯/६/देव उल्लंब का नाक कतित्वन। ইন্দ্র চান বে, পূর্বিভীতে মুকুটি বর্ষণ করিয়া প্রস্পু দিলের ভিত সাধন করেন, রতাসুর ভাষা করিছে (मध न।। मकल (मवजाता अकळ हरेशा व्यक्तिक-কাবী রক্ষাপ্ররের উপরে জয় লাভ করিলেন। একা एँ। श्वामिश्टक यहे क्या आमान कवित्सन, मिनकांता ধীয় খীয় অভিদান-দোষে ভাহা জানিভে পারি-লেন না। তাঁহারা মনে করিলেন, আমর'ই लागांत्रावत कमलाट कामूद्रत छेशत क्षत्र नाक

कतिलाभ ; आभातरमत्रहे अहे छत्र, आभातरमत्रहे **এই মহিমা। '' অন্যাক্ষেরাধং বিজ্যোইন্মাক**-মেরায়ং মহিমা।" ঈশ্বর ভাঁচারদের এই অভিমান ভাঁহারা অনিষ্টকারী অমুবদিংগর काबिद्यन । नागि इथी-अखिम'न-पारि एउ ना इन, এই छान দিবার নিমিত্তে তিনি জাহারদের নিকটে হয়ং প্রকাশিত ইটলেন। ভাঁহাবা জানিছেও পাবি-ल्ल्म ना (व, पीलायान शक्तनीय शुरुष देनि (क। ভাইারদের অপেকা অপিক শক্তি সম্পন পুরুষ যে কেই আছেন, তাফা ভাঁকারা জানিতেন না: আপনার্দিগকেই যাত সু সমুম্বানিয়া মান কবি-रङ्ग। **এই অপ্রিচিদ প্রদীয়ের অবাক্ত অপ-**निभिन्न (जाक जैं।कावा मकत्त्रे करूथ व हरेश। (श-त्वम: डीक्ट्रियम् अभग ७ गम विकल्पिक बहेन। ভাষার। আগ্রেকে বলিলেন, তে আগ্ন। তে জাতে-तमः । जिमि जाभावतम्य भद्रशा जाली । एडजनी, যাও ভূমি ইচাবি নি গট থিয়া ইচাকে অনুগত अहेशा धार्येम हिन्दिक। खांध है। बाद निकटी .भरत्म । त्रक्ता एं। हा ह हिन्द्रांभा कविरस्त । ⁶ किरान ? ज्ञिरात ? अ शु पूर्ण करिया बनिरलस '' অংগ্ৰিক' খণন নীনি জাভাৰেদা ৰ' অহমকীতি ^গ ब्राचि भार्ष, जा म लाभावणा। जल है। धर ৰলিংলন ' কমিংল্ফ গি কিং বীলেও ' ভুলি যে জাশ্বেনা আগ্ল, ভোনাজে চি শ্রি আছে? ভিনি উন্ত ক্রিলেন, দি অপীদ্ধ সার্থ স্তেখ্য श्रीमभए श्रीरिवार्गिक । '' उन्ने श्रीर्थवीटक द्य (क्यू বস্থ অ'ডে, ডাচা সকলই আমিদ্যা ক'বাডে 🚉 বা ব্ৰহ্ম উচ্চাকে একটি ভুগ দিবেন ও স্বাল্যন, ইহাকে দক্ষ কর। তিনি নহাতেগে আপন বৈ দকল **एक जाहारक निरमांग कतिराजन, जशांशि टाउँ** ভূণনীকে দক্ষ কবিতে পাবিরেন ন!। আপন্তক मिंखिकी सिथिया निक्किक करेगा सिवडा निर्धाव নিকট ফিরিয়া আগিয়া বলিলেন— আগম চিনিজে পারিলাম না, এই অচিন্তা-শক্তি পুজনীয় পুরুষ কে৷ তথন তাঁহারা বায়ুকে বলিলেন, হে বায়ু যাও তুমি ইহাঁর নিকটে গিয়। ইইাকে অবগ্র হুইয়া আইস। ৰ'য়ু তাঁহাৰ নিকটে গেলেন। ব্ৰহ্ম তাঁহাকে জিজ্ঞানা ক্রিলেন, তান কে? वासु वर्ण कतियां विभटनन, "वायुधा खरमन्त्री क শুতিরিশ্বাবাঅহ্মক্ষীভি। '', আনি বার্, আমি मिकिविषा। खका विलालन, कुरि स माञ्जिला ৰায়ু তোমাব কি শক্তি? তিনি উত্তর করি-লেন, পৃথিবীতে যাহা কিছু আদে, আনি সকলই হরণ করিছে পারি। ব্রহ্ম সেখানে একটি তৃণ त्राथिया विलालन, अथान इटेंड्ड टेटाक ग्रहन कर দেখি। ভিনি ভাহাতে আপনার সমুদায় বেগ নিয়োগ করিলেন, তথাপি ভাষাকে একটুকুও

বিচালিত করিতে পারিলেন না। আপনাক শক্তিহীন দেখিয়া লক্ষিত হইয়। দেবকাদিপেব নিকটে ফিরিয়। আসিয়া বলিলেন-- আমি চিনিডে পারিলাম না, এই অচিন্তা-শক্তি পুজনীয় পুরুষ कि शद्य छैं। होयां हे स्मरक बनियान, वह मध्यन । তমি আনাবনের সকলের রাজা, যাও ভূমি চঁহার নিকটে গিয়া ই'হাকে অবগত হইয়া আইন। ইন্দু ট্রের নিকটে অনসর হইলেন। ইন্দেশ বাজ-প্রদর অভীব গর্ম ও অভিন'ন দেখিয়া ব্রহ্ম তথা হটতে জিবোহিত হইলেন; বরং জিনি अना जना (प्रवास प्रियोक (प्रथा) विश⁴ हिटलन, हेस्तुक क्रक बांव प्यथान बिट्न मा। ध्यहे छाटम ন্ত্ৰী কপিণী ব্ৰহ্ম-বিদ্যা আসেয়। আবি হু দ চট্টেন্স । इस राहे धनक नवलो जुक्त-विभाग किला ক্ষিদেন যে সেই দাপামান প্রতীয়, বিনি এই নাত্র এখানে ডিলেন ভিনি কে ? ব্ৰহ্ম-বিৰা ব'লাগন উচ্চিত ভেকিল। জান না, ইনি ব্ৰহা বিদ্যান ভোষৰা তাপনাৰ আপনাৰ মহিন বান কৰিতে ডিলে; যাৰ এই কাষ্য জনা বুকোল নাৰ भारका करा। तुआसिमात बड़े फिलंदनटमा अल्बर रेजनमा इंडेल । सम्माति हे सम्बद्धान्य (म. ४) क कवियां অশ্ব সকল দেবছা এইছে দীর্ভ ইইলেন্ ভারববি অগ্য র'ণ এছে,তি দেবত রাও ইন্দেব নিকট হইতে ব্ৰক্ষ, ল'লাভ কণ্মা আৰু আৰু সকল দেবজা হট, ছে "ৰেম কইলেন্ ৷

. बरे अ. या। यत्। जाता धरे जैलाम पा इसा व्हिट्डा५ (व. ६४ ल्लाह ध्यामत) वाधनावस्त्र প্ৰিনিভ ভাষ ব্য়িকে না পাৰি, যে প্ৰাৰ্থ জনজ দেবের মৃতিমা অবগাত হওণা ধাধ না । তা 🕽 বাঁছু डेक एक इंग्लं प्यापेना बाहर प्रदेश सांक्षित सीमा ুরিছের এ গারিষ্ট সংগ্রাথনি বিভারতী সহজে স**র্বা** মাজমাল বাৰ্যা সাভিবান কালেছেল। উ'৬;ৢ৻ ত জান বেদের আন শাঞ্চির স্থান; বুলোলেন; धर्यन (१४) पुरुष म श्रवम (१४व ५) क ना कान्तिहरू পা'বিল' ক'ছাব'ৰৰ জান কুঠিভ হইল, যথম एकि छ नात्रक कीय नाम आस्तिहरू मा भाविष्ठा हैं (क) दरनत वन भावा कहेन: एथ निहास विद्या পানিরেন যে আগরা ক্ষুদ্র, আমারদের জ্ঞান শক্তি প্ৰিমিত এবং সেই প্ৰিমিত জ্ঞান-শ্বিজকেও আনবা আপনারা সৃষ্টি তার নাই; কিছু সেই मर्जय है। लुर्न भूकम इहेटल लाज कविनाहि, गाँहोत मगरक जामात्रपत भकत जात, मकत महिल, स्वक হইয়া গের। দম্ভ ও অভিযান ব্রন্ধাঞ্চানের প্রতি-ৰক্ষক। আনি সকল বুনিতে পাবি, আনি সব করিতে পারি, আমারই যশ সর্বত প্রকাশিত হউক: এই অভিযান ও নীচ কামনা ব্রহ্মকে বুঝিতে रमग्र ना। जालनात इस्रेंगडा धिन जानिशाद्यन, ভিনিট উচ্চার অনুধানী ও প্রশাশন হইনা নবল ৬ উল্লেছ ইয়াছেন।

অগ্নিবায়ু ইন্দ্রপ্রজ্ঞি থক্ষজুঃ সমে বেদের দেবভার। উপনিষদের উপাস্য দেবতা নহেন। ভিপ্রনিসন্দের প্রক্তিপাদ্য পরম দেবতা এক মাত্রপা-ष्रवन्ता। উপ्रियाम् त मर्कन्श এই य विनि मक्ल ছইতে বড়, ভাঁহাকৈই অম্বেষণ করিয়। জানিতে হইবেক, ভাঁছাকেই প্রীজি করিছে ছইবেক, ভাঁহা-নেট পুজ। করিজে চইনেক। উহার। সকল হউডে रा प्रतिया याद्यारक क्षितित्वन, अञ्चत बनित्वन মহমার। ব্রন্ধ" (লাশ : ছাপেনিষদ্) এই আত্মা अजा। '' वा रेष छुम। छः प्रवंश नांदल्ल सूर्यमन्त्रि प्रैमन प्रचार स्वादनम तत्र क्रिमिलवाः । "(इर्न ক্ষো(পা)পনিষদ্। বিনি নহান্ ভিনি সুখ-খক্ষ क ल अमार्थ सूथ मार्च, महाम् अमार्थहे सूथ-वक्षाः সাজনৰ উভিচেট্ট জানিতে ইচ্ছা কৰিবেক। সেই ভূমা কোথায় ? 'সএব সঙ্গুত সউপস্থিতাৎ সপস্চাৎ সপুরস্তাৎ সদবিদ্ভঃ সউত্তর্জা। "।ছান্দোগ্যো-প্ৰিষ্ণ) ডিনি অংশাডে, ডিনি উদ্ধেতে, তিনি পশ্চাতে, ভান সন্মুথে, দিনি দক্ষিণে, তিনি भड़े प्र्या (क ! वहें प्याचाहि (मह ভন্। । সাই লাকাং স্থানাকোশেরিটা দাসা পশ্চা-দাফা পুরস্থানার। দক্ষিণ্ডআল্লা উত্তরতঃ।" (७) (क) (४) (४) (मरम्) जात्राहि अभारत, जाबाहि উদ্বেশ-, ভালাই প'শ্লাচে, আলাই সম্মুথে, তারাই দ্যিনে ভাগাই উভরে। ইহাতে এই ল্প লিপর হইল যে যিনি সেই সকবে বৈণী ছব। ঈখর, জিনি খুনানভেন, জিল জগতের আলা, তিনি भक्तलाल पूर्व ब्रहिद्राटकन । अथारन जिकामा अहे त्य दभक्त निमा कि भदीती का द्वा ! य व्या वा भंतीदि मक्त था कम। का ए८ काटन विकितिसम छाता छ न वाटविधा (छात्र करत. वह आदा) कि स्वहे जूमा ? াক ভ্লা? উপনিষদ্ধলেন যে না, ভূমা অ'আ। ক্লাপি শরীর্থী আখা নতেন। ইনি শরীরী জাগ-কিও আতাৰ নাল বহিরিভিয় ছারা বহিবিৰয় উপভেগে করেন না: ভ্রমা আত্মার শরীরও নাই, टेक्टिय ३ न हि। एटर कि जिनि यटनामग्र आया ? --- এখানে এই বিজ্ঞানা উপস্থিত হই**তে পারে**। भनित निरुक्तान रहेदन, **हेन्द्रिन वात-नकल कृत्** হইলে, যে অংলা ক্ষেত্তে স্বীয় মহিনা **অনুভ**ৰ तरत । य अर्श्तय आधा विवय ७ हेल्लिसा नित्र-, क व्हेश क्षेत्र महिमाट**े विवय-नवन मुक्टि** कविद्या फोर्स डेशटअक्त करतः । **य आचा गर्शक**न-थिगाटि, सामा ७ दमिथमाटि, जीवा दिएथा; बाबा গুনিবাছে,যালা নাও গুনিয়াছে, ভাছা ভানে; বাছা অর্তৰ করিয়াটে, বা নাও অর্ভৰ করিয়াটেই,

ভাছা অত্তব করে; বে আআ। " নর্বং পশারি मर्काः श्रमाणि " जाशीम मन बहेना मन तमरथः; रमहे ষ্পাবত মনোমর আলা কি ভূমা? না। বে আত্মা স্বপ্লেডে কেবল মনো-স্থারা বিষয় উপভোগ करत, (वह " यश्रयात्नाश्यः अळा अविविक्रण्यू " আত্মা ভ্ৰানছেন। যেন্ন ভূমা আআর শ্রীর নাই, তেমনি উহোব মনও নাই। তিনি মনের দার। সুখ ছঃখের অনুভব করেন না। ভিনি খ-নাৰস্থ আভাব নায় শোকও করেন না, ক্রমানও করেন ন।। অতএব বপ্লাবস্থ নাময় আত্ম। ভূমা নহেন। এখানে তাব আবার এই প্রশ্ন হইতে পারে বে, সুষুপ্র আমা কি ভ্মাণু বে আয়া সু-कर पूछ रहेग्र। कान कामनाछ करत्र ना, कान যপ্লও দেখে না; শোকও করে না, ক্রন্সত করে मा ; वहे सूबुश बाबा कि महे एम!! वहे भूबुश আবাও ভূমানহেন, যে হেডু তথন সে আয়া ''অয়মহন নাডি' (ছান্দোলো)পনিষ্দ্) আনি এই বলিয়া আপানাকেও জানে না। যদিও মুখু-প্রবিস্থাতে ভামার শোক নাই, ফদন নাই; ভথাপি ভাহার কোন ভোগা বস্তুত । ই । ''নাহ মত্র ভোগাং পাশাবনি, " (ছালেজেগাপ্রিষদ্) জামি এথানে ভাহার কিছুই ভে:গা বস্তু দেখি না। এই মুধুপ্রবিস্থাতে আন্মার না কিছু চোগ। বস্তু আছে, না কোন ভোগ আছে, ক্রল এক মহানিম্মতি ভাষাকে আছেন করিম। রাখে। এই पुरुष अव्यक्तम आजा। कथनरे कुँमाणा नरस्न। খিলি ভূমামা, ভিনি অপরিল্প টেডনা-বভাব। তাহার চেজনোর কথনো লোপ নাই, ভাগাস-দার প্রকাশিত হইয়ার হয়। দংসারী আমাই भविद्वित ज्ञानीन, विषयात ज्ञानीन, मदमह ज्ञानीन : गरमाता व्यापायहे का धनवष्टा, व्यक्षावष्टा, सूयुखा-वडा। ज्याचा कान जनदात अधीन नरहन: जिनि कथान। जाधर, कथाना निष्ठिष्ठ, कथाना মুযুগ্ত, এনত নহেন ; উাহার জ্ঞান, তাঁহার ভাষ, मनारे भील तिथाहा। " अय सूरलम् जानसि কাম। কামং পুক্ষো নির্মিমাণঃ।" (কঠোপনিষদ্) যথন সকলে নিজ। যায়, তথন এই পুরুষ ভাগ্রৎ थाकिया मकत्वद्र कामा वसु विधान क्रिट्ड थाटकन। অতএব মাণ্ডুক্যোপনিষদ্ বলিভেছেন, ভিনি '' প্রপকোপশমং শাস্তং **শিবমটন্তং। '' ভি**টিন স্সারের অভীত ; শান্ত, মঙ্গল, অন্বিভীয়। 'স-আত্মা সবিজেয়ঃ" তিনিই সেই আত্মা, তিনিই বানিবার বোগা। का ११८-वर्श-सूब्रुशायक व्यष्ट শংশারী আত্মার প্রতি**ঠা সেই অভ্**রামী **অমু**ভ জন-বিহীন নহান্ আছা। এই পরীরী সংগারী व्याचात्र व्यख्तकम व्यरमस्य (महे क्यंनद्वीती क्यमर्-সারী মহানু আলা অবস্থিতি করিভেছেন। " বা

পেৰা সম্জা সখায়া সমানং বৃক্ষং পরিষধকাতে।" मृश्वतमाशनियम्) इट मुन्तत शकी जीवाञा बांद्र शत्रमामा, उष्टरप्रदे এक त्रक वह भंदीद्र क অবলয়ন করিয়া রহিয়াছেন : ভাঁহার। সর্বদা একত भारकम् अवर् छेक्यं भवन्भारवत् मना। "यत्राखर कांगतिভात्रकारको विभागूभगाछ। महास् वि-ভূমায়ন: মহাধীরোন শোচ্ডি। '' (কটোপনি-थम्) कीत याँकात काता चरश्च मर्था सूथ-इःथ ভোপুকরে, এবং জাগরিত থাকিয়া বিষয়-সকল দর্শন করে, মেই সর্ব্যাপী মহান্ আছাকে বীয় অন্তরে জানিয়। ধীর বাজি আর শোক করেন मा। "हर्यास भारत कार्य विव्रष्ठ उक्त निक्रवः। जब्द खः ख्याजियाः क्याजिखनानाञ्चविदनाविष्टः।" ামুগুকোপনিষদ্) ব্রহ্মবিৎ ব্যক্তিরা আত্ম-রূপ ाउँक ल ७ (अर्थ) कांच माला मिर्ड निर्माल, नित्रव-য়ব, জ্যোতির জ্যোতি, শুদ্র পরমাত্মাকে উপলব্ধি

अथारन উপनिষদের मिक्कास गरनारगांत्र पूर्वक প্রণিধান কর। মাও ক্যোপনিষ্টের প্রথমে আছে '' পর্বং হেড দুক্ষ।'' সকলই এই ব্রহ্ম। উপ-নিষদ এট কথাতে বেদের পুরাতন মত থওন করিছেছেন। অগ্রি ব্রহ্ম নহেন, সুটাব্রহ্ম নহেন, মিত্র ব্রহ্ম নহেন, বরুণ ব্রহ্ম নহেন : কিন্তু সকলই ব্রহ্ম। তিনি আকাশের অভীত হইয়। সকল আকাশে ও বিশ্ব সংসারে বাাপ্ত রহিযা-ছেন: তিনি ভুক্ত ভবিষাৎ বস্তমান জিকালের অভীত হইয়া সঙল কালে ও সকল ঘটনাতে বিদ্যা-" छुछ ९ छवः छ विवामित মান রহিয়াছেন। नस्याकात्रवय यक्ताना विकाना जैन् उन प्ला-স্কারএব '' ভৃত ভবিষাৎ বর্ত্ত্বান, সকলই ওঙ্কার ; ধিনি এই জিকালের অভীত, ভিনিও ওঙ্কাব। 'এখানে অবশা ভোমরা জানিতে চাও, এই ও-কার কি? এই ওক্কারের অর্ব সৃষ্টি-স্থিতি-প্রালয়-কর্ত্তা, উপনিবদ & भंक द्वाता उत्तरक्टे बाक्त करतन। '' ওমিডিব্রহ্ম ' (ডৈজিরীয়োপনিষদ্) ওঁ ইহা ব্ৰদা। বেদের ঈশ্বর অগ্নি বায় ইন্দ্র প্রভৃতি व्ययन कूल, উপनियम्बद नेश्वत अक्षात-श्रीक-नामा भवज्ञा एकानि महान्। उभनियदम्व अ-বিরামধন এই ত্রহ্মকে অবেষণ করিয়া আপনার-म्बर जास्त्र मिथितान, जबन बिग्रियन '' ज्या-'শ্রারকা" এই আ্যারকা। পরে ভাঁহারা ত।হাকে প্রতেদ করিয়া ব্রলিলেন "সেয়েমাতা। চতুল্পাং।" নেই এই আন্মা চান্নি পানে বিজক্ত। এখন নির্ণয় করিতে ছইবে বে ইছার জোন পাদ 'रंगरे जाचा, विजि विटलग्न; वीशटक सञ्चनकान क्षियां कामा जामाहरमत निकास ब्याद्यां कम। क्षायम र्गान जाजात जा अनरका, 'त्व व्यवस्थात जावा

কহিরিজ্ঞিয় ছারা বহিবিধর উপভোগ করে। বি-ভীয় পাদ আতার স্বপ্লাবস্থা, বে অবস্থাতে আত্মা ৰিবয়-সকল সৃষ্টি করিয়া তাহা উপভোগ করে। ভূতীয় পাদ আআর সুষ্পারতা, বে অবভাতে আত্মা সুপ্ত হইয়া কোন কামনাও করে না, কোন সপ্লওবদথে না। এই ভিন পাদ আত্মার ভিন জবস্বা। हेशद्र कान् शाम जक्त ? উভद्र—हेशद्र कारना পাদই जन्न नरहन, देशद काल। अवसार रमहे ৰিজেয় আহার অবভা নহে। উপনিষদ্ইছা মুম্পান্ত-কপে বাক্ত করিতেছেন, "নাস্তঃপ্রজং " দেই বিজেয় আখ। স্থাবন্ত আগ্না নহেন, " ন ৰহিঃ প্ৰজং" তিনি জাগ্ৰদবস্থ আত্মাও নহেন, "ন প্রজানঘনং" তিনি মুযুপ্তারত আলাও নহেন। ভবে সেই বিভেয় আত্মা 🏇 ' উপনিষদ ভাছা পরে বলিতভচ্চন ৷ ''অভুনীনবাৰহার্য্য গ্রাহ্মল-ক্ষণমতিস্তামবাপদেশামেকাতা প্রভাগসার্থ প্রগঞ্জো-शामगर मोखः भिनमरेज्ञः চ हुर्यः जनारसम আত্মা সবিভেয়ঃ।" ভিনি চকুর অগেচেব কর্ম্মে ন্দ্রিয়ের অগ্রাহ্য এবং অব্যবহার্য হয়েন। স্থিনি কোন লক্ষণ দাবা গমা নহেন, ডিনি কোন শদ স্থার। ব্যপদেশ্য নহেন, ডিনি অচিন্তা। এক আয় প্রভায় ই ভাঁহার অন্তিম্বের প্রভি প্রমাণ ইইবাছে। তিনি সমুদায সংসার ধর্মের অভীভ: ভিনি শান্ত, মঙ্গল, অধিভীয়। ব্রহ্মজেরা তাঁ-ছাকে আহোব চড়্র্থ পাদ বলিয়। গণনা করেন ; ভিনিই আল্লা, ভিনিই বিজেঘ। ইহাতে দেখ, ''অয়মায়া ত্রঙ্গা,'' এই অন্মে: তক্ষা, বলিয়া ঋষিয়া যাঁচাকে লক্ষ্য কবিষাছিলেন ভিনি কে, ভাষার সিদ্ধান্ত চটল। সংসারী আগারই জিন পাদ— खा शामतदा स्वीतदा सुष्यातदा : हेक.त व ८ हुई পাদ, ভাষাই দেই বিজেয় প্রণ আয়া, শাঁহাকে অ'মারদের অনুসন্ধান করিয়া জানিতে হইবেক ; महे बाबाहे बना। का बदबन मुस्थानका-विक সৎসাধী আত্মা ব্ৰহ্ম নহেন; কিন্তু যিনি ব্ৰহ্ম, ভিনি সংসারের অভীত ; শাস্ত, মঙ্গল, অন্ধিভীয়। এই সংগারী আত্মার প্রতিষ্ঠা ক্রন্ধা, এই আত্মান্ডেই আছেন, অভএৰ ব্রহ্ম ইহার চতুর্থ পাদ বলিয়া উक्ত इहेग्राट्डन । शुक्रांडन डेशनियम्बर वहे मात्र সিল্ধান্ত। এই সিদ্ধান্তকে আমরা মনের সহিত क्म अनीकात कति ! वेशत एकु कि ? ইशएक আমারদের চূত বিশ্বাস কোণা হইতে উৎপন্ন হয় ? बहे भंतीती काधर व्यासाहे हकूत लाहत मरह ; ইহার সুযুগুাবস্থার যে অচেডন ভাব, জাহার তো आमता किहूरे मश्दाम कामि मा; তবে এই आ-আর অন্ধরান্তা ভূদা ঈশ্বরকে কি প্রকারে জানিতে পाরি, **এবং এই क्राना**त छेপরে कि প্রকারেই ধা নিঃশংশয় হইয়া আছবিক বিদাস স্থাপন क 🏬 : পाরি १ 🛮 ইহাতে উপনিষদ্ বলিঙেছেন, आमात्रामध्र निर्मात कारन जिनि अकान भान, এবং আলো-প্রভায় ভাষতে বিশাস করে। "ন চকুষা গুহাতে নাপি বাচা নানোদে বৈভাপসা क प्राणा या। ब्हान श्रमात्मन विश्वमञ्ज्ञ रू अमार्ड निक्रवर धात्मभानः । '' (गुरुकाशनियम्) ভিনি চকুর এছো নহেন : বাকোরও গ্রাছা নহেন, जिलाना वा बक्रामिकमी घार, उं शास्त्र व्याख इस्त्रा गारा मा . १५%-गडु वाकि धान-घुक ब्हेश निर्यंत ক্ষান দারা নিরবয়ৰ ব্রহ্মকে উপলব্ধি করেন। ভাষাকে ই ক্রিয় গ্রহণ কবিতে পাবে না, ভাষাকে মন মনন করিলে পাবে না, ভাঁহাকে বুদ্ধি আয়ন্ত कविथा छर्क घाता शिकान्छ कतिरा शाहत ना ; कानग्र কেবল এক আল্ল-প্রভাষ দ্বারা নিঃসংশয় হইয়া তাঁহাতে বিশ্বাস স্থাপন করে। ' একমি প্রান্তায়-সারং।" একঃ **রা**গংকাবনং ব্রক্ষাস্থীতি আহানঃ প্রভায়ঃ সার্থ জমাণ্য ঘদাাধিপথে তথ একাল্প প্র-জায়দারং " এম আত্ম-প্রভায়ই তাঁহ ব অভিবেব প্রতি প্রমাণ ইইয়াছে। বিনি এই সংসারী আ-भीव का शमवद्यारक दिवस धक्राव्य क्रामा के उन्हार-দকল নিয়াছেন, থিনি ইহাব স্বস্নাৰস্বাতে ক্ৰীডাৰ নিমিত্ত মনের কম্পনা-পাত্ত দিয়াছেন, যিনি ইছাব দুঘুপ্তি কালে বিশ্বমি-সুথ দিয়, অহরহ ইহাতে 5 इन तनाथान कविष्डाइन , मिटे मश्रक गर्ध-শাফি অনন্ধ পুরুবেষ অস্থিতের প্রেক্ত কর্য এক মান-প্রভাগ বিঃসংশ্য প্রমণ্ঠইয়(ছে। ধ্রম অবি সাদি, তথন আমাৰ এটা পাত। নিযন্ত। এক ১(পেনা: এই অ'মি-প্রভায়। যিনি আনার অন্ট, পাত নিয়ন্তা পুক্ষ ভিনি জনার সুজ্দ নৰ: দাত্ৰ্য ও প্ৰাভূ-এই বডঃসিদ্ধ আন্ম-প্ৰাভায়। বিনি মানবি সুক্ষৰ স্থা আগ্ৰন্থ প্ৰভু, ডিনি সংগে है পুরুদ্ সথ। আশ্রয় ও প্রস্তু; তিমি 🎷 য, ১৯ন, অবিতীয়, এই আহ্বা-প্রভাষের সহজ অকাটা দিদ্ধান্ত। এখন ব্ৰাহ্মপৰ্মা এই আত্ম-এতায়ের বিষয়ে কি বলেন, ভালা শুন। '' দেই क म छ क्यांन खक्रा १ वटमच्या हसूत्र व्याहित नरहम, উহকেইস্ত ছারা গ্রহণ করা রাঘ না, ভাঁহাকে মনের ছারা কম্পনা করা যায় না, ভাঁছাকে পরি-गि**ड वस्त्र नाम दूष्मि छावा विदल्ध कदिया दूखा** ^{এ'য} না। কেবল নিৰ্মাল সহজ জ্ঞানে **ভিনি ঞ**-म. भिक्त शराम कर कर का का अकारम**त राम रमहे** ^{पद्धान-८९} (५) हे गड़। सून्मत भक्ष**न भूकत्यत काश्विर्द** সানরা বিশান করি। জা**ন যে অনুত অনুত অ** न स शुरुरक धाकाम करत. आक्रा महे भून शुक्र-ষের সন্তিন্ধে প্রভায় করে। জ্ঞানেতে সভা প্রকাশ পাদ, এবং সেই সভোতে আমারদের আত্মার প্রভাগ হয়। অন্তএর এই স্ভাব-সিদ্ধ আন্তর-

তায়ই তাঁহার আভিন্তের আগাণা আগান্তর এক. মাত্র হেতু। বখন আত্ম-প্রভায়-সিদ্ধ অনভ পুরুষ সহজ জানে প্রকাশিত হন, তথন কুন্ধি তাঁহার জগৎ-রচনার কৌশল দেখাইয়া তাঁহার বিজ্ঞানের পরিচয় দেয় এবং জগতের মঙ্গলোকেশা নিয়ম प्रचारिया मिटे नियम्बात ममन छात वास्न करता যদিও পরিমিত বুদ্ধি অনস্ত পুরুষকে বুঝিয়া শেষ করিতে পারে না, ভগাপি সে সহজ জানকে অভি-মাত্র পোষণ করে। অভএব একা জিজামু, মুমুকু বাক্তি জগংকার্ণোর অন্তর্কাহের আকৌচনা ছারা বুদ্ধিকে মাজ্জিত করিতে কদাপি অবহেলা করি-বেন না। বুদ্ধি সুমাজির ড ইইলে সহজ জোন ও অ'ড়া প্রভায়ের অধিকার ও উদ্দেশ্য আমরা বি-শেষ কপে সুস্পন্ত বুঝিতে পারি। " এই আত্ম-खन्य अभावतम् अक्तिपत्म् मृति नत्र : हेरा পুরাভন উপনিষদে সুম্পানী বাক্ত রহিয়াছে। বাস্ত বিত বুদ্ধি যথনট আপনাব পাত্তন ভূমির অয়েষণ করে, ভথনি যে সহজ জান ও আত্ম প্রভায়কে দেখিতে পায়।

এই আন্তা-প্রভাষ সিদ্ধ জ্ঞান-গোচর সভা সু দ্র মঙ্গর পুক্ষ জন্মবিহীন মহান্তা(ছা)। ''অপ-য আলা, সদেভুরিবুভিরেষাং লোকানামসম্ভেদায় : ঘিনি অ'অ', ভিনি লোক-ভঙ্গ নিবাৰণাৰ্থে সেত্ৰ-স্বরূপ হটয়: সমুদায় পার্ণ করিতেছেন। এই অ,ঝ-কপ সেতুর এপাবে নিন রাফি নিয়মভ इडेट्ट्राइ: ७ शास्त्र मिन ४ नाहे, हाकिए नाहे পুক্তও নাই, চুদ্তও নাই; ইচা পুণা-ছোন্ডেচে সদাই পবিক বহিয়াছে: জীব ইহাব ও পারে উদ্বীৰ্ চইলে সকল পাপ হইতে প্ৰতিনিয়ত হয়; এই নিষ্পু'প ব্রহ্ম লোক। এই সেতৃর পর-পারে উडीं। इटेंग ए अझ तम अनक्ष इस : य मरमा-রের ভঃখ কেশে বিদ্ধ, যে অবিদ্ধ হয়; যে পাপে ও দে'र इंशकाशी, म अनूभडाशी इस। धरे দেকুকে উত্তীৰ্ হইয়া রাজি, দিনের সমান আ লোক ধাৰণ করে; এই ব্রহ্ম-লোক; ইহার দি-वारताक कथन जन्छ इस मा, हेरांत अवाचि निकीं । इस ना ; इस मनाई अकानिक इस्ति। 🕒 1 ''বৈনা সেত্যহোত্ত ভর্তঃ। न' कहा म युक्तार्य त्यारकाम प्रकृष्ठर में इक्ष्यर। मर्स्स मी-প্রানোংভোনিবর্তন্তে। অপহতপাত্মা ফেবর্জ-লোকঃ। ভন্মান্তাততং সেতুং তীৰ্। স্বা নক্ষোভৰতি বিকঃ সম্বিক্ষোভৰতি উপাৰ্জাপী-সমসুপভাপী ভবভি। ভশাহাএতং সেতৃং ভী-ৰ্বাপি নক্ষমহারেবাভিনিস্পান্ত। সকুষিভাভে।-(इंदिकाटमार्शिनियम्)--(ग्रेव व अवादना कः।

মেদিনীপুর ঊনবিংশ সাম্বৎ-সরিক ব্রাহ্মসমাজ।

আৰু আমাদের উনবিংশ সাধংসরিক সমাজ।
এই মেদিনীপুরস্থ ব্রাক্ষসমাজের বযঃ কম ক্ষেম
ক্রমে উনবিংশ বংসর অভিক্রম করিয়া অদাবিংশভিতম বর্বে প্রাক্তি হইল। এই উনবিংশভি
বর্ষে,বিশেষভঃ গভ বংসরে এখানে আমাদের ব্রাক্ষ
ধর্মের কিকে কভ টুকু অগ্রসর হইয়াছি, এ বিষয়ে
আক্র একবার আমাদের প্র্যানোচন। করিয়া দেখা
কর্ত্বা হইভেছে।

আমরা দেখিতে পাইতেছি, এখানে দিন দিন ব্রাহ্মণর্টের উন্নতি ও বিস্তার হইভেছে। প্রাথমে যথন এখানে, ব্রাহ্মদমাজ প্রতিষ্ঠিত হয় তথন ইহার ভাব অভি সঙ্কীর্ণ ছিল। তথন ইহার কোন ১৬ ব্র গৃহ ছিল না। প্রথমে ইহার প্রতি-ঠান্তা কোমগৰ নিবাসা জীমুক্ত বাবু শিৰচন্দ্ৰ দেবের বাস ভবনে উপাসনাদি সমাজের কাবা নিকাংহ চইন্ত। পরে একটী বাটী ভ:ড। করিয়া কিছ দিনের জনা ভাষাতে সমাজের কার্যা নির্বাহিত হয় ৷ জান্ধৰ স্মাজেৱ ব্ৰুম্ন আচ্চিট্ মহাশ- : বের রাসা বারীজে কয়েক বংসর পরিয়া সভাব কার্যা সনাধা হট্ছ। পুরের অভি অপে লোক গমালে উপস্থিত হউতেন, তৎকালে ব্রাহ্মণার্মেব প্রতি এখানকার অনেকেবই বিষম বি:ছব জান্মি-য়াছিল। সমাজের প্রথম অরম্য এথানে বাজ-नगर्छत् अভिकृत्म । कही धर्मा मछ। नामी मछ। अञ्चित्र व्हेशाङ्गित, কিন্ত চিরকাল সভের खय-भटग्रंव कग्रहे हहेगा शाटक। जाञ्चलम्म मगुनाय বিল্ল বিপত্তি, সমুদায় আতিবস্ধাকতা, সমুদায় বি-**व्यवाहरण অভिक्रम क**दिया अथारम भिन्न भिन रली-যান ও পুট-দেহ হট্যা উঠিতেছে। ব্ৰাহ্মপৰ্দ্ম আপনার নিজের মাহায়োই আপনি বিস্তুত ও সভেজ হইয়া উঠিতেছে। একণে এখানে বছ मरथाक लाइक विरागवज्ञः এ দেশের ভানেকে ব্রাহ্মধর্মের আগ্রয় গ্রহণ করিভেছেন। এখন उष्किम्याक चात्र भन्न-धृश्वामी नर्दन। ভাষার এই স্বভার ছহ নির্দ্মিত হইয়াছে। বিশেষ प्याद्यारमत विवन धरे य धरे शह निर्माण विषदा এ দেশীয়ের। অধিক পরিমাণে শাহার। করিয়াছেন।

আয় তিন বংসর হইল এখানে একটা ব্রহ্মবিদ্যালয় অভিনিতি ইইয়াছে। ভাষাতে অনেকে বালাধর্মের উপদেশ পাইভেছেন। ভদ্মারা অনিকে বালাধর্মের সম্পাও লক্ষণ অবগত হইতে-ছেন ও ইহার উন্ত ভার মেধিয়া ইহাতে আকৃষ্ট হইতেছেন এবং অনেকে রীতিমত ব্রাদাধর্মঃ গ্রহণ করিতেছেন, বস্তুতঃ এই মেদিনীপুরে ব্রাদাধর্মের দিন দিন উন্নতির চিক্ট দেখা বাইতেছে। বিশে-ষতঃ গত বংসরে যে তুই প্রকার কার্ম্যের অনুষ্ঠান হইয়াছে, ভদ্ধারা ব্রাদাধর্ম এখানে অনেক অঞ্জন হইয়াছে বলিতে হইবে। প্রথম কার্য্য ধর্মা প্রচার, দ্বিভীয় কার্য্য অনুষ্ঠান।

এই প্রদেশের সকল ছানে ব্রাহ্মধর্ম্মের প্রচার করিবার নিমিত গত ফাল্কন মাসে এখানে এক জন প্রচারক নিযুক্ত কর। হইয়াছে। প্রচারক গ্রামে গ্রাহ্মধর্মের প্রচাব করিভেছেন। যদিও অপদিন প্রচার কার্যা আরম্ভ হইরাছে, তথাপি ইহার মধোই অনেক ফল দেখা ঘাই-তে ছে। প্ররেষ এই মেদিনীপুর প্রদেশের অন্তঃ পাতী পল্লী নাম বাসীবা ব্ৰাক্ষধৰ্ম বলিষা একটী যে সভস্ত পর্মা আছে, ভাহা অবগত চিল না। একণে প্রচ'র্ক দ্বারা অনেকে ভাগা অবগত হই-ভেচে। অনোক একণে ব্রাহ্মপর্মা লইয়। তুমুল আ ন্দোলন কবিতেছে। কেচ কেছ ব্রাহ্মধর্মের আ-শ্রুষ গ্রহণ কবিভেছে। অনেক স্থলে আমাদের প্রচারক সমান্রে গুলীত হইতেছেন। আনেক আহ্বান পত্ৰ আসি-স্থান চইতে প্রচারকেব তেছে। প্রচারকের যত্ত্বে ফলেশ্বর ও গড়বেডান্ত সমা-জেব পৃষ্টি সাধন হটযাছে এবং গঙ্গাদাসপুৰ ও ঘটোলে সমাজ স্থাপনের কম্পান। হইতেছে। ভালিল কোন কোন স্তানে কোন কোন সম্ভাল বাকি, অভীয় বজন লইয়। নিয়মিত কপে উপা-সন। কবিতে অ'রম্ব করিয়াছেন। বিশেষ অহলা-দের বিষয় এই যে প্রচারক ও অপর এক মহাস্মাব যত্ত্বেক প্রভৃতি কভক গুলি সামানা লোকে ব্রাহ্মপ্রের আশ্রম গ্রহণ কবিয়াছে।

গত বংসব ংথানে কয়েকটী ব্রাহ্মধর্মান্তমোনিত অনুঠান অনুষ্ঠিত হইয়ছে। গত বৈশাধ্ব
মাসে আচাগ্য মহাশয়ের জ্যান্তা কনারে পরিণয়
কার্যা ব্রাহ্মপর্যের পজতি অনুসারে সম্পাদিত হয়।
এইটা এখানকার ব্রাহ্মদিগের প্রথম অনুষ্ঠান।
এই অনুষ্ঠানটী অত্যতা ব্রাহ্মদিগের এক প্রকার
পরীক্ষা তাল কইয়াছিল। তত্পলক্ষে এখানে
ব্রাহ্মদিগের মধ্যে মহা গোলধাগ উপস্থিত হইযাছিল। আনেকেই সেই অনুষ্ঠানে যোগ দিয়া
ছিলেন, কভক গুলি আবার ভাহাতে যোগ
দিতে বিমুথ ইইয়াছিলেন।

দ্বিতীয় অৰুঠানটী প্রাবণ মাদে সম্পন্ন হয়। এ অনুঠান রাজা রাধাকান্ত দেব বাহাছরের পৌত্র শ্রীযুক্ত কুমার ব্রজেঞ্জনারায়ণ দেব বাহাছরের পুত্রের আন্তক্ষা। এই অনুঠানে অনেকে উপস্থিত ছিলেন। ইহা আহ্বাদের বিষয় ব্রলিকে হইবে যে প্রথম অনুষ্ঠানে আগমন করিতে বাঁহাদিগকে; কুঠিত দুই হইয়াছিল, এই অনুষ্ঠানের সময় জাঁহাদের অনেকে যোগ দিয়াছিলেন। এই দিভীয় অ-স্থান দারা আবাদের মহোপকার সাধিত হই-হাছে। এই অনুষ্ঠানটী বঙ্গদেশে ব্রাহাধর্মের অনুষ্ঠান বিষয়ে মহৎ দুইান্ত স্বরূপ।

তৃতীয় অনুষ্ঠান মেদিনীপুর নিবাদী শ্রীযুক্ত বারু নীলক্ষল দের পুরের নাম করণ। উহা আদিন মাদে সম্পাদিত হয়। ভাহাতেও অনেকের সমাগম হইয়াছিল। এই তৃতীয় অনুষ্ঠানটী এ প্রেদেশে বিশেষ ধর্মোগ্রিত সাধনের চিচ্ছ বলিতে হইবে। ইহার পুর্কে যে ছইটা অনুষ্ঠান হয় তাহা ভিন্ন খান নিবাদীদেব হাবা অনুষ্ঠিত হয়; এটা এই স্থান নিবাদী দারা অনুষ্ঠিত হইয়াছে।

গত বংসবে ব্রাহ্মপর্মের উপতি বিষয়ে যে সকল কাৰ্য্য অনুষ্ঠিত হইয়'ছে, তন্মধ্যে একটা অভ্যন্ত জীলিকর সংবাদ আছে। ভাষা এই, – क अरमस्यंत अखः भाजी भली आम वानी अकारान जाक श्रीयुक्त वांदू नवीनहत्त एकांगी महानग्र प्रशाह দিবদে র'ম প্রীতিকর কাষা করিয়াভিলেন। ভিনি के मिन अपूर्वा छ। वर्गटक भूगाट्य नियञ्जन कवित्वन । यथा नगरा मकत्व उपित्र इडेन। জিনি উপস্থিত প্রজামগুলীর সমক্ষে পূর্মবং পৌ छनिक कार्धा ना कतिया उत्कालामना कवित्छ गिम्या (अत्वन । उत्थानना मगाख इहेटल जगमी-श्रात् विकष्ठे अक्षावर्णात् महन कमन। पूर्व अक्षी ल्यारीना कविया भूगाह कार्या सभाषा कविरनन । এট কয়েকটা অনুষ্ঠান দারা এখানে ত্রাহ্মণর্দোর विद्यम खेबांख भाषन बरेबार्ट्स विवास बहेरत। क इक्छ नि जाका श्रुकार भक्ता भर्मा मग्धिक अन्-রক্ত হইয়া উটিয়াছেন। একণে তাঁহাদের প্রায় সমল্য কাঠা ও বাবহার বু:কাধর্মের ভারা অনুশা-সিভ হইতেছে।

বছ দিন না আমরা ব্রাহ্মপর্যাকে অনুষ্ঠানে পরিণত করিতে পারিব—বত দিন না আমাদের সমস্ত গৃহ কাব্যে প্রদান নাম ঘোষিত চইবে—ভত দিনই আমাদের ব্রাহ্মধর্যের প্রকৃত উন্ধতি ও পুটি কাপন ইইবে না—ভত দিনই আমরা ব্রাহ্ম নিবার বোগ্য ইইতে পারিব না। অনুষ্ঠান ধর্মের জীবন ধরুপ। অনুষ্ঠান ঘারা পর্মভাব প্রকৃত রূপে প্রকাশিত হয়। ব্রাহ্মপর্ম বিদ্দের আমাদের মনে ও সমাজ গুহুই বন্ধ পাকে, সংসার মধ্যে প্রবিট না হয়; আমাদের পৃহ কার্যোর সময় ব্রাহ্মধর্ম নেতা মা হন; ভাইলে আমাদের কি ইইল? ভাইছে কি আমরা ব্রাহ্ম বিলয় পরিচয় দিতে পারিব প্রাহ্ম বিপ্রাহ্ম বিত্ত পারিব প্রাহ্ম বিল্যানা বিলয়। পরিচয় দিতে পারিব প্রাহ্ম বিপ্রাহ্ম বিল্ডা ভাইলে ভাব আমরা কার্মা বিল্ডা ভাইলে বিশ্ব

রীত ভাব দেখাই, জাহা হইলে কি আসরা কণিট ও তথ বলিয়া পরিচিত হইব না ? অনা সময়ে আনবা কপট বলিয়া পরিচিত হইবে লাংকিত হই, আর ঈশ্বরের প্রতি কর্ত্তরা সম্পাদন সময়ে কপট-তাচরণ করিয়া কি লাজিত হইব না ! ঈশ্বরের নিকট কপটতাও ভওতাচরণ করিলে আমাদের নিজার নাই। অতএব যদি আমরা ব্রাক্ষধর্শের উন্নতি সাধন করিতে ইচ্ছা করি, যদি আমরা পারলোকিক অনস্ত মুখের প্রত্যাপা করি, তাহা হইলে কপটতাচরণ পরিত্যাগ করা, আর্থাদের সর্বাত্রে কর্ত্তরা। ব্রাক্ষধর্শন্তে আমাদের সমস্ত কার্ণোব নেতা করা কর্ত্তরা। আমাদের সকল অনুষ্ঠান সকল ব্যবহার ব্রহ্মধর্শ্যের অনুমোদিত করা কর্ত্তরা।

হে জগদীখর! আমরা ভোমার অতি কীণ সন্তান, আমাদের এমন বল নাই যে আমরা নিজে ভোমার দিকে আএমর হই, ভোমার প্রদন্ত ব্রাহ্ম ধর্মকে আলিঙ্গন করিতে সক্ষম হই, ভোমাকে সাক্ষী রাখিয়া সাংসারিক সমস্ত কার্যোর অনুষ্ঠান করিকে পারণ হই। তুমি ককণা না করিলে, তুমি পর্মবল প্রদান না করিলে, আমরা কথনই ভোমার দিকে উন্নুখ হইভে সমর্থ হই না। হে ধর্মাবহ পুরুষ। তুমি আমাদেব মনে একপ বল দেও যেন আমরা সমস্ত জীবন ভোমাবি দিকে অগ্রসর হই, আমাদের সকল কার্যায়েন ভোমাবি অনুমোদিত হয়, আমাদের সকল অনুষ্ঠান যেন ভোমার

ॐ धकरमवाश्विखीयः

--- \$ • 2 ---

क्लिकांची खोक्समभाष्ट्रित ১१৮৬ भएकत

माघ ७ कान्त्रन माटमङ आय वाय

আ্য

विवत्र ।

ভৰ্ৰোধিনী পত্ৰিকা	R-0/-
	२०१
धककानीन मान	, 2110
श्रुष्ठक विक्रम	36) 66
डाक्माञ्चल	ا مرا بدر
सञ्जानम	ייביטא שופר י
भूछक विकट्संत्र कमिणन	
मिक्न त्मरम वृद्धिक माम	98
অনিরূপিড	ZILVE.
গছিত	BOIL
and the second s	-

ব্যয়	'ব ল্বব্যোপাল মিত্র ২
33340	" कांडिएस मिज " 🕠
Allanda editari	" शीविकारख वसू *** >
Mindal Links and a second	" অবিনাশচন্দ্র চটোপাখ্যায় ১
addition of the second	''्रेनीलम्बिभत >
430 (41%	" নহাভাপচন্দ্র চন্দ্র ১১
Gladia.	" देवलाकामाथ वसू >
श्चक मूजाकन ७३ %	 भीकत्रकल गूर्थाशायाय >
कृत कृत् वात्र ज्ञाने०	" প্রমথনাথ মিত্র >
भूखक रक्षेत्र 84/50	" উमानाथ छल
কাগজ পতাদি কয় ১৩॥ ১০	" অফুরচাদ মলিক · >
व्यादलांदकव वाग्र ७॥/১৫	গ হলপর মলিক
मिकिश (मर्थ्य वृष्टिक मीन ००	" विष्यश्चरणाम् >
भूखकानायत अना भूखक कथ था॰	" ल्लाश्वरा वरणां श्रीवाय >
भृत्युक हि त्यद कमिनन २॥°	दर्शाताच्या बद्यासावास ११
গছিত ২১/১০	4041044.00
bear-summy specimens	İ
७ ७० ॥ और	रगानाम्यान्य
35.0926	१ सम्बद्धारम् मध्य
coll of the collection of the	' मांश्रत्नाल पञ्
পূর্মকার শ্বিত ৬৮১٠	'ি গণেশচন্দ্ৰবিক্ষিত ১
₽8₽1/5¢	" त्रांभरमवक रम
mach. La	" इतिभाग सीभानी >
47%	" বিজয়গোপাল মিত্র গণ
1	" इत्रकालि याच ॥०
[30 s)2110/5°	
জী দিজেন্দ্র ।	95
कलिकां डा जामगरिलव मण्यानक।	অনু হ াসনৰ নান।
	শ্ৰীষুক্ত অযোধ্যানাথ শকড়াশী . ২
	· व्यमभकुमात्र (मृत्य ?
ব্রাক্ষদিগের প্রতিজ্ঞাত সাধ্যসরিক দান।	" भागात्राक्षमञ्च हर होशाचार >d?
🗃 युक्त दमदबस्तनार्थ ठीकूब >०	
শ কাশীখর মিত্র ৫	(d) •
" (इत्यक्तनार्थ मुद्योशीभाष C	मानाशास्त्रमान २
" निवच्छा नन्त्री "	4191,4192,411
'' इतिद्यादन सङ्गी 8	⊢ «م)∘
" ब्राकावाय पूर्वाशायाय ७	
शास्त्राच प्रवासाय ।शास्त्राच वताक ।२	आंग्र
	পূর্বকার স্থিত ২৭৮১১০
" অপেলকুমার ঘোষ • ২ " অবোধ্যানাথ পাকড়ামী ২	WINDOWS
	>>> />>
2. College Col	बाग्र
all over at a set a	সন্নকারদিণের কমিস্ন ১৬০
Security A. M.	approximately an experience of the contract of
A STANCE OF THE	वर्ख्यान ১১०।/১०
and it a large or a self-to	🖲 ছিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর।
ध नात्रमाध्यनाम भरकाशोधाय १	क्षिकाणी बाक्रमबादक व्यक्ताहरू
" (शांकूनकुक निश्ह ?	district all and the all an affile
" मट्ट्यानीय त्रांत्र ३	

		-	ON THE RESERVE		
ক লিকা ড	া ৰাণ	ন্ সম	ভের	भु छक	विस्य
	विद	ক্ৰ ৰ	भु खर	₹ I	
याःगूप मर्श्ड	1 ১ থ	G	••		>
À	र थ	•			5
অনুষ্ঠান পছ		• •		••	_ •¥0
खाकाधरमीत रा			• •	و بر	ll o
के छ। न वं			,		40
প্রতাহিক ব্র	ক্ষাপুঃ	411		• •	Jo
বৃদ্ধ স্থোত্র	,				75
ব্রাহ্মগর্ম্মের সং					do
ব্ৰাহ্মপৰ্ম্য সন্মত	উপ া	मन्।	. •	• •	10
उभ उभागना		ভ	* *	••	10
ব্ৰহ্ম সঞ্চীত		• •		* *	oi •
હે જીવન ૬			াগ এ	65 0	10
- এ উপাদ	-	হভ		• •	9/0
खायंना जरर			•	•	10
কলিকাতা ব্ৰাহ			ভূ ভা	••	10/0
ভ্ৰাহ্ম সমাজের	बक्छः, र	51			10/0
রাজনার্যণ বং				• •	11 3
সংশাৰ ৰাঞ্জ				• •	10
ঐ ভাংপন্য				• •	11 2
বাঙ্গল। প্রাহাধ			• 🛷	• •	10
à water			. #	•	4.
ঐ দ্বিতীয়			• •	y #	0,0
ব্রাহ্মণর্যোর মত		শ্বাস	•		110
গ্রস্থারে পাসনা	. •	• •		• •	1.
ধৰ্ম চচ্চা				• •	10
উ ट्याभनाक्षाल		•	• •	• •	10
গুহ কর্ম	••	•	•	•	e) ·
স্থে ত্রমালা	• •	. ,	• •		10
ত্রিসন্ধাস্থে, ন		• •			do
ম্ব ভিমান!	• •	• •	• •	• •	# =
का अ एड्रिका।		• •	• •	* *	10
শিশুপালন			• •	• •	70
ঐ ছিতীয়		• •	• •	• •	10
সংগীত মুক্তাবৰ্ণ	7	•	• •	• •	10
अर्म्म मोका		• •	••		10,
यञ्जविष्ठात्		• •	• •	• •	70
शानार्थ विना।		• •	. •	• •	lo
मनुस्मात गहे ब	• •	• •	• •	• •	134
ভাত্ভাব	••		• •	• •	150
জয়নগর গিরিশি		र्वात व	इयन	•• ,	jo,
দীপ শিরার জা	७ :दक्		• •	* *	.30
বৈরাগ্য শত্রু	٠.,	• •	• •	• •	ه لوا
চার মীমাৎসা	• •	• •		1	10
यर्किश्रिर		**	4	**	100
ভগানীপুর জন্ম	वशांच	CHRO	अश्रदम	11.71 7	្រើ

वर्गाना-धार्यम् मर्थमः	3.
बे बिडीय नरबा	10
दाचा वावशंत	10
ष्ट्रांश्यव	10
সংস্ত পাঠোপকারক	a).
हिन्दा उम्म-धर्म (मरनागत अक्तरत	10
इতি সহিত কঠোপনিষৎ দেবনাগর অকরে	0

বিজ্ঞাপন

আখিন মাধের প্রবল ঝড়েতে কলিকাতা ব্রাক্ষসমাজ গৃহ একপ ভগ্ন হইরাছে,
বে সংস্কার না করিলে আর বাবহারের
উপযোগী হইতে পারে না। এবার সংস্কার
করিতে ক্যুনাধিক ২০০০ টাকা লাগিবে।
অতএব বিজ্ঞাপন দিতেছি যে কলিকাতা
ব্রাক্ষসমাজের প্রার্গ ইলিগের স্নেহ্আছে,
ও ইহাকে রক্ষা করা ঘাঁহারা কর্ত্বা বোধ
করেন; এই সময়ে তাঁহোরা সাহ্যা করিবেন।

শ্রী দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। কলিকাতা রাজসমাজের সম্পাদক।

ত চৈত্র মঞ্চলবার অপরাক্ত ৭ ঘন্টার
সময়ে বর্ষশেষ উপলক্ষে, এবং ১ বৈশার
বুববাৰ প্রতিঃকালে ৭ ঘন্টার সময়ে নববর্ষ
উপলক্ষে কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজে ব্রহ্মোপাসনা হটবে। ব্রাহ্মগণ প্রাধান আটার্যা
মহাশ্যের ভবনে উপস্থিত হইয়া উপাসনা
করিবেন।

ত্রী বিজেমেনাথ ঠাকুর। কলিকাতা ব্রাফ্যনমাজের লম্পান্ত।

বাঁচাদিনের তত্ত্বোধিনী পত্তিকার অত্তিম মূল্য নিংশেষিত হইয়াছে, তাঁহার। আনামী বর্ষের জন্য অগ্রিম মূল্য অথান করিবেন। অগ্রিম মূল্য অত্রে প্রদান না করিলে করি। জের ক্ষতি করা হয়।

की वा नम्युक्तसद्वेत्राक्ष्मा हो नि